

المناسلة المناسطية

اِخَارَةُ المَعْمَا رِفْتَ كُمْلَ خِيَّا



باهتمام : محرستان سَقَ

طبع جديد : رئع الاول ١٣٣٨ همي ٢٠٠٠،

طع احمر شكريس نام آباد كراجي

ناش : ادارة العاف كلى اصلادار العلوم كلي ا

5049733 - 5032020 :

i_maarif@cyber.net.pk : اى يىل

ملنے کے پیے:

ادارة المعارف كوكى الملاطار كولى المعارف كولى المعارف كولى المعارف في المعارف كولى الملاطار كولى الملاط كولى الملاط كولى الملاط كولى الم

حجة الاسلام المام عزالي وحة الشرطير كم تخفيت محتاج تعارفنهي آينے ابى تصانيف ين سكانون كى دني ودنيوى اصلاح كيينه يحتحكما نراندلا اختياد فرما يا يووه كسقائ آسان نهم اورولنتين ب قارى كواس كا الدانوز ريف كما كالعر سيخول ہوما تا ہے ۔ زیرِنظرکتا ب" تبلیغ دین " میں درسیّقت انسان کی باطنی اللح کے اصول ا درط لیقول کانسر ری بیش کگئ ہے کیوی محقوق الٹرا و درخوق العباد ہو وراس ملامتراسلام سے ان کی اوائیگی کا استمام اس وقت میچ عنی میزیم مین حب تک انسان کا باطن شریوت کے بتلے طلقیوں کے مطابق صاف شغایب نہیں ہوجاتا۔ نماز نرکوزہ ، ج ، زکاۃ عبادات دیٹیہ ہوں باانسانی معیانٹرہے مخلف شيء رحب تك انسان كا باطن صراط تقيم كا يابذنهين بوحا تاره انسان عبا دات كى اديمي كاحق اداكر يحاب معاشر تى حقوق كو لمحوظ و كم سخاب ي الم مغزالة في زينظ كتاب مي معوق الشراوي تقوق العبادية على بوكوابيا ا ورخِرابِیاں عام طور پرانسا نوں میں یا تی جاتی ہیں ان کی <mark>اسل</mark>ی کی یوری یوری کوشش فوائی ہے ۔ چنانچرکتاب کی ترتیب میں انسام میں یوں ہے کہ بہاق تم^ی ظاہری اعمال کے دس اصول " دومیری میں" فروح اخلاق کی تفسیل اصطبار سیت قلى كابيان" اورتىيىرى من تلكح اخلاق محوده كے ساتھ مزيق الاسترائيكابيان اسطح يكاتبين امول بوت بهرجن برب اللي باطنى كيسلسا بتي اسلام ك تعليم کا جاح ترین خلاصه مرتب ہوگیاہے۔ " سیکنے دین " امام غزال کی کتاب الابعین " کے تین ابوا بکار دوترج

ب جحيم الاست حفرت ولانا الشرف على تعانوى قدس سرؤ كه ايا ربيمولا ناعاتراني میٹی کے خوبمورت ا مُلازیں کیا ہے بھرولا ٹائنی جمیل احمدتھا نوی صاوبے حواشى مين كتاب مي درج روايات كتفيق كى واويخوانات كااضا فركماي. مراس وقت" تبيلغ دي "كيومطبوع نسخ باذارمي دستياب ميكان یں سے ایک تو قدیم طروطباعت کے مطابق شائع ہوا سے جس سے عام قاری کا استفاده كرفا قديد يشكل بوتلب كيوي عباركاتسلسل ال طح بدرميلوم كواشكل ہوتاہے کرکہاں سے کیامضمون مٹرف ہور ہاہے اور عوان کی مطابقت عبار کے كحصمقام سعبى - دومرانسخ جومَر يايداز طباعت كم مطابق شائع بوابح إغلاط سے مُرِبِ حَتَّى كربعض مقامات برمطوں كل طربي عبادت غائر فغات في ہے۔ ىبىتىرمقامات يرعنوا ئات بىراس كى رعايت بهير كەمغىون كبال <u>سىڭ قوج</u> ہوتا سے نیزعبارت میں العاظ کی فاش غلطیا*ں موجود ہیں حس سے بس*اا وقات معہ جم ہی خلط بوجا تا ہے ۔۔ لہذا ہم نے اس کتاب کی ہیتے بیزنظر محت صد تك صحت ساتوشان كريجا تعدكيا اوربراد دمرتم صين احمرنج يدبي سابق والانتفينيف الالعسلوم كرامي كاس معامله يتعلن على كياانبول في دونول مطبونونخوں کوسلمنے رکھاا ورلوری توجیکے ساتھ "ترکنے دیں "گاتیمی شدہ الدیش" مرّب کیا جآ کیے اِ تعول ہی ہے۔اس کی تنی حنت ا ودکیا کام ہوا اس کا اُمالِیٰہ کو قارکین حفرات می كريس كے البتراصلاح احوال المت كى عض سے ايك تين كتا كي مفيذكرين حودت مريهي كمشى سعاوت بريم درنے والجلال كي ايكام بروست بيعام پر كر بماليے بلن كي بي اصلاح فواجے ا وداس كتاب كى طباعث سعادت اخوى كاذہ ہے بنا مع ورَيْنَاتُقُبُلُ مِنَّالِتُكَ أَنْتُ آمِيْمُ الْعَلِيمُط طالب دُعا مَحْسَبِدُ شِتَاقَ سَى

خاوم اوارة المعارث كراحي عكا

الربيع الثانى ١٢٠٣ ه

فبرست مضامين

| صفح | مضمون | منح | مضمون |
|-----|----------------------------|-----|---------------------------------|
| YA | خيرات كااعلى درجه | IA | اعال ظاهرى كے دس اصول |
| " | خيرات كالمتوسط درجه | ,, | يبلى أصل |
| 49 | خيرات كاادنى درجه | " | نمازكابيان |
| , | مغلس سلما نول كی خیرات | | ومنوكسف اوركبراول كى طهادت مي |
| ۳. | مدة كوجيان كمعلمت | 71 | ايم عميب حكت . |
| ۳۱ | احسان جتانے كا امتحان | | نماز پڑھنے سے بہرمال نفت ہے گیج |
| " | احسان جنانے کے من کاعلاج | 77 | اس كے اسرادكون سمجے |
| ٣٣ | تبيسرياصل | , | نماذكي مُوح اوربدن |
| 1 | روزه کابيان | | بالمصودقلب والىنماذ كصحت بر |
| 10 | موم دا ودى كى نفيلت | ۲۳ | علمار کا فتولی اورسنبه کاجواب. |
| | دوسشنبراوا پنجشنبر کے دوزہ | 70 | نساذکی دُوح اوداعضار۔ |
| ٣٦ | كالمحكمت | | |
| | حلال اورقليل غذا يرافط ار | 72 | دومری اصل |
| ٣2 | | | زكوة صدقها ورخيرات كابيان |

| | · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | | · |
|----|---|----|----------------------------------|
| مغ | مغمون | مغ | مضمون |
| ۵٠ | مینی امل بروقت و کوالی کامیان فنان فارافزاک امیت ایشل | ۳۸ | پوتنی اصل |
| ۵۱ | فنا ادر فنار الفناك الهيت أوثيل | | ج كاسيان |
| " | سے اس کاسمجنا | | آداب سفرج بيت التهشريين |
| ۵۳ | ساتوي اصل | ۲. | مشروعيت مج كاحكت |
| , | طلب حلال كابيان | 41 | اسكان في كى مشروعيت كادوسرا والذ |
| | مأتز ذينيت اودمباح لذشت بيتزر | 44 | يانچوپ اصل |
| 24 | كريخ كاداز | | تلاوت قرآن كابيان |
| ۵۵ | مديقين كاتقوى اورامتياط كقق | , | تلادت كىنفيلت |
| | تمام حيلول كأميح مطلب اوران | | تلاوت کا پېرلاخا بری ادب |
| ۲۵ | سے احتیاط کی ضرورت | 44 | دوسراادب |
| ٠. | دينا ينض ورضائع قلب كا | | تسيراادب اوتشينه كى كرابت كاراند |
| 61 | لطيعن فسنبرق | 44 | تلاوت كلام الشرك بالمنى آماب |
| | مجع يس موال كرف ك قباحتاد | | کلام البی کے لباس العن طاہی |
| | ظاہری دمینداری سے دنیا کمانے | | مستودمونے كى حكمت |
| ۵۹ | کى برائ | 47 | |
| ۲. | | | ہرآیت ہے اس کے خاص مغبوم ہی |
| # | ننس كوتشد سي ناچاس | 14 | ک معرفت حاصل ہوگی ۔ |
| | عارض كالحقيق مربون براصل بر | 47 | اختيارى وسوسا ودان كعراتب |
| 41 | عمل کرنا جاہتے | | معرفت کے ساتھ مالت واٹریمی |
| 41 | ال کی مِلّت وحرمت کی شناخت میرور میروریان کی زامند میرور | 49 | بيداكرنا جاستة |
| 75 | حراض كوايدائي وورام ب | | |

| | | Ŷ. | | |
|---|-----|---|-------------------|--------------------------------|
| | | | 4 | |
| | منح | مضمون | صخم | مفتون |
| • | ۸I | نومي المسل | ar. | بازار کی جیزول می اصل ملت ہو |
| | | امر بالمعروف اور نبي عن أكر | 77 | 7 %7 |
| | .11 | تعنى وعظا ورنصيحت كابيان | | مسلمانوب كحقوق كح مفاظت |
| | " | وعفوں کی بے بروائی معمیت ہے | | ا دران کے ساتھ نیک برتاؤ |
| | | كناه كارول سے يل ركھناا دروحيت | 11 | تمام خلوق كيساتة تسي معاشرت |
| | ٨٢ | کے درجریں بیٹھنا | 44 | تجر د کی حالت |
| | ۸۳ | علما دکاگذاہوں پرسکوت کرنا | , | بحالت بجرداني ذات كي تعلق حقوق |
| | اه | سخت ایذارکے قوی اندلیتہ بر | | تهذيب نفس اوراس برظلم ياانعاف |
| | " | نصيحت حجبوارنا | ٩'n | كاحقيقت المارات |
| | ٨٢ | واعظ كيمضاكل واخلاق | | مخلوق كيحوق كالجميدات |
| | | وَاعِظُا وَعَالِمِ بِاعْسَلِ بِونَا جِلِينَظُرُ | 49 | اس کا علاج |
| | M | امر بالمعروف أك كے بغیر بھی ضروری ہو | 40 | متعلقتان اوراقارب كي حقوق |
| | ٨٨ | وموسي اصل | ۷4 | براوس كي حقوق |
| | " | اتباع شنت كابيان | 44 | قرابت کے حقوق |
| | | كامل اتباع رسول يربج كمعبادات | * | خادم کے مقوق |
| | " | اورعادات دونوں میں ہو۔ | ۷۸ | بی کے حقوق |
| | | عادات محديكا تباع من فعتِ | | دني دوست بنانے كى فغيلت اور |
| | 4. | ومنييرى حكتين ادراسسوار | , | محت في الشرك درج . |
| | | عبادات بس اتبارع سنت بلاعاد | ۸۰ | بغض في الشر |
| | 94 | حیوڈ نا کفرخنی یا حاقت علی ہے اِن منیف مدیث بری کمل کرانساست | <u>ت اعما</u> |) خامیر |
| , | | | | |
| | - | · · | | |

| | | • | |
|------|--------------------------------|-----|--|
| مفح | مضمون | منخ | مضمون |
| | كذب لحت ميزكا جوارادرا كامكر | | خاتمه اوراوراد فركوره كاترتيب |
| إساا | تحصيا لل جاء كيية جور البالام | | عبادتوب كمختف المسأ الخفي صحت |
| 2 | ضرور رسي قدر رياجات درايي | | عيالدأرتخص اورعالم اورحاكم كيلي عبادت |
| - | مزاح ونوشط جي يكور بركااستعمال | | مذموم اخلاق كالقصيل اور |
| | غيبت كاحتيقت | | طعارت قلب كاسيات |
| 114 | مولويون كاانداز غيبت | | بېلىامسل |
| IIA. | مغلوم كوظالم كى غيبت كراج أنزج | 4 | محترت إكل اورحرص طعمام |
| | بنتى كى فيبت كرنا جائزے | • | كابيان |
| | فتولى كاضرورت مجيى كاغيبت | 1.7 | |
| 4 | كرنادرست ہے | 1.0 | |
| | دومرے کونقعاتی بھانے کیسلئے | 1.4 | دفت اکل کے مختلف درجات سن |
| 14. | غيبت كرنا جاكزے | 1.4 | منس طعام كرراتي مختلفر |
| 177 | | " | ساكلول كوترك اذا تذكي خرورت |
| ۱۲۳ | | 1.9 | دوسری امل |
| 144 | | | كثرت كلام كي وس فضوال في |
| 170 | | " | كابيان |
| | مدح سے محترم پراہونے کا علاج | * | |
| 144 | تيروال غصركابيان | 11- | کلام عبث کی اہمیت در استان میزیز رسان |
| • | غمركا علاج | 111 | |
| IKA | عفد كومهز لطيمنخونا بيئ تركيب | 111 | تهنسى مذاق كاحبوث |
| | ļ | | |

| - | | | |
|---|--|--|--|
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |

| صفح | معنمون | منخر | مضمون |
|-----|----------------------------------|------|------------------------------------|
| اها | بقدومرورت ماه كالتحسيل جائزي | 171 | پختی اصل حسدکا بیان |
| 101 | حتِ مَنْ کی وجوہات | | حسد کی حقیقت |
| ۱۵۳ | حبِّ مدح کاعسلاح | 127 | غبطر جائزے |
| 100 | رُساتوی اصل | irr | حسد کاعلی عسلاح حسد کاعسلی ملاح |
| " | دنيا كى مجبت كاسيان | 124 | يانچوي اصل |
| | حب دنیا کی اہیت | | مجل اورمحبت مال کابیان |
| . , | بوائنس شیائے دنیاک محبت کانام ہو | | فرورت سےذائدال کے مضربونے |
| 104 | تن پوری سا فرآ خرت کیپیئے مہلکتے | 154 | ک دجوات |
| 104 | مسافران الخريت في تشيل و تفتيم | | |
| 14. | سیاک حققت محری ریظرآتی ہے | | |
| 144 | ونياكى طلب ختم نرموگى | 160 | مخل کا علاج علی |
| 144 | | 160 | عسلی علاج سجل |
| 170 | | 150 | 1 / |
| | | | رعونت اورشهرت وجاه کی |
| , | كبركى حقيقت اورآ ثار | " | محبت كانبيان |
| 176 | طاعيان كالمعمولي وهمير بجو | 3 " | خول وعدم خبرت بلت فانقدم |
| 14. | يركا عسلاج | 100 | |
| 174 | | | ال كى برنسبت جاه كى متت زياده |
| NP) | 7121616 | | مونے کا پہلاسبب |
| 14 | 1 . 10 1 /0 1-0 | ١٢ | حتٍ ماه كادوكسراسب |
| | | | <u> </u> |

| | | 1. | |
|------|----------------------------------|--------|---------------------------------|
| مفحه | مفهون | سنحر . | مضمون |
| ۲۸۱ | נקונה | 141 | حسب ونسب يزكترمون كاعلاج |
| | ريار ككيفيت يركى بيثى بركساه | | ال اورجال بريكتراورات كاعلاج |
| " | كى زيارتى | 140 | نوس اصل |
| 144 | عبادت کے فرق سے دیار کی کی سی | " | خود نسندی کابیان |
| 149 | ديا رك تعدي تعاوى وجي مزاير كمي | | خودلپنری کی مذممت |
| 14. | ريارهبى دخنى اوراخفى اوراشدخفار | " | نازاور نودبسنرى اورتكبر كافسرق |
| 195 | منامى كادىنى فائده | 147 | نازکی علامت |
| 192 | شروع عبادت مي ريار | " | غيراختياري خوبي برناز مونياعلاج |
| 191 | اثنا كصعبادت مين دياء | | عبادات وعفواختيارى فوبو |
| 190 | عيادت كيعدريا دكاحكم | 14 | برنازال بونے كاعلاج |
| 4 | ريار كاسبب اول ين حُبِي من كاعلى | 14. | وسوي اصل |
| 194 | سبب دوم يعنى خوف مذمت كاعلل | | رياركاسيان |
| 194 | سبب سوم حرص وطبع كاعلاج | | دياء ونمود كاصاريين شهرت دنيا |
| 94 | عیادت کوعنی رکھنے کے منافع | 4 | ير پورا بوگا |
| 44 | فلبورطا عات مرغيراغتيارى مسترت | IAI | دیا دکی ماہمیت ا ورنٹرک ہونا |
| 99 | مفزنسين | | ريار كى صورتىي |
| " | اطبادعبادت بعض جگرمفيدب | | ديندارول مين نودووقعت كمالب |
| ۲ | كناه كافف لين يفتى كناهبي | | امراريس نمود ويؤتث كى طلب |
| | ريارك الديشه يصعمولات ترك | | انعال اوداعمال يس دياء |
| 4-1 | نركرف جاسئين . | 141 | ديار كحصرام بونے كى وجراول |
| | | | |

| مغ | مضمون | صفح | مضمون |
|-----|---------------------------------------|-----|--|
| 711 | دنیاک محبت کا علاج | 4.4 | خاتمه |
| , | ا بریعنی خلود و دوام کا تعود | | فسنفلق أوراس مين نفس |
| | نقس كادحوكه كه خداكريم يداولاس | " | کے دصورے کابیان |
| 111 | کی ویچرسے غفلت | | ساليءمي إخلاق ذمير سيصاف |
| " | بالمحل توقع شيطان دصوكه | 4 | بوناصن خُلق كهاجاسكتاب |
| • | غيب برايسان دلقين حاصل | ۲.۳ | من خلق کی ماہیت و تمرات |
| ۲۱۲ | كرنے كاطبعت | ۲۰۲ | ميرت كح محي إداعناري |
| 410 | رُوح انسانی کی حقیقت | 7.0 | وت علميه كاحن |
| 714 | امتياطا ودعقل يمى كرآفرت كمقتفى | " | وتت غضبيه اورشهوا ميه كالحسن |
| 711 | حب دنيا كالأعلاج ورحبر | 4.4 | و تعدل كاحس |
| , | دنيا كمجست كاأخرى علاج | | وت غضبيه كااعتدال اوركم بيثى |
| ۲۲. | قلب كواخلاق محمودة | " | الخ الله الله الله الله الله الله الله ا |
| | كع ساتع مُنتين والسيت كمنها | | يت شهوانيك اعتدال العافراط |
| " | بيان اوراس وسل اصول | 1.4 | بغربيل كح تمسرات |
| " | يىلى اصسل | | تعقل كے اعتدال وافراط و |
| 4 | توبرکا بہان | 1 | ربيط كي تار |
| " | قبه سي تعالى توشى كاندازه | 4 | |
| 44 | | | القاين كلف اخلاق سنها وسيري |
| 277 | | | |
| 277 | بيضائكا ماده ليغ ليغ وقت ييفله كماتاج | 71. | لاق كانشخيص محتبيه مادق سے كرو |

| - | | 1 | |
|------------|---------------------------------|-------|--|
| <u>jan</u> | مضمون | مفحر | مضمون |
| 444 | | | قلب انسانى ظلماتى ا ورضالىً لشكر |
| 4 | خوت كابيان | | كاميدان جنگ ہے |
| | خون كى حتيقت اورحاصل كرنے | | کوئی انسان کسی وقت بھیگناہ سے |
| 4 | كالمنقر | | |
| ۲۴. | خوت کی زیادتی مذموم اور ضرب | | معصوم دباكن وكيمي توبرك ماجت |
| | جواني مي خون اور برها بياج ي جا | | شرالطاتوبرك بوري بوجا فيرقبوليت |
| 241 | كاغليمفيده | | مِي شَكْبِينِ |
| 24 | رجاا وربوس كا فرق | | مرض غفلت باطنى جمله امرامن سيطيعا |
| KKK | تبيرياصل | 779 | ہوا ہے طبیب نود مرتعین سکتے اور علمت اد |
| " | زبركابتيان | | طبيب بودم لعي بن محتة اورعلمت ا |
| " | زبدعم كاثمره اورشرح صدرك عكاتج | 44. | مخبّان دنیا ہوگئے |
| | زېرى حقيقت اود تمره واثر | | گناه يراصرارمونے اور توبر مكرنے |
| | طعام ك مرت كاعتبار عديكم | - 1 | كى سېنى وجداوراسكاعلاج |
| 277 | مقداله اعتباد سازم كمراتب | | توبين آج كل كمف كادومراسب |
| " | | | اوراس کا علاج |
| 444 | الماس كمتعلق دمرك درج | | توبی آج کل کرنے کا تیراسید |
| | ا مکان کے متعلق زہر کے درجے | | اوراس كاعلاج |
| 101 | ا اثاث البيت كي تعلق زبيك درج | 744 3 | |
| | تنغم بإنسوس كروا ورزابدون كي | | صغيراكناه بإصراد كرناكبيرو كناه سے |
| 101 | ا صحبت دکھو | 10 | زيادة صريب |
| | | | |

| مغ | مفتمون | صغر | مضمون |
|------|---|-------|---|
| 244 | ایداوس برمبرکرنے کی ضرورت | 701 | زېر کے دیج |
| " | مصائب اودآ فات يرصبركرنا | | دنياكى رغبت ونفرت وونون كانم |
| 244 | بانحاس اصل | YAY | ربنا کمال زید ہے |
| ı | م شکر کابان | 708 | زېر سے يعى زېد بونااعلىٰ درج ې |
| " | مر شکری مقصو د بالذات ہے باتی فون | 704 | زېد کے اسباب |
| | | | جله مابوكى النسي زبيمونا اعلى زبير |
| 444 | شكركاركن اول بين مال ادريسل | 104 | |
| | شكركا دومراركن بيني حال كذعت | 101 | نقرکی نضیات پختمی اصل |
| 749 | كے الرطاعت ہونے پرنوٹی ہو | 109 | |
| | تبيراركن يفي عمل اورنعت كا | | |
| 14. | | | مبركمعنی اورانسان کے ساتھاں |
| | كفران نعمت كا اوراك باشباع سنّت | * | كالخصاص |
| أكرا | سنت . | 44 | مبرکااعلیٰ درجبر سرکا ان سام سر سردن |
| | تشريعية ني حن أومعصيت وحرام من المنابعة | 74 | مبرکاادنی درجراوراس کے آثار ۲ کاوتر مار مار کا کا است |
| | | | برکامتوسط درجه اوراس کی علامت س زش مالی می مبرکی ضرورت |
| 460 | شام باهدم قابلالدر | 1 | و صفاق چی همبری فترورت عات پرهبر |
| " | المال الرفعان | " | عات بر بر بادت كي شروع اور درميان اور |
| | ا علا 60 میملاری مینی نیت اور نشر کے واسط عمل | | |
| " | | . 144 | م پرمبرره سیبت پرمبرکرنے کی ضرورت |
| 42 | یت کوعمل میں بڑاوغل ہے | 1 | مين و بر در عن سرورت |

| | | 16 | |
|-----|------------------------------------|-------|---|
| مغر | مفنون | مغر | مضمون |
| 19. | وكل كالميسراركن فني حمل | YEL | نيت كى مابيت اوريطيقت |
| | تثيقن المحكم امباب كوعطا حذامجسنا | | نيت متعدد بونے سے ايے جسل پر |
| | وردل سے ان مِراعتماد مرکزا فوق | | متعدداعمال كاثواب مناب |
| | غالب المحكم اسباب كالختيادكراجى | | ا يك مصيت ببى متعدد نيتول سيكى |
| | فلان توکل نهیں م | | مصيتين بن جاتي بي |
| | موبوم نتيج والے اساب كي يوس | | نیت کارکن دوم اخلاص ہے |
| " | طن کہلات ہے | | اخلاص کی ماہیت |
| | سال عرس زياده معاش كانتظام | | دیت کا تبیرارکن صدق ہے |
| | ابل وعيال كامجى خلاف توكل ہے | | صدق قول اوراس كاكمال |
| | د فع مضرت کا حکم یجی مبلب خوت د | | صدق نیت کاعسنرم |
| 798 | کی طرح تین تیم کا ہے | • | عسزم كاصدق |
| 1 | صنيف القلب كواتن حوص ذكرتى | | عزم کے پولاکرنے میں صدق |
| 790 | ما ہے | 777 | صدق صالی |
| 10 | الشريخرق عادت كى طلب توى | 11 | مقامات میں صدق |
| " | الاييان كويمي جائزنهي | 114 | ساتوي اصل |
| | آ هموس اصل | • | وكلكابيان |
| 194 | | 0 | توكل كى ابيت اورازكان |
| " | | YAA | رکن اول معرفت یعنی توصید |
| 1 | عشق اورمبت كاحقيقت او | " | توكل كاردسراركن معين مال |
| " | الحيثامات | 7A9 - | الدُّرِيَّوْكُل اوراعمَّا دمونے كے دوسب |

| م کِکِمْ ۲۱۳ نیری | مضون پخوني امراريخ پرشطلع بوناشنک دضا پرفضا کاسح مطلب۔ تاکر کافرً پرهضانه نواد دام بالمعروف ترک ندېو | 799 | خوب میرتی کا التذاذ باطنی حاست |
|----------------------------|---|------|---|
| لِيُكِفر المام تدبير | رضا برقفا كأرمح مطلب ـ تاكر كافر | 799 | |
| ندبريا | يريفناه بوادرام بالمعروف ترك مذبو | | |
| | | · | |
| | رمنا برقضانيس ب كردعا الكناية | | 1 % 10 |
| 414 | ادرسب امتیارگرنامچوشدیا مار دسویی اصل فکرموت کا سپیان | 4.4 | مجت کا دن درجیس کی محبت ہے |
| 419 | دسوسياصل | 4-4 | مجبت خواکے آثار وعلامات |
| 11 | فرموت کابیان در | 4.4 | نوس المسل |
| | فكرموت اصلاح تلب كمال | " | |
| | فکرموت کا طربتی اورتھور لیکیغ طرا مارسی | i | کلیف پردخا وخوشی مونے کعمتلی |
| | طول امل تو تجوادرموت کو ہمیت پیش نظسر رکھو | | وجو بات اور نظائر دمنا برمعیببت واقع میں مجت الی |
| | بر <i>ن حررهو</i> خاتم | | |
| | اصلاح قلب سے روکنے والی بڑ | 1 | تكليف كحانجام يعنى أواب كى وقعت |
| " | . موق صب سے ورسے رہی چیزمرف حت دنیا ہی سے | ۳. ٥ | تكليعن كالحساس كم يأكم كردياكم آبر |
| 777 | بیرر محاسبهٔ نفس اورمرا تبه کی کیفید | | قفاء وتدركى حكتين اورامراريوين |
| 1 . | ليخنفس سےمباحثر كرناابل | 1 | |
| ابن | فرقول سے مناظرہ کرنے سے بدرج | | حفرت خفرطي السلام كالغال فالإللم |
| 44 | ریادہ ضروری ہے | i | نقصان وتكليف تتى مخرصتيفت ميس |
| ار | خس کی مثال کتے کی می ہے کہ ا | ۳ | مخلوق کی مبرودی کاسبب تھے |
| 444 | كها مع بغير سيدهانبي موتا | 171 | ناكوارواقعات ينصلح فيط ونوي مفرموتي بحرا |

" تنسلغ دین *کے متعس*لق

مجدّد الملّت حيكيم الاتمت

مؤلانااتيرف على صَاحْتِ الْوَى (وَمِنْ مِينَ

کی زامے

حَامِنْ تُعْصَلِيًّا

کہتا ہے عاصب اشرف علی عفی عنہ اس جزو زمان میں اجزائے دین میں سے جزو اصلاتی و تہذیب نفس کو توام نے اعتقاداً اور خواص نے عداً کالمحدوث و المعلود کویا اس سے جو مفاسد دینیہ و تمدّنیہ پیلا ہو ہے ہیں علاج اس کا یہی ہے کہ اس کی تعلیم اور اس پر تنبیبہ کی جائے چنانچ ملف نے اس واسط اس میں مختلف و جائے بین لکھیں ان سب میں زیادہ سبل الماخذ و حباج تھانیف امام غزائے کی ہیں بھر ان میں رسالہ حباج تھانیف امام غزائے کی ہیں بھر ان میں رسالہ حباج تھانیف امام غزائے کی ہیں بھر ان میں رسالہ حباج تھانیف امام غزائے کی ہیں بھر ان میں رسالہ حباج تھانیف امام غزائے کی ہیں بھر ان میں رسالہ حباج تھانیف امام غزائے کی ہیں بھر ان میں رسالہ حباج تھانیف امام غزائے کی ہیں بھر ان میں سے ا

کی دج سے محتان مقا ترج کہ آردوکا ہوکہ ہمانے ملک کی عام زبان ہے ، اس لئے میری تمنّا تھی کہ اس کا اردو ترج ہو جائے ، اللہ تعالی حبزائے خیر نے ہما ہے مولانا محد عاشِق اللی سمّہ اللہ تعالی کو کہ اس کام کو نہایت خوبی کے ساتھ انجام دیا میں نے بعض بعنی مقامات اس کے دیکھے ترجہ بہت ہی پہند آیا معنی خین اور نشاط انگینز اور اگر زیادہ فرصت ہوتی تو نوبی کے ساتھ اس کے دیکھے کا مشتاق سمّا اللہ تعالی اس کو نافع اور مقبول بنا ہے ۔ امریان

" الشرف على "



دِسْنمانلوالِیَّ خِنْ الِیَّ خِنْ الِیَّ خِنْدِ اعمال ظاہری سے دکن اصول ہیں پہلی مسل نمساز کا بسیان

حق تعالی فرماتا ہے کہ " میری یاد کے لئے نماز قائم کرو " اور جناب رسول الشرحلی و سلم فرماتے ہیں " نماز دین کا سون ہے " خوب سم لوکت مناز میں اپنے پروردگار سے باتیں کرتے ہول نماز دیکھ لیا کروکہ نماز کسی پڑھ ہے ہوا ورج نکی اللہ پاک نے اقام صلوۃ معنی نماز کے درست کرنے کا حکم فرمایا ہے جس کا مطلب یہ ہے کہ نماز اور نماز سے متعلق تمام ضرور توں کی پوری دعا بیت کرول نماز میں ان تینول الول کا اور الحاظ رکھنا چاہئے ۔

بیراً ول برنمانے پہلے وضوی تکہداشت کردادراس کا طریقہ بیرے کر دفویں جس قدرستیں اورستجات ہیں ان کو بجالا داور عضوکے بیرے کر دفویں جس

ہے بیبقی ضعیف ۔ ابونعیم مرسل ۔ ابن چرکہتے بگی اس کے سب دا دی ثقہ ہیں اور مبہت طریقوں سے ہے ۱۲

کے دقت وہ و ما پڑھو جو مدیث یں آئی ہے اوراس کے ساتھے کیاول

له مين وفويها ٱللهُمُدَ إِنَّ أَكُونُهُ بِكَ مِنْ هَمَنَاتِ الشَّيَاطِيْنِ وَ أَكُونُهُ بِكَ رَبُّ أَنْ يَحْضُ وُنِهِ وَالْمُاسِمُ الْمِنْ الْمِنْ الْمِنْ الْمُعَامِون شِطاؤن كي كوك سالساك ياه المكتابول اس ساكر ده غيرب ياس آنگ ١١٠) يواه ك بشمراللوالتَّ حْمْنِ التَّحِيْمِ يُرْه -اس كربعد الته دهوت وقت ٱللهُمَدَ إِنَّ ٱسْتَلَكَ الْهُنَّ وَالْبَرْكَةَ وَاعْدُبِكَ مِنَ الشُّومِ وَالْهَلَاكَةِ دك الشرش أب مصوال كرما يول سعادت اور مركت كالدرياه ما تكايون خوست اور بلاكت معه اوركل كرت وقت اللهماعِتِي عَل سِلاَ وَوَكِتَا بِكَ وَكُل أَوْمَ المَّذِيْكُمِ اللَّهُ وَالنَّشُكُي لَكَ مِ الدائد بِهِ إِنِي لَآبِ فَا وَتَ اورُ لَو يَحَلَى كُرْتُ يرام ودي ٧) ناك ي ياني و التروقت اللهمد أي في زا في مدة البدّنة والنت عَيْنُ وَا مِن الله يع مِنت كَا وَثُورُ سُنكُما يَهِ اودا يَعِمَ عَ وَثُروي الك منتخذك وقت اَللْهُمَّدُّ إِنَّ أَعُودُ بِيكَ مِنْ رَوَائِعِ النَّارِ وَمِنْ مُوْعِاللَّار داعالترث آب كي ياه طلب كرتا بول دورة كي إو اوراس بيد مرد عمر م دحوت وقت اللهمدُ فَقِفْ دَجْعِيٰ يَوْمَ تَلْيَكُ وُجُوْمُ اَوْلِيَا يَكُ وَكُوْمُ الْوَلِيَا يَكُ وَلَاثَنَوْ وَجُعِيْ يَوْمِ تَسُود دُمُجُوْهُ أَعْدَ الْحِلةَ (العاليَّص وناكب كرويتول ك يېرے فدانى بول مرع برے كرى فولانكي اورس دن كي كو تمون كيرے ياه كخ بالي ميرايمومياه مذكيف وابهنا التحين تك دهوت وقت الكثية أعطين كتابة يسخين وحاسني حسابانيديرك ولاالالالا دابين المريك اوديراح بابلكين اوربايال المدوعوة وقت ٱللَّهُمَّ اتِّخَاتُونُونِكَ ٱنْأُتَّخِلِينِي كِتَانٍ بِيهَالِنَا ٱوْمِنْ تَكَامِطُهُمِى * (ماتى ماشيرو في أكنوه)

كااوروضوك يانى كاخيال ركموكدونول باك بول الميكن اس مي اشت

(بقيعاشيم خرگذشتر)

دك الشيم اس سرآب كا بناه جا بها يون كدآب ميرا اعمال نامد بأي بانتي يا بيته ع عدي ، سركاس كرت وقت اللهدة المعتلى من المن ين كيتوف الْمَوْلُ نَيْثَةِ مُونَ اَحْسَنَهُ * اَللَّهُمُّ الشَّمِعُينُ مُنَادِيُ الْجَنَّاةِ مُ اَلْاَبْلُ دیے اللہ مجان وگوں میں ہے کو بیٹے ہائے استواجی کی پردی کم لیے ہیں ۔ اے اللہ مِحْنِحُوں كے ما تعجنت كى مناوى مُمنائيے ، گردان كامسے كرتے وقت ٱلْلَّهُمَّ فَافِ رَضِيَقِ مِنَ السَّارِوَاعُوْد بِلِكُ مِنَ السَّلَاسِلِ وَالْاعْلَالِ (ك السُّهُ میری گون کو دون ف سے آزادی دائے۔ اور میں آپ کی پناہ مانگتا ہوں آخیروں اور لوقوں ہے) وا ہنایا وُں دھوتے وقت اُلَّهُمَّ تَیْتُ تَکَمِی عَلَیْ صِمَّا طِلْكَ الْمُسْتَقِيْدِةُ ولِعَالِدُ إمرِعَ مَم كُولِنِ مِيعِ وَالْحَرِثَابِ وَكُفٍّ) بايال ياؤں رصے وقت اللهد الما الحذباث انتنالَ مَدنَى عَلَى الْظِيمُ الْحِ يَوْمَ مْنِ لَا أَتْدُامُ الْمُنَافِقِيْنَ فِي النَّارِ ولِعالله إلى أَبِي بِناهِ عِلْهِ ہوں اس سے کرمیرا قدم کی صواط بھیل جامے میں دن کرمنا فقوں کے قدم اگر جی كِصِل بادِيكًى اوروضوك بعدكم عديوكريدوعا يرسع مأشَّه كُوان لَّا إِلْ إِلَّاللَّهُ وَحَدَهُ لَا شَي مُلِكَ لَ لَ كَا أَشْهَدُ أَنَّهُ مُ كَا أَنْهُ مُ كَا لَكُ مُ كَا وَرَحُولُ وَمُعْجَانِكَ اللَّهُ قَدْ بِحَنْدِكُ الْهُ إِلَّا أَنْتَ عَمِلْتُ سُوْءٌ وَظَلَمْتُ لَمَنِي ٱسْتَغَمِّرُاكَ وَٱلْوُبُ الْيَاكَ الْمَاعِمُ الْمُعْلِمُ رَيْنِ عَلَى ٓ إِنَّاكَ ٱنْتَ التَّوَّاكِ الرَّحِيدُ أَهُ ٱللَّهُ مَّ الْحُدَاجُعَلُونُ مِنَ التَّوَّابِيْنَ مَاجُعَلُيْنَ مِنَ الْمُكَلِّيِينَ وَاجْعَلُوْنَ مِنْ عِبَادِكَ (ما في حاشير بمعقمة منده)

میالغرن کرد کرد مواس تک نوبت بینچ جائے کیونکریہ و مورٹیطانی ہے۔ اورشیطان اکثر عبادت کیجالے ٹیک بندوں کے اوقات شش و پہنچ میں صائع کر تاہے ۔

ی میں اس مراہے۔ وضوکرنے اورکڑول کی طہار میں ایک عجیب حکمت میں ایک عجیب حکمت ہے جیبے اندر کا جلکا اور قلب کی مثال اس ہے جیبے اندر کی کم کا اور خاتم کی اور خاتم کا اور خاتم کی کہ کا دون خاتم کا دون اس کے کہ کا دون کا دون

(بقيرما شيمنح گذشتر)

 اسى طرح اس ظاہرى ياكى سے بھى قلب كا ياك بونا اور فورانى بنانا مقعودے ۔ شایر تم کوشیر ہو کراے کے دھونے سے قلب کس طرح ياك بوستياب لبذا محداد كن تعالى فامراد الماطن ياك الساغام تحلق ركعابي عبى كى وجرميطا بري طبارت كأاثر باطنى طبات تك فرور ينجيا ب - جنائي جب جاسد ديكه لوكرجب تم وهوكرك كمرا بوثة بوثولي قليس أسي صفائي اورانشراح بإت بوجو وضوسے پہلے برتھی اور فا ہرہے کہ یہ وضحتی کا اثر ہے جو بدل سے آگے بره کرول تک بینجاہے۔

دوم برنماز كجملاكان فوا منتي بول ياستجات اودذكر

اكرجهاس كاسراركونتم الهياتسني سبكو ايغاية والا مراداكروا وريادركموكرس طرح بدن كى ظاهرى طبارت في قلب كى باطی صفائی آثردکھا یا تھا ای طرح بلداس سے بی زیادہ خانے ار کان کا اثر قلب یہ اور اور این سیدا ہوتی ہے اور سرار مرين كود واسيف مرور نف بوتاب اگرچ وه دواك اجزار كى تاثيون ب واقت مربوای طرح تم کونمائے کے ادکان ادا کھنے سے خرودفع پہنچے الرحم الرحمين اس كامرارور وزع واففيت نرو.

مازى روح اوريدك حاناجات كمازى روح اوريدك حق تعالى في مازى وكالمديد اوردون مرحت فرمائى برحيناني نمازكى دوح تونيت اورمضوقل له مين برامقىد كو يخطا بري ياك بى مقود بويسا كرثري كي براد. ك كلن يا فرصت

اورقیام وقعود نماز کا برن ہے اور رکوع و سجود نماز کا سراور ہا تھا آگ ہیں اور جس قدراذ کار وتسبیحات نماز ہیں ہیں وہ نماز کے آکھ کان وقیح ہیں اوراذ کاروتسبیحات کے معنی کو بھیا آکھ کی بنیائی اور کانوں کی توت سماعت وغیرہ ہے اور نماز کے تمام ارکان کو اطبینان اوٹوٹوع وخضوص کے ساتھ اواکرنا نماز کاحس بعنی بدن کاسٹرول اور دنگ و روغن کا درست ہوناہے .

الغرض اسطرح برنما زكح اجزاراودادكان كوبحضور قلسطيرا كمين مے نماز کی ایک حسین و جیل اور بیاری صورت بیدا ہوجاتی ہے ۔ اور نازمي جوتقب نمازى كوى تعالى سيماصل بوتلياس كمثال اليي بجعومي كوئ مندمت كارليغ باوشاه كى ضرمت بي كوئى خولمورت كنظمدية بيش كري اوراس وقت اس كوبا دشاه بقرب ماصل مو یں اگر تباری نماز میں فلوص نہیں ہے تو گویا مردہ اور بے جان کنیے بادشاہ کی نزرکریسے ہواورطاہرے کہ یہ ایک اسی گستاخی وہے باکی ہم کہ اليباگسّاخ شخص اگرِقتل كرديا جائے توعجب بہيں ۔ اوراگرنسازي آيوع وسیدہ نہیں ہے توگویاں کوسی اور ایا بھے لونڈی نزر کرتے ہو، ا دراگر ذکر و تسیح اس مین نهیں ہے توگو یا لونڈی کے انکھکان نہیں یں ،اوراگرسب کھ موجود ہے مگر ذکر تسییج کے حتی نہیں سمے اور مزدل متوجر بواتوابسائ جيبا ككنيزك اعضار توسي موجد مي كيكن ان من س حركت بالكل نهين تعنى حلقر عيثم موجود وكرسنيائي نهيس ب اوركان واجدي مگرببری ہے کرمنائی نہیں دیتا ۔ ہاتھ یاؤں ہیں مگر شل اور بے سہیا۔

ابتم خور مجے سکتے ہوکہ اندھی ہمری کنیزشاہی نزدانہ میں قبول ہوستی ہوا ہیں؟ شایر نہیں پرشبہ ہوکہ " جب نماز کے فرض اور واجب ادا کرفیئے جاتے ہیں تو علمائے متر بعیت اس نماز کے میچ ہوجائے کا فوی فیتے ہیں۔ خواہ معنی مجھے ہوں یا نہ مجھے ہوں ، اور جب نماز تصبح ہوگئی توجو مقصود تھا وہ حاصل ہوگیا ، اس مے معلوم ہوا کہ معنیٰ کاسم جنا نماز میں ضروری نہیں ہے ہے

لېدائىجەلوكى مىلىلى مىلىلى جاپسى گركونى لەندى اياسى، دوكىيى بى عيب داركيوں نرمواكراس ميں روح موجود سے توطبيب اس

کودی کرم رود بر کے گاکہ بر زندہ ہم ہردہ نہیں ہے۔

ہلا مضور قل والی نمازی ہے تھے ہے

ہلا مضور قل والی نمازی ہے تھے ہے

علمار کا فتوی اور شب کا بوائی افتی دیری گر کم نادھ ہے۔

اور فاسر نہیں ہے ۔ ایس صورت میں طبیب نے اور عالم نے اپنی نصب

کو ان ہو کے کہ اور شی کہ اسے مگر نماز قوش ہی نزرانہ اور سلطانی تقرب

ماصل ہونے کی حالت ہے اور اتناتم نور سمج سے ہو کہ عیب دارکنزا گرجز زندہ

ماصل ہونے کی حالت ہے اور اتناتم نور سمج سے ہو کہ عیب دارکنزا گرجز زندہ

ہی کرسلطانی نذرانہ میں بیش کرنے کے قابل نہیں ہے بلک ایس کنز کا تھے نہیں کرنا گستا تی ہے اور شاہی عتاب کا موجب ہے اسی طرح اگرنا تھی کے ذریعہ ہے اللہ کا تقرب چاہو گے تو عجب نہیں کہ پھٹے پرانے کی اسے کی طرح اگرنا تھی کہ دریعہ ہے اور شاہی عتاب کا موجب ہے اسی طرح اگرنا تھی کے ذریعہ ہے اللہ کا تقرب چاہو گے تو عجب نہیں کہ پھٹے پرانے کی اسے کا دریدے اللہ کا تقرب چاہو گے تو عجب نہیں کہ پھٹے پرانے کی پارے کی طرح کو تا ورمند پر بھین کہ اری جائے۔

الغرض نمازي مقعود وكريق تعالى كالعظيم بدانانك

ل يمضون طرانى كدوايت كاس ومعيد مرضنا كل مي معترب ١١١

منن اودستبات وآداب س جس قدریمی کم ہوگ اسی قدراست رام و متعظیم میں کوتا ہی مجھی جاسے گی ۔

له دل كامتوجهونا ١١ ك الشبرة سيبت برا بدا

کے ہم آپ بی کی عبادت کرتے ہیں اور آپ ہی سے مدد مشکتے ہیں۔ ا

كه ابن المبارك في عمار سي روايت كياب فيرعقل موسف كى وجر سعويث كه دوي إلى

المقضين تمكوبهت دشوارى مولم موكى ليكن عادت والوكع تورفته دفته ضرورعادت بوجائے ، اس اے اس کی طرف توج کرو ۔ اوراس توج كالمسترابستر مرهاد ، مشلًا أكرتم كوما رفري يرصف بن وديجولال مين حضور قلب كن قدر ما سروا ؟ فرض كروكم سارى نماز من دوركعت کی برابرتودل کو توحت، دی اور دورکوت کے برابرغنلت ری توان دوركعتون كونمانس شارى فركروا وراتى نقليس يرحوك جنيس دو دكعت كع بوابرحنورةلب حاصل بوجائد يغض عبى خفلت زياده بو اسى قدرنفلول مين زيادتى كروحتى كراكروس نفلول مين بيارفض يحقول كالتضودةلب يودا بوجائد تواميدكروكهن تعالى لينضن وكرم سے فرائف کا نقصان ان نفلول سے پورا فراہے گا اور اس کی کی کا تدارك نوافل مصنظور فرملك كا



زكوة مصرقها ورخيرات كابياك

سی تعدالی شانهٔ فزماتا ہے کہ جولوگ اپنامال اللہ کی راہ می فریج کرتے ہیں ان کی مثال اس داند کی طرح ہے جس میں سات بالیں ہول کہ ہر بال میں سود انے اور حباب رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا ہے کہ سینجوں نے اپنامال دو ہتر سم و کھر کر راوخوا میں لٹایا ہے وہی ہلاکت سے سنجات یا تیں سے ج

ے جات یا یا ہے۔

پونکو صدقات وخیرات ہی خلوق کی ضرورتیں اور مخابوں کا قے
دفع ہوتے ہیں اس سے بیعی دین کا ایک ستون ہے۔ اوراس میں یہ

حکمت ہے کہ چونکوخلوق کو اللہ سے بحبت رکھنے کا حکم ہے اور مسلمان

بندے خواکی مجبت کا دعویٰ بھی کرتے ہیں ابذا اللہ پاک نے مال فرب

کرنے کو اپنی مجتت کا معیار اورا کہ مائش کی کسوٹی بنا دیا ہے تاکہ دعیان

ایمان کے دعوے کا حبوث ہے کھل جائے۔ کیونکہ عام قاعدہ ہے کہ

انسان لینے اس مجوب کے نام رجس کی مجت دلایں زیادہ ہوتی ہے ابنی تام

مرغوب اور بیاری چیزیں لٹا دیا کرتا ہے۔ یس مال جیسی پیاری جیسے نرکا

مرغوب اور بیاری چیزی لٹا دیا کرتا ہے۔ یس مال جیسی پیاری جیسے نرکا

مرغوب اور بیادی چیزی لٹا دیا کرتا ہے۔ یس مال جیسی پیاری جیسے نرکا

مرغوب اور بیادی جیزی لٹا دیا کرتا ہے۔ یس مال جیسی پیاری جیسے نرکا

مرغوب اور بیادی جیزی لٹا دیا کرتا ہے۔ یس مال جیسی پیاری جیسے نرکا

کی علامت ہے اور کل کرنا خدائی محبت نہونے کی دلیل ہے ۔ صدقہ وخیات دینے والے سلمان بین طرح کے ہیں ۔

ایک تو وه بی بخصول نے کو کہ بی بااس راه خدا میں دے دیا اور خدا کے ماہ بحب کرنے کا دی کی کہ بی بااس کرنے کا دی کی بی کرد کھایا مثلاً حضرت میں اللہ علی وہی اللہ عذا ہو کہ بی بی کھریں مقاانہوں نے سب آنحضرت می اللہ علیہ وہ کے اس موقع پر صفرت صفرت فاردی ہے تو اور ان سے بھی جناب دسول اللہ می اللہ علیہ وہ کے علیہ وہ کے کیار کھا ہی تقوانہوں میں بی موقع پر صفرت فاردی ہے تھے اور ان سے بھی جناب دسول اللہ میں اللہ علیہ وہ کے عزم نے بینے لئے کیار کھا ہی تقوانہوں میں موقع کے کیار کھا ہی تقوانہوں میں موقع کے اس دی سے جناب دسول اللہ میں اللہ علیہ وہ کے فرما یا کہ "تم دونوں کے مرتبر کا فرق جناب دسول اللہ میں اللہ علیہ وہ کے فرما یا کہ "تم دونوں کے مرتبر کا فرق تم دونوں کے مواب سے ظاہر ہے تھے ،

خیرات کامتوسط درجیر ایس المال توفدا کنام نیس الت مراس کامتوسط ورجیر ایس الت مراس کامتوسط کردید مراس کے ساتھ ہی اورجی کے منتقریعے ہی اورجی وقت بلائمان میدوں کے منتقریعے ہی اورجی وقت

ہے کہا والدولیا ہواد ولول تصرت او کویٹ کے لقب بڑیا کہ پچے اور دولتے سے آذا دیے ہوئے تھے ہو کے صفرت کوٹ کری اور باطل میں توب فرق کرنے والے تھے سے پیضوں دوموٹیوں کا ایک کودیا گیا اول کوٹروزی توسیح کہا اور دوم کو الجافیم نے مرسل وجید بیان کیا ہے۔

کوئی مصرف پاتیاکسی کومتاح دیجے ہیں توبے دویغ مال خرچ کوالے ہے ہیں یہ لوگ اپنے کا کوئی سے مقاد خرض پری اکتفاز ہیں کرتے بلکسانے کو خدا ہی کے لئے خرچ کرنے کی سے البتہ موقع محل کا انتظار ہو۔
کی غرض اس کو داو خدا ہی میں خرچ کرنے کی ہے البتہ موقع محل کا انتظار ہو۔
تغییرات کا اونی ورجیم کو قامیہ ہی کے ادا ہونے کو فنیت تعیم کے ادا ہونے کو فنیت محمیعة ہیں کہ اگر اس سے زیادہ خیرات نہیں کرتے قومقدار واحب ہیں جہ معرفی میں ہیں کرتے تو مقدار واحب ہیں جہ معرفی میں ہیں کرتے ہیں کرتے کے معرفی میں کرتے ۔

ان تینو آگرد بول کے مرتبول کا فرق اور حق تعالی کے ساتھ مجت کی مقداران کے خریج کی حالت سے فود ہی مجھ لوکرس اگرتم پہلے اور دوسر کے درجہ تک مذہبے سکو قوم از کم تیسرے درجہ سے بڑھ کرمتوسط افکوں کا دنی درجہ تک پہنچے کی کوشش تو ضرور کر وکہ مقدار واجب کے علاوہ روزانہ کھیے نہ کھے صدقہ کر دیا کر واگر چردوٹی کا ذراسا ٹکڑا اس کیوں نہو، بس اگر الیا کروگے تو بخیلوں کے طبقہ سے اور چراھ صاف کے۔

الیا اروئے و بیوں نے طبعہ ہے اوپر پڑھ ماوے ۔ مُفلس مسلمانوں کی خیرات محمد اس مسلمانوں کی خیرات ہے اور ہم اس سے معدور ہیں ۔ نہیں بلکہ اپنی عزّت وجاہ 'آرام وآسات قول ونعل غرض جس پر بھی تم کو قدرت ہواس کواللہ کے نام پر خرب کرو۔ مثلاً ہمیار کا ایو چھنا ، جنازہ کے ساتھ جا نا اور ماجت کے وقت محتاج کی

ل ستى ، يوق خرج ١١ ك بغيرانسوس ك ١١ كه دانه ١١

امدادکردینا مثلاً کسی مزدودکا بوجه جالینا ، یاسهادالگادینا ، یاستی ومفاکر سے کسی کا کام نکلوا دیناا ورنیک بات که ناھی ہمت بندھانا ڈھادس دلانا وغیرہ برسب امواد صدقری میں شار ہوتے ہیں اور پر ایسے صدقات ہیں جن کے لئے مالدار ہونے کی خرورت نہیں ہے ۔

رکوہ وصرفات می پائی باتول کا ذیا دہ خیال دکھنا جاہتے۔
صرفر کو چھیا نے کی صلحت ایکی دیار دوہ لاکوں ایکی دیار دوہ لاکوں ایکی حصورت کی مسلمت ایکی دیار خیر کردے کو بھی اتاہے ۔ اور وسلما این دائیں ہاتھ کو بھی خبر ہو تو دائیں ہاتھ کو بھی خبر ہو تو دہ ان ساب بندوں کے ساتھ می ویکی تابی ہوتا ہیں سابہ بندوں کے ساتھ می ایکی سابہ بندوں کے سابھ کے سابھ کے سابھ کے سابھ کی سابہ بندوں کا ۔
دن سابہ فر من کا جب کراس کے سابھ کے سوائیس سابہ بنہوگا ۔

زبرلي قوت اورزياده بوگئ كيونتر خل كامنشار يودا بوا توبجيو كازود برسط كاوردياكا منشار وابواتوسان كازورزياده بوكا . اصان جتائے كاامتحان الدوم في جي خيرات وياكرواس پر احسان سمجوا ورأس كي شناحب يسك مثلاً تم ني محتاج كوخيرات كعطور ركي ديا وراس سيتحرك ذاي كُ تُو قِع رُحى يا مثلاً ومتباك مله بير لوك سربين أيا تمها الم ورثن كساه ميت كرف لكا قوتم كواس قدرنا كواد كذراكه أكرص دفريف يبيليبي صورت بین آتی تولینیاً اتنا تا گوار نگذر تا تواس سے صاف خا بروا كرتم نے اس محتاج پر این احسان مجع اجھی تواس برسلوکی میاتنا للیش آیا ر مرض کالی اس کا علاج یا ب کرتم اس تحال کو اس مرس کالی اس مرسم مرس در مرسون و اینامس مجورض فے تم سے صدقہ كامال ليبخرتم كوئق خواوندى سے مبكروش كرويا اور تمها ليے موت خل كا طبيب بن گيا بكونكر تهين علوم بويكاب كرزكوة وخيرات ميقفود كل کا دورکرناہے ،پس سال زکاۃ کو یا بخل کا دھوون ہوایہی وجہ ہے کہ جناب رسول الشرصل الشعليروكم زكوة وصدقه كا مال <u>لين</u>خرج ميش مذ لاتے اور فرا یا کہتے تھے کہ یہ مال کائیل ہے توجی مسامان نے تما دے مال کامیل ایکتم یں اور تمبا سے مال کو یاک وصاف بناوا تومعلابتا وكداس كاتم يراصيان بوايا تهاداس يراحيان بوابمبسلا اگر کوئ حرّاح معت فصد تھول کرتمہادا وہ ناقص خون نکالیے ہوتمہاری دنوی زندگی کے لئے مفرے وکیا تماس کواپامحن نہیں سمجتے ؟اس

طرح ہوشف قلب سے بل کے فاسد اوہ کو کرس کے ضرر کا حیات اخردی میں اندلیشہ ہے بلامعا وضیائے ہوئے مفت نکال نے تواس کوبدریم اولی این محن وخر نوا میمنا میاستے۔

تیس می بات یہ کر تعدہ اور پاکیزہ مال فران کو کہ ج چزتہ ہیں ناپسند ہواس کا اللہ کے نام پونیا کیے مناسب ہوسکتا ہے مُن ہی چکے ہوکہ اس سے مقصود دعوارے میت فدا وندی کا امتحال ہے ہی جگے بُری یا جلی چیزاللہ پاک کے نام پرخیرات کروگے اس سے فرح لوم ہوجائے گاکتہ ہیں اللہ کے ساتھ کوس قدر محبت ہے ۔

مرا میں ہوتا ہے ہے۔ کہ تمہیں ہو کی دینا ہوسٹاش بٹیاش اورخندہ کے دینا ہوسٹاش بٹیاش اورخندہ کو ہوکی دینا ہوسٹاش بٹیاش اورخندہ کہ دیموں الشرصی الشرعلیہ وسلمنے فرا گیا ہے کہ ایک درہم کے جوایک ہے کہ نیک بندی ہے کہ جوایک ہے کہ نیک بندی ہے اس کا مطلب یہ ہے کہ جوایک ہے ہے کہ بندی ہے کہ جوایک ہے ہے کہ بندی ہے کہ بندی ہے کہ بندی ہے نیک ہے ساتھ دینے کے بن یہ دینے کے بن یہ دینے کے بن یہ دینے کہ بن یہ دینے کے بن یہ دینے کہ دینے کے دینے کی کے دینے کے

یان چوبی بات یہ کرصد قرکے لئے ممل ومعرف عدہ تلاش کیا کرونینی یا مسی پر بہر گارعالم کودیا کروکہ تمہارا مال کھانے ہے اسس کو له فوش خوش ۱۲

تے نسائی ۱۰ بن خزیر ۱۰ بن حبان اور حاکم نے مسلمی ٹرط پرسی جا یا ہے ۱۲ حد نیکن اس کا مطلب پر پیمجو کم جب تک ناگواری دل سے نہ تکے خیرات ندی جائے کیو بحد ابتداریس ناگواری خروری ہوتی ہے ایسے وقت ہی اس ناگواری چیل نہ کرنا اور الشکی واہ یس اپنی طبیعت پرزور ڈال کمر دیدینا پر بھی امٹی درج کامجا ہوہ اور بہت کاکام ہجا و دمجا ہو ہونے کی وجرسے امید ہے کڑو داس میں تواب بڑھ جائے۔ ۱۲ الشرتف الى اطاعت اورتقوى پرتوت اورا عانت كال ہو ياكى عيالاً نيك بخت سلمان كودوا وراگريتم ام وصاف ايك فض يرج نهوں تو جسي ايك وصف بحي يا يا جائے وہ بحي تها راصدة باك ہو بعانے كے مثن ايك وصف بحي يا يا جائے وہ بحي تها راصدة باك ہو بعانے كامال لئے كافى ہے البتہ نيك بحق كالحا فاسب سے مقدم ہے كيونكرديا كامال متاع بندوں كے لئے اسى واسطوبيتا كيا گياہے كران كى آيام كذارى ہو سكے اوران چندروزہ آيام ميں آخرت كا قرش ان كو حال ہو جائے ۔ تو بحوك درصيف سنم آخرت كا قرش ان كو حال ہو جائے ۔ تو بحوك درصيف سنم آخرت ين شخول ہيں اوراس عالم فائى كوراسة بحوك درسول الشم كا الله على الكروا ورائي المروب كا مرائي كا مرائي كوراس كا مرائي كوراس كا مرائي الله على الكروا ورائي المروب وسلوك ايما نداروں كوك الله على الكروا ورائي المروب وسلوك ايما نداروں كوك الله على الكروا ورائي المروب الله مرائي كوراس مرائي كوراس كي الله كورائي كورائي كورائي كورائي كورائي كورائي كاروب كوك الكا خوال الله مول الله على كورائي الله كاروب كوك الكا خوال الله كاروب كوك الكا خوال الله كورائي كاروب كوك كا خال كاكروب كوك كا خال كورائي كاروب كوك كا خال كاكھ كا ياكروب كوك كا خال كورائي كاروب كوك كا خال كاكھ كا ياكم دوب خوال كورائي كاروب كوك كا خال كاكھ كورائي كاروب كوك كا خال كاكھ كا ياك كورائي كاروب كوك كا خال كاكھ كا ياكم دوب خوال كورائي كورائي كاروب كوك كا خال كاكھ كا ياكم دوب خوال كاكھ كورائي كورائي كورائي كورائي كاروب كورائي كورائي



مدلین میں آیاہے می تعالی فرا تاہے کہ" برزی کادی گناہے سات سوگناتک نامرُ اعمال میں ثواب مکھاجا تا ہے مگر دوزہ خاص میرا ہو اور میں خود ہی اس کا صلرہ جاہوں گادوں گا۔ اور رسول الشرسلی الشر علیہ وسلم نے فرایاہے کہ ہرشے کا ایک دروازہ ہوتا ہے اور عبادات کادروازہ دوزہ ہے۔

رون براس قدرا جروثواب كاسبب دوباتين بي:

اقدل يرب كروزه كافي بين اورمباشرت جول كالم به اورايسا پوشيده كام به اورايسا پوشيده كام به كرس برت تعالى كرسواكون اكا نهيل بوسكا، ادراس كعلاوه بين عبادتي بي منلا نماز ، تلاوت ، زكوة ، ج، يه سب السي عبادتي بين بردوسر ولك بعى واقف بوسكة بي ، بي روزه وي مسلمان ركي احب كولوكون بين ابنه عابد وزاير الم

دوسس می وجربیس کرر وزه سے دشمن خوا تعینی شیطان خلوب نه بخاری بسلم انسان کے بعثی سیاس می باید کا اور کا مناوی کا این المبادک اور کی منافی کا این المبادک اور کا مناوی به بخاری به باری ماری دان المبادک اور کا مناوی به بخاری به بخاری بان المبادک اور کا مناوی به بخاری بان کا مناوی به بخاری بان کا مناوی به بخاری به بخاری بان کا مناوی به بخاری بان کا مناوی به بخاری به بخاری بان کا مناوی به بخاری به بخاری بان کا مناوی به بخاری به بخاری به بخاری بان کا مناوی به بخاری بان کا مناوی به بخاری به

ہوتا ہے ، کیونکی قدرنفسانی خاہشیں ہیں سب پریٹ مجرنے پاینازور دکھاتی ہیں ا درشیطان انہیں خواہشات کو واسط بناکرسلمان کاشکار کرتا ہے ا ورجب روزہ کی وجہے مسلمان بعوکا رہا اورتسام خواہشیں محرور پڑکئیں توشیطان مجور لیلا وست و یا ہوگیا ، چنا نچر جنا ہے رسول اللہ علی اللہ علیہ وسلم نے فرما یا ہے کہ سماہ درمضان میں جنت کے دروانے کھول نے جاتے ہیں شیطان یا برزنجر ہوجا تا ہے ، اور ہاتف غیری کیار تا ہے کہ اس جملائی کے طلب گار و آ کے مراحواور لے بدکار وباز آئی۔

بھور کے سی کھولکر دوزہ کی تین تھمیں توکیفیت کے اعتباد سے ہی اور تین می درجے اس کی مقدار کے اعتبار سے ہی ، ادنی درجہ برہے کے صرف دمضان کے منسوض رونہے ہرسال رکھ لیاکرے

صوم دا و دی کی فضیات اعلی درجربیه به کرش طرح مفرت داؤد علالت لام روزه مکنته تھے

اسی طرح ایک دن توروزه رکھے اور دوسرے دن نرکھے بھڑسیرے دن رکھے بھڑسیرے دن رکھے اور دوسرے دن نرکھے بھڑسیرے دن مرکھے اور دورہ روزه رکھنے کی بہنبت پرمورت برنج ابہ اوراس کی وجہ یہ ہے کہ ہمیشہ روزه دکھنے سے بھوکا رہنے کی عادت ہوجاتی ہے اور عادت ہوئے بھٹے سے گیا اور علی مالانکہ روزه ہے بہی خواہشات نفسانی میں صف و کم زوری محسوس نہوگی مالانکہ روزه ہے بہی مقصود ہے ۔ دیکھوم ریش جب دواکا عادی ہوجاتا ہے تو بھرواکھے بھی مقصود ہے ۔ دیکھوم ریش جب دواکا عادی ہوجاتا ہے تو بھی دواکھے بھی مدین کا مدین اسل میں مردوں کا حدید کی مدین کا مدین کا مدین کا مدین کا مدین کا دورہ کا دورہ کا حدید کی مدین کا دورہ کی مدین کا دورہ کی دورہ کی مدین کا دورہ کی دورہ کی مدین کی دورہ کی دورہ کی مدین کی دورہ کی دورہ

ته بی رون به برگزی ۱۲ میمون مدین بیرا ته مضمون مدین بخاری وسلم ۱۲

لف میں دیتی رہی سبب سے کرمفرت عبدالٹربن عرو کے درمول اللہ صلى الله عليه وسلم سے روزہ كى بابت دريافت كيا تواكي كے فرواياكم" ايك دن روزه وكلوا ورودمر عدن كماؤسو ؟ انبول فيون كياكم الول أثم یں اس سے بھی اعلیٰ درجرجا ہتا ہوں تو آئ نے بحواب دیاکراس سے الیٰ كوئى درجببي ب - ايك مرتبر المخضرت صلى الشعليد وسلم كاطسلاع ہونی کہ فلان شخص ہمیشر روزہ رکھتا ہے توآپ نے فرما یا کہ الیمار وزہ رکھنا ىدىكىنادونون برابرس ـ

متوسط درجريب كرعركا تبانى روزهين دوشنه اورتحث مرن بوجام المذامناسب كماو میرمفان کے علاوہ ہرمفتہیں دوشنہاور ينجت نيركاروزه ركدلياكرواس صاب سال معرس جارماه اورجار وم کے روزے ہوجائی گے مگر ہونکہ عید الفطرا ورعید الفحی اور آیام تشريق مي روزه ركصناحوام ب اوزمكن سعكددونول عيدى دوشنبها بنجث نبه كوري اوراتيام تشرق ميس ايك دن قوضرورسريا جعرات کوہوگاس سنے چارمیسنے اور ایک دن کے روزے ہوجائیں گے اور باره ميلنے كے تها أى لينى چادمينے مصرف ايك دن زياده بسكا، ير تبان عراصاب فوركرف سي بآسان معمين آمام و كاس مقدار مےروزوں کا کم کرنامناسبہیں ہے ،کیونکداس میں آسانی بھی ہ اورتواب مبت زیادہ ہے۔

ا دروزه کی کیفیت کے اعتبارے ترقیمیں برای :

ایکٹ توعام روزہ ہے کہ صرف روزہ توٹسنے والی چیزوں یعنی کھانے چینے اور جہارج سے بجتے ہیں اگر چے بدن سے گناہ کئے جائیں سویہ نام ہی کاروزہ سے ۔

دوست را درجریہ ہے کہ بدن کے کسی عضو سے بی کوئی کام خلاف ترع منہو ۔ یعنی زبان غیبت سے محفوظ ہے اور اُنکھ نام م کو گری نگاہ کے

ساته دیکھنے سے بچی ہے وغیرہ وغیرہ ۔ سال فلیا موار انسان نام روز زام روز دار

مولال اورد بی غزابر کم استدان کا مندون کا اورد به فاص بندون کا به افطار کی حکم سند و کا محفوظ دستا به بعن کا محفوظ دستا به اور به بی فکر و و سواس می مخفوظ دستا به اور به بی ان کے دل میں گذر نهیں به و نے باتا یہ کمال کا درجہ بے اور بی نکاس کا حال کرنا برخص کا کا منہیں ہو نے باتا یہ کمال کا درجہ بے اور بی نکال اور پاک بهوا و رو و بھی اتنا نہ کھا دُکھی سے معدہ بھادی اور بدن کے سلند بوجا سے کم بی تافی افسار نے والوں کو دوزہ کا اتنا نفی نہیں موتا بیتنا کہ سل کے وقت کرنے لگو کیون کا ایسا نفون ہیں بہوتا بیتنا کہ سل کی وجہ سے نقصان ہوجا تا ہے ۔



 می تعدا کی فرماتاہے " لوگوں پرالٹرکے واسطے ج بیت الشفوش ہو
 حرکسی میں وہاں تک پہنچے کی طاقت ہو" اور رسول الشوطی الشولید وکل نے فرما یا ہے کہ "جوصاحبِ استطاعت سلمان بغیر ج کئے مرکبیا تو اُسے اختیار ہے کہ بہودی ہوکرمرے یا نصرانی ۔

المتيارة در المورود و من الكيمتون المراب فرح بين كالكيمتون المراب فرح بين كالكيمتون المراب فراب في المراب كالمراب كالمراب في المراب كالمراب كالمراب في المراب كالمراب كالمراب

ا داب بیان رسے صوروی بین بان کا جہد ہوت ہے۔ اقد ل یک سفرے بہد حلال زادِراه اورکوئی میک بخت ساتھ تلاک کرلو ،کیونکرملال توشر سے قلب میں نورسیدا ہوگا اور دفیق صال تم کوگنا ہوں

سے روکتا ، اورنیک کام یاددلاتاہے گا۔

تجارت کی طرف متوج بہوجانے سے زیادت حرثین ٹریفین کا ادادہ خالیں ا وریے لوٹ نرہے گا۔

ستخم راستم كمانے كے الدوسعت كروا ود دفقا مصعب اورنوكرون جاكرون اوركرابردارول كوخوش ركهوا وركس كرما تيخق سے بات نکرو بلکرنہایت خلق ومحبّت سے اور زم گفتادی سے خرم کرو۔ حِيُّهُ المرم فَضُ كُونَ اورْ عَبَكْ عاورْ فعول بكواس اور دزما كم معاملات کی باٹ بیت کو بالکل چیوٹر دوا ورخروری ماحتوں سے الع ہونے کے بعداین زبان کوتلا وت کلام الشاور ذکرالی بی شخول رکھو۔ ينجهم وشغدف باشرى يغى شاك كي سواري يرسوار نربويك باربردارى كاونت يرميحه ماؤتاكه درياريت تعالى مي يراكنده حال غاراكوده اوركينول محابول كاسى ذليل وضتره الت سعماضري بوا اس سفريس بناؤسنگارا ورزيا ده آ دام ملبي كاخيال سي نهلاؤ . شنشن کیمی کیمی سواری نے اترکریدل می بولیا کروکاس میں مواری کے مالک کا بھی دل فوش ہوگا اور مواری کوبھی ارام ملے گااؤ يرتمباك المتعديا وُل مجى حركت كرف سحيت وجالاك دين ع فقفتم وجو تحويمى اس مفريل ختم مو مواسي ياخب شم كالمجي الماقضا بالكليف يامسيب المانى بلك تواس يرتوش رموا وراس كواغ ج كيمقبول بوني كالمتسمجوا ورلين يروردكا دس تواسكا أيكو

ن کی عبادت پس موزوامراد قومبت بہی گرم مرف دوخون سیان مه معللب برسے که شان د کھانے کواپیامت کروباتی رفع کیلیف کینئے مضائد نہیں سے ۱۲ دمولان الشرف علی صاحب شعانوی)

اقل يرب كرج اس ربهانيت كا مدل ہے ہو بہلی استوں میں مانے تھی، صديث من إيها كمامت محديرى دبها نيت في تعالى في في كوبناديا ے اول بیت علیق مینی سب سیلے بنے ہومے مکان کوئی تعسالی نے مشرف عنایت کیا بعثی اس کواپئی میا نرینسوپ فرما یا اورسیت الشرنام رکھ دیا کھراس کے گردونواح کوخرم گردا نا۔ میدان عرفات کوحرم کانحن بنا يااوراس كاشرف اسطرح فراياكه مدوال شكادم انتسائنه عادر فت كالناحلال يويفا بربي كرحق تعالى شانة مكان مع منزّه بعاورهم یاسکان کامخاج نہیں ہے وہ سب کومعطے اور اسے کوئی بھراحاط مین میں ہے سکتی یں اس نے خانہ کو کواپی جانب سوب کیا اور اس كے طواف كالوگوں كو حكم ديا تواس ميں حكمت يرب كربندول في ال كا اظهارا وران كى بندگى كا استحان بوجائ اور فراب بردار فلام ليفاقا کے دربادی دورددازم کون سے بالقصد زیادت کرنے کو واق در جون اليى حالت س آئي كربال كيمر بور مور والاود مول منابى سيبت وجلال مصراسيروريشان حال بوسط مرفع يا دُن مسكين ومخاح بين بوت بول اوداس معلمت ساس عبادت يحب قديعى اعمال واركان مقرر كف محتمين ووسب بعيداز عقل بي تأكر ايياعال كاداكرنامف ت تعالى كيم كتعبل محكر والكوفي طبى نوامِن ياعقلى محكت كااتباع اس كاباعثُ زمو، جِنائجِه أنحفرت صلى التُرقليروكم في فروايا تهاكه بارالها م إنى عبوديت وعلامى كا

اظهاركم في كوعبادت تقدّ ليني ج مس ما عربي

ارکان مج کی مشروعیت المال مراخرت کی سے در مقدود كادوكسيرا راز ؛؛ ايب كرمجاج كواعمال ج اداكرن سے مرنے کا وقت ا ورمرنے کے بعد پیش آنے والے واقعیاست یاد آحائیں، مٹلاً شروع مغریں بال ہج رہے رخصت ہوتے وقت کرات موت کے وقت اہل وعمال سے رفصت ہونے کو باد کروا وروان سی شكتے وقت دنرا سے حدا ہونے كو اورسوارى كے جانوروں يرمواريوتے وقت جنا زه کی میاریانی پرسوار مونے کو یاد کرو ۔ احرام کا سفیدکیڑا يينة وقت كفن من ليلنه كويادكروا وتصيرميقات ج كك يعيير ينظم بيابان قط كرتے وقت الى دِثُوالگذارگعائی كے قطح كرنے كو بادكر وَتُودْنا ہے بالمركك كرميقات قيامت تكعالم مؤن يعنى قبرس تم كوكانني بي ، دامة مين والبرنول كربول ويراس كروقت فنح كحيركم والأساوراس كيي مي والمهاس كاخيال كرويكى درندول مقبرك سانب بخيوكيرول كورو وكويادكروا ور ميدان مي دشته دارول اورع يزواقارب معليمدة تن تنباره بعاز كوقت قبرك تنهائى اوروحشت كويادكروا ورص وقت يخ عيخ كركبيك اللفهمكييث يرطوقونده موف اورقبرول سائطف كروقت كماس واكومادكروج تقتعالى مدا كے وقت ميدان تشري ما صرى كے اعتم عض كرو كے بوض الى طرح بجول بي ايك عبرت اورمعا لما آخرت كى يادد كانى يحس ميرخص جِن قدرَ بَحِي اَسَ بَلِ قَلْب كَي صفائق اوردين كي خرود يات كي خيال ركھنے كى وجر سے استعداد بوكى أكابى حال كرسكتاہے .



سول التصلى الشعليدة كلفرط تنهي كمميرى الشعادة المراشد كالم الشر ك الوت يد ورية قدى بن إيد كرى تعالى فراتا يكر سجوبو قرآن شربيب كى تلاوت مين شنول بوكر دعانهيں مأنگ سكا مين أسس كو بي ما تكي اتنادول كاكم ما تكفي والولكواتنا ندوول كا ي الاوت قرآن شراف کے طاہری آداب تین ہیں: تلاوت كائيبلاظامري أدَبُ الشرى الله على الله عل ظامركوباطن تك الرمينياني ميسبت دخل ساس لع مباظامرى مورت احترام كي پيداكي مارے كى تو تلب ين بنى احترام پيدا ہو جائيگا اونظام ری احترام کی صورت یہ ہے کہ وضو کر کے نہایت کو ن کے ماتھ رد جمكار بورة قبله كاطف مذكرك دوزا فالمت المرح يتضوعي استاد کے سامنے ہیں اور تجو بد کے موافق حروث قرآ نیرکومخاںج سے نکالوا ور ا یک حرف کودوسرے سے علیمدہ علیمدہ تھیر تھیر کر تلاوت کرو۔ له تروزی عس غرب ۱۲

حض^لِث ابن عباسسِنُ فرطتے ہیں کہ اگر مَیں سورہَ اِنّا اَمُنَ لُنَا اور اَلْفَادِعَةُ مِعِنی چوٹی سورتیں سوچ کرتا وت کروں تواس سے زیادیم تر سمجتنا ہوں کہ سورہ بقرہ اوراً ل عمران فرقر ٹرصہا دُل ۔

حقّم كمبى كمبى تلاوت كى ففيلت كانتها في دوست ادب درد مل كي الثوق تم بي كياكرو بموجع تم آخرت کی تجادت کے لئے دنیا میں آئے ہو۔ اس لئے جہاب تک مکن بوزياده نفح كملن ككوشش كرو . يول تو لاوت كلام التدسيكسي الم مجى كيوں نهوخوا ، ييٹھ ہو ياليے ہو ، با وضو ہو يابے وضو اورخلوت ہي ہو یا جلوت میں بہر مال نفع ہی نفع ہے ۔ مگر مرانف اس میں سے کوٹ کے وقت مسجد میں بحالت نمیا زکلام اللہ بیاصو بہنرت علی کرم اللہ وحریہ فراتے ہیں کہوشف نما زمیں تھڑ ہے ہو کر قرآن تریف بڑھے گا اس کو ہر حرف کے بدلے مونیکیاں لمیں گی ،اور نماز میں بیٹھ کر قرآن شریعت پڑھنے والے كوي اس نيكياں ، اور نماز كے سوا دوسرى حالت بي با وضو تلاوت كرنے والے كوئيس اوربلا وضودس فيكمال لميں كى " ابتم ي موجي كرموداً كوئوليا ﴿ نفع کی وص کیول نرک جاسے ۔

که مغمون عبدالراق ۱۱ که فرفر رسخی کی وجرسے الفاظ میں بھی بنائیں گے اول کا کا بداوی ہونا نظام رہے باتی اگر کوئی شخص منی نرسمجے اور صرف الفاظ قرآن ہی سحیح اور صرف الفاظ قرآن ہی سحیح اور صرف الفاظ قرآن ہی سحیح اور صاف اوا کرے تو ہے اجرو تواب سے ضائی نہیں ۔ ۱۲

عه تقریبی مضمون دملی ۱۲

مرميينيي ايك مرتبرختم كروا وداعلى ودجه يرسي كمتين دن مين ختم كروك مهنيموس دس ختم مول اور متوسط درجربر سي كمررمفته يودا قرآن شرلين ختم كراباكرو . تين دن سے كميں كلام محيد خم كرنام كروه ب كيونك مجد نسك كك اور المتصير صناكستاني بيرب بينمجوكرجب تلاوت كلام الشرنافع بي تو حس قدر مبی تلاوت زیاده موگی اسی قدر ثواب زیاده موگا دیتمها دافیان غلط سے مندا کے مصید کاسمینا انبیا ملیم السّلام ہی کا کام ہے ہیں حب رسول الدُّصلى الله عليه وسلم فروا يجيم بن كتين دن سيم من فتم مستحيث بي بية وتم كوحضرت صلى الله عليه وسلم كااتباع لازم بع ، اورايي رام عكودك دینا کم مجی اورجہالت ہے ۔ بنا کچرتم دیمقے موکد دوا بیا رکف دی ہے ىكن الرطبيب كى تىلائى بوئى مقدار سے زياده دو گے تورى دوران مے كا يا احيا بوجائي كا به اسى طرح نساز حالا نكرعباد تول مين آل بي مكر وه طلوع وغروب اوراستوائے أفتاب كے وقت ناجائز اور شيح وعصر کے فرضوں کے بعد مکروہ ہے۔ جب مرض ک دوامی جمانی طبیب کی بات نے بیون وح ا مان لی جاتی ہے توکیا وجہے کدوحانی علاج ا ور ردحانی طبیب کی بتلائی ہوئی دوا میں اس کی مقداد کا لحاظ نرکھاجائے اوراس كي وهافي معقل كودخل ديجرسوال كياحا مع كتين دن مى كم مين خم كرناكيون ناجاتزب

تلاوت كلام الله ك باطنى آواب ياني أن :

تلا وتكلاً الله على المالي المالي عند وجلال دلي باسى

له سین نفل ادرسنت پڑھنا مکروہ سے ۱۲ (مولانا تھانوی قدس میرہ)

طرح اس كے كلام كى يھى عفلت قلب يس بونى بياستے مثلاً جب الله كى گوناگول مخلوقات بعنی عرش وکرسی ، لوح وقلم "بهشمان وزمین ,حیوال ^و انسان ،جنات الحنباتات وجادات كاتصوركر وكے توضر ورخيال بوگاكه اس عالم كاييداكرنے والا وحدہ لاشرىك نهايت زبردست اوراليا المّر بے کداس کی قدرت کی کوئی انتہار نہیں ہے ۔ تمام عالم کی بقار سی كے فضل وكرم برمو تون ہے ۔ اليے شامنشاه عاليشان كے مسول واحب الاذعال تعنى قرآن مجيدكي كياعظت ووقعت مونى جاست ؟ یا در کھوکہ حس طرح اس کے الفاظ کو ہاتھ لگانے کے لئے طہارت اوروضو کی ضرورت ہے اسی طرح اس کے معنی کے دل میں لانے کے لئے قلب كى طِبارَت اور تمام اخلاق رذيار سے پاك لازم ہے ـ بس جو تلب باطنى گندگ اور خاست میں آلودہ سے دہ اس محرم شاہی فرمان کے حقاق كوكيونكرسجعي كالمتبي وجهب كمخضرت عمريث قرأان شربع كحفو لتأواكثر بے ہوش ہوجاتے اور فرما یاکرتے تھے کہ" یہ میرے ہروردگارجل جلالۂ

کلام البی کے لیال الفاظ استرت الی بڑی رحمت ہے کہ استون مورد ہے کہ است کا مائل کے است کا مائل کے است کا مائل کے است کا مائل کے الواد و تبلیات کو حروث کے باس میں چھپا کرتمہا ہے توالدی ہے ، ورہ اس کی نورانی شخاعوں کا کوئی بشر متحمل نہر سکا اور کرٹے ۔ دکھ اور کوئی اگر الشر میں کام البی کی تبلیات کا تحمل نہر سکا اور کرٹے ۔ گرائشہ پاک موٹ علیا است کا تحمل نہر سکا اور کوئی میں حرف اور آواز کے لبال میں جی حرف اور آواز کے لبال سے می ترک و ایک کے سنت کی طاقت نہ تھی ۔

تلاوت من ترس المونى كافيم وترب سخ بوتوكونى آيت بمى بلا سجه تلاوت من تروكونى آيت بمى بلا سجه تلاوت من كروكون آيت بمى بلا سجه تلاوت من كروكون آيت بمى بلا سجه تلاوت من كروكون آيت بمى بلا سجه تلاوت من كم الشروج به فرات كم الشروج به فرات كم الماس تلاوت سے كما نفح جس من سمجھ والسط بنہ و به فتم قرآن كى تعداد برا سال مت كروكه والسم معمولاً ندمجو مكر نام موجا في كمات قرآن كى تعداد برا سے ماکور اگرتم موجا كے كمات قرآن كى تعداد الله من كروكہ والسم من كروكہ والسم من كم كے برائد كا اللہ من كروكه والد من من كروكہ والد من كروك والد من من كروكہ والد من من كروك والد من من كروك والد من من كروك والد من كروك والد من كروك والد من كروك والد من كروك الد من كروك والد كالم كروك والد كرو

وكيتي بناب رسول الترملى الشرملير وسلم نے ايک دفعہ دست حداسته المَّنَّ حُلْنِ المَّنَّ حِيثِ وَ كُوبِي مرتب وبراياب ، اور صرت الوور تفالله عنه فرماتے ہیں کہ ایک شب جناب رسول الشمسلی الشعلیہ وسلم نے نمس ام رات امک ی آیت کومار با برها را وروه آیت یتمی یاف تُعَدِّ بُه مُستُ نَا نَهُمُدُ عِبَادُكُ وَإِنْ تَغُفِنُ لَهُمُ فَا نَكَ أَنْتَ الْعَزُيُولُ لَحَكُمُ ثَا رياالتُراكرتوان كومذاب مي تويتر بندي بن اوراكم بخش مي توسي الكريش زبردست اود حكمت والاسع) مضرت تميم داري أيت أمريكوسب الكَّذِيْنَ احْدَثَرُ وُلَاللَّيْدِيَّاتِ ﴿ كُوتُمَامِ ثَبِ بِادِ إِيرِّيْتِ بِسِ اورِحْرِث معيد بن جيرٌنے آيت فامت الْعِذَا الْيَوْمُ اَيْعَنَا الْمُجْرُمُ وْنَ كُوبار باررِّسِے میں تمام دات ختم کردی ۔ ایک عادف فراتے میں کمیں برسفته میں ایک مه ابن عبدالبر عده ابوذریخاری کی روایت عند ابن ماجرونسائی ووافرق سے سا سے ابوعید فنائل می ۱۱ ۔ که کیگناموں کے دریجب بونیوالوں کا گمان برے کیم اکویو کارو کے سادی بنادیں گے ہ تھ الدعلیمدہ ہوجا زُان لے محرمو ١١منہ

45

خم پڑھتا ہوں اور ایک خم ہوسینے ہیں اور ایک ایسا ہے کہ جس کوسال ہمرہیں خم کرتا ہوں اور ایک تلاوت ایسی ہی ہے جس کو تین سال سے شروع کرد کھا ہی اور اب تک پورا کلام مجینہ ہیں ہوا ۔ یہ فرق ظاہر ہے کہ تحوفہم اور خور و تدبری ہی ہوتا ہے ۔ کیونکہ انسان کا دل ہروقت بیسان ہیں رہنا اور نہیں شرساوی ورج کے خورو تحرکا عادی ہوتا ہے ، اس لئے اگر خصوصیت کے ساتھ ایک ختم علیحرہ طور رہم ہی ایسا نثر وع کر لوجس میں سوچ ہم چکر تلاوت کی جائے اور اس وقت پڑھا جائے جب کہ قلب فارغ ہونے کی وجرسے نکرو تون کر کے اور اس وقت بڑھا جائے جب کہ قلب فارغ ہونے کی وجرسے نکرو تون کر کے اور اس وقت خرج مول ہی جب کہ وقت کے معمول ہی جب فرق نر آئے گا اور فیضیلت کا در جب می مصل ہوجائے گا۔

سوم ۔اس کے فاص میں اسوم ۔اس نم و تدبّر کی مالت ملوث برایت سے اس کے فاص میں اس میں کو ناگوں شاخوں سو بی کی معرفت حال ہوگی اسل سے ابھی عند یہ بر بیما

وہاں سےالٹدیاک کے لطف واصان کا علم حاسل کرو عشرخ ہیسا موقع وہدا عسرفان ہ

اختياري وبوس اوران كيمرات إجعام وتراك كامطلب التميخ سيجامودما لعبي ال كوجهال تكبهوسك دف كروكيونكمضعيعث الايران بندول كيسيئ تونوابشات نفسانى اوروساوس شيكانى جاب بن جاتى بي كدان كے نغوس دنيوى تعلقات سے والبترا وران کے قلور شہات وشک میں اوت ہوتے ہیں اوریسی تلب کے وہ پردے ایس کے سب قرآن پاک کی باریجیاں مجھی نہیں آسمیں بنا ان کے اصلے کی کوشش ہونی جاہئے ، اور جن لوگوں کا ایران توی ہوجا ایر کہ خدا کی مجست ان کے قلب میں سیدا ہونے اوران کوطاعت میں لذت آنے نگی ہے ان پریجی قبلی وساوس اپنا اٹر کرتے ہیں ، مشلاً نمازی مالت ہیں ان کا دل اس طوی متوجه می اتا ہے کہ ہاری نیت کسی ہے ، اور پی خلوص نٹری خاز کے وقت تھا وہ اب می قائم ہے یانہیں ، یا مشلاً وقعت کے مخارج سے اوا ہونے میں شبریر تاہے اوراکیت کواس نیت سے بار بار دہراتے ہیں مالائکہ تلب كيسك يع عجاب سے ،كونكروف اوران كى درى كر سي طيبانااو اور خارج حرف بعنى دانتون ، مؤتون ، تالوا ورعلق كى طروب شغول موناكه بير حرف كبال سے نكلا اور هيك نكلا يانبين نكلا ؟ ان كا كاتم نهيں بن كوعالم علوی کی میروسیا حت ا ودکتوتی امورکامشا بده کرنامنظور ہے ۔

له جن کوتعب دا دل میں جگر دی میاتی ہے۔ سے دینی زیادہ اہتسام کچھ تومروری ہے

ا ينجيد - آياكلم البي مصرف تمليات اورمعرفت بي كے حاسل كرنے براكتفانہ واكرناچاست، كولكراس كيما تعمالت وأرمي ظاہر بونا ماستےمثلاً اگراہی آیت ٹرموس میں جمت کا ذکراودمغفرت کا وعدہ ہوتو جىم يرغوشى اودسترت كى مالت سپيدا بوماس، اورغيظ وغضب اورعذاب المی کا تذکرہ ہوتو تمہارا مدن لرزاھے ، اوری تعالی کا نام کوے یاس کی فلسے حلال كاؤكر سوتوجك ماك اورؤلت اختيار كروكركو بإجلال خداوندى كيمشا يسي مے نیست و نابود ہوئے جاتے ہوا دراگر کا فروں کی ان خرا فاست کا بیان ہو بوانہوں نے تق تعالیٰ پرسِتان باندھ ہے، مشلامخلوق ہیں سے سی کونعوذ بالشد مدا كابيتا يابي يابيوى بتايات، تواس كي نقل مع مي شرما وادايسي آبیت کی تلاوت پر این آوازگولیٹ کرو و کگویاان کے الفاظ کاائی زبان برلانامبي گران گذرتاب رغض جس آيت مين مبيسامضون مواس كيمطابق ایک حاص مالت بسیرا اورجم بر وی اثر ظاہر ہوناچا سے کہ خوت کے وقت التعول سے انسو بہنے تھیں اور شرم کے وقت پیٹانی پرسینی اجا سے اور بیت کے وقت رونگے کھڑے ہوجائیں کمپیکی مچوٹے اور مڑوہ بشارت کے وقت اواز وزبان اوراعفارس انساط وبشاشت سيدابوحاس

پر منطق المال المال المال المال المال المال المال المال المالي الماليات ال

سی تعالی شامزارشا و فرماتا ہے " اللہ کاکٹرت سے ذکر کرو، تاکہ فلاح پا کہ یا و درصدقات اور فرات سے دکر کرو، تاکہ فلاح سب اور میں تاکہ فلاح سب سے افغیل ہے ہے اس سے معلوم ہوا کہ ذکر الشرسے میٹرکوئی عمل نہیں ہے ، ذکر اللی کے لئے ایک مخزا و رسین پوست ہیں ، اور مخز تومقعود بالذات ہے ، ذکر آئی اور سین کے درائع اور سین کے درائع اور سین ہیں ۔

بہٹ کا بوست صرف زمان سے ذکر کرناہے۔

وکسٹ والیست قلب سے ذکر کرنا اور حیراً برتکلف اس کا نوگر مونا ہے،
یا دُرکھو کہ قلب کو اپنی حالت پر حمیوا نا نہا ہے کہ اس تفکرات اور تخیلات
میں پڑنے سے پریشانی ہوتی ہے لہذا مناسب ہے کہ اس کی مرغوب شی تعینی
ذکرالی اس کے حوالد کردی جائے ہاکہ اس کو اطبیبان حاسل ہوجائے یہ

تیشراپیست بیسبے کو ذکرالی قلب میں بگرگرے اورالیسا گرم اے کاس کا چھڑانا دیٹوار ہوجائے ، اس کامطلب پر سے کردومرے درجیمی ص طرح قلب کو ذکر کی عادت ڈالنے کی دقت بیٹن آئی تھی ۔ اس تعییرے درجین قلب سے ذکرالٹر کی عادت چھڑا نااس سے نیاوہ دیٹوار ہو۔ چوتمادرج پومغراد مقعود بالذات ہوہ یہ ہے کہ قلب ہیں ذکر کا نام ونشان ہی ا باتی نہ ہے بلکہ مؤولانی می تعسالی کی

فنااورفنارالفناکی اہیت رشیل سے اس کاسجمنا

ذات ہی ذاہ دہ جائے کہ ذالمب کی طرف توجہ ہے نہ ذکر کی جانب التفات اور ذای خربو کسی دوسرے کی فرض ذات باری می استغراق بوجائے ، اسی مالت کا نام فٹ ایسے ،اوراس حالت پہنچ کیربندہ کو نراپی ظاہری حق حرکت کاکوئی علم ہوتا ہے اور نہ باطنی عوارض کا ، یہاں تک کہ لینے فنا ہوماً نے کا علم مى باتنبس رستا ،كيونكوفنا بومانامى توخدا كے علاق ووسرى بى چيز ساوا غِرالله کا حیال میل مجیل اور کدورت ہے اہیں فنا کا علم سمی اس درج میں مینجیم كدورت اور بكر ربوا ميهى ومعالت مصرسي اينے و بود كے فناكے ساتھ فات فالسيمي فائيت بوتى ب ،ايى موسيت مجين أفي الم سع بكه بظامر نامكن اوردعوى بلادسيل عنوم بوگا يسكن أكرتم كوكسى صين صورت يرعاشق بوسنے يكسى ماشق صادت کے دیکھنے کا اتفاق ہوا ہوگا تواس حالت کو کمبی وشوار شیمھوتے، كياصن يرست فرينية انسان اين معشوقه كے فكرا ورخيال يمي الييے كوستغرق اور يخونهين بوجاتي كربسااوقات زبان سيكونى بات كرتيبي اوراس كو خود پی اسمیتے ۔ یا وُل والتے کہیں ہیں اور بڑتا کہیں ہے۔ اس کے سامنے ہے آدی گذرماتا ہے ، حالا سحال کی آنکھیں کھی ہوئی ہیں ریٹروہ ان کونظسر نہیں آتا۔ دومرانتخص ان سے بات کرتا ہے مگر پرسنتے ہی ہیں ۔اگران سو يوميا ماے كركيوں معانى كيا ديكها اوركيا شأ الود كي مى جوانبىي دے سكف بين علوم بواكدان كواليي لمويت بهوكئ كداني محديث كالبقى الن كوعم ندداكم وليوانه بن کے اور الیے دیوانے کہ اپنی دیوائی کی می خبر بزری مجنوں ہوگئے اور تنول

کیمی اطلاع نہیں، یرسب ای حتوق مطلوب کے خیال میں سفرق ہوجائے کا اترب ۔ اس کومی جانے دیکھے اس سے می آسان طریقے سے فنائی فنائیت کی آرو ہو سے ہیں آگر کے میں اس کے خقہ فاتھ استہ کی دی کی طوف اس کے خقہ فاتھ استہ کی دی کی طوف سے میں اور خودی کی مات اور طبق میں ہے کو خیال میں اور خودی کی مات ہے ، فاہر ہے کو خطاف خضب میں فرتم کوائی خرریتی ہے اور خدو مرسے کی ، اور تم ایسے ہے فود ہوجائے ہوگہ اس وقت اپنی تی خودی کا بھی تم کومن نہیں استا می میں وقت اپنی تی خود فناسے فنا اور میں وقت اپنی تی خود ہوجائے مولا کے خیال میں اسیامی میں وجائے کہ خود فناسے فنا اور بے خود ہوجائے وکی اتعجب ہے ؟

سمجانے کی فن سے دمثالیں ہمنے بیان کی ہی، دونہ اصل بات تو یہ ہے کہ جس وقت خواکے نفٹل سے اس حالت پر پیچو گے توفنائیت اورفٹار الفناکی اصل حقیقت اسی وقت مسلوم کر سکو گے۔

؞ؚ؞ؚۥ ٞئاڌُن ۾ُٺُنهي طلڪ ِحلال کابڪا ن

جبال به عبادت کامکم ہوا ہے اس کے ماقتری اکل مطال کا بھی مکم ہے ۔ چنانچ پی تعدالی فراتا ہے کہ " پاک چزکھا یا کرو اور نیک کام کیا کروہ جنائچ ہی تعدال فراتا ہے کہ " بیان لانے اور نساز ٹرسنے کی جنائے دسول الدُصل الله علی فراتے ہیں کہ " ایک تعدالت بی مسرت عبدالت بی مسرت کے اور مال حرام مساکر عبدالت میں جو اور تو مسرک نیا ہے اور مال حرام کی اور مال حرام کی اور مال حرام پر میکان تعدید کرنا ہے باور کھو کہ در قبطال کو قلب کی نور انہت میں بڑا اثر ہے، پر میال حرام ہے جینا اور تقوی اخت بی اکرنا نہا بیت مشرودی ہے ۔ بہزا مال حرام ہے جیا اور تقوی اخت بی اکرنا نہا بیت مشرودی ہے ۔ تقوی کے جار در ہے ہیں ؛

کوسے پا درویہ ہیں۔ بہ مال کی حرمت برعالم ہے دین اور فقہ کے مراس کا مورت برعالم ہے دین اور فقہ کا مردیت کا فقوی ہے ان کا استعمال نہ کر وکیو بحدان کے استعمال سے آدمی فائق بن ما تلہے اور ثقا بہت مباقل ہے ۔ دوست را درجہ مسلمار کا تقوی ہے ہیں کا شخص پر برخر کا کہون کی مسلم کی ایس میں مسلم کی کا مربی ہے کہ مسلم کی ایس میں مسلم کی کا مربی ہے کہ مسلم کی مسلم کی مسلم کی کا مربی ہے کہ مسلم کی مسلم کی کا مربی ہے کہ مسلم کی مسلم کی کے مسلم کی کا مربی ہے کہ مسلم کی کا مربی ہے کہ مسلم کی کے مسلم کی کے مسلم کی کا مربی ہے کہ مسلم کی کے مسلم کی کا مربی ہے کہ مسلم کی کے مسلم کی کا مربی ہے کہ مسلم کی کے مسلم کی کا مربی ہے کہ مسلم کی کے مسلم کی کے مسلم کی کا مسلم کی کا میں کا مسلم کی کا مربی کا مسلم کی کا مسلم کی کا میں کا مسلم کی کا مسلم کا مسلم کی کا مسلم کا کا مسلم کی کا مسلم کی کا مسلم کی کا مسلم کا کا مسلم کی کا مسلم

اس میں حرصت کا احتمال ہے اورائی وجہ سے وہ شئے مشتبہ کہلاتی ہے ہدزا صلحار اس کو بھی استعال نہیں کرتے۔ ویکی وجنائے رسول اللہ صلی اللہ علیہ اللہ مسنوماتے ہیں کہ حسب میں مشبہ ہواس کو چھوڑ دو۔ اوراس کو اخت بیاد کروجس میں کھی شبہ نہو ہے

جائززینت اورمباح لزت | تسیرادرحبه - انتسار کاتفوی ہے۔ جناك يول التصلى الشعليركم فرطت مباب رون المدى المدير المراق ين مبتلا بونے کے اندينے سے بے خواہ چيزوں کو سی ترک نکرے گا اس وقت تک اتقیار کے درجہ کوم گزنہ پینچ گا یا حضرت عرض فرماتے ہیں کہ استرام كے مرتكب بوجائے كا الاشير سے م ملال كے بھى دس صول ميں سے نو مصقے ترک کردیتے ہیں ہ ای بنا درالتہ کے پہیزگاد مبند سے جب مودو ہیہ كم متى بوت بن توايك كم مولية بن اورس وقت دومرے كائتى ويتے بي تواكك حبية زياده ديتي بن اورجب ابناحق ليتي بن تواكب حب كم يليقبى وحفرت عرين عبدالنزيز تجريم الترتعالى كاذكرب كرسيت المال كأ مشك ان كے ياس كا تا تواني ناك بند كر ليتے اور فرما ياكرتے كراس كي نوشو موتكمنابي تواس كااستعال ي كرناب اسداست المال كى خوشوس سوتكمنا نبين جابتنا - مزه واوطال چيزوں کے کھانے ا ورجا ترزينت اورآ واستنگی سيربيز كمسف كي مجري وحبسب كرزبان كومزه لكسنا الجعانبس سعكونك آح له این حیان ترفزی احرم ۱۷ که ترفزی این مایر ما کم مین ۱۱ کہ یدنیاں دینا مودنہیں ہے اس لئے کہشرط قرانہیں دی گئی تھی بکرتبرع اوراصات ب كربا استقاق دوسر كرماتدسلوك كيا ١١مترج

طال کامزہ میڑا ہے توکل حوام کی لذّت عصبل کرنے کا شوق ہوجا سے گا جستراک بشربية مي كا صنرون كى كثرية مال ومتاع اورونيا دارون كرجاه وعشمك بیا نَینظر کرنے کی جومانعت آئی ہے وہ بھی اسی لئے آئی ہے کہ اس *جیک* دمک سے ایمان کی شیرینی کم ہوجائے گی اس لئے کہ دنیا کے مال ومتاع کی رغبت اورمحبت سے قلب میں ایمان کی محبت ہمیں رہاکرتی ۔ ایک بززگ كا قول بے كرس كاكيرات لااس كا بيان بجي بيال غرض القتيار كے نزد كي وي مال مولال اورقا بل استعال سيحب ميں نربالفعل كسى قىم كاست يہو، اور نه آئنده کسی آفت کا خطره یا احتمال ہو۔

صرفتین کا تقولے ا موتھادر جرمد میں کا تقوی بیعنی حس میز کے کھانے سے عبادات اور طا برقوت مصيل نهواس سيرببزكرنا

مثلاً ایک بزرگ کا قصب که انهول نے دوایی تو ان کی بوی نے کہا کی جند قدم طهل لیجئے ، انہوں نے جواب دیا کوفغول وعبث حرکت جا کزنہیں سے ہیں ليغ نفس سے تمام حركات وسكنات كامحاسب لياكر تابوں بعبلااس فيل توكي كوكس حساب ميں شماركروں كا ۔ اسى طرح حبس شئے كے اپنے خنس تك مينجنے کے دسائل میں سے سی ایک مدیب کے اندائجی کچیم معینت خداوندی کودخل ہو اس سے بی بریم زکرنااس درجہیں ضروری سے ۔ معفرت ووالنون معری^ح ایک مرتبطیل خانے میں تبید تھے ،کسی نیک بخت عورت نے ان کومھوکایاکم این حلال معاش میں سے کھیکھا نا پکایا اور دار وغرجیل کے ہاتھ ان تک ببنيايا مر مشيخ نے قبول ذكيا اور يوسكراس كودالس كروياكه كا نااكر ح

مرام حيلول كاصح مطلب المرائ سيام التي المنظم المراف ميلول المحتم مطلب المرائ ميل المنظم المرائ المنظم المرائ المنظم المرائ المنظم المرائ المنظم المرائي المنظم المرائع المنظم المنظم

وقت سلطان اس مسلمان سے ذکوٰۃ کامطالبرکرےگا حس کامال بیسے سال موتك إس كة يغير الكانري ويحد له كالأراوراس حيله كرنے وأليم تول مسلمان کے پاس ملطان محسل تحصیل زکوۃ کے لئے نہیں آسے گا ، کیونکہ جتی بات بندول کے دیکھنے کےستحل تنمیعنی الکانہ تبعنہ وہیم سال سے قبل ہوں تھے نامنتقل بوجاني وجرس جاتارا مكرتم كويويحمعا ملدليغ يرود وكارس رکھناہے اوروہ دلوں کے حالات سے واقعت سے اس لئے بیمکروفرسے النوت مي كام نه آسكا تهبين حلوم بويكاي كرزكة ميع عمود فيل كى عادت كادودكرناسي اورجب ذكوة تك سريجنر كم حييلرسن لكو مح توجل كهال دوروا ، بكنى كوتوسر عاكرانا امام وريبتوا بالياكيون كاسكايب تك كبناما ناكداس خل كونجات دسنده اودخدا كے سامنے سرخروكردينے والا سميه يشيع واسمورت مين زكاة كامقصود بالكل عاس تبيي بوا ملك الله تعالی نے چمعلیت اس میں دکھیتمی اس کی جانب توبیمی نہیں کی اور برعكس معا ملكياكم فل كودودكرني بكراس مي ترقى كى .

یمثلاً مسلمان اپنی ہوی کواس غرض سے بہلیت ہیں رکھتے ہیں کہ وہ تنگ اکراپنا مہرمعا ن کرفے اور دب وہ بے جاری معیبت سے مراکز زبان سے معاف کرنے کالفظ نمال دی ہے توسط ایسا مال شوہ کو کھو پی موسلا ہے اور اس کو طال سمجتے ہی میں خود فرایا ہے کہ باں وہ مہر جو حواتیں میضا نے نسان کردیں تمہا ہے لئے مطال ہے ۔ اب تم ہی بتا وُکہ جس مہری معاف گردیں تمہا ہے لئے مطال ہے ۔ اب تم ہی بتا وُکہ جس مہری معاف گردیں ترانا واولا فیارسانی سے بوتی ہو کیا وہ تو تونی خاطر معمی جائے گا ۔

ا یا در کھوکہ رہنائے قلب دوسری شی ہے اوددمنائ يغنس دوسرى يبسينرسيم ثلأ كالطيف فسنرق؛ المجيز كوانه الخددايين ، نصد كم لوان، بجو رست ني شكاف تكوانا يرسيكليني اليي بس كران كوقلب تولييندكرتا ب مرفض بينزمين كرتا . اس ك كفس توانى بات كوبيند كرتابيين اس وقت لذت حاصل بو . البته قلب اس چیزکوبیند کرتاسیے بس بی اس وقت اگرین تکلیم الومگر آک و نفع کی اسید بود کیونی نفس کا یه کام نهیں ہے كربعدين آنے والى راحت كے خيال سے اس وقت كليف كولواكر ب بس اگربیوی نے تکلیف سے تنگ اگراورخا وندکی ایذاؤں سے تعسب راکراینی أتنده معلمت اور باقي ماندهمركي أسائثس كيخيال سے دوائے تلخ بي لى يى دَينِ مِرى مدا فى كوارابى كرلى تواس كانام رَصْاب قلب بوا نركر ىضائىغىش ، اوردىن مېرىكى مالل بونے بى اعتبار دصائىغىش كاسى ، جيساكداويركى أيت مضعلوم بوانكريضائ قلب كاريس أكراس بضائح حيله يحكمت وسلطنت دبوى مي كوني تخص تقاضا كرف والانهيل ريا تَوكيا خداے ساحنے بمی اس کی بدولت سرخروہوما وکھے، بہّلاکہ؟ احکم آلی کمین كوكيا بواب دوسكر مب كدمشائ قلب اور دمنا سيفنس سيحث بيش ہوا وراد حیاجا مے کہاری اجازت کے خلاف حیارج تی ہے ایک سیس او ضعيفه كالتي كيول ضم كيا ؟

مجع میں سوال رنے کی قباحت اور اس طرب کسی کے آگے ہاتھ نہ میں سوال کرنے کی قباحت اور است بے ، اور الربخت فلا ہری دنیداری دنیا کی اللہ کا اللہ ک

ظاہری دینداری دنیا کھنے کی برائی است ہے ، اوراگر بخت فرورت کے دقت سوال کرنے کی نوبت آئے تواس کا ضرور دینیال کھوکھنے میں سوال ذکر و کیونکہ اکثر ایسی حالت میں دینے والا جو کچ بھی تم کو دے گا و د الیا بھی خیم میں ذکت اور رسوائی اور ہج شیموں میں سکی کے خیال سے دے گا اور اس کی بخوشی خاطر دینا نہیں کہتے یہ ایسا دیا ہوا مال استعمال کے تابل نہیں ہے کیونکہ کسی کے برن بھارکر لمینا یاکسی کے دل برشرم اور دباؤکا کوڑا مارکر لمنا و دونوں برا مراب ۔

نیزلیے دین کو ذریع کسب رہناؤ ۔ مشلاً صلحارفقرار کی مورت اس نیت سے نہناؤ کہ ہیں بزرگ محب کوگ دیں گے ، حالا بحتم بالکل فیرے ہوا ورتم ہا اول گندگی سے آلووہ ہے ۔ یا در کھو کہ دوسرے کا دیا ہوا ممال تمہیں اس وقت ملال ہے جب کرتم ہاری چیبی ہوئی حالت الیسی نہو کہ اگر دینے والا اس سے آگاہ ہوجا سے قوہ گرز نہ دے ۔ اس شے علوم ہوا کہ اگرتم نے صورت بزرگوں کی بنائی اور تمہا ہے دل میں نواہشات نفسانی کا بچوم ہے ، اور فلا برے کہ دینے والے نے جوکھے تم کو دیا ہے وہ صرف تمہاری صورت و کھی کر دیا ہے کہ اس کو تمہاری باخلی شنری کی بائکل خبر نہیں ہے ، تواگر چی علائے سے بھی اس کے مسلم اس کے مسلم اس کو حلال بتلائیں گے ، مرکب احب بعیش سے شرور حرام کے گا اور اس کو استعمال ہیں لانے کی برگز اجازت نہ دے گا ۔

قلب فتوی لینے کی ضرورت اصروری بات جس کا خیال دکھت اسے فتو کی لینے کی ضرورت ہے ہے ہے کہ علمار کے فتوے پر اکتفا نہ کیا کرو، بلکہ لیے دل سے پوچھا کروکہ اس معاملہ میں دل کیا کہتا ہو۔ بخاب رمول الشمیلی الشعلی و فراتے ہیں کہ ''تم اپنے دلوں سے بھی فقو اے میں کو کر کر جو بہت یہ ہے گئا او سلمان کے دل میں کھنے ضرور جیجا کرتا ہوگا و الی ہوگی وہ دل میں کھنے بخسے سرنہ ہے گئا ہوگا می الواقع گنا ہوگا اس کو تہا دا ول ہے فتی در حقیقت حرام ہوگی یا جو کام فی الواقع گنا ہوگا و سرجیز کی اصلیت اس طرح بدول کے فتی سے علوم ہوجا یا کرے گئی ۔

نفس كوتشرور كيانا بياست انفس پرزياده تشريحى نرويشلا كين الكوك السامال كهال سيوبر ختير ميى نربوا وركسى ظالم يا فاست كي التري مروكراً يا بوع اورجب السامال نهين السكتاتوياتوانسان بوگى بن كركهاى پات كعلن يرقناعت كرے اوراليادكرسے توبياك بوكريوچاہے كھائے بيٹے ۔ الياخيال كرنا كھساري ہے۔ بات یر کمال می ظاہرے اور حرام می ظاہرے اور ان کریٹ بن كىچىيەزى مشتبركىلاقى بى ، مىرتىم كومرف اتى كىلىم دىگى سے كرجو مال شرعًا ملال ہے اور اس محصرام اوریس ہونے کا کوئی ظاہری مببتم كومعسلوم بسي بصاس كوطال مجدكر كماؤييو دجناب دمول الشر مىلى التُدعِليهُ ولم في الكِنْ مرتد بشرك آدى كم شحيزه ساور حفرت عمرفاروق في فيلساني عورت كي مراء وضوكيا اورسياس بوتى تولي سي لىمغون مديث مخارى دُمِع م 🖫 ئە ئىچ يى 🕆 ئىلادى 🌣 عبادى تە

یتے۔ اس سے سلوم ہوگیا کہ خواہ خواہ وہم کرنا کہ خلا جانے یہ بانی یاک ہمیا مانی کے نایاک ہونے کی بظہام لوئى وجرتم كومعلونهس وتواس كوياكبي سجمنا بياستے ۔ اسی طرح بوطل نٹی کسی ايسة أدى كياتوس يا وحب كاحالتم ومعلوم نرموتواس كوياك معواور سالو كرا تدحن فن ركموا وريج ركر مسلمانون كرياس وكحيد مال ب ملال اورياك ي كماني كاموكاس كى دعوت بعى قبول كراياكرو ينصوصا حب كم مسلمان صالح اورويت داريو - بإل البته ظالم بادشاه ياسودخواريا شراب ييخ والتحض كامال حبتك يدن وجيولكس حلال طرفقيت كمايابي ملال بمعود بس الرحقيق كي بعدوم بوجاف كيسود ياظم كي كما في وراب ك قيت نبي ب واس كاليابي حرام نبي ساوراً كس كياس فالب صديمال آمدني كاست اوركم صدحرام كاتواس كاكعانا بعي طالسير البته أكر نكعادة توتقوى بيء يحفرت شيخ ابن المبارك كحكار ندوستعيذ لمفرو

فے بذریعہ خط کے ان سے دریا فت کیا تھاکہ چوتخص ظالم باوشاہ سے دادو سندر کھتا ہو مجھے اس کیس دین کامعا المرکزا جائز ہے یانہیں ؟ توشیخے نے لکھاکہ اگراس تخص کا اس سے علاوہ اوریمی کوئی ڈریعۂ کسب ہوتو اس سے حالم کرنا جائز ہے ورنہ ناجائز۔

له امياگان نه لين دين

مینها قیم دو ده آدی بن کی مورت کی شنا خت کسب اور دیندادی اور بددنی کا حال کی می می می می می می می می می کا حیا ہوا مال معال ہے اور اس کا حیا ہوا مال معال ہے اور اس می می می می می داخل ہے ۔ البتہ امتیاط کے خیال سے نکھا یا جائے تو تقوی میں واخل ہے ۔

ووّنسری قسم ۔ وہ سلحاجِن کی دیندادی کھی ہوئی اور کمائی کامشروع طریقہ ظاہرہے ان کے مال میں مشبہ کرنا وسوسرَ شیطانی ہے ، بلکہ اگران کو اس کے پرمیز کرنے سے درخ ہو تو الیہ اتقویٰ بھی حسوام اور معصیت ہے ۔

" میتری قیم ۔ وہ لوگ جن کاسال امال یا نصف سے زیادہ مال ظلمایا مود یا شراب کی ہیے وشرار سے حاسل ہوا ہے ۔ ان کا دیا ہوا مال یقیناً حرام ہے ۔ اور اس سے پرمبزکرنا ضروری ہے ۔

پوتی قرار کے درید سے کہ ایست سے کم مال ترام کے ذریعہ سے کمایا ہوا سے اور تہرین مسلا و و اور ترام کے ذریعہ سے اور دوسر اور ترام کی ہے ۔ مسلا و و دوسر خوال کے ہیں ، ایک یہ کہ وہ کوئی مشروع شجارت کرتا ہے ، اور دوسر یہ کہ ترکہ میں کچے ہوا کدا دیا ہے ۔ اور ایک ذریعہ حرام ہے ، مسئلا کسی خالم بادشاہ کا توکر ہے اور توخواہ لیتا ہے ۔ مسئلا کسی خالم بادشاہ کا توکر ہے اور توخواہ لیتا ہے ۔ اور مسئل اس کے دریعہ کی نسبت ان دو ذریعوں کی آمد فی زیادہ ہے ، توجون کہ اس کے یاس زیادہ مال حال ہے اس کے دی ہوت مال حال ہے مال کو معال کی معما جا سے گا۔ البتہ اس سے پرمبز کرنا اس کے دی ہوت مال کو معال کی معما جا سے گا۔ البتہ اس سے پرمبز کرنا تقویٰ ہیں شمار ہوگا ۔

پانچوچی قم ۔ دہ لوگ ہی جن کے کسب کا ذریعہ اگریپے سلوم نہیں ہ

مگر ظلم و تعتدی کی علامتیں ان پریمایاں ہیں ، مشلاً جا بریحکام کی بی شکل و لباس اور وضع اختیا رکئے ہوسے ہیں ، تو چو پئے یہ ظاہری حالت ایوں بتاری ہوکہ ان کا مال ہمی ظلماً ہی حاسل ہوا ہوگا ، لہندا اس سے احتیا طکرنی چاہتے اور اس کو فقتیش کے بغیر سرمعلال پھجو۔

اس تشریح کے بعد بھر ہم ہی کہتے ہیں کہ لینے دل سے بھی فتویٰ لے لواور حس مال سے دل کھٹکے اس کا ہرگز استعال نیکر و۔ البتہ بیضرور دیجھ لوکہ ول کے فتویٰ پڑسل کرنے اور تقویٰ اختیار کرنے سے استیف کو ریخ تو نہ ہوگا ،

له محنهگاری وصی چپی فتق اورکمسلم کمسلافور ۱۲

کے عیبائیت ۱۲

دیکیوجناب رسول الشومل الشطیروسلم نے اپنی باندی بیرو کا وہ کھانا بوکی مسلمان نے ان کوصد قر دیا تھا ہے تامل کھا لیا اورصد قرینے والے کے مال اور مال کا بحت من خفر ما یا ۔ البتہ جب آپ مدین ہیں تشریف لاکے تو شروں متروں ہوجی آپ کی مند کی گئی تو آپ نے یہ ضرور لوجی لیا کہ صدقہ کا مال آپ کے لئے مطال نہ تھا ، اور اس موال میں اس کو رنے یا ایز ابھی نہیں ہوتی تھی ۔ کیونکہ صدقہ اور اس موال میں اس کو رنے یا ایز ابھی نہیں ہوتی تھی ۔ کیونکہ صدقہ اور ہدیے دونوں کی ایک ہی مورت ہے ، صرون وینے والے کی نیت صدقہ اور ہدیے دونوں کی ایک ہی مورت ہے ، صرون وینے والے کی نیت اور کل ومصرون کا فرق ہوتا ہے ، اس سے زیاد تھتی کی جوسلمان کیا ؟ آپ کی عادت تھی کہ جوسلمان

آپ کی ضیا دلیے کرتا آپ بلاتا مل قبول فرم لیتے ۔ اور کہیں منقول نہیں بے کہ آب نے اس کا سوال کیا ہو کہ تمب رامال کس ذریعیہ سے مصل ہوا ہے ،البتہ شاذونادکسی غالب شبہ کے موقع رہتھیق حال وسنہ والی ہے۔ إ رسول الشصلى الشيعليه وسلم اورتمام صحابغ سفرس بازاريسة كامضروريا کی میزی کھاتے اور خرید تے تھے ، حالا محریمی حانتے تھے کہ سوداورلوط اورمال غنیت میں خیانت کئے ہو ہے مال بھی بازاروں ہی میں فروخت ہوتے ہیں ،مگران توہمات کی طرف کہ بھی توجہ نہیں فرمائی ، بلکہ خالب اور كثرت كى بنارير بازاديس فروخت بونے والے سامے مال كوتفيش وقيق ك بنسير ملال مجاء اى طرح تم مى بازاركى چيزول كومسرام نسمهو . البت اكرناما كزاورحرام طريقيا فيصال كى بونى جيزي كسي تبريا بازار ميں بحترت فروخت ہونے لگیں تواس وقع تفتیش تحقیق حال کے بغیب ر خربدنااور استعال میں لانا بے شک جائز نہیں ہے۔

ﷺ مسلمانوں کے حقوق کی حفاظت الا اک کے ساتھ نیکے شہرتاؤ

تمام مخلوق کے ساتھ حسن معاشرت مواد ہوکردنیا کاسعنر ختم کرہی ہے۔ اور دنیا اکسے ساتھ حسن معاشرت ۔ اس سے آخرت کے مساما ورونیا کا اپنے سواے کے ہم بس مسا و سروں کے ساتھ نیک برتاؤ کرنا ہی دین کا ایک دکن ہے ۔

یادرکھنا چاہئے کہ انسان کی تین حالتیں ہوتی ہیں۔ کیونکہ یا تومجرداور تن تنہا ہوگا اور یا اہل وعیال اور دوست واحباب وغیرہ سے تعلقتاً دکھتا ہوگا اور یا بین عبین حالت ہوگی کہ تعلق توہوگا مگر صروب اقرباراور رشتہ داروں یا بڑوسیوں سے ہوگا ، عام خلوق سے نہوگا یہی تینوں التوں کے مقوق اور حین سلوک سے تم کو واقع نسے ہوتا چاہئے ،جن کوہم مجرا مجدا بیان کرتے ہیں ۔ استهای حالت می به استهای حالت میں چابح آدی کو صرف اپنی ذات می خوبح آدی کو صرف اپنی ذات میں جوبح آدی کو صرف اپنی ذات اس مندائی نفتر کے اصلاح آداد میں حق تعالی نفتر مینی استرواری ہیں جواس عالم اصفر مینی اضاف میں حق تعالی خوب استرواروں کا تذکرہ کرتے ہیں اور مندیع کے دیتے ہیں کہ مرمجرو دو تنہ مسلمان کو ان کی مفاظت اور گھبواشت ضروری ہے۔

الماسية والمن والمحيدة على حقوق المان لوكتها الداليك المرايك المناسية والمن المناسية والمناسية والمن

له حبوال ام بوستيار ١١ که بوستيار ١١

كة كليف دين والى اور ناليند ١١ كله مييشم كى ١١

ب زیب نقس اوراس پر | اگر محوم کوماکم ک تسند پریشا دیا ادر حاكم بادشاه كوتاب دارغلام بنادوك ظلم يا انصاف كي حقيقت توانسان كمويتيمو كرونا المهلاد گے کیونککی شے کا مے مل دکھناہی اوظ کہ لاتا ہے ۔ لہذا جیب خواہش نفسانى كونى ييزها لكرناجاب ياغقدكس فت كودفع كرنا جابي وعقل سے موجا کردگراس کا اخبام کیا ہے ؟ اگرانجام انھا ہو توعقل کو بیاستے كراس كام كے كرنے كى ان كواجازت ديسے ۔ اوراگرانجام مرا ديجے توبرگز احازت ردمے ، بلکرانے التحت غلامول سے اس کو پکڑو اسے مثلاً نفس اكري عانوابش كرتاب توعفته واس برحمل كرف كاستم مدى كدوه اس ينواه نادان خادم کویا بزنخ کرے ، اور اگر عقد معرکنا ور براه میانامیا ہے تو شبوت كالسير صل كرات كروه اس كوطف واكر يسع اوراس كاخيال إدرا سروف في واوراكرتم في اي عقل صدريا فت بي بين كيايادريافت كيامكراس كعمم ساعت واطاعت نركى وبكداس كوفادم وتاب الدغلام بنالياكشبوت وغفته وكوكرنا جابي عقل ان كى بال بي بال الأكران كا منشار بوراكر في حيا اورتدبيري سوي ولكوياتم نے قديق سياهي اول بدل كرويا اورين مين عدل وانصاف دركهن كاحق تعبالى في يحصروايا تقاان ين فالمان كارروانى كى يس قيامت كردن حب تمام اعراض كواجسام عطاكئے جائيں گے اورشہوت نفسانی کو گئے کی اورغقہ کا گھوٹسے

له مسن ابینا اودهشرال بردادی کرنا-۱۲

ٹے وہ چریں بوکسی کے تاہیع ہوکرموج دہوتی ہیں خود پوڈیسیں، دنگ وروپ، اعال، عصہ ، ملم وغسیرہ ۔

کی صورت مرصت ہوگی اوقتل شاہ ندلباس پاسے گی تواس وقت پر داز محمل جاسے گا اور تم کہو گے گہ" ہاسے انسوس ہمنے کیساظلم کیا کہ بادشاہ کو کتے اور گھوٹے کے سامنے سرچود در کھا ۔ کاش ! شکاری مرد کی طرح اس کتے اور گھوٹے کے کولوقت ضرورت کا مہیں لاتے کہ بے موقع ندان کو مشکل اور شرخا دعقل کی ماتھتی سے ان کو باہر نمائے بلکہ ان کوعقل کا ایسا تا لیعب دار بنا سے دیکھتے کہ جہاں وہ چاہتی وہان سے کام لیتے ور نہ بچارا نی جگہ بڑے دیشتے گو یا ہیں بن جسی سے دان کو سال سے کام لیتے ور نہ بچارا نی جگہ بڑے دیشتے گو یا ہیں بن جسی سے دیان سے کام لیتے ور نہ بچارا نی جگہ بڑے دیشتے گو یا ہیں بن جسی سے دیات کی ایک کام لیتے دیات کی باہیں ہے دیات کو باہر ہیں ہے دیات کی دیات کی دیات کے دیات کی دیات کے دیات کی دیات کیات کی دیات کے دیات کی دیات کے دیات کی دیات کی

مخلوق كح مقوق كي مهمار شريه الدوست مي مالت بعني حب تم كوعام مخلوق سيعلق بوتواس دقت كل ج ؛ اس كاخرور بى ظار كلوي مخلوق كتم ميحى تم كاليُّوار منهيني . رسول عبول مى الشعليد كو الموقيق بي کہ "مسلمان دی ہے جس کے ہاتھ اور زبان سے اللہ کی مخلوق محفوظ رہے " اوراعلى درجه برب كمخلوق كونفع ببنياؤ ،اوراس سيعمى على وروبقين کاسے کربن سے ایزاراتھا وَان کے ساتھ سلوک اورا حسان کرو ۔ کیوبی يمول تنبول صلى الشرعليه وسلم يتضخرت على كرم الشروحب كونصيحت صنسواتى تقى كەسلىعلى! اگرصترفتان كا درىجەماس كرناچا بوتو توتم سے قطع تعلق كرنا جابية اس تعلق ركهوا ورجوتم برطلم كرسيتم اس كي ساتة لوكرفي مُخلُوق كَ عقوق قائم ركھنے ميں بينيل بالوں كالحاظ كھوچن كَافْصيل يرسى: أوَّل به بوکچه اینے لئے بہر سمبدوری دومروں کیلئے بہر سمبور

که بخاری ۱۱

له تكليف ١٢

میں الیٹی کیلئے رہٹرط کے اس کا خاتمہ بالخیر پوجائے ، جہم سے مفوظ رہنے کی بشارت آئی ہے۔

دوم ۔ مِرِّی کے سا تدتواض سے پین آ ڈ ،کیوبی تی تعدالی مؤوں اور سی کرولیسندنیہیں کرتا ۔ ہیں اگرکوئی دوس اٹھیں تمہا ہے ساتھ ہی بریش آھے تواس کوبواشت کرما ڈ ، دیکھومی تعدالی صندیاتا ہے کہ عفوکی خصلت اختیاد کرو ۔ معبلائی کی ترغیب دو، اور جا بلوں سے ہوتوی کرو ۔

مسوم - بروں کی تعظیم کروا ور پھوٹوں پرشفقت کی نظر رکھو، رسولِ تعبول سلی اللہ علیہ ولم فراتے ہیں کہ جو جوان کسی بوٹر سے کی تعظیم کرے گا قواس جوان کے برصابے کی حالہ سب میں اللہ تعسالی اس کی تعظیم کے والا تحق بیدارت والا تحق بیدا فرائے گاہ اس حدیث میں اشارةً درازی عمر کی بھی بشارت آگئی ہے کہ اس کو لوٹر سا ہونانسید ہوگا ۔

جهادم - برخف كسات خندة كودنى سيش آؤ كو يحدرول مقبول ملى الشرعليدوكم اليشخف كودوزخ سرميخ اور الشركم محبوب بهونه كي بشارت ويتحيين بي

پیسسد و وسلمانوں میں بخش موجائے توصلح کراد و سربیت میں ایسے موقع پر تالیعت قلوب کی وجہ سے بعنرورت جوٹ بولنے تک کی اجازت آئی ہے اورشر مانداور دوزہ سے بی فارد میں اور میں میں اور حرب سے جنوبی کی دوسرے سے جنوبی کی اور حرب کی کا در میں ان کی بات مرکز زمین و کی اور حرب کی کا در میں ان کی بات مرکز زمین و

له ترمذى حن غريب ١١ كه منس سكه بونا ١١

لله ابن حبان صمح ، سبقى ضعيف ١١ كله الغت كرانا ١١

کیونکدوه اپنائین برباد اورجنم میں جانے کا سامان کرہے ہیں ۔ همت ہے تمہاری کسی سے اگر نوش ہوتو تین دن سے زیادہ علیدگی مٹت رکھو ،کیونکہ اگر تم مسلمان کی خاطرسے درگذر کروگے توالنہ تعالیٰ قیامت کے دن تمہاری خطاؤں سے درگذر فرماتیں سی میں۔

مشتد ، سلوک اوراحسان کرتے وقت الل اور نااہل مت دیجا کر در کیونی اگرکوئی نااہل میں ہوتوتم اس کے ساتھ کیوں نااہل منتے ہو، سلوک کے لئے تو تمہاراا ہل ہونا کا فی سے ۔

فهد و لوگوں سے ان کی حالت کے موافق برتا کیا کہ و یعنی معلق کے اور تقویٰ کومت و صورت و سوعلمار میں ہوا کرتا ہے، اور و ام کی مال اور تقویٰ کومت و صورت و سوعلمار میں ہوا کرتا ہے، اور و و علمار میں ہوا کرتا ہے، داود مثلاً سلام نے دعا بائی تھی کہ اپنی وہ طریق بتلا ہے جس سے فلوق بھی مجھ مواکد سال میں اور آپ بھی رامنی رہیں ، توسم ہوا کہ لے داؤد دنیا داروں سے ان کی حالت کے موافق برتا و کرواور دسینداروں سے ان کے حال کے مطابات ،

دهده برتاؤک وقت لوگوں کے مرتبول کا بھی کھا ظرکھو یعنی الگرکوئی دنیا دار باعزت آدمی تمہا سے پاس آجائے تواس کی عظمت کو دیکھو مرکھو دیکھو اس کی عظمت کو دیکھو اس کی عقب کے سیائے جادار فری عزب شخص تحییل کے دار مبارک بھیادی اور پول مسئر ما یا ہے کہ حب کسی قوم کا المراشن عص تمہارے یاس کا کارے تواس کی عزت کیا کرو ۔

یاس آیا کہ ہے تواس کی عزت کیا کرو ۔

کے سنمون بخاری کھیلم ۱۱۰ کے بخاری ۱۱ او وا کہ ونسائی وغیرہ ۱۱ کے ابن جان میح ۱۱ کے بزار، ابن خزیمہ دطرانی ، ابن عدی ، حاکم کیمجے ہے ۔ اور برحربرین عبداللہ تھے ۱۲

یا زید هد ۔ مسلمانوں کے عیب برگنظا برد کروکیونکرردہ ایستی کسنے والے دند کے میں برگنظا برد کروکیونکرردہ ایستی کسنے والے دند کا گوہ کی میں بند ہو ۔ یا در کھوکہ اگر آن تم کمی سلمان کی عیب بوئی کرو گے تو کا کے کموسلمان کی عیب بوئی کرو گے تو کا کے تعدید کا اور میں کو وہ دسواکر سے اگر اس کو امان کہ ان ہے ۔ معید اس کو امان کہ ان ہے ؟

دوازد هد . تهمت ك جرك مي يج ، ورن لوك بركمان يوجي، اورتمهاری غیبت کیاکری گے ، اور سوئمان کی غیبت میں مستلا ہونے کا سبب تم بنے ہو کہ نتیمت کے موقع برتم جلتے اور ندان کو غیبت کاموقع ملا لسِناكناه تمريجي بوكا ، اس لية كركناه كاسبب بناجي كناه سے وسول مقبول سلى الشعليه وسلم أيك مرتب ازواج مطهرات ميس سيكسي محسي دروازهٔ سکان پرکھڑے ہوئے کھے باتیں کریسے تھے کسی خص کا اس جانب گذر بوا رجود كرموقع تهمت كانتها اس لئة آنحضرت على الشعليه وسلم في فورًا آواز دے کراس مفس سے فرمایا ، استخص احب عورت ہیں باتیں کرد با ہول پیمیری بیوی صفریش ہے۔ اسٹیف نے عص کیا ، پادسول اللہ ! توہے، کہیں آپ کی مان بھی برگھ انی ہوسمتی ہے ؟ مضرت نے فرما یا تعجب بی کیا ہے ، شیطان توبی آدم کی رگ رگ میں سرایت <u>کزیمون</u> ہے ، بعنی شایرتمہا سے دل میں یہ وسوسر پیداکرتا ، اور وہ تمب اری بربادی كاسبب بنتا اس لئ مع اطلاع ديي ضروري بوكى .

سايزه هد مسلمانون كاهاحت روائي مين كوشش كياكرو روزية

له طرانی اوسط وصنسیسر ۱۱ که ابوداؤد ، عرب سعسد ۱۱ که مغمون مدیث تاریخ بخاری ۱۱ که وه مغرت مغیرتعیس ۱۲

مِن آیا ہے کہ رسولِ عبول می الشعلیہ وسلم اکثر کسی کو کھید دینے دلانے میں تاخیر
کرتے اور ایوں ارت اور ما یا کرتے تھے کہ میں صرف اس وجہ سے جلدی حکم
نہ میں دیتا کہ تم کوسفارٹ کرنے کا موقع مل جائے اور تم زبان سے کلمتہ
الخیر زبحال کر تواب جال کر لوئی سلمانوں کی حاجت روائی میں سی کر ناہج ال
میں اس می کا اجرو تواب سال ہو کے اعتبال من سے زیا وہ آیا ہے ۔

میں اس می کا اجرو تواب سال ہو کے اعتبال من سے زیا وہ آیا ہے ۔

چیکے اور مصرف میں آیا ہے کہ جب وہ سلمان مصافح کرتے ہی تورہ سے
کی کرو رورٹ میں آیا ہے کہ جب وہ سلمان مصافح کرتے ہی تورہ سے
کی کرو رورٹ میں تا ہے کہ جب وہ سلمان مصافح کرتے ہی تورہ سے

خدا وندی کے شرحصول میں سے انہر سے تواس کو طنے ہیں جس نے مصافحہ میں استدار کی ہے اور ایک حصّہ دوسسرے کو۔

پانزدهد مسلمان بهائی عدم موجودگی بی بھی اس کی مودکوہ سینی اس کی ہردکوہ سینی اس کی ہردکوہ سینی اس کی ہردکوہ سینی اس کی ہردک ہوئیہ مسکمان کی آبروریزی ہورہ ہوتوجہ سلمان اس کی مردفر سینی اس کی مردفر ماسے گا توق تعالی اس کی مردفر ماسے گا اور ہوسلمان اس کی بروا نرکر ہے گا توق تعالی بھی اس کی مددفر ماسے گا اور ہوسلمان اس کی بروا نرکر ہے گا توق تعالی بھی اس کی اعانت کے وقت اس کی کچھ بروا نونسر ماسے گا توق تعالی بھی اس کی اعانت کے وقت اس کی کھھر بروا نونسر ماسے گا توق تعالی بھی اس

مشانس دهد و شریرادگول سیمی اس نیت سے مدادات کرلیا کروکہ اس طرح بران کے مترسے محفوظ رہوگے محضرت عائشہ رضی الشر تعالی عنها فرماتی بھی کہ ایک مرتب ایک شخص نے انحضرت می الشرعلیہ و کم له ابوداد ، سندصالح ۱۱ که ماکم ، پھر بجائے سال کے دواہ ۲۴ کے محیم ترمذی و الحاشین ، حن لغیرہ ۲۴ کا محدوالودا کر درس ۱۱ هم مجاری ۱۲ کیاس حاضر ہونے کی اجازت چاہی، آپ نے فرطا "اجھا آنے دوگرا شخص ہے یہ اورجب وہ اندر آگیا تو آپ نے ایسی نری دملا طفت کے ساتھ اس سے باتیں کیں جس سے معلوم ہوتا تھا کہ صفرت اصلی الشطلہ وسلم) اس کی بڑی قدر کرتے ہیں ۔ جب وہ چلاگیا توہی نے صفرت اصلی الشطلہ وسلم) سے اس کی وجر پوچی تب آپ نے فرطا یک " برتر شخص قیامت کے دن وہ سے جس کی بدی سے بچنے کے لئے لوگ اس کوچوڑ دیں یہ نیز منڈیٹ ہیں آیا سے کہ جس طریقہ سے بھی آدمی اپنی آبر و بچاہے وہ صدقہ میں شاریج بیول الشر صلی الشاعلیہ وسلم کی نصیری تھے ہے کہ لوگوں سے ان کے اعمال کے موافق میل جول دکھو۔ البتہ برکاروں کو دل میں حکم فرو۔

سه ابن ماجه وحاكم صحيح W

علیده دیو کوئیدرسول الده ملی الشعلی و الم فرائی تے ہیں کہ " مرسے ہشتین سے تنہاں کر و سے تنہاں کر و سے تنہاں کر و سے تنہاں کر اس میں استرہ ہوئی کا کرتم ایسے تھی اس آتے جاتے دیوجو بر دفعہ تنہا ہے کیڑے کا ایک تاریخ کا ایک بال نوچ لیا کرے توضرور تم کو اندلی شہوگا کہ اس طرح پر توضقریب کیڑا ختم اور ڈاڑھی ندار دیوجا سے گی ، اور تم اس کے پاس آمدور فت ترک کردو گی ۔ بس ای طرح جس کی مجست میں حتم مرابر میں دین کی کی ہوتواں سے بر بہز کرو ور در تعمورا تعمورا ہوکرا کیک دن سال دین برباء و ہوجا سے گا ۔

تُوابا وراستغفار وطلب رحمت كرية رياكرو . ديني تند ، اگران كوچينك آئ وَيَهُ حَدِّثْكَ الله كهوا وراگروه

تم کے بات میں مشورہ کریں آونیک صلاح دیا کرو۔

الختفسرچواہتمام اپنےفش کو نفع پہنچانے ا ورصررسے بچپانے کا کرسکتے ہو تو دہی عام مسلمانوں کیسلئے المحوظ دکھو ۔

متعلّقین اوراقاریکے حقوق استداریینی بیوی ہی ، مال ،

باپ ا درسمسایہ وغلام ونوکر وچاکرسس<u>متع</u>سلفین میں واحسنگ <mark>مسیل ۔</mark> له بیبتی رص ۱۲ که خواتم پردج کرسے ۔ پرمبینمون میچ میرٹیوں کے ہیں ۔

تے ہو نکاح سے ہوں 11

رمولِ مقبول ملی الشرعلير في فر لمست ميري كه قياست كے دن سب سے بيدين كامقدميني بوگا وه بهسايد بول كي البنايروس يحقوق كازباده خیال رکھنا جاستے ،کیونکرمسایر کے یلے ہوے کتے کے اگر ڈھے اہمی ماروكے توم سايد كے ايزارسال تجھے ماؤگے . الك عورت نهاست یارساتھی مگراس کے بڑوی اس سے مالاں رہتے تھے رسول الدملی اللہ عليه وسلم نے اس کودوزخی مسسرا یا ہے تھے

يروس كي حقوق اكي مرتبعفرية على التبعليدة لم نه صحاية معصرايا حانتيمي بوسمساير كے كنے بق بي ؟ اگرسمسايد مدد جاسي تومد دكرو ، اوراگر قرض ما يح توقرض دو، اگرَّننگدست بوجائے توسلوک کرد ، اگر بمیا دیڑے توعیا دت کرو، اورانتقال كرمائ يوجازه كي ساته جاؤ ، الراس كوكى فوشى عال بوتومبارک بادرو ۱ وررخ مینی توتسلی دو ، اس کی اجازت کے بنیر اپنا مکان اتنا و نیا مرباؤکراس کوخاطر فواه بواند بینج سے ، اگرکوئی معیس خرد کرلاؤ تواس میں سے بغرومناسب اس کومی دوا وراگر مزے سے تو چیکے سے گھریں لے جا و تاکد دیمیسکواس کوحوص نہ ہو اس کے بعدمناسب ہے کہ تمہا را بچر بھی سیل اسیر باہر یہ نصلے کیونکہ ہمسا یہ کے بے کو سرص موگی تو اس كورنج بوگا ، اسى طرح اگر ماندى يرسع تواكي ميرينون كوسى بينياد جانتے ہوکہ بڑوس کا حق کس قدرہے ، بس سیحمدلوکہ بروسی کے حق دی يوك كريحة إسي بريق تعالى كانفسل بور

له طبوانی مین ۱۲ که ابن الی ستیبر ۱۲

يه مكارم الاخلاق منسرائطي وايوانيخ ١٢

قرابت کے حقوق اقداری کے حقوق کاسی کھا فار کھو رکیونکہ قرابت کے حقوق ایک ر ر می کے معنی قرابت کے ہیں، دین سومطابعت رکھتاہے حق تعالی فرماتاہے کہ بوٹنفس جے سے میل رکھے کا میں اس سے سیل ركون كا ورجواس بقط تعلق كركايس اس تطع تعلق كرول كا صلیری کرنے والے کی عربیں برکت ہوتی ہے ۔جنت کی نوشبو ہو یائے موہری ک مسافت ہے آتی ہے وہ ماط عمر کو مرکز ندا مرک و رسول معبول ماللہ عليرو لم فرهم قريم كم مال باب كى خدات كرنانما دوود ، ج وعمره اورجهاو فیسیل الترسیمی فاسل ہے۔ اور مال کاسی باپ کی برنسبت دو فیز رہو۔ مدين ين حكم الموكيدون بوسارى اولادكومسا وى دياكرو . ا غلاموں کے بارہ میں رول الدصلی الشرعليہ وسلم كا الشاشع كمان كے متعلق خلاسے ورواور ہو كيغودكما ؤان كومبي كملاؤا ورجوتم بينو دبي ان كومبي ببنا وتحمل سياماده ان سے کام ندلوا ورسیمیو کرصاحب قدرت خوانے ان کوتمها را غلام بنادیا ہے اگروہ جا ہتا تو تم کو ان کاغلام ہنا دیتا ،جب کھا نالا کرتیب ہے۔ ساسمنے دکھے توج بحاگکی ٹیٹ اور دھوئیں کی کلونس ای نے برداشت کی اورتم کو ان کلیغوں سے ب<u>جایا ہے</u> اس لئے اس کی دلدیمی کرواوداس کوشفقت کے ساتھ اپنے پاس بھاکر ساتھ کھلالو، یا کم از کم ایک بقمراس کے ہاتھ پر رکھ دوال العصورة قدى الودا ودورندى رسن الله وشدوارى ماتى وكهنا معنمون محارى وسلم ١١ بع وتشدوارى قط كمنيوالا رمديث طراني هدمغمون الديلي وطرافي مغير الله ابن منيع الحداماي صيح بعنى زندگى ير اود مرنے كے بعد يقاعدة ولائت ٣ شه الوداؤد ١١ كه مسلم ١١ لله ابن عساكر ، آمسنرتك ١١ زلے مخیاری ۱۲

ییا رکے ہے میں ہوکھالو ،الیساکرنے میں اس کا ول ٹوٹ ہوجا سے گا اور تباری ویت بین فرق نرائے گا۔ اگریوہ کوئی خطاکر بیٹھے تو درگذر کرو اور اس كوغرورا ورحقارت كي فلسري مت ديجو

معاشرت وخوش کای سے برتا وکرو ،کیونی بیلیوں کے ساتھ نیک رتا وکھنے والوں کے بڑے دیہے ہیں ۔ دیجیومنتدائے اُمّت جناب رسول الشماللہ عليه وسلم ازواج مطرات كے ساتھكىيى خوش طبى اورد نجوئى اورمجرت نرمى کابرتا وُفرائے تھے ۔مدیتوں میں صن معاشرت کی بڑی تاکسیدآئے ہے ۔

ديني دورت بنازى فضيلت انهين امول بن سي ايك اصل يرجى ب كراني لئ كيدين دو

اوردكت في الله كروج تجزير كوين معن الله ك واسط مجت بور قيامت كرون ي تعالى اواز تفي كاكر كالبي وه بوخاص ميرب واسطحبت بالم ركق تعالج حبب كميرب سايركوا كميس سائيب سيميان كوليف سايمي ليون كالم متيفيت من ياسيكم وَثُنَا كَاكُرُدِ نُورِ كَيْمَنْرِينِ بِمِاكِ جِماعت سِطْعِ كَابِن كِي لِياسس اور چېرسے سرتا يا نوربول كے اور وہ لوگ ذبى ہيں زشبيد بھرانياروشهوا

کے مسلم سشرلین ۱۲ له الوداؤد وترضى ١١ ت مسنن كيرى نسائي مضمون ابن حبال ١٢

ان کی مالت پر دشک کے کریں صحافی نے وق کیاکہ یا رسول اللہ ! وہ کون لوگ موں کے ؟ توآب نے فرایاکہ اللہ کے اسطے محت کرتے اور اللہ کے واسطے ایک دوسرے کے پاس میشے المحت اور آتے جاتے ہیں یہ یا درکھو کہ ایمیان کے بعد النہ کے واسطے محبت کا مرتب ہے اوراس میں دو درجے ہیں :

من لا درجه ما يرب كرتم كتف ساس بناد يرم ب كرت بوكر دنیایں تم کواس کے ذرایعہ سے اسی چیز مال سے جو ا خرت ہیں مفید ہے مثلآ تأكر دكو لينه استاد كرسان عالم دين حال كرنے كرمب مجبت سے اور مرید کو کینے مرت دسے وا وطریقیت علوم کرنے کی وجرسے عجت ہی بگذاستاد کو اننے ٹاگرد کے ساتھ جومجت ہوتی ہے وہ بھی اس بنا پر ہوتی ہو كدين كاسلسله اس وحرب مرتول تك بري طوف نسوب بوكرما دى ربي كا اورمچہ کو آخرت میں صدقہ میاریکا اجسطے کا ۔ اسی طرح اپنے خاوم اوجے ن کے ما تھاسی نیت سے بت ہوتی ہے کہ ان کی خدمت اور احسال کی وصیے فادرغ اليالي حصل ہوتی ہے اوراطمینان کے ساتھ عیادت وطاعت کی وقت نعیب ہوتاہے۔ بس برسب اللہ ی کے واسط محت سے ، کیونکو کی دنیاو غض اس مبت معقود بی ب مگرمیری وی خاص الله کی ذات مطلوب نہیں ہے ،اس لئے اعلیٰ درج برے کسی اللہ کے پیا سے اورنیک له وشکیبی بڑے کوچوٹے بہی اتا ہو سے حاکم اعلی کے معالیہ معیل کے وقت برای کی بینکری ا و داپنی دمرداری دیمی تصییل ادکواس پردشک بوتا ہے اسی طرح حفارت انبیا رعلیم السلام این اپی امت کے نکرین شنول ہول گے اور پرلوگ ان سے حجو لے درجیں ہونے کی ویہ سے ان فکروں سے آذا دمول گے ۱۲

سندے سے بغیری دی غوض کے صرف اس وجہ سے مجت ہو کہ ہے تعفی الیے مجوبہ ہے کہ ویکہ محتوق کے کوچ کا کتا ہی دوسر کتوں کے تحدید کا تعلق میں میں الی کا مجوب ہے ، کیونکہ محتوق کے کوچ کا کتا ہی دوسر کتوں سے مجت ہوا ور اس کے مجوب بندوں سے مجت نہ ہو۔ یا درکھو کہ رفتہ تیسان میں ہوجا تا ہے کہ اللہ کے مجوب بندوں کے ساتھ لینے نفس کا سا میں ترقی ہوتی ہے ۔ پس جنا بھی برتا کہ ہو تی ہے ۔ پس جنا بھی ہوتی ہے ۔ پس جنا بھی درکھا اس قدرکھا اللہ من ترقی ہوتی ہے ۔ پس جنا بھی یا قدم مضبوط ہوگا اس قدرکھا اللہ من ترقی ہوگی ۔

بغض فی المسر بندوں سے عدادت ہونی چاہئے جن کوید درجہ

سیب ہوتا ہے ان کی یہ حالت ہوتی ہے مداوت ہوی ہے ہیں وید درجہ ساتھ احمدا بیٹھنا اوران سے بات کرنا کہ چھوڑ ھیتے ہی اوران کی مورست نظراً تی ہے تو آنکھیں بند کر لیتے ہیں رسول مقبول صلی اللہ علیہ و کم لیے وعا مانگی ہے کہ خدا و ذاکسی فاسی خفس کا مجھ براصان نہ کرائیو کراس کے احسان کی وجہ سے میرے دل میں اس کی محبت آکھا ہے ہ

حت فی الشّا وربغ فی الشّاسی کا نام ہے ، اور جن سلمان کو لیے مولا ہے اتن بھی محبت نہیں جس کا اثر ہوکہ السّیہ کے مجب ب بن جائیں اور خط کے قرضوں کو وہ اپنا ڈن مجھے توسمجھنا چاہئے کہ اس خص کے ایسان میں صنعت ہے اور اس کو لیٹ خواہی کے ساتھ محبت نہیں ہے ۔ ایسان میں صنعت ہے اور اس کو لیٹ خواہی کے ساتھ محبت نہیں ہے ۔

امر بالمعروف اور بني عن المنكر يعسى وعظ ونصبحت كابيان

الله پاک فرماناہے کتم میں کچہ لوگ ایسے بھی ہونے چاہئیں جونیکی کی جانب بلائیں اور اچھے کام کا محکم کریں برائیوں سے من کریں بیں لوگ مندلاح یا نے والے ہیں۔

واعفلول کی بے بروائی معصیت میں ایا ہے کہ حب الدوران میں ایا ہے کہ حب الدوران میں ایسے لاگئی معصیت میں مبتلاہ وجائی معصیت سے دوک سے بی مگروہ کا بی کریں اوران کو معصیت سے منح ذکری تو تق تعالی ان برعذاب جلد نازل فرما سے گائے حضرت عائشہ ضی الشرعنہ افراقی بی کہ آ ایک ایسے قصیہ برعذاب نازل ہو جی اسے جس میں اطحادہ بزاد مسلمان آبا دیے۔ اوران کے اعمال انبیا علیہ ماسلام جیھے تھے ، مگرا تنا نقص تھا کہ انہیں عالی میں اعلی کا میں اور انبیا رسید کے دوران کے اعمال انبیا رسید کے دوران کے اعمال انبیا رسید کے کا علی میں بینے سے ایک انہیں عالی کے دوران کے دورہ انبیا رسید کے کا علی ہیں بینے سے ا

كى نا فره نىيال ديمجي كمران كوغقته نداكا تتعاا ورام بالمعروف اورنبي النكر كوجيو ليربوت تع لبذا الماك كروت كئ . أكرتم كى جگه يركون اجازكام ہوتا بواد کھو کے اور فاموش بیٹے رہو کے تواس گناہ میں تم بھی شریک سجع جا زُکے مکیو بحد خیبت کرنے والا ا ورسننے والاگناہ کے اندرد واول باؤکی ً كنابه كارول ميل مكنا المحاع ديثى لباس ياست كالموقعى ميننے والے میں قدرگنا مبگاریں ای قدر اور معمیت کے دریش بیٹینا ان کے وہ یار دوست این ان کہاں يشيخ اعض والمصلان بي كذاب كاربي بوان كوديثى بياس اورطسلا في انكشتري يبنے ديجتے مي اورثن نہيں كرتے ۔ اسى طرح ايسے كا نواص بيٹينا حس کی دیواروں دیسے میں ہوں ، یاالی مملس سٹرکیے ہوناحہاں کو تی برعت ہودی ہو پاکسی مباحثہ یا مناظرہ کے ایسے حلیے ہیں جاناست وہتم ا ورلغومشغلہ ہوسب گناہ ہے ۔ بس خوب محیدلوکہ ان گنا ہوں کے موقعول پر مروب بخیابی خروری نہیں ہے ، بلکرجب تک سے تاحل نسیمت ذکر و گے ا ورگنا ہوں سےان کوروک نر دوگے اس وقت تک عبدہ مِرَّامِرگزرٰمِوسی کے ۔ یبی سبب سے کگوشششنی بہتر بھی گئی ہے ، اور حبّا پاکیا ہوکہ کٹرت اخسّال ط سے ضرور معمیت ہوتی ہے رکیو بح مسلمان کیا ہی تقی کیوں نر ہوجب تک ملا كرنے والوں كى ملامت كا خوت دل سے ذكال اورگنا و بوتا ديكھے تواس كو دوک نه در گذاه سطحفوظ نبیس ده سخار یخض مرابست حرام ہے اور امر بالمعرون ونبيعن المسنكر واحب سے ۔ ووطالت لمي اس كا وجوب قائم نهين ربهتا .

میری ستب کیونک لیے امرض میں ہوکھا نیا رہنے گا اس کے ہی بڑے
اجری ایسی حالت میں کوت کا جائز ہو نااس شرط پہتے کہ بدنی کلیف سین
مارسٹ یا مالی نقصان یا سکیت یا آبرورزی یا ایزارسانی کا بقتی یا فالب
گان ہو، دکھیے ترک نے سے ان کومیری محبت نہ ہے گی یا ناگوار گذر بگا
اور آسندہ کوئی تکلیف بہنچا نے کی نوکری کے یا جو کھیے ہے ہی دہ بندکولی
اور آسندہ کوئی تکلیف بہنچا نے کی نوکری کے یا جو کھیے ہے ہی دہ بندکولی
کے بااس و کوئی دین مسلمت وہیں وی کی توقع ہے اور نسیست کرنے کو وقعت نہیں ہے اور نسیست میں کے یو تو میں ہو ہو میا تو اس کے وقعت نہیں ہے اور ناس خیالات سے خلاف شرع امر بہنسیست کے بعذ وی بی بورہ اس خوال سے موالات سے خلاف شرع امر بہنسیست کے بعذوب مجدلا ہے۔

علمار كالنابون بركوت كوزا بهلي خالت واس كوسلوم بوك من اس گناه سے منے کروں گا قوم کونظ حقارت سے دیجا جائے گا ، اور ڈیمیری بایت کی ہے لوگ پروا کرنینے اور خراس گناه کوچوڑی گے ، تواہی حالت میں میت کرنا واحب زیے گا ۔ اور پر حالت اكثران مصيتوں كے معلق بيش آتى ہے جن كے مرتك فقبا وعلماريا اي وك بوت بي بوان آب كوديدادا وتقى مي بي كيو بحاكركو في شف ان کونصیحت کرے توان کوسخت ناگوارگذر تاہے اور وہ گناہ چیوٹ انہیں جس كوانبول نے اختیاد كيلہے ۔ اليے وقع پربینگ سخوت جائزہے ،البتہ ذبان مريم بعي نعيت كروينام تحب إس كرماتها كابعى خيال ركعوكم ايى بكرنسيت كرنا واجبنبين را محتخدولان سائحا نامرورواحب ب ، کونکریشارسناایاا متیاری ولب اورباختیار و معیت کادیمنایم معسیت ہے ۔ ہی جبال دوریٹراب جاری ہو یا فیبت ہوری مو یا ڈاڑھی مناب بردي فيمتشرع فاسق فاجر سطيع بول وال بركز زسطو ا دوتشرى حالمت يب كذاجائز

دوسری حالت بہد اہم ر فعل ہے بادر کھنے ہے قوی اندلیٹیم پر نصیحت چھوٹ نا ہہ، اندازی کی قضرور ہوگ مجھ کو مادی گے مثل کسی مجگر شراب کا شیشیاستار وغیرہ یا اورکی کی سامال ابو ولعب رکھا ہوا دیکھوا ودیمی ہے کہ کے مراحم کر اس کو تو ٹر بھوٹ دو ، مگر غالب گمان پہو کہ الیا کرنے ہے ان کامالکتم کو ایزا وئے بنے بازینیے گاتواس مورت میں بھی جی بور بنا جائز ہے ،البت بہت کرنا

له خلات مشرع به

ننے کی ورسے کا دیوناخلوص کے خلاف ہے۔ ایک مرتب مامون دشيدكوايك واعظ نے كمى بات كى تقى كے ساترنصيحت كى تو مامون رستیدنے واعظ سے کہا کہ ذوازی نے محت کیا کرو ۔ دیکھوتم سے ببترنامح حفرت كليم الشيغيرمجوے بدتربنده فرعون معركي جانب الصح بناكر يص كُذَاوران والتُرتعال كاعم بوا * وَتُحْذُ لَالَ هُ مِّذُ لَا لَيْنُ الْمُؤْكِدُ لَيْنُ الْمُؤْكِدِ ۔ موی اور اے ارون ! فرعون سے نری کے ساتھ آئی کیجیو حضرت امالش عدوات بكراك مرتب اكي نوجوات مقبول ملى الشطيه وكلم كى خدمت مي حاضر يوااور كينے لگا كم مجھے زناكرنے كى اجازت دیجئے ۔ اس خس کا یکلیمُن کرلوگ اس کوڈ انٹنے گئے ۔ جنامے مواللٹر ملى الشعليروم في منسرما ياكرجيورو ، اورات ض كى جانب توجر وكرفرايا ك يهان أو و اوروب وتفى ماك يالوآب في كماكر من تم الك بات بوجیتا بون، جلا اگرتمهاری مال سے زناکرے توکیا تمکوناگوار نیس

گذیے گا به اس نے وق کیا کیوں نہیں گذیے گا ، مرود گذیے گا ۔ اس بر آپ نے فرایا کہ " ہرتم ی بتا ذکہ دومروں کواپی ما ڈل کے ساتھ الیہ اپنا کوئی آوا ہوگا" اس کے بعد آپ نے فرایا کہ " امچھاتم ادی بی کے ساتھ اگر کوئی الیہ افعل کرے توکیا تم کوئیٹ ندہے ہے " اس نے جواب دیا کہ نہیں آپ نے فرط یا کہ " میر دومرے اپنیٹیول کے ساتھ اس کوکیول ہے سند کرنے گئے * یہاں تک کہ آپ نے بہن اور تعویمی اور خالر سب ہی کا نام لیکروریا فت فرایا اور اول می جواب جے ہے کہ " میر دومر سے لوگ اپنے دوئر دول کے ساتھ الیمی ہے جائی کول اپ ندکر نے گئے ۔ آخر

له حفرت موی علیال ۱۱ س که احسد وطبرانی میع ۱۲

يرعورت كرمس سے زناكيا جائے كى كامال يابيتى يامجو يعي يا خالة وخرور بوگی اور حیتمبیں لیے رستہ داروں یں سے کسی کے ساتھ بھی زنا کرنا كوارانهيوب تودوسر عصلانول كوان كيمى يرشتردار سيتماذان كراكونكرگوارا بونے لگاہے ؛ اس كے بعد دست مبارك اس كے يين يرد كما اورد عالى كم خواونوا ؛ اس كا قلب ياك كرد يج اوركناه بی دیے اوراس کی سشرم کا می صفاظت سنر ائے یہ اس کے بعد بمن دعماكرب سوزياده نالسنديوه كناه اس كزديك زنابى تما الكي توجيح في تغريضيل وحمة الشعلير سي فنكايت كي كي كرحفرت سفيان بن عيدن في المحفظة ولكرليا يشخ في سنوم من الومون يهرك الله دیا کنهیں جی اسفیال نے ایناحق لیا ہو گااور دہ بھی ناتسام گرخلوت يس مفيان كو ياس معاكرنهايت نرى سينعيستك اورفره إياكه إعالظي! بماودتم اگربزدگشبین توبزدگول کے محب اور دوست دیکنے و الے تو ضروری مطلب پرکیم اوگ پوئی اک دیروش شار ہوتے ہیں اس لئے تم کولیے افعال سے بنیا میاستے جس کولوگ جسّت پچڑیں اور بزرگوں کے نام يرعيب لگائيں ۔

واعظ كوعالم باعمل بونا جائية مركم المسلاح كرنى جائية كمونكر المسلاح كرنى جائية كمونكر المسلاح كرنى جائية كمونكر المرالم حروث المرالم حروث المرالم حروث المراكم خودي بعمل بودر الوك بنت اور خاق الراياكم ترويق المراكم كونى عالم خود عامل بوغيروق نبين بي ، الركوني عالم خود عامل برسي بوتر بي الركوني عالم خود عامل بوتر بي بوتر بي الركوني عالم خود عامل بوتر بي بوتر بي

چوڈ دینااورگناہوں کو ہوتے ہوئے دیجے کوسی اختیار کرناجا کرنہ گا۔
خوب مجدلو کہ پینیال بھی ایک شیطانی وسوسہ ہے کہ جب کمنے دلیات
عامل نہ بن جا کیں اس وقت تک دوسروں کوکیا تصیحت کریں گے۔ اگر
ایسا نیال معرود ہوجا ہے تو وعظا ورنصیحت کا سلسلہ مفقود اور دروازہ
بالکل معدود ہوجائے گا۔ یا در کھوکہ امر بالمعروف واجب اورضول کی
ہے ، اورعاصی اور گھڑ گارٹنی کو بھی وعظا ہدینا جا ترہے ، البتہ واعظین
پریدد کوسروں کو تھی وعظا ہدینا جا ترہے ، البتہ واعظین
دوسروں کو نصیحت کریں اس پرخو دہمی کا در بند ہوں ۔ پس اگر ایک
واجب کو ترک کیا اور نود بھی عامل نہینے تو دوسرا واجب ترک کرنا



مَنْ مُنْ الْمُنْهِمِينَ الْمُنْهِمِينَ الْمُنْهِمِينَ الْمُنْهِمِينَ الْمُنْهِمِينَ الْمُنْهِمِينَ الْمُنْهِم المحرف مراسان

إثبارع سنت كابيان

چوبى اصل سعادت يى بىكە تسام حركات وسكنات يى جناب دمول النُّرْصلي التُّرعليركُ لم كا اتّساع كيا جائب ، اس يخ سمحدكوك مضرت رصلی الشعليرولم) كتام افعال كى دوسى بى د أول ؛ عبادات ، مثلًا نماز ، دوزه ، زكوة ، ج وغيره. دوم ؛ عادات، مثلاً كمانا بينا ،سونا ،اشنا بيثينا وغيرو کامل اتباع رسول برسے کہ کے انعال مرات کردولوقع عبادات اورعادات وقول میں ہو کوئی تعالی نے مسالم اللہ میں ایت کوئی تعالی نے مسالم اللہ میں ایت کوئی تعالی نے مسالم اللہ میں الل ين أتخفرت على الشوليدك لم كابتاع كاسكم فروايات وبال كوئي فيدين لگائی، بلكريون ايرشادفراياب كر" بيغىب يونچيدى مكودي اس كول لو، الديم چينرے شکري اس سے بازا جاؤ يوسٹين محدين الم نقرام عرصرف اس خيال سے تراوزنهيں كھا ياكرجناب رسول الشصل الدعكية كے تربوز كھانے كا اندازان كومسلوم نہيں ہواتھا ۔ ايك بزرگ نے كيب مرتب موذه سہواً اوّل بائیں یا وَل مِن بہن لیا تواس کے کھنا رہے میں جب تک ایک گون گیوں خب رات مذکر لئے اس وقت تک چین سے نہ سیلے معلوم ہواکہ کامل اب ع اور پوری سعادت مندی ہی ہے کہ عاد توں میں جا کہ عاد توں میں جا کہ عاد توں میں جا کہ اور قول میں جا کہ افتدا کیا جات ، کیونکہ اس میں بے شار فائرے ہیں اور ذواسے تساہل میں اسی نعمت عظیٰ کا کھو بھینا ہے وقو تی ہے ۔ اب ہم اس کا مبد اور یہ بات بیان کرتے ہیں کہ اتباع کا مل میں کیا فائدے ہیں ہے۔ اس کی تین وجہ ہیں :۔

اول برتمہیں حلوم ہے کہ تلب کو اعضار سے خاص تعلق ہے اور اعضا کی برن کے بتمام افعال کا اُڑول کے اندائی پی اے دہر خاص بیک اعضار کی حکات سکنات مواعدال پر نہوں گی اس وقت تک قلب کو مطاحیت اور اکی مصل نہوگا کیون کو انبان کا قلب آئینہ کی طرح ہے ، اور آئینہ آفتاب کی دونی ہے اس وقت رکون ہوسکتا ہے جب کہ اسس میں تین بائیں موجود ہوں :

أقل يكاس كوشيل كياجاك.

دوم يركه اس كاحِرْم صاف اورشفا صنب

سوم يركه اس مير مجني الكل نربور

اس طرح جب قلب کے اندر تینوں اوصاف موج دہوں گے کو استنظار نفسانی کے ترک کر دینے ہے اندر تینوں اوصاف موج دہوں گے کو استنگار نفسانی کے ترک کر دینے ہے اس کی مینائی میں اور افعال اعضار کو اعتدال پر دکھنے سے اس میں تجی نازی تعدال کا اس میں تجلیات بادی تعدال کا اندکاس میں تھا۔

له درسیانی ۱۱ که مان ۱۱ که حبم ۱۱ که شیرهاین۱۱ هه عکس ۱۱ 9.

عاداتِ محدبیے اتباع میں اعتدال کے بیعن بین کہرجے زکواس كيموقع يركها جائ متلأجار مُنفعتِ دينيكي كيتين ولامراد متمي سايك ست بي ما قبله كوالشرتعالى في وت يخشى ب اس لئ شام نيك كامول مي واه ذكرالى بوياتلاوت قرآن اوروضوبو يادعار ، قبيله كى جانب منركيا جاسے۔ اورجوا فعال گینیانے کے قابل ہوں مثلاً تضامے حاجت بعنی بول و مراز ا ورجائع بس متركولنا وغيره ،اس وقت اس جانب سے دُرخ بھيرليا جائے، الساكرنا يوبي سبت قبلركي عزَّت كاقائم دكھناہے ،لہذايبي اعتدال ہے۔ يا شلاً في تعالى نے داہني جانب كو بائيں جانب پريشرف بخشا ہے ،اس نيے مكو بمی اس کے خرف کا ہروقت خیال رکھنا چاہتے کہ اگر اچھے کا م کرسے خلا كلامجبيداتها يا ياروق كمانا بوتووا بنا باتد، اودمييل كام مُثلًا اسْتَخِاكُوا، ناكسنكنا يا بفرورتكى ناياك چزكو بانته لكانا بوتو با يان بانته كَرُكُ الصادَ، كراببنو تواقل دائس طرف اورتج تأببنوتو اقب داسنه باؤن مي ببنوسجر ين ما و تواول داسايا ول ركمو اورجب بالمركلوتواول بايال يا ون كالور الغرض برشے كيمستيكا خيال دكھنا عدل اورانصا ف كهلاتا ہے۔ اوراس ظاہری اعتدال سے قلب بھی معتدل اوٹستوی ہوجا سے گا۔

اگریے دو تہادی تجدی آیا ہے قاتم برکرکے دکھو ، اوراس کا قوتم ہے کہ کہ کا اوراس کا قوتم ہے کہ کا اوراس کا قوتم نے تھی تجرب کیا ہوگا کہ جوٹ ہولئے ہے ان کی ٹوابس بھی زیادہ محول ہوتی ہیں ۔ اور جوگر جوٹ بولئے ہیں ان کی ٹوابس بھی زیادہ حجول ہوتی ہیں ۔ کیون کوراست گوئی سے قلب ہیں اعتدال اور درستی و

استقامت آ ما تی ہے ، اور در وغ گوئی سے اس میں کمی پیدا ہو ماتی ہے۔ دکھو چوبی شاع اکثر حموثے اور انوتخیلات کے عادی ہوجاتے ہیں اس لئے ان کے قلب میں کمی پیدا ہوجاتی ہے ۔ لہذا جہال تک ہوسے قلب میں جمع فے خیالات کوجگہ نہ دوور نہ دل کا اعتدال ہاتھ سے جاتا ہے گا ۔

اسی طرح اعمال وا فعال کی تاثیر سیجی دوی طرح کی بیں بعنی بعنی عفی عال میں اوران کی تاثیر وں بین تو مناسبت کھی ہوئی موجود ہے مشلاً نفس کی فواشو کا اور وزیوی لذاؤں کے بیچے پڑھا نامضرے کیو تکرجب مرتے وقت ونیا سے دوائی ہوگی ، اور فلا ہرہے کہ یہ ایک نزایک دن ضرور میں وناہے، آلو اس وقت ضرور ان لذاؤں کو چیوائے تی ہوئے میں انداؤں میں لذاؤں میں لذاؤں میں لذاؤں میں لذاؤں میں لذاؤں میں لیا ہوائے اور ان کے نقصان وضرور میں مناسبت کھی ہوئی ہے۔

يامثلًا ذكرالي مفيدى ،كيوى ذكرك سبب ي تعالى كم مفت

91

حکل ہوگی اور صرفت کی برولت محبت پیدا ہوگی۔ اور محبت ضراونزی کا تیجہ یہ ہوگا کہ آخرت کی پا مُزار لفاقوں کا شوق ہوگا۔ اسٹرا دنیا سے جاتے وقت کچھ سمی صرت نہ ہوگی۔ بلکہ لینے محبوب سے ملنے کے شوق بین ٹمنی نوٹی دوا ہوگا ہیں ذکرالٹر اوراس کے ٹمرہ وا ترمی مجی مناسبت فاہر ہے۔

البتدووس ققم کے اعال اوران کی تاثیرٹ کے مناسب سے او نہیں ہوتی ، اور یوبی خاصیت سے ووی اور نوزنوت کے علا و کمی ط*ال بی علوم* نهيں ہوسكتى ، اوراكثراعمال خرلعيت جو بحائق ميں واخل بي ليسنرا جبتم ديجوك رسول متبول ملى الترعليه وسلم في وحباح كامول ميس باوبجدد دونوں پر قدرت ہونے کے ایک کوٹرجے دی ہے مشلاً استجاداتیں التسامى كريخ تق محرير بأي بالتوكواس كام مي لكا يا ويسيد التمكوطيمده دكعاب - تورطامت بسكة آب فياس كى خاصيت مسلوم وسياكري الياكياب اووخروداس بي كوكي خاص نف سے جس كوبر شخص نهين تجديمتا يتعب كى بات ب كمحدين زكر ياطبيد بتيرول اوراد يول ك بوفاميتين بتلاء والوطابون وجرا اورب يوي تميم مان ليجائي ا ودييّدالبشرمحدين عبدالسُّرعليافضل العّلوة والسّلام نونبوت اوروى مّالى ے اعمال کی جی خاصیتیں بیان فرائیں ان کوندمانا جاسے اور خلاف عمّل بنا ياجلت مسلانو! يقين جانوكرطبيب دوحانى جوكميمي كرس كاضرور اس میں نفع ہوگا اگرچراس کی معلمت تمہاری عقل اور علم میں ذا سے۔

قیسی اُرمِن برے کہ انسان مانوروں کی طرح اُن اُداد اور کیا زمہیں پیداکیا گیا بکہ اس کوانٹرف المخلوقات اور نثر بعث کا پابند مبایا گیا ہے۔ اس سے تم کومناسب ہے کہ بچکام کرومنّت کے موافق کرو ، تاکنفس محکوم

اورطع بنارے ، اورفرشتہ خصلت بن جاؤ ، اور یوں مجوکہ بندگی بیجارگی كانام بر اس ليربنده كوماية كرج حركت مىكر دواتباع ول ملی الشعلیہ وسلمک نیت اور پیسبر کے بھم سے کرے تاکہ آٹادب مگ ہر وقت فا ہر پوتے دہی اور بردم ریاضت واطاعت کا اجرملتا ہے بابندى وه چزب كاگرسنطاكون فخف ابناتسام افتيارسى جانورك بأتين ديد ترسي يخف اس ساجى مالت مي بوكا بوسرايا ابنى نوامش يرطيلي

يد فائلة اخلال عمشرى كبرون على لبوكتاب، فواكمى والم محمقر موجا مع كو يحاس كا جومقعود ألى سع كرابك فاحمال کی پابندی ہو ایم مطود پر حاسل ہے قومشرائع مخلف کے احکام بدل جانے برسى يه فائره ضاصم مفوظ ولم رنجلات اور ووسرے فائدہ کے كر حكست اور خاميت اكي تعين بيزب اوروه اختلاف مثراك سع بدل نهير سكتى يس اكرتم تيول دمزول يراعجى فك لكراوك توترام حركات وسكنات يمي اتبادع منىت كى خرودت تم كوواضح بوما سے گی ۔

ف بل عرد ووا ا جوكيم نيان كيام ده اود عادييرس اتباع سنت كاتريب كعنتريني بإحماقت حلي كيلئے بيان كياہے ۔ اور جن اعمال کوعادات سے تعلق سے اوران کا اجرو تواب بیان کیا گیا ہے ، ان میں بلاعذ اتباع جيود دينے کی آوسوائے تعشیخی یاحا قت بھگ کے اورکوئی وجہ

ارمن کی عادت ہو ہ سے پوشیدو اا

بى تحدين بين أتى ، شلاً رسول مبول على الترعليدو الم ف فسروا يا بي كم "جاعت سے نماز طب مع من تنب نماز طب می بیشت کیس درون نیلت ہو " اس كے مانے كے بعد اگركوئى مسلمان بالسي حقول عذب كي نمياز ترک کرے قاس کا مبیب یا تواس کی حاقت ہے کہ اگرگو کی شخص دویسے چوٹے كمابك بيسه لي تواس كواحق بتافيه او دفود تأكير فغيلتين حيود كرابك براكتفار كري توبيوقوف منهواء اوريانعوذ بالتديينيال يركدمول مقبول سيالته عليه وسلم كايدادت المحض انتظام مسلحت كى بنا يرب تاكداس رغبت مولوك ایک مگر کمی بوجایا کری میویی ستائیس کے مدد اورجاعت سے نماز مرسف ين كوئى مناسبت نبين حلوم بوتى يس الرفوانخواستدايدا خيال ساقور كفرب اودكفر بھى ايساختى كەاس كى اطلاع لينے آپ كوسى مسس سے و لگوں كاليساحال بوكياسي كراگركونى طبيب يا دينگل يانبوي كوتى بات براسرتواس ک وجرخوا مجعم سی آئے یا را آئے اس کوفوداتسلیم کرلیں کے سیکن بی صلی اللہ على وسلم كحق ل مي مناسبت موسلة بي يجل الركون نجوى يون كيركرت كسيرً دن گذرنے برتم کوایک معیبت کاسامنا بوگا کیو بح تبها معطالع اوروس ش ستائیس درج کا بحدی اوربرد وزایک درج کم بوگا اس ست اگراپذا معلاجات بولوگوش بيط د بواود با برزيكو - اس كوش شكريشك تم كمر كي يونربوما ذك اورسب كاروبار عيوط مينيوك . اوراكركون محمات می که اسے میال ایک درجر کواور ایک دن کومناسبت کیا ہے ؟ اور معیدت اورز اس کیا تعالی ہے ؟ نیز باہر نکلے اورمعیبت کے ال جاني كياعلاقهي يرسب وابيات باتين اوتنجى بين وق كفي عصط له بخاری مسلم ، ترمذی ، نسانی ، این ابو، احمد ، الک ۱۱۰ سے علم شل وال پیخیم مبیداعلم ہے ۱۲

پس اس کاخیال ہی مت کرو ، توتم اس کاکہنا کہی نرمانو گے اوراس کواحق وبيو توت ا وعلم محم كالمناس معوك يمرافسوس مدافسوس كريول المطالة عليه وسلم كربتائي مبوسے اعمال ميں تمام مناسبتوں كو يمھنا جا ہتے ہواور اگر ذیم میں سئیں تومنکر و براعقاد بنے جاتے ہو۔ تم ہی بتا و کر کیا پیغراور اکا ریسالت نہیں ہے ، صالا تکہ ان عبادات کا مؤثر ہو ناتجریہ سے بی علوم ہو چکا ہے ۔ اور پیمی ضروری ہیں ہے کہ بی کی دی ہوئی خروں کی منابتیں ومعلمتين سب بي كومعدام بوجا ياكري رمبيلامين تمس يوجيتا بول كم اگرطبیب کوئی دوا بتاسے اوراس کی خاصیت تم سے بیان نرکرے ، ایجومی كحى آئنده واقعه يركونى حكم لكاسے اوداس كى مناسبت تم كور بتا سے توكيا اس کی بات منظونیسیں کرنے ہ مگرافسوں کرنی ویسول دصلی الٹرعلیرولم) كوتي دوما في علاج وسيرياتين إوراس كي مناسبت اودخاصيت برتباليمن توار کی مفونیں کہتے ۔ اس کا سبب سواے اس کے اور کیا ہے کہ تجی کا اور طبیب ہو بی موجودہ زندگی کے متعلق علاج بتا بیرے ہیں، اوراس زندگی کے ساتعتم کومجت ہے، اہسناآنے والی معیبت یام ض کے فکری اس کی وجها ودمنامبت يعضي كابخش كشنبيرديثا ، بكدوس برس بعليوالي معيبت كاآج ہى سے فكروانظام شروع ہوجا تاہے حالانكروم عض موہوم اوراييے لوگوں كى بتائى باتيں ہيں جن كا ہزادوں دفعة جموعة تم خواً زاچكے ہو اور ہو <u>پیچے میکے رای</u>سی باتیں بتاتے در بدر ماسے ماسے پہرتے ہیں اور نی پونکوطبیب روحانی بین اس لیے قلی امراض کاعلاج اور وائی صحت کی تدبير بتلاتے بي اولاس كي مطلق بروانهيں، ف كرنهيں، اندليث نهيں۔ بكرآنے والى آ حندرت كى زندگى كاجبيباليتين ہونا چاہتے ويقين مصل

بى تهيين اس لئے مناميتيں اوچيتے ہو ، الشرت الى الى عقلت سے بھاسے جس کی در سےعباد توں میں بھی اتسباع رمول صلی الٹرعلیہ وسلم نہوئے۔ خاصيت اعالمي ضعيف يتث اسلانون كي تان سيكم ير بهي عمس ل كونا مناسب بي الرق جي ادن عديث والدون يرجي عمس ل كونا مناسب بي اليون ورالانتدار كرلياكرس مشكآ دمول تتواقع لمانتهطير وكلم فسنوايا بسي كمثنبها وتغثنب کے دن مجھے لگوانے سے بوس کا نولیٹہ ہے۔ ایک محدث نے اس مورث كفيف كم كقد داستند كرون يمية كوار تقص كانتور بواكريون مبستلا بوكئ رجند دوزبعدا يكسشب كودسول الشمعلى الشعطيري لمكى زیادت سے مشرف ہوئے اودمرض کی فٹکایت کرنے لگے توصفریت ملی الڈ علىروكم نے نسرما یا کرمبیا کیا ولیا بھگٹو یشنبہ کے دن پیچنے کیولگائے تتے ۔ انہوں نے عون کیا یادمول اللہ؛ اس مدیث کا اوی صنیعت تھا۔ أب نے فروا یا کرمدیث تومیری نقل کرتا تھا ۔ عوض کیا کہ یا دسول اللہ اِ خطب بونى ، مِن توبركرتا بول . يرصنكر جناب رمول الشَّملي الشَّعليه وسلم في كا مسترمائي ، ا وروس كا تحصل تومن كانشان مي دريا .

ای طرح اکفرت ملی الڈعلیہ وکا نے فرماً یا تھے کو عور کے بعد موجانے سے عمّل کے جاتے دہنے کا خون ہے ۔ اورا یک منٹیٹ میں گیا ہو کر ''جن شخص کے جوتے کا تسمہ ٹوٹ جائے توجب تک اس کو دوست

عه یعی میری طرف خسوب کرنا درج پموخوعیت پی دشخا ا ودبیان شحا خاصیست عمل کا طال ۱ درجسوام کا پیوعمل کونابی اصتیا طاکی بات بختی ۱۲ د مولانا شخا نوی دحد الٹر) ذکرانے تواس وقت تک صرف ایک جو تا میہ کرم گرنہ جلے "
اور دوسری مدیث میں ہے کہ" زجہ کی اقل خوداک ترجیحور مونی
جاسے اوراگرید نہو تو خشک چوا را ہی ہی مکوین گراس سے مبترکوئی غذا
موتی توحق تعالی علیی روح الشرکے میسالہونے پر بی بی مریم علیاست م کو
دی کھ التا "

نسین در در الدس الله علیه وسم سنده ترس کرجب کوئی تمها کے پاس مٹھائی لائے تواس میں سے کچھ کھالیا کرو اور نوشنبولائ تولگالیا کرو ہے اس مٹھائی لائے تولگالیا کرو ہے اس مل مناسبتیں نرٹولو، اس مل مناسبتیں نرٹولو، برجون وسیدا مان کو کھون کے کیون کہ ان امود میں بیشنسادا صدارا ور در وزھیں من کی خاصیتیں برخون کی مجھیں نہیں آسکتیں ۔



حناتمب اوراد مذکوره کی ترتیب سے

یا درکھوکہ دنیا آخرت کی تحییق ہے اوراس عالم فانی کے پیداکرنے سے تقعود یہ ہے کہ انسان می تعبائی سے مجتب کرے تاکہ آسمنرت کی خوبی اس کو مکسل ہو۔ اور چو پی پی مجتب بندیس معرفت کے ہونہ ہیں ہی اس لئے معرفت المئی مقدم اور خروری ہے۔ اور معرفت مصل کرتے کا

طيقيهي بيءكه وقت حق تغسالي كي دصيان اور يا دين شغول يعطاوا پوئومتنى يمى عبادتين بين سب دھيان اور يا درى كى غرض سے بي، اور ا ان كومخلف اقسام كا عبادتول كمختلف لقسام تاکبروقت ایک طرز کی عبادت می شخول رسنے سے دل گھب را نہ حاسے ہ ا ورنیز اگر بروقت ایک بی عبادت کی جاسے گی توطیعت اس کی خوکر ہو جارع کی اورعادت بوجانے کی وجرسے قبی اثران سے جاتا ہے گاماس لتر برعبادت کے لئے مدا وقت تج يز كرانيا صرورى سے البت ولوگ فناا وتشتغرق بوجاتين ان كوترتيب وتقيم كم خرورت نهيس سيكيفكاس مرتبدي بنجيرا يك بى عبادت ره جاتى ہے اور بروقت ذكر ين شخولى بوتى ہے مگر ہ درجدالیانبیں کم برخی اس کو حال کریے ، اس لے تمہیں وقات مضيط كرنے كى نهايت ضرورت ہے كەفلال وقت سے فلال وقت تک یہ عبادت ا وراس گھنٹہ سے اس گھنٹہ تک برعبادت اورول کویرا وردات کویہ ۔ البتہ اگریخ وین پڑھتے پڑھا تے ہو یاکسی حگر کے حاکم بوا ودرعا ياكى مفاظت بيشنول بوتوون بعراس بين شغول رسنادوسى عباد تول سيبترب بكويحظ دين بيك بدولت حكم الهى كتعظيم فاسل ہوتی ہے اور جونف اس تعلیم یا مناوق کی حفاظت وگئیانی سے لوگوں کو

ا منت مزدوری کونا اور ایماری کو الدار آدی کو منت مزدوری کرنا اور

لے عزق ۱۱

ملال معاش سے بال بچل افتحلقین کا پیدے بھرنا بھی عباوت برنی وہشل ہے مگران حالتوں ہیں بھی فرالی سے علیدگی مت اختیار کرو ، بلکہ جس طرح می حدید معنوق کے مواجس کام میں بچہ شخول ہوتا ہے اور دل بوتا ہے بحالت مجبوری صرف ہاتھ پاؤک سے شخول ہوتا ہے اور دل بروقت معنوقہ ہی میں پڑا رہتا ہوا کی میں جس کام میں چاہے شخول ہو اعضا ہے بدن سے اس کو انجام دو مگر دل کو حق تعالی ہی کے خیال ہی معروف رکھو۔

حضرت بن الجی ن خرقانی رحمۃ الٹرعلیہ التھ سے کسب کرتے اور محنت مزدودی سے مال مال کیا کرتے اور محنت مزدودی سے مال مال کیا کرتے اور نین جزیں مرحمت ہوتی ہیں جی احد زبان اور قلب ، موان ہیں سے باتھ توکسپ معاش کی بیٹ ہے اور زبان مخلوق کے واسطے تاکہ ٹچھائی اور تجائی اور قلب دنیا کے کئی تھی کا بھی نہیں ہو بلکہ صوف الٹرجل شانۂ کھیلئے ہے کہ ہوقت اس کے صوری ما حرب ہے ایس ان اللہ کے اور تا بھی کی ایس کے صوری ما حربے کے انسان اللہ انسان کی بیٹ کے اور قل کے انسان اللہ کے انسان کی ہے گئے انسان اللہ کے انسان کی ہے تھی اللہ وفیق مرحمت و سنسریا ہے ۔ میں تعدال توفیق مرحمت و سنسریا ہے ۔



مَنْ مُومِ الْخُلاق كَى تَفْضِيْل؛ الا

طهارت تلث كاسيّان؛

السُّرِق الى صراتا ہے کوس نے اپنا تلب پاک بنالیادی فالی کوسپنی ہو اور دسول مقبول میل السُّر علیہ وکم مسروات حسین کر موسارت نصف ایمان ہے ہے کو تکرایسان کے ڈیوسٹر ہیں یعنی قلب کا ان نجاستوں ہے پاک کرنا ہوسی تعالی کو نالیسنداور محبوب ہیں گویا کی تصویر سے اور است کرنا ایمان کا ایک حز دہیں اور طاعت سے نویش آرائش سے طہارت کرنا ایمان کا ایک حز دہیں اور طاعت سے نویش آرائش اس کا دوسرا الحراب کا ایک حز دہیں اور طاعت سے نویش آرائش اس کا دوسرا الحراب کے ایمان کے امول بھی دی ہیں، اس کا دوس سے مراک کو میرا جراب ان کیا جاتا ہے۔ جن یہ سے مراک کو میرا جراب ان کیا جاتا ہے۔

يوسيلي المثلث المبير

كثريد كالوروص طعاكا كابيان

نیاه کهانا اوربیت مجرنے کی بوس سیول گنا ہوں کی براے کیونکر اس سے جماع کی خواہش بڑھتی ہے اور جب شہوت بڑھتی ہے تومال مال كسف كى خوائش بوتى ب كيون شوي مال كرىغىرلورى بسي بوسكتي اوراس كى بعد طلب جاه كى توائيش بوتى سے كيونكر جاه كے بغير مال حال بوناد شوارب ، اوروب مال وجاه کی نوایش بیدا بوگی تو تیبر، رہا، حسد ، كيشه ، عدادت عرض ببتيرى اختيل جي بويايس كي اوردين كيتياي كا بوداسامان اكتما بوجائدكاء اس ك صديث مي سوك كى زياده فغيلت آئى ہے . دول مقبول ملى الشرعليد وسلم صنى التي مي كم ادى كيلے بمرنے کے داسطے بیٹ سے نیادہ کوئی بڑا برت نہیں ہے، آدی کو خورت كے لئے توچند لقے كانى ہي جن سے ذندگى قائم اور كم خبوط ہے ،ا وداگر اس سے زیادہ ہی کھانا ضروری ہے توسیت کے تین متے کرینے ماسیں كرتبائ صدكمل كيل بواوتهائ صريان كيسك اورتها أيصه سانس كيسية خالي چوالدياجاسے ـ تقلیل طعام کے فوائر میں فائرے توبیتیاری پھیمان میں سے چندہ فی فائدوں کا ذکرکرتے بین بن کو اصول کہنا چاہئے اور در حقیقت آخرت کی سعادت کا حاسل سن انہیں رمہ قون سے

ہونا انہیں پرموقون ہے ،
اقل ، تلبیں صفائی اور بھیرت میں روشی مال ہوتی ہے کیونکہ
پیٹ مجرینے ہے بلائٹ پیرا ہوتی ہے اور قلب کی انجھیں انہ می ہوجاتی
میں اور ذکا درت جاتی رہی تومعرفت الہی ہرگز مال سنہیں ہوسکتی ۔
موم ہدول رقتی ہوجاتا ہے اور مناجات میں مزاآتا ہے ، کیونکہ
جب یہ تو برہ خالی ہوگا تو لینے مالک کے سامنے سوال والتجا راور عارکے نے
میں لطف آئے گا اور نوف و خشہ وانک ارسیدا ہوگا ہومعرف

على كرنے كى تخب ال بير ـ

سوم پر کرشنفس دلیل اور خلوب بوجا تا ہے اصطابر ہے کہ جب دخمن خداکو شکست ہوئی اور خفلت کا دروازہ ہند ہوگیا توحی تعالی کی جانب توج بہوگی وجہ ہے کہ جب دسول ختیوں کی دروازہ کھل جائے گا ۔ پی وجہ ہے کہ جب دسول ختیوں صلی الشعلیہ وسلم پر دنیا بیش کی کئی تواکب نے منظور ہیں و سیدرائی اور ہوں عن کیا کہ بارالہ ایس چا ہتا ہوں کہ ایک دن بہیں مجرے تاکہ شکرا داکر دن اور ایک دن فاقہ ہوتا کہ صبر کروں ۔

رس ما الدور المسال المستول اور هذاب كى تعليفول كادنياس چېرام در المرت كى مسيبتول اور هذاب كى تعليفول كادنياس سى كېرو كيدنا چا بينة تاكدان كى ادبت كفس خرد ارموكر در اور فالهر بى كېروك سے زياده انسان لينه فنس كوكوئى عذاب به يس بېنجاس كا له صستى اور جيدت كاكند بونا ١١ كه الله كادر ١١ كه ترمزى ١١ کیونحاس بی کی قدم کے تکلف اور سامان فراہم کے نک حاجت نہیں ہو
اور جب بھوک کی وج سے مغراب اللی کا ہروقت مشاہرہ بسے گا قوتی تعالیٰ
کی معصبت کی جانب توج بھی نہو گی اور نا فرانی کی جرات نہوسے گی ۔
پیچم ہر تمام شہوتیں کر ور ہوجاتی ہیں کر کی خواہش کے پورا ہونے
کی آرز فرہ لیں رہتی اور دنیا کی مجت دل سے تک جاتی ہے ۔ مضر سے
دوالتون معری رحمۃ الشرطیہ فراتے ہیں کہ جب بھی تیں نے بیٹ بحرکے کھایا
سے قو ضرور کوئی گناہ مجھ سے صادر ہوا یا کم ہے کم گناہ کا قصد توہ ہی
گیا ۔ صفرت عالشہ صدیقہ فراتی ہیں کہ " رمول مقبول سلی الشرطیہ وسلی کی بیٹ بس کے بعدر سے بہلی برعت ہوا بجاد ہوئی وہ بیٹ بھر کھانا ہے ہے بس سے مسلمانوں کے بیٹ جرف کھونے وان کے نفس ان کو دنیا کی طون سے کھینے کے بیٹ بھر کے گئے ۔

میں مسلمانوں کے بیٹ مجرف کھے توان کے نفس ان کو دنیا کی طون

مستسمتم ، نیادہ نینرنہیں آتی اورعبادت گران نہیں گذرتی کیونکہ بیٹ ہوکھ انے سے نینرکا غلبہ ہواکرتا ہے اور نین دیے ہم می کم ہوتی ہے ، کیونکہ وہ خوالی عبادت نہیں کہنے دی حضرت الوسلیمان درانی فرماتے ہیں کرجنہوں نے کئی میر ہوکر کھایا ہے ان میں چیخ صلت یں درانی فرماتے ہیں کرجنہوں نے کئی میر ہوکر کھایا ہے ان میں چیخ صلت یں درا ہوئیں ،

اول عبادت کی صلاوت جاتی ہیں۔ دوّم محمت وقراست اور وکاوت و نود معرفت کا حکس ہونا وشوار پڑگیا۔ سخّم مخلوق خوا پر شخفت اور ترس کھانے سے محرومی ہوئی کیونٹی سب کوا پناہی جیسا ہیٹ ہوا ہواسم سا۔ چہارم معدہ ہماری ہوگیا۔ پچھ خوا ہشاست نفسانی زیادہ ہوگھشیں۔ بہارم معدہ ہماری ہا ہیں ای الدنیا کتاب الجورہ یں س اور سنتم ہے حالت ہوگی کہ مسلمان سجدوں کی طرف آ رہے ہوں گئے ور پرستالخا جارا ہوگا ، انڈ کے بندے بیت الٹرکا چگر لگا ہے ہوں گے اور پرکوٹریوں کا گشت کر رہا ہوگا ۔

سمعت م ر دنیوی تفرات کم ہوجائیں گے اور فکرمعاش کا بار ملکا م ہوجائیں گے اور فکرمعاش کا بار ملکا م ہوجائیں گے اور فکرمعاش کا بار ملکا م ہوجائیں گا ،کیونکہ جب معبوک کی عادت ہوگئی تو تھوڑی سی دنیا پر قناعت کرنے گا اور پیش کے فواہش پوراکرنے کو دوسروں سے قرض مناگل لے گا بینی اس کو خالی سے گا بار ہم تاریخ سے جب کہا جا تا تعاکم فلاں چزگراں ہوگئی تو یوں فروا دیا کرتے تھے کہ ترک کے دو اور اس کی نواہش چھوڑ کراس کوارزاں بنالو یواس سے زیادہ سی چیز

کیا ہوسکتی ہوکہ اس کوخریدا ہی نہ جائے۔

مِشْدَا رَطُعام کے مُرَاتُ اِن کوعادت بِٹی ہو کی ہواس لئے کی لؤت اس کا چھوڑ نا دشوارہ ، اب ذاابی خوراک مقروہ میں روزانہ ایک بقرکر دیا کرو تو مہینہ چھر ایک روٹی کم ہوجائے گی اور کھوگر ال بھی نرگز نے گا ، اولہ جب اس کی عادت ہوجائے تواب مقدار اور وقت اور جب کی طف توجہ کو کہ دو کہ رفتہ رفتہ اعلی درج بی بی جاؤ ۔ یا در کھوکر مقدار کے تین درج بی :

اعلی درج میں تھیں کا ہے ۔ یعنی بس اتنا کھا نا چاہے کہ جس سے کی کے میں زرگ جاتی ہے کہ جس سے کی کے میں زرگ جاتی ہے کہ سے کہ کہ میں زرگ جاتی ہے کہ جس سے کہ کے میں اس کے زیادہ کھا نا اس ترج میں گورا ہوا ہے۔

میں زرگ جاتی ہے یا عقل میں فتور آ جا ہے ، اس سے زیادہ کھا نا اس ترج میں گورا ہوا ہے۔

یب بیت مفرت سہل تستری کے نزدیک یہ مختارہے ۔ ان کی رائے بیتھی کہ سبوک کے مفرت کے مبیدے کرنماز پڑھنا نئم میری کی قوت سے

سبب کھڑے ہوکرنماز پھسے سے افغل ہے۔

متوسط درجریسبے کر دوزار نصف ثدیعی دوتهائی طالع پراکتفاکیاکو' حضرت عمرفار دق اوراکٹڑمحاررضوان الٹرعلیم جبین کی عادرت پیٹی کرمختہ مجر میں ایک صالع بچے سے زمادہ نہ کھاتے تھے ۔

أَذُنْ ورج يب كروزان ايك مُرّى مقدل كماؤ ،اگراس مناوه كاؤكة توييك كربند مجع جاؤك، اوريونكم مقدار فوراك ك بلندمي لوگون كليستين اور حالات مختلف ہوتے بي لېسداسپ كے لئے ايك مقدار ميتن نهين بوسكى ميناني ديهاجا تاب كربعض لوك سريوانان کھا سکتے ہیں اور بعض آدمیوں سے یا و تعریمی نہیں کھا یا جا تا اس نے قاعدہ كتيد ياددكموكرجب اشتهاك صادق بوتوكعان كابراته درصاؤ اورم اشتباد یوری نربونے پانے کہ ہاتھ روک کو ۔ اورصادق اشتبارکی علامت پرسے کم مبیری پھی دوئی سامنے آ جائے اس کومالن اور ٹرکاری کے ينيركعانے كى دغبت ہوكيوبي وب خالف گيہول كى نواېش ہوئى ياسال تے بنيرر ون كما ناكرال گذراتومعسلوم بواكه مبوك كسيى نوابش نهيس بوبك طبعت کولزّت اور ذائعتہ کی جانب الیسامیدلان سے دبیبانیم میرہونے کے بعد میل یا میوه کا بواکرتلی اورفابرے کراس کا نام بوک نہیں ہو بلكرتفنكم اورتلزُّ ذيء.

وقت اكل كم فتلف رجات كملنك وتت يرمي كى دريين.

ئه ایک دلل جوالیس توادینی کچه او پکه هیرکا بوتا ہے ۱۱ ٹه ایک صارع تخدیث ساڑھے تین میرانگریزی وزن سے ہوتا ہے ۱۱

اعلی درجر توبہ کہ کم سے کم تین دن سموے رہ کر پوتے دن کھایا کو دیجو مصرت سنے تھے ۔ ادر صرت درجو کے دہ کر پوتے دن کھایا کو دیکھوں میں ایم ہو اور میں اور کی سات دن سموے رہنے کے عادی ایراسی بن ادیم اور دور اس میں اور کی فوجت مالایل کئے بنی ہے ۔ اور یادر کھو کہ ہوتھی ہوگا ہے گااس پر ملکوتی عجا کہات اور اسرادی سے کہ ہوتھ کوئی راف رور سکتے ہوگا ، اور چو تکو یک لخت اس کا عاسل کرنا بھی دشوار ہے اس کے آ ہستہ آہستہ محوک کی عادت ڈالو۔

متوسط درج بہے کد ودن مبوے رہواور سیرے دن کھایا کرف ۔الا او کی ورجر بہے کرروزانصرت ایک دفعہ کھاؤ ، کیو بحد دونوں وقت کھانے سے تومیوک کی حاجت ہی نہوگی ۔ بس بیخس ڈووقت کھانے کا عادی

بے اس کو توجوک کامزہ بن بن معلوم ہوستا کرکسیا ہوتا ہے۔
حبس میں اعلی درج گیہوں کی روٹی کا
حبس طعام کے مراتر مختلفہ
درج بچکی دوٹی کو بلا ترکاری کھانا ۔ یا در کھو کر ترکاری کی عادت اور مُلاثوت
بہت بری ہے ۔ حضرت فاروق شنے اپنے بیٹے کو نصیحت و سنسرمائی تھی کہ
صاحب مرکر دوٹی کی بھی ذریون کے ما تعدوق کھا و اور کیمی می مدود و دوروں کی ما تعداور
کیمی مرون دوٹی برتناعت کرو۔ حضرت فادوق کی یا ارشاد بھی ان کوگول کے میں مرکز کا پر ارشاد بھی ان کوگول کے میں مرکز کو ترکیل کی کا پیشر عاوت ہے ۔

پیروں اور خواہ شوں کے پوراکرنے سے من کیاجا تاہے بعض بزرگوں نے
ایک بچری خواہش کو دس دس اور بیس بیس برس رو کے دکھا ہے اور پورا
نہیں ہونے دیا ۔ رمول الشرحلی الشرعلی وسلم نے فرنایا ہے کہ میری امت
میں برتر لوگ وہ ہیں جن کے بدن عمدہ غلاؤی اور لذیب طعام سے پرور شس
پائے ہوئے ہیں ۔ ایسے لوگوں کی ہمیں بس طرح طرح کے کھانوں او ر
قدم قدم کے لباس ہی کی جانب متوجر ہیں کرمنہ بھاڑ بھاڑ کر باتیں بناتے
ہیں اور کام کی بھی نہیں کرتے

ﷺ ﴿ رُوْسِي اللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِي

اس کا قط کرنابہت فروری ہے ، کیونکہ لیں تواعضا سے تمام کامول كا اثر قلب بريرة تاب ، مكرز بان جوي قلب كى مفرب ، اور جونقشة قاب مي كينياب اورس يركانسورول من أتلب اس كااطهارزبان بى كياكرنى بو، اس لئے اس کی تاثیر قلب برزیاده نمایان بوتی ہے۔ عبث كلام كى عادت كانقصاك معدد دري بعي صورت كاذبيرى تعویر کھنچتی اور کمی آجا پاکرتی ہے خصوصًا حب کہ حجوط کے ساتھ فضول ىغوگەنىمى ئامل بوتواس وقت توقلب بالك*ل بى سي*ا ە بھوجا تاپى*ىي*بال تكك كثرت كلام سے قلب مرط تاہے اورمعرفت الى عصل كرنے كى قابليت بى اس بن بهيل ريتى راس وجرسے دسول مقبول صلى الشرعليروكم نے فرمايا ہے کہ چفن اپنی زبان اورشرم گاہ کی حفاظت کا کفنیا کی میاں مسلم جنّتِ کاکفیل ہوں سے مرتیث شریف میں آیا ہے کہ س زبان ہی کے کرتوت اكترلوگوں كوا وزرم مندجتم من وصكيليس معدد المنداس كى حفاظت بهت صروری ہے ، مسلمان کوچا ہے کہ اگرزبان بلاے تونیک بات اورکلمہ النے له حجوثی کے مخاری وترمذی ۱۱ کے ومدار کو اِن سے گناہ نہوکیونکہ کٹر گناہ اُبہیں کا ہوتا ہے

اله طرانی و ترمزی م مع ۱۱ هه حصلانی کی مات ۱۲

بولے ورنزچپ ہے کیوبحرب زبان زیادہ چلے لگتی ہے تو انوگو کی بڑھ بالی ہے ،اور جب انوگوئی بڑھ کی توخداجائے کس مدتک پہنچے اور کیا کچوئٹ سے بچکا پھرے بحفرت الو بجرصد ان شیائے منٹریں پچھر کھیلتے تھے ، تاکہ نفس میں بیٹر ہے اور زبان فنرورہ تی زیادہ کلام ذکرہے ۔ فض میں بیٹر ہے اور زبان فنرورہ فیصل

ذبان کے شعلق گناہوں سے بچنے کھیسلٹے اس آبیت پڑسل کرنا کافی ہو کُلٹِٹ کُیٹر فیڈ گئے ٹیرِچٹ نگرٹوٹ ھٹھٹہ ۔ جس کا خلاصہ مُشاریہ ہے کہ نعول اور بے فائدہ کلام نرکرومرونٹ ضروری باست کے اطہب ارپراکتفٹ کرو اس پس نجاشہ ہے ۔

کلام عیث کی کا ہمیت اور ان شرید ہوگیا۔ لڑائی سے فراغت میں کری کو دی ایک اور عنت کی کا ہمیت کی کا ہمیت کے بعد شہید دو گیا۔ لڑائی سے فراغت کے بعد شہید دو کا قد کی مال آئی اور فاقہ کی مالت کی اس بیٹھ کے پاس بیٹھ کے اس بیٹھ

کہ خردار کہ نہیں مجلائی ہے ان کیبت ک مرکز خیر ۱۹ کہ ابن الی الدیا اولیدی ۱۹ کے خردار کہ میں اوروریث کے حسب اوروریث کا حسب اوروریث میں اس تواہد کی فونہیں ، اورجنت سے روکنے کا مضمون مترج ما حب نے برصایا ہے ۔ اصل عربی میں نہیں ہے ۱

اس معلوم ہوا کرففول گوئی کی عادت جنت میں جانے سے روکنے والی چیسنرہے ۔ مسلمان کو دی بات زبان دکائی کا سیج بھی یا کوئی تواب حال ہوا اور یا کوئی نقصان رفع ہو ، اورجس بات کے زبان سے نکالئے میں تھو کوئی تواب ہوا ہو تاہد تو وہ عبث اور ففول ہے اور اس سے احراز کرنے کی فرورت ہے ۔ بعتی ویفنول گوئی میں شخول ہے ہو ہا ہواگہ یہ وقت ذکر اللی میں حرف ہو تاہدی کا کمٹنا بڑا خزانہ جم ہو جائے ، مواگر یہ وقت ذکر اللی میں حرف ہو تو ہی کوئی کا کمٹنا بڑا خزانہ جم ہو جائے ، مواگر مفول گوئی کے دورائ گوئی تک فوت پنجی اور ذبان سے علیت اور گالیاں اور حس بینی ایس باتیں باتیں تکلنے تکیں جن میں نفتی تو درکنا ال علیت اور گالیاں اور حس بینی ایس باتیں مثال ہوگی کہ معربی و خزان جھوڑ المادین کا ضرر اور نقصان ہے تب تواہدی مثال ہوگی کہ معربی و خزان جھوڑ المادین کا خرر اور نقصان ہے تب تواہدی مثال ہوگی کہ معربی و خزان جھوڑ المادین کا ضرر اور نقصان ہے تب تواہدی مثال ہوگی کہ معربی و خزان جھوڑ المادین کا خرر اور نقصان ہے تب تواہدی مثال ہوگی کہ معربی و خزان جس کرآگ کے الماؤیس جا تھے ۔ التہ دینا وہ میں سکھے ۔

راک کے الافین جاتھے۔ الندپ ہ من تھے۔

ناول اور تالیخ وغیرہ کامطالعہ سفرنام بختلف مکوں کا رئیں اور باشترگان دنیا کے لباس وخودک اور طوز معاشرت وتمدن کے تنکے اور تجارتوں بوفتوں منعقوں کے حالات سب اس فعنول اور عبث کلام میں داخل ہیں جس میں شغول ہونا معیوب ہے اور آیت فرکوں کے کلام میں داخل ہیں جس میں شغول ہونا معیوب ہے اور آیت فرکوں کے

منشار کے یالکل خلاف ہے۔ فصل ل

زبان کے متعلق ہیں آفتیں ہی اور پوئی ہرائیک کی جوا جواتشریح کا یہ موقع نہیں ہے اس لئے متصرطور پریہاں مرف ان پانچ گنا ہوں کو بیان کئے دیتے ہیں جن میں لوگ بھڑت منہ کس بی اور جن سے زبان کو یا

نحاستوں کی فار ہوگئی ہے ملی افت جوط بولناہے مدین میں یاب کر اور محورط بولتاب يبال تك اسكاعادى بوجاتلب اور خداك يبال جويالك لياجايا سنسى فراق كا مجوط كر مبوط بولناسلان كى تان بهين ال إجناب ريول الشملى الشعليه وسم فريات بي ایمان اورجوٹ ایک مگرج نہیں ہوسکتے " یادر کھوکہ جوٹ بولنے سے تلبين كى أمانى اورخواب مى سے نظر نبيس آتے ـ اس ك مزاق یں چیومروں کے بسانے کوجوٹ نابولو۔ اور بیشر جھوٹے خیالات اور خطرات سے قلب کو بھات رکھوور تالب میں بھی بید ا موجا سے گی ۔ اور تجربراس كاشابرس كدايي آديون كوخواب مي سيانظ نهيس أتا واكيب مِرْتِكِي عُولَت في لين صغيرت بي كوبلايا اوركها كما وبمتهين اكير بيزري گے ۔ دسول الٹھلی الٹرعلیہ وسلم نے اس عودت سے دریا فت مسسرایا کہ الربلانے سے بج آگیا توکیا بیزدے گ ؟ عورت نے کہا جو اسے دیدونگی آب نے فرمایاکہ اگر کھے دینے کا ارادہ نہوتا ا ور صرف بہلانے کے لئے السالفظ بحلتا تويهى زيان كاجبوط شاربوتا

کِذمصلی تمیز کا بواز بهی جائزہے، بشرطی کے بولنے سی اوراس کی سیک ؛ اوراس کی سیک ؛ بوجوٹ کے گناہ سے زیادہ ہے۔ مشلاً دوسلانوں میں ملح کرادیے یا

له مخاری ومسلم ۱۱ که ابن عبدالبر، گرمضون مؤطایر می جه ۲

که بخاری تاریخ میں ، وطرانی وابن سعد و درلی ۱۳

جهادم وتوك وحوكرين يال في كورضام نداورنوش كرنے كيسي حجوط بول دینے کی میشیش میں اجازت آئی ہے۔ اس کی وج یہی ہے کہ سلمانوں میں عداوت اوررن بہنے سے و کرانتیج سیدا ہوگا وہ جوٹ کے نقصال سے بڑھا ہواہے اس طرح جنگ کے راز کا پوشیدہ رکھنا ضروری سے کیو تک اگردشن كواطلاع بوتى اس كوصله كاموقع ملے كا اور مزاروں ياك جانيں تلعن بوماتين گى اس لئے اصل بات كا ظاہر ذكرنا ا ورجو فى بات بنادينيا افضل ہوا ۔ اس طرح خاوند کے بعض اسراد بی بی مخفی بینے کے قابل ہیں بیں اگر داست گوئی کے سبب کوئی خیال اس بی ظاہر ہوگیا اور مسیاں بی بی بن نااتغاتی ہوگئ تو چومُرا اثریپ دا ہوگا اس میں جوسٹ لیسنے کی نیسبت زیاده گذاه ہے ، بس ایس صورت میں جوٹ او لنے کی اجازت ایس ہے جيے كوئى شخص دو بلاؤں میں مبتلا ہوجائے توا سان ا ورہكى معيبت كوتر بھي دے کرافتیارکرلتیاہے ۔ اس کی مثال ایس مجدوکہ جیسے سی تھی کے بعد کامر جانے کا ذریشہ ہوتواس کیلئے مُرواریمی ملال ہے ۔ اسی طرح ابنا یا لیف یامسلما معال کامال ظالم کے اِتھ سے بھانے کو یاکسی کی خنیدکھی ہو گی اما نت کو محفوظ ركحن كحييلة ودمرول كسامنعا نكادكرد يناا ورهبوط بول دبين جائزے۔ اورائی معصیت کا شکار کردینا مجی اس وجہ سے جائزے کفت فجود کا اعلان حسرام ہے ۔ یا ابنی بوی سے پرکسدیناکدمیری دوسری میوی تمہاری موت مجے تم سے زیادہ پیاری نہیں ہے ۔ برسب باتیں اسی بنار له اس سے برعبدی مراونیس کروہ تو حرام ہے ، بلکر دھوکہ یہ ب کر حالت عدم ملح میں ایس كاروا فكاكد غنيم كميدا ورسجعاا ورسفير موكيا اوراس نيابنا كام كال لياءامولانا استسرف طي الهسلمیں ہے ۱۱ بتعانوي رجميهالشر

یرجائز ہیں کہ اس جوٹے ہے ایک ضرر دفع کیا گیا ہے تحصيل الوجاه كيلي البتدويب كمان ياعزت وجاها كرن كى غرض سيصور بولنا برگزملال بين بى، مجوسط بولنا ترام بح كيونك الرمال دجاه نرشي وكون تقصان نہیں ہوتازیادہ سے زیادہ یہ ہے کہ سے نقع حال ہیں ہوتا اولف کا حاسل مهونا لقصال نهيس كهلا تاب راس باري كواكثر لوكسبي سمعة اواكثر اس غرض کے لئے جھوٹ بولاکرتے ہیں حالائکدیر حرام قطعی کر، اور دوھیقت ان کے دین کی تباہی کا یہی سامان ہے ، کیونکه ضرورت و سیے ضرورت يى تىزنېيى كرت ، افسوس كى باستىسى كەجابلوں نے خيالى اورمستىرىنى ضرور تول کو بھی ضرورت بمجھ لیا ہے ، حالانی شری اور واقعی ضرورت بس کا نام ہے وہ ہم اور بیان کریے ہیں کرجب تک حالت اضطرارا ورکسی بڑے نقصان کا غالب گمان مہوقے امی قت تک مجوار کا کھا نا حال نہیں ہوا ہے ہی جوٹ اولنا بوشر قاحسرام ہے دہ بھی جائز نہیں ہے۔ ضرورت يرجعى توريرنا السشدييضرورت كيموق يرجى يتى الاسكان تعريف اور توريبى كرناجا ستة كننس كوجوط بهاست ندر مرت حجو الدين اوروريد بى ارا جاست دس وجوت المائيم كمر المحدود المائيم كمر کے اندرکسی ضروری کام میں مشخول ہوتے اورکوئی شخص ان کو باہر بلاتا تو خادمه سركية تع يول كررے كردم عرض وحوندو اور حضرت شعيرة انتكى سے ايك وائرة كينے كرفاوم سے فرط تے كم" اس وائرو كے اندواتكى وكفكركمدك كربيال نهيس بي اس تعريف ساينا مقديمي على بيطا تفاا ودحتيقت يرجوت بي نربوتاتها البشمورت حبوث كائ تحاور یبی تویین و توریک بلاتا ہے ،اس قم کی تعریفیں معولی غون محیا ہے اس بس جب کسی کامی صالح نہو۔

مزاح ونوش طبعي توريه كااستعال طور بریون فرها دیا تفاکه" برصیا جنت می کمبھی نرجائے گی بریط نکر برط رونے دی کریونی جومطلب ظاہری لغظوں سے مجھیں آتا تھا وہ یہی تھا کہ كوئى برهيا بعى جنى نهي يسب حالا بكرمراد تيفى كربرها يكى حالت وجنت یں جائے گی بلکہ وطعیا بھی جنت ہیں جائے گی وہ جوان بکر جائے گی ۔ یا مثلًا ايك شخص في رسول مقبول ملى الشعليه وسلم سيسوارى كم لئا ونط مانگاتوائپ نے فرما یا گراچھا ٹھیرو ہم نہیں اونٹ کا بچے دیں گے یہ سے سکر سائل نے وفن کر برایے کیا کروں گا۔اس وقت آپ نے تعریف کلمطلب سمعاد یاکه «میان برا اونط معی توآخرکسی اونه طب می پیدا مواسع م اونٹ سے پیدا ہوااس کانو بجیہ ہے؛ یا مثلًا ایک عن سے آپ نے کا " تمہاری آبھی سفیدی ہے " اور طاہرہ کرسب کی ایکھیں سفیدی ہوتی ہے مگر ہونکہ بغا ہر یہ مطلب مجھی آتا ہے کہ تنابی میں عیب ا درسفیدی کاموں وثا ہے اس نئے سنے والے کونکر لاحق ہوکرا جھا خاصا مزاح ہوگیا ۔اس قیم کی تعضیں بى بى مون سىخى مى كى دىرجائزىي داسى طرح اگركونى شخص كما ناكعانے کی صلاح کرے اور تہریں یا وجو دیھوک ہونے کے کھا نامنظور نہوتو بر ارز كبوكر" مجيم موكنهي بي كيون عجوت موكا بلكترين كراو بكريول كبدو

کے تریزی والوداؤد ۱۷

له تریزی ۱۲

" ميں اس وقت نرکھا وَل گاآپ ٺوش مسٹریائے " وخیرہ ووسرى آفت غيب كراب يى تعالى مسراتاب كاتميس

كونى پسندكرتاب كراينے مروم بعال كاكوشت كھائے ، غيبت كرنا لتحوني مسلم کا گوشت ہی کھانا ہے ، بس اس سے لازی مرمبر کر و۔ منتیث یں آیا ہے کہ

م غیبت زناس می سخت ترب اور ال معبول ملی الله علیه وسل منسط می می

تشب معرادة يس ميراكنداليي جاعت بربها بحيلين منه ليف ناخن سافع بي

تع ، يالوك غيبت كياكرتے تع يه

مىسلان كى بىلى سى اسكان كى بىلى سى اس كى سىلى كارى والى الله مارى گذرے غیبت کہلاتی ہے مثلاً کسی کوبے وقوف یا کم عقل کہنا یا کسی کے

حسب ونسب بينفق نكالنا ياكمى ككسي حركت بإمكان ياميشي يالباسس

غرض جس سنة سيمى اس كوتعلق بواس كاكوئى عيب اليهابيان كرناج كا سنناك ناگوادگرنسي خواه زبالنس ظاهركي حاست يا دمزوكنا يرسي يا التماي

اوراً تھے کے اشارے سے یانقل اٹاری ماسے پرسب غیبت ہیں داخل ہو۔

حفرت عائشرفى الشرتعب لي عهد أيسي موقع يركى عورس كالمعكما بونا باته

کے اشا سے سے ظام کرکیا اور لیوں کہا تھاکہ یارسول اللہ ؛ وہ مورت جواتی ہی ہو، اس برآب نے فرایا سا عائشہ ! تم نے اس کی غیبت کی ہے ؟

له ده پیمیتا ہے کہ جیسے مردہ کا بھیا کا احداس مہیں ہوتا ایسے ہ ص کی عیدیت ك جائد لي بي نبسي بوا-١١

ك ابن الى الدنيا ، يراس لئ كرزناس النري النري الدين البدر السك الجدا و مع ا می مضمون موسیت ترمزی ۱۱ ه ابنال الدنب ، معترب ١

مولولول كالنراز غيبة مقتداء اورديندار لوكول مي جوراك كيويح وغيبستين كرتے بي اوري لينة آپ كونيك مجت بي ران كافيتين مبى زائے اندازى بوقى بى مشائم من كينے لگے كة الشكاف رساس نے بم کوامیروں کے وروازوں پرجانے سے بجاد کھا ہے الیی بے حیائی مے فرایناہ میں لکھ " اس کلہ ہے ہوکھ ان کامقفود ہے وہ ظام ہے کہ امرام كے ياس بيشنے والے مولويوں مطعن كرنا اوران كوبے حياكہ تامنظور بواور ساتوى ائى مىلاحيت تقوى جنابيح اورديا كارى كأكناه كماييع بير ای طرح مشل کینے گئے کہ فال شخص کی بڑی اچی حالت ہے اگراس میں وص دِنیا کاشائبہ ذہوتاحس میں ہم دلوی مبتلا ہوجاتے ہیں ، اس نقرہ سے ہمی بو کی مقصوب وہ ذراے تامل سے میٹ اس کا سے کواس کا بے صبر امونا ظام کرتے ہیں ا ودانی طون حرص کی نسبت اس نمیت سے کرتے ہیں کم مشکّنے والاان کومتواضع سمجے ،اوریبی غیبت ہے ، ساتھ ہی دیا کاری بھی ہے۔ زياده تعجب تواس يربوتا بي كديه صرات غيبت كرتي بس اور ايناك ك غيبت معفوظ اوريار سأسمحة بن يامثلاً بول المصبحان الشرطب تعجب کی بات ہے ۔ اورجب اتنا کمنے پرکوگوں نے اس بات کے سننے کے شوق میں ان کی جانب کان لگائے تو کھنے لگے " کھینہ میں وال تفکی خیال آگیاتھا تی تعالیٰ ہما ہے اوراس کے حال پر رحم فراف ہے اور آو برک توفیق دے واس نقره کابھی جو کھنشارے وعظمندر مخفی نہیں ہے کیونکدان کاید كلمترح وشفقت يادعارى نيت سنهي بوتاميياكه ظاهرى الفاظاس وم پڑتا ہے۔ اس لئے کہ اگر دعا کرئی مقصود ہوتی تو دل ہی دل میں کیوٹٹ کھسلینہ

سحان الشكي كرلوكول كومتوجكرناا ودمعصيت كالشاره كرناي كياضروري مها ؟ ياكس خفى كاعيب ظام كرناسي كوئي شفقت يا خيرنواس كي بات بر ؟ اس طرح بعض لوگول كى عادت سے كم غيبت سے منع كرتے ہيں اور كہتے ہيں كهمانى غيبت مست كياكروم كحردل ان كاغيبت كوم كوه بهيس محمقا بكداس نفیحت کرنے سے عن اپنی دیندادی ا ورتقویٰ ظاہر کرنامفصود ہوتا ہے۔ اسی طرح کسی مجمع میں غیبت ہوتی ہے تو نامع اور پارسا سنکر کہنے گئے ہی كر" ميال غيبت كرناگناه ب اس سيم سنة وال مبى گنه كار بوت بي، يه لوگ كينے كوتوكر ماتے ہيں مگر دل ان كامشتاق ديہتا ہے كہ كائل بيشخص ہماری نفیمت روسل نکرے ہو کھی کہ رہاہے کے جائے اور میں مسامے جاسے ۔ مصلاکوتی ان سے ہوچھے کہ غیبت سننے کا آٹنظاریھی سے اور تھے رہیں مى سمة بوكم من كسك كناه سي بكروش بوكة . يا در كموكر جب تك غیبت کرنے اورسننے کودل سے ترا نہموے قواس وقت تک فیبت کے گناہ سے ہرگزنہجو بھے ۔کیونکرغیبت کرنے والا اورسننے والا دونوں برابر بن ادرص طرح زبان سے عنیت کرنا حرام سے اس طرح ول وغیبت کرنامبی حرام ہے ۔ البتہ چندصورتوں میں خاص وگوں کی غیبیت کرنا جائز ہے جس کی تفقیل ہم سیان کرتے ہیں۔

ہے ہیں فی تعقیل مج سیان درہے ہیں۔
مظلوم کو ظالم کی غیبت کرنا جائز ہی ۔
اگر اضطلام کی غیبت کرنا جائز ہی ۔
اگر افسراعلی تک بہنچا ہے اور المسافل تک بہنچا ہے اور المسافل میں میں ہے۔ البہ ظالم کے عیوب کا لیے لوگوں سے بیان کرنا جنہیں اس کو نہیں ہے۔ البہ ظالم کے عیوب کا لیے لوگوں سے بیان کرنا جنہیں اس کو سندا دینے یا مظلوم کے اور سے ظلم دفع کرنے کی طاقت نہو برستور سندا دینے یا مظلوم کے اور سے ظلم دفع کرنے کی طاقت نہو برستور

غیبت میں واضل ورحرام ہے۔ ایک بزیگ کی ملس میں حجاج بنایوسے سے کا ذکراً گیا تھا تو انہوں نے ہوں فروا یا کرخی تعدائی انصاف کے دن ظلوموں کا بدلہ جات کے دن ظلوموں کا بدلہ جات کی خیبت کرنے والوں سے کے گا۔ اس لئے کہ ہتیرے آ ومی حجاج کے مظالم ایسے آ دمیوں کے سامنے بیان کرتے ہیں جو تے گئے ہوئے ظلم دف کرنے کی طاقت نہیں ہے تو اسے لوگوں کے سامنے جات کی غیبت کس طرح جائز ہوسکتی ہے۔ اسے لوگوں کے سامنے جات کی غیبت کس طرح جائز ہوسکتی ہے۔

دوم تحقی می نیبت کرناج آن اور می تحقیف سے کوئی برعت یا خلافِ برعتی کی غیبت کرناج آن اور کا امر کے رفع کرنے میں مدالینی ہویا محدی کواس کے فلنہ سے بچانا ہوتو اس سے بھی ان بیتی کوگوں کا حال بیان کرنا

اگریے ان کی غیبت کرنا ہے گرجا ترہے۔

له مجاري وسلم - الوسفيان حضرت معاوين ك والدين اوربنا أنهي كي زوجري ١١

دوسے کو نقصان سی بچانے یا خید دفروخت کا معاطم کرتا ہے اور کی نقصان سی بچانے یا خیر نقصان سی بچانے کے بیٹے اس کا اعتمال ہے تواس کو نقصان سے بچانے کے بیٹے اس کا اعتمال ہے تواس کو نقصان سے بچانے کے بیٹے اس کا اعلام ہے اس مقدم میں میرے خاموش بہنے اس نیت سے خام کرکرنا جا کرنے جب سے نقصان نریپنچ جا کرنے ہے۔ البتہ صرف ای شخص سے ذکر کرنا جا کرنے جب سے نقصان کا اعداب ہویا جس پر فیصلہ اور سی کا معادم و

پنے ہے ۔ اگرکوئی شخص ایسے نام ہی سے شہود ہوجس میں عیب خاہر ہوتا ہے ، مشکلاً ان قواس نام ہے اس کا المربوتا ہے ، مسئلاً اعش (جندھا) اعرب (دیکڑا) تواس نام سے اس کا بہت پتیا ناغیبت میں داخل ہم ہیں ہے ، پھرپی اگر دیکسسوا پتہ بتیلا دو تو بہتر ہے تاکہ غیبت کی صودت بھی ہیں۔ انہو ۔

مشتشم ۔ اگری خص می کوئی عیب الیا کھلا ہوا پایا جاتا ہے کہ لوگ اس کا عیب فلا برکستے ہی آولے ناگوانہیں گزتا ۔ مثلاً مخت یا ہیج اکدان کے اس فعل کا تذکرہ کیا جاتا ہے توان کو خیال ہی نہیں ہوتا تو یہ تذکرہ ہی نیب سے خالی ہے ۔ البتہ اگراس کو ناگوارگزیے توحرام ہے کیو بحد فاستی کے سی کمی لیے گناہ کا ذکر کرنا ہو اسے ناگوارگزیے بلا عدر خاص جا تر نہیں ہے۔ فصیب

نفس کوغیبت سے دوسکنے کی تدبیر پرسے کم غیبیت کی سندا و دفقعان میں

غورکرو ۔ حدیث میں آیا ہوکہ آگ جوگھاس میں اُٹرکرتی ہو فیبت اس معلد اور زیادہ اُٹرسلمان کی ٹیجوں میں کرتی ہو یہ بعنی فیبت کرنے سے نیک اعمال جل جاتے ہیں ۔ اب وراسو چو کرجب کوئی نیکو کا ڈخس جس نے دنیا میں میں اٹھا اٹھا کر نیکیاں جع کی تھیں جب قیامت کے دن لینے نامستہ اعمال کورے دیکھے گاا وراس کو حلوم ہوگا کہ فیبت کی وجہ سے اس کی ٹیکیا اس تعریف کے نامرًا عمال میں مکھ دی گئی ہیں جس کی وہ فیبت کیا کہ تاسقا، تو کس قدر تصورت وافسوس کرے گا۔

مسلمان کوسویینے کیلئے اپنے نفس کے عیوب بہترے ہیں ، اس لنے مناسب ہے کہ حب فرصت صلے اپنی حالت یرنغاؤالو ا درج عیب یا ق اس كر ف كرن مرون بوما وكدومرول كي يوب ويكف كا موقع ہی نہ آسے ، اور یوں مجبوکہ تمہا اودارا عیب جتنا تم کونقصان بینجا سے كادوكسريكا براعيب بمئتم كواس قد رنقصان تبسي مبنجاسي كاراوراكر تمبیں اپناعیب نظرز اسے تو بخدالساعیب ہے ص کی برابر کو لیکھیب نہیں کیونکو کی انسان عیب سے مالی ہیں سے دہیں اپنے آکھ بعیب سجمنانوم الون عيب . اس الح اول اس كاعلان كرواوراس كيبعد جوعیب نظرائے ماکیں ان کی تدبر کرتے دیو۔ اور اگر اتفا قا اس رہی کی شخص کی طبیت ہوجائے تواللہ سے تو برجداکر واورائ تخص کے پاس جاکر غیب کے لفظ حدامعا ن کراؤا وراگراس سے نرل سکو تواس کیسلئے وعامے مغفرت مانگوا ور خيرات كركے اس كى روئ كوالصال تواب كرو عوض يونح تم نے فيست کرکے لیے مسلمان بھائی پر فسلم کیاہے اس سے جس طرح مکن ہوا تو کی جلد تلانی کرو .

تكييري أفت ففول جيكا أكراب روول مقول صلى الته عليروم و سرواتے ہیں کہ چوسلمان یا وجودی پر ہونے کے جبگڑے سے درست ہوار موجائ تواس كيليا اعلى جنت مي محل تيار موكا " يه بالكل مع يحد كررسري بوکرخاموش بوبینما بهت دخواری، اورای این می ریوکر چیکانے سے علیماہ ہوجانا ایسان کا کمال شارکیا گیاہے۔

حبر اورنزاع کی حقیقت اجان لوکرسی بات براعتراض کذار اس كلفظ يامعني مي تلطي اور

نقص نكالنا حجرًا كهلا تاب ما وراكثريه دو وجهد بوتاب ميني يا توكركي بنأ يركرائ برانى اورلتانى إتززبان كاافهار مقصود بوتاب اوريادومرب تتخف كويب كرف اورعا بزيبا فيف كاشوق بوتاب راس مع مسلمان كو بياسية كرجبات واقعى اوري بوتواس كوتسليمرك اوريتني خلاف واقع با علط بوتواس يرسكوت اختياركرف، البته الكراس غلعي كے ظام كرنے مي كوئى دیی فائرہ ہوتواس وقت سکوت کرنا جائزنہیں سے مگر معید ہمی اس کاضرور خیال سکے کہ جوکھے سیان کرے وہ ٹری اور سہولت سے سیان کرے تکبر اورختی کے ساتھ مذکبے۔

سے تلب مردہ بوجا تاہے اور میبت ووقار جا ٹارستلہے ۔ الساتھ وگوں کی نظرول سے گرجاتاہے ، اور لبااوقات دوسروں کواس کے ساتھ کینہ وعداوت بھی پیدا ہوجاتی ہے ۔ نورموفت میں تاریجی آجاتی ہے اور تحت النر کی پینیک

ویاجا تاہے۔

البتة تعول مراح بن كيدمنا كقرنبين تثالِّت مزاح جأنر بي البينة وراي المادل ول ول ول عن كرني كوبو توسنت ہے ـ كيونكراليامزاح دسول تبول صلى الشعليدوسلم يجبى تقول ا ب ، مر وه مزاح در مقيقت واقلى بات بوق تقى مى كا حبوت فيوتاتها . مثلًا أيك برصيا سے آپ نے فرمالياكم" جنت ميں بوڑھى عورت كو فى مرجائے گی ؛ اِس کامطلب پرتھاک جنت میں جوبھی عورت جاسے گی وہ جوان ہوکر مائے گی . یا مشلًا حضرت صبیع کے اور انہوں نے لال یال کھا تعااتفاق سے لال مرگیا تورسول عبول سلی الشعلیہ وسلم نے فرما کیا "کہومی الجمیم تمهادالال كيابوا ؟ " اسىطرح اكد ونعهضرت صهيب جيو لواكم رس تفي اوران كى ايك يُحدِّي تعي توآب نے فرما يا سكيوں صاحب أنكم توكيتي م اور حجوداداکھا ہے ہو ؛ انہوں نے مزاحًا جواب دیاکہ پارسول الشردوسري ط ف سے کھار ایوں ، بعنی ص طرف کی آنکھ دھتی ہے اس ڈاڑھ سے ہیں كهاتا . ا كيب وفعد الخفريت لل الشعليه وسلم مضربت عاكث مسرليّ وفي الشّعنب ا کے ما تعمی دلجوئی اور نوش طبی کے طور پر دوڑھے بھی ہیں ۔ غرض ایسے فراح مل كورج نهيس البتراس كى عادت والني اليحينهي ب-

ی پیچوسی آفت مرح کرنامے ۔ تم نے دیکھا ہوگا اکٹرواعظوں اور دنیا واصلان کی بیٹھا ہوگا اکٹرواعظوں اور دنیا واصلان کی عادت ہے کہ مالدارا ورصاحب جاہ دختم لوگوں کی تعریفیں کرتے ، ان کی شان میں مرحبہ تصدیدے تصفیۃ اوران کو نذر لنے کے طور پر پیٹر کرتے ہیں ۔ حالا نکہ اس میں جارخرا بیاں مذاتے کے حق میں ہیں اور مدر پیٹر کرتے ہیں ۔ حالا نکہ اس میں جارخرا بیاں مذاتے کے حق میں ہیں اور مدر پیٹر کرتے ہیں ۔ حالا نکہ اس میں جا در گرزا ہیں کا مرکب خاری وسل و تر مذی ال

طور رہیں کرنے ہیں۔ حالاندا کی جارمزابیاں مون سے می ہے ہوئے کہ منبی کی بات * کے میسے کرمہ برگذرا * کے بخاری وسلم و ترمذی ۱۱ کے اِن ماج ، سبداوی تقدیمی ۱۱ ہے ابوداؤد * کے بہت تعربین کرنے والا ا

وورائيال مروح كيتيس

مراح كرق من من مراق كانقصان ؛ التوسيس ، _

أول ـ اليى بالى بيان كى جاتى بي جودا قع كے خلات بوتى بي ال جن کا مروح میں نشان بھی نہیں ہوتا ۔ ظاھے رہے کہ یہ *مریع جھو*ے اور كبيره كناهب ـ

دوم معتكا لمباجورًا اظهاركرت بي مالانكردل ماكسمي محسنهين بوتى ، اوريصرى رياادرنفاق ب بوگناه وحرام ب.

سوم ۔ اٹکل کے ترما سے جاتے ہی اور جو بات یقینی طور پرسلوم نہیں محض مخیرت و گان کی بناریران کو داقعی ظام کیاجا تاہے ،مشلاً یہ کہ آپ بڑے متقی ہیں ،نہایت منعف ہیں ۔ حالان کورمول عبول ملی الشرطلب وسلم فرماتے بیں کہ محسی کی مدح رفی ہوتو یوں کہاکرے کم میرا گیان یہے کہ آب ایسے بن برکیونکوظنی باتول کو واقعی بناناکسی طرح بھی جائز نہیں ہو۔ چھارم ۔ اگرظام ادرفاسق کی مرح کی جاتی ہے اور وہ ای آلیت منوش بوتلية قاسق كوفوش كرف والاماح بمي فاسق اورا فران بوا مدين من أياب كرفاس كالعراية على الترقعال كاعرش كانب المماسية حضرت حن رحمة الشرعلية فرطق بي كم فايق كى دندگى دعركى زيا وفى كى كرف والا تخفیمی فائتیہے ،کیونک وہ چاہتاہے کمنتی وفجور قائم اورونیا میں میت تک جس ک تعربین کی مباعث ۱۱ کا انگل ۱۱

ته بخادی دسلم ، محرجب کیے کہ واقع بی الیسام حقایمی ہو، ورن محبوث ہوگا اا

ع ابن الدائب ويبتى والونعسلي ١١

سک باتی ہسے ۔ظالم اورفاسق شخص کی توخیت کرنی بیاستے ٹاکڈ صب کرکر ظلم ومعمیت چھوڑ ہے ، نرک تعربیہ ۔

ا در مردح کوجود و نقصان مرح مرانی کاممر مح کو نقصان سختین ده یه بن ب

أقيل بركه مروح مزور بوجاتا باور الينفس كوقابل تعريف سمعے لگتا ہے ، حالا بحدیداس کی بلاکت وتباہی گی جڑیے ۔ حدثیث میں آیا ے کہ ایک شخص نے مجع میں اپنے دوست کی تعربیف کی تورسول مقبول صلی النہ عليه وسلم نے فروا ياكه متم نے اپنے دوست كاگرون كامل دى " مطلب يہ م کہ اس کے نفس میں خود پسندی اور طرائی میداکرکے اس کو ہلاک کردیا۔ دوم _ انى تعرفين كريبولتا اوراعمال خرين مست يرما تاب مینے میں آیا ہے کہ مسلمان معانی کوگند میری سے ذیح کردینااس سے ہیروی كهاس كےمنرياس كى تعربين كى جائے "كيونكة قتل سے تورنيا بى كى نظگى تلف ہوگی اوران برے نتیجل سے بن کا ہمنے ذکر کیا ہے ، آخست کی ياعظت زنرگى برباد بوجائ كى دالبتدان مضرتون كالنالشرن بوتوتعرات میں کو حرج مجی نہیں ہے ، ملکتعض اوقات مستحب اور باعث احرہے، ینانچ رسول مقبول صلی السّرعلیدوسلم نے مجن محالہ کی مرح فروا کی سے مشلّا آب (صلى الله عليه وسلم) مستعولة بأركر متمام تونيا كه ايمان كوالو بجراك

فره می که ساع مر! اگر کمی نی بناکرنه سیجا جا تا توض و دیم کونی بنا پاجا تا یا له بخاری دسم ۱۱ که عواتی کهترین ۱ کافه بین ۱۱ که ابن عدی ۱۱ که انبیار کے علاوہ کی دی بربرنی کا ایران سامے و دیوں سے پھی بڑھا ہوا ہے ۱۱ ہے ترفری جن ۱۲

ایبان کے ساتھ وزن کیاجائے توابو بری کا بیان وزنی ہے گائینے

گویا حفرت عمرصی الٹرتعبالی عندیں نبوت ودسالت کی قابلیت کا انھیں سی اظہا دوسنوہا یا ۔ پس چونترصحا بہیں نو دلیسندی اورکو تاہی عمل کا اندلیشہ نرتھا اس لئے ان میں نشاط ہیداکرنے کے پیلئے یعدل مستحب ہمی کہ ان کی طاعات ہیں ترتی کا وکسسیاتھی ۔

فص_ل

الرحمی خف ک کوئی مدح کرے تو اس كوجاستة كرلينے اعسال اور خطرات ووساوك كادحيان كراء ورسوي كرفوا جائي مراائجام كس حالت پریوناہے ؟ واقعی برنوبیاں و تیفس بیان کرد اہے اگرمی بر موجد می ای تو ابھی ان کاکیا اعتبار ؟ نیزایی باطنی بیار یوں اورعیوب مِنظر کرے اورخیال کرے كريري شيدعيب ايسم بم كداكراس واح كوصلوم بوجا يَس توميرى ورتحبى ن كرے .غوض مسلمان كو يياسيتے كه اين تعرفيت شيخوش نهو بكه اس كو دل مى محرو وسم اس كى جانب رسول عبول ملى الته عليه وسلم اشاره فرمات بي كد، " مّران في منهي مني مجروو " حفرت على كرم النه وجب كرجب مدح موق تى تويون دعار ما بيحة بمرت تع كم بادالك ميرب جوكناه انعين ملوم نهين ويخش ويجة اورجوكجيه يكبرلب بإس كامجه سيمواخزه نركيخ اورمجهان کے گمانوں سے مبتر نبا دیجے میں جیبا ہوں آہے ہی و ب جانتے ہیں ۔ یہ یں مانتے۔



عصر کاب اسکان عصر کاب

غصر کا علاج اس کا علاج دوطسرح کرنا بیا ہے : اقل توریاضت اور مجابوہ سے اس کو توڑنا بیاستے ۔ مگر توٹ نے سے مقعود نیہ بیں ہے کہ خفتہ کا اور ہی نہ ہے اس سے کداگر ما وہ ہواتا ہے گاتو کھا اسے جنگ اور جہاد کیو خربوگا ، اور ضاق و فجاد اور مبتدعین کی خلاخ شرع باتوں پر نگواری کی ماجاز افعال دیمی کرفیصہ آنا تو خروری اور شرع کا عین مقعود ہے ، لہذا خصہ کے تو ٹسنے اور دیاضت کرنے سے یمرا دہیں کہ اس کو مہذب اور تھا وشرع کا تابعہ دار بنالیا جائے اور الیسا کردیا جائے جیا گرفتا ہے دو جہا تا ہے تو مہ کہ تو ہو جہا تا ہے تو مہ کہ تو ہو ہے تا ہو تا ہے تو مہ کہ تو ہو ہے تا ہو تا ہے تو مہ کہ تا ہو تا ہے تو مہ کہ تا ہو تا ہے ۔ اور خصہ کو می تا ہو تا ہے ، اگر شریعیت سے دے اور خصہ کو می تا ہو تا ہے ، اور خصہ کو می تا ہو تا ہے ، اور خصہ کو می تا ہو تا ہے ، اور خصہ کو می تا ہو تا ہے ، اور خصہ کے سے دور نہ جب ہے ، اور سے صور کہ تا ہو اسے ، اور اپنا کام کرے ور نہ جب ہے ، اور سے صور کہت بڑا ہے ۔

اغتدکوالیامه زب بنانے کی تربیریں پرہی کنس کی باگ روکو ، حلم و برداشت کی عادیت ا ڈالو ، اور درجب کوئی تفسرپ پراکسنے والاقعم منت مصرف

غفه کوئمز النفخ بنانے کی رکھیئے

پیش آئے تونفس پرجرکیاکروا ورفقہ کو معرکے ندو۔ بس بی وہ دیات ہے جس سے عقر مطبح وصروا نبردادین جاسے گا .

دوم ۔ عصرے پوش کے وقت منبط سے کام لو اوراس کوپی جادَ ۔ اوراس کا ایک علاج علی ہے اورا یکے حلی ۔

علمی علاح تویسب کخسک وقت سوچ که غصکیون آتاہے نظاہر ہے کہ اس کاسب جم خداوندی میں دخیل ہونا اور دست اندازی کرنام کیونکہ غصر کمنے والے کا مطلب یہ ہے کہ یہ کام میری مرضی کے موافق کیوں منہوا، اور ارادہ خداوندی کے موافق کیوں ہوا ؟ اب تم ہی بتا کہ رجماقت ہے یانہیں ، کیا بی تعالی کے ادادہ کو اپنے ادادہ اورخشام کے تابع بنانا پا ہتے ہو ؟ یاددکھوکرخدا کے کم کے بغیر دونہیں ہل سکتا بھرتم اس ہیں خل بہنے والے احداس کوناگوارسمینے والے کون ؟

دۇسكاس بات كاخيال كروكرميرااس هفى يركيايتى سيى؟ اويضرا کامچورکیا بی ہے ؟ اورپوطاکا تہا ہے ساتھ کیا معاملہے اورتم اس شخص کے ساتھ کیا معا مارکر نا چاہتے ہو ؟ ظاہرہے کرتم جس تھی پر خصر کر يه بواس كے ماك نہيں ہو ، خالق نہيں ہو ، رزق تم اس كونہيں ديتے، حیات تمہاری دی ہوئی نہیں ہے۔ اور خلاف ند تعالیٰ کے تم بر مرتسم کے حقوق بن كتم برطرح ساس كي كوم وملوك بوا وراحسان منديو، مایں میرتم اپنے الک حقیقی کی بیسیوں حطائیں اور نا فرطنیاں داست دن کھتے ہوا ورباہ جداس احسان واستحقاق کے وہ سب کوبرداشت کراہے۔ اگرایک قعودریچی سزایے توکہیں تہا داشکا نا نہ ہے ۔ اورتہ ادامالاگر کی رہی تی نہیں ہے میریہ حالت ہے کہ وراسی خلاب طبع حرکت برغصہ سے بام رموے جاتے ہوا وراس کو دنیاسے ناپید کرفینے کیلئے تیار ہو، کیا تهباری اطاعت ورمنامندی خواکی عبادت و *یخم سے بھی زیادہ مٹرودی ہی*۔ على علاج يرب كرجب علم المات وأعُودُ بالله من الشَّيْطُنِ الرَّجِيمِ رِصُوكيونكه غصر شيطاني اترب الديشيطان كيشر سے جب بناہ مانگی جا سے گی تو وہ اثر زائل ہوجا سے گا۔ نیزانی حالت کے برل دو بعنی اگر کھٹے ہوتو میٹھ جا کہ اور منٹھے ہوتولیٹ جا کہ اور اگراک

له بخاری وسلمک مریث میں ہے ١١ که ابوداود واحسد ١١

بھی غصر خشارانہ ہوتو وضوکر لوا وراپنا رضارہ زمین پر دکھ دو تاکہ محکستیر ٹوٹے اور عزت والاعضو حب زمین پر دکھا جاسے تونفس مرے کے یونکہ مذہبے میں آیا ہے " الٹرکے نزد یک سب سے مہم گھونٹ جو مسلمان بیت ا ہے وہ عصر کا گھونٹ ہے ہے۔

جناب دسول الشعلى الشرعلي وكم فراتشتے ہيں كہ " حس مسلمان كو لينے بی بی بچوں یا ایسے لوگوں پر عقد آسے میں پر اپنا عقد ماری كريمتاا ويسزا دے سختاہے اور وہ اس كوضبط كرجائے اور حسل سے كام لي توحق تعالیٰ اس كا قلب امن اورا بيران سے لسب ريز و شريا ہے گا ہ

یا درکھوکتحشل کی برولت مسلمان شب مبیرار ، روزہ دار ، عابدہ زاہر کا مرتب، پاسپ تا ہے ۔



كه معمون قريب قريب ترفيي

الدواور ١١

له الإداؤد واحسسداا

له ابن الداني الدنب

المنظمة المنظ

حسك عقيقت احسد كي معنى بن كريحي فن كوفارغ البالى إعيش ارامیں دی کر کلے اوراس کی نعت کے جاتے دینے کولیے ندکرے " حدر کا حرام ہے ۔ جنانچ حق تعالی فروا تاہے کہ " میرے بندے رنعمت د کھ کرحد کرنے والاً و مامری استقیم سے ناواض سے ابولی نے اپنے بندوں میں صندیا تی ہے ہے رسول متبول صلی الشریلیہ وسُلم صنعرہ تے ہیں كه "حد نيكيون كواس طرح ملاديما بي حسط السي كم لكر الون كوملا ديمي ہے " البشہ ایشی میرصد کرنا جائزے جوالٹہ کی دی ہوئی تعمت کوظلم و معصيت مين خرج كرريابو مثلاً مالدار جوا ورشراب فوارى وزناكارى یں اوار ا ہو ۔ بسنا ایسے علی سے مال جین جانے کی آوزوکرناگناہ ہیں ہے کیونکریہاں درمقیقت مال کی نعمت جین جانے کی تمنانہ یں ہو بلك الرفش ومعصيت كے بندمو حانے كى آرزوسے ، اوراس كاشاخت یے ہے کہ اگرمٹ کا و چھن اس معمیت کو چھوڑ دے تواب اس نعمت کے

له يرآيت نهيس بكر مفرت ذكريا عليارت للم كاقول محكم مق تعالى يونسرات بي . ابن ما حد ١١

جاتے ہینے کی اُرزو میں ذہیے۔

یا در کھوکہ عوماً حسد کا باعث یا آونوٹ وغرور ہوتا ہے اور یاعدات و خباشت نفس کہ بلا و برخوا کی نعمت میں مجل کر تا ہے اور یا ہتا ہے کہ جس طرح میں کو کو پہنیں دیتا ۔ اس طرح میں کو کو پہنیں دیتا ۔ اس طرح میں کو کھی میں دیتا ۔ اس کو باس میں یہ نعمت ہے اور مجھی الیس میں میں میں میں میں اس کے باس میں یہ نعمت ہے اور مجھی الیس میں میں مار میں کہ میں نعمت کے بیتا میں میں کو میں نعمت کے بیتا میں کہ میں نعمت کے بیتا میں کو مال ہوجانے کی تمنا ہوتی ہے ، اوراس میں کی مضائقہ نہیں ہو۔ آپ کو مال ہوجانے کی تمنا ہوتی ہے ، اوراس میں کی مضائقہ نہیں ہو۔ فیصل الیس میں کی مضائقہ نہیں ہو۔

حدثلی مرف ہے۔ اس کا علاج ایک علی ہے ادرایک لی۔

حسد کاعلمی علاج کاصداس کونقمان پنجارات، اسمتود

کاحس پرصدکرد اہے کہ بھی نہیں بھوٹا ، بکداس کا توا در نقے ہے کھا کہ کی نیکیال مفت ہیں اس کے انتقاری ہیں ، برخلان حاسد کے کہس کے دین کامبی نقصان ہے اور دنیا کامبی ۔

دین کا فقصاف توبید کراس کے کئیر سے اعمال جھا ہوئے جاتے ہوئے جاتے ہیں نیکیاں جل جاتی ہیں اور یق تعالی کے غضے کانشاند ہا ہوا ہے کیونکرالٹر تعب الی کے وسع حسنوانہ کی بے شارفعتوں میں تبل کرتا

له تحبر ۱۱ مله دوركوا ۱۱ معددكيا بوا ۱۱ مع ساقط ۱۱

اورد دسرے پرانعام ہونا چاہتاہی نہیں۔ اور د نیٹ کا نقصات ہے ہے کہ حاسر ہمیشر رجی وغم میں مبتلا اوراسی فکر میں گھلتارہ تاہے کہ کی طرح فلاق فعس کو ذلت وا فلاس نصیب ہو، پس حس پرصدہ ہے اس کیسکے بھی فوٹنی کامقام ہے کہ مجھے رہنے ہیں چانا چاہتے ہے اور خود ہروقت کے رہنے میں مبتلا ہوگئے ۔لہندا اس کے صدیرے اس کی

اور کود ہروہ تے ہے۔ ان مل سبدا ہونے ۔ دہسود اسے صلیعے اس ال تو مواد ہوری کا میں موجکہ تو مواد ہوری کا میں سوچک تمہا ہے۔ حد کرنے نے محمود کو کیا نقصان ہوا ۔ ظاہر ہے کہ اس کی نعست میر می تھی تھی ہوا کہ ہا اور نفع ہوا کہ ہا اس کے نامترا عال میں درج ہوگئیں ۔ کیسا الثا تصد ہوا حاسر چا ہتا تو یہ تعالی محسود دنیا میں تنگ دست ہوجا سے اور نتیج ہے تکا کہ اس کی تعمین سجال دئیں ال

دنیا پی تنک دست ہوجا سے اور پیچہ یہ تکا کہ اس کی سمبیل مجال دایں آؤ دین کی نعمت نفع میں ملی ۔ اور ماسرے غذا پِ آخرت بھی سرد کھے ااور اپنی قناعت دارام کی زندگی کورخست کر کے ہروقت کی خلش اور دنیوی کوفت خریدی ۔ یہ تواہسی مورت ہوگئی کہ دخین کے ڈھیدلا مارنا چاہتیا

کونت فریدی ۔ پر توالیسی مورت ہوگئی کہ دھمن کے ڈھیدلامار نا چاہت! شما اور وہ لینے ہی آلگا ، کرم سی آئی آنچہ میوٹ گئی ا درطرہ پر کرشم بینی شیلا کومبی ہننے کاموقع مل گیا حضوصاً اگر کسی عالم یامتھی پرصد کیا جا سے کہ اس کا علم وتقویٰ ذائل ہونے کی تمنا ہوتو پرصدسب سے زیادہ مراہ و درمزم اعلم اللہ جسر سیار سیارہ تھیں۔

ملی علاج کی مسل علاج حسد کا یہ ہے کہ حسد کا مقعود تو یہ حسد کا عمل علاج کے تم محسود کی عیب جوئ گروا ور دی جسم کے گھونٹ دات دن ہیو، اسٹرا تمنس پر جبر کروا ورقعب گاس کے منشار

کے معومت رات دل بیو ، اسرائم مسل پر ببرگرد و در نصب را اس کے مسار کی مخالعت کریے اس کی صدر پیسل کرد ، مینی محسود کی تعرفیاں بیان کرد اور

اس کے سامنے تواقع اوراس نعمت پر خوشی و مسرت کا اظہار کروجو

اسے مرحمت ہوئی ہے ، جب چنر روز بہ تکلف الساکر دگے تو محسود کے ساتھ تم کو مجت پیدا ہوجا سے گی توصد ساتھ تم کو مجت پیدا ہوجا سے گل ، اور جب عدا وت جاتی ہے گی توصد بھی نہیں گا ، اوراس رخے وغم سے تم کو نجات مل جا مے گی جس میں حسد کی وجہ سے تم معب اللہ ہوئیے تھے ۔

نسا

سایدتم کویشبرای بوکه دوست می ادروش می و سرق میونا تو انسان کاطبی امریم ، اورانی اختیاری بات نهیں کرمس طرح لیے دوست کوراصت میں دکھیں کو احت میں ہوئی ہیں ہوئی ہیں ہوئی ہیں ہوئی ہیں ہوئی ہیں ہوئی ہیں ہوئی اس کے ساتو مینی بات میں ہوئی ہیں اور دی میں اس کے ساتو مینی بات افتیاری ہے اس کے ساتو مینی بات اختیاری ہے اس کے ساتو مینی بات اس کے ساتو مینی بات اختیاری ہے اس کے ساتو مینی بات میں دورام ہیں ہوئی نہ ہونے دو ۔ بلکونس پر میر کو سے اس کی صدر پڑھی کر دوسیا کہ ہم معلق نہ ہونے دو ۔ بلکونس پر میر کو سے اس کی صدر پڑھی کر دوسیا کہ ہم معلق نہ ہونے دو ۔ بلکونس پر میر کو سے اس کی صدر پڑھی کر دوسیا کہ ہم معلق نہ ہونے دو ۔ بلکونس پر میر کو سے اس کی صدر پڑھی کر دوسیا کہ ہم معلق نہ ہونے دو ۔ بلکونس پر میر کو سے اس کی صدر پڑھی کر دوسیا کہ ہم معلق نہ ہونے دو ۔ بلکونس پر میر کو سے کہ ہیں

دقّع یرکنفس پی جومدکا مادہ موجودہے جوالٹہ کی فعموں کو بندوں پر دیکھیی بسندنہیں کرتا اس کو دل سے محروہ مجھوا وریرخیال کروکہ ہے خواہش دین کوریا دکرنے والی ہے۔

ان دوبانوں کے بعداگرلینی امرباتی بہتینی دل بے امتیار پہرے کدوست نوش حال رہی اور دھن پا مال ہوں تواب اس کا خیال نرکو کیوں کے دب اس کے اذالہ برتم کو قدرت نہیں ہے تواس پرگناہی نہیں

ہوگا ، مگرول کی ناگواری ضروری بات ہے ۔ اوداس کی علامت پرہوکہ اگرمسودى نعمت كے ذاكل كرنے يرتم كو قدرت مال ہوجائے تو اپنى طبعيت سيمهادى خابش يي بوكركاش اس كى نعبت چين جاري گمراين المتع پاؤں سے الساانتظام ذکرو یامشلا محسود کی نعمت کے قائم رہنے یا برھانے میں مرودے سکتے ہوتو ماوجوداس کے ناگوارگذرنے کے اس كومدود ، اگرانيي حالت موجائ تو تجدلوكر جبال تك اختيارا ورقا يوي بيها تك م فراك م يول كراباا ورسبكروش بوكة واليى صورت ين طبعى بات کادورکرنا لینے قبصین سی سے اور موجود توسیے ، مگر جونکراختیاری كامول نے اس كوچىياا ور دباليا ہے اس كے گويا كالمعدوم بوگئى ہے، اور يمى يادر كموكة بنى نظرعالم دنيا سے المعراق ب تو و محمد التي بي كرونيا معی نا یا تدارسے اوراس کی ترام نعتیں معی فنا ہونے والی ہیں ، بس اگرایت وشن فراخی یا وسعت وآدام ہی میں ہے تو کتنے ون کیلئے۔ اگراعمال کےسبب مرنے کے بعد دوزخ میں جانے والا ہے تواس کم نصیب کو اس جند دوزہ ارام سے کیا نفع ؟ اگر جنتی سے توجنت کی فعتوں کواس نایا کدانعت سے کیا مناسبت ۽ بس حد كرنااوردشن كودنيا كى سي خشي من يَعب كرها ابروال معف بے سودا ورعبث ہوا ۔ ساری تلوق خداکی سیداکی ہوئی سے اورسارے آدى لينے بيار _ مواكے غلام بي ، بي مجوب كى طوف سے جوانع ام بول ال کے اثر اس کے غلاموں رہی فلام ہری ہونے جا ہتیں لہے احب کسی رہی تمہار قدرت و العجوب كى عطاؤ*ل كے آثا نظام مو*ل ، تمها ليے لئے تو^{ست} ہونے کامقام ہے ۔ نکررنج وحسد کرنے کا ۔

ﷺ بخل اور محبّتِ مال کابیان

تخل بھی ایک بڑا صلک موض ہے حق تعبالی فرما تا ہے کہ " بولوگ الشك دى بوئى نعمت ين بخل كرتے بي وه اس كولينے في مي بهتر معميل مكريان كے لئے نبايت مُراب كيو بحص مي جل كري محاس كاطوق بناكران كم كلي بناكران كالإمام على اورني كريم عليه الصلوة والسلام فرطت الله كرم إن أب كوبها وُبِل س كراس فيبل المتول كوبلاك كوياب، میں مسلمان کوشایان شان نہیں کی کو کرے اور جہنم میں جاسے ۔اور جونکر بنل در متيقت مال كى مست ، اورمال كى مبت تلب كودنيا كاطرف متوج كردتي كمب عب الشركى مجست كاعلاقه منعيف وكمرور موما تابي اور بخیل مرتے دقت حسرت معری نظروں سے اپنا جی کیا ہوامحبوب ال ويهتاا ورجرًا فيراً أخرت كاسفركر تاب، اسسنة اس كويفال حل الله كى القات مجبوب ببين بوتى - اور مدمية من آيائي كم الوتخص مرت وقت السُّرتعالى كم الما قات بسند مركب و مجبني سے و حب تعن ك یاس مال نہوہ مخیل تونہیں ہے مگرے ہوسخاہے کہ اس کے قلب یں مال کی محبت ہوا وراس آرزونیں ہوکہ کاش مالدار ہوجا سے ای طی لے ابعط وَد ونسانُ منن كبرى مِن ابن حبان ١١ كا ك تعلق ١١

مال طلقاً مذموم نہیں ہے ،اورمذموم کیے ہوسکا ہے جبکہ دنیا انخرت کی گھیتی ہے کہ ساری خلوق جم کے گھوڑ ہے پرسوار ہوکر سفراً خرت ط کر ہی ہواور سواری کواس مسا فرخا نئر دنیا ہیں گھاس دانہ کی ضرورت ہے اور وہ مال کے بغیر نہیں مل سکتا کیونکہ جب تک پیٹ نرمجرے اس وقت تک عبا دت نہیں ہوسکتی لہنزا قوت وحیات قائم دکھنے کی مقدار کے موافق ماسل کرنا ضروری ہوا۔

یا در کھوکھ کورت سے زیادہ مال جن کرنا تین وجر سے مضربے:
اقر ل د مال کی وجرسے معصیت پر قدرت کال ہو ماتی ہے اور قدت کے ہوتے ہوئے ورکنا اور گذاہ سے بچا بہت د شوارہے اور جب ضرورت سے زیادہ مال ہی نر ہوگا تو فا ہر ہے گئا ہ یولانہ ہو سے گا۔

دوم ، راگرمتمول شخف عابد و نابتهی بواد میباح ہی لذتون میں بیریش کیا تب ہی انتقان اس کو ضرور مینیا کدائس کے ہم نے چو تک لذی پھتوں سو پرورش یائی اس لئے لذتوں کا خوگر ہوگیا ، اور مال کوچو نکر پائزاری نہیں ہو، اس سے اپنی عادتوں کو نباہنے کو مخلوق کا محتاج بنا دہے گا۔ اود کیا عجب ہو کہ ظالموں اور فاسقوں کے سامنے ہاتھ میں بنایا ان کی جا پوسی کرنی پڑے تاکہ بن لذتوں کا عادی ہوگیاہے وہ مرتے دم تک عاس ہوتی رہیں ، اور جب یہ ہواتو اب نفاق ، جورت ، ریا ، عوادت ، بنفض اور حدرسب ہی ظاہر ہوں گے۔

له مسلم واحسدوترفری وابن ما به ۱۲

اس لئے جناب دسول التُرصلی الشّ علیہ وسلم صندائے ہیں کہ ونیاک محبت تمام گناہوں کی حبطہ ہے اور صرورت سے زیادہ پیپیٹیٹریں نہوتومبار چیپ زوں کا مزہ بھی مُنہ کونہ لگے گا۔

تدیش و در یہ کمی تعالی کے ذکر سے خفلت ہو جائے گہ بحیونکہ کا شتکاروں محروں اور طازموں کی نگرانی اور شریکوں سے حساب کتاب کرنے اور ترقی کے اسباب فرائم کرنے کی تدبیروں میں اسی شخولی ہوگ کہ اصل سعاورت بینی فرالی کا وقت ہی نہ ل سے گا۔ اول روبیدی تحصیل اور مولیا بی بچراس کی حفاظت و نگر بانی اور مجراس کا نکالنا اور کسی کام میں لگانا ورب دھندے قلب کوسیاہ کرنے والے میں جس سے فور بھیرت جاتا رہتا ہے اور جب مزورت سے زیادہ مال ہی نہ ہوگا تو ہے تعن کراست و مخصات ہی بیش نہ آئیں گے ،

فمسل

ضرورت کی تحدیداً ور کفایت کی حقیقت کفایت کی حقیقت الداد کوں نہوجا ہے، یہاں تک کہ گرمہنت آقلیم کی سلطنت بھی مل جاتی ہے، شب می بہی مجمعتا ہے کہ میری ضرور توں کو کافی نہیں ہے ۔ اس لئے جاننا جیائے کہ ذمنی خردر توں کا اعتبار نہیں ہے ، اور واقعی ضرورت انسان کو صرون پیٹ مجرنے برن ڈی تھے کہ ہے ۔ بس اگر زینت و تحتل کا خیال نہو تو سال مجر

له بیبقی مرسل مگر عترب ۱۲

ے جانے گری کیلئے دودیا ایکانی بی جن میں موٹے کیڑے ہوگری دمردی دفع كريكين بآسانى تيار بوسطة بن . اوركعافي شي سيرى اور يوابن الرجواله دیا مائے توایک مدروزان کے صاب سے سال مجری یائے مومدانان اور كبيكم معمولي وال تركاري كيلية ارزان كيوسم من تخيياً من ديناركان بي. اب صاب لگاؤکه کمتے نغرکانعقہ تہاہے ذمہے ؟ بس محت مزدوی می الى مقواد كيموا فق ابناا وريلين بال بجيل كافقتر روذانه عصل كرواورخ رج كرفالو باقى سارا وقت التركى يا ديم خرج كرو - ا وراكراس سے زياده كمافيك ج كروك توونيادارا ور مالدار مع جاؤك راوراكركوني زمن جائداد حبس كى سالانآمدني فركويه مقدار كمعوافق بوماست اس تيت سے خريد لوكد وزاد كسب ا درمخنت مزدودی سے سی کوش ہوکرا طبینان کے ساتھ الٹہ الشہ کرسکو کے تو فی زبانثاس يرمى كجعمعنائقة نهيس معلوم بوتا ركيونك جا تداوكا خريدنا اورزمين وْتَىٰ بِسُ دوبِيدِ لَكَا نَااس وقت ناجازَ ہے جب كردنيا المبى كيسك ہوك وَتُ ماه مِن ترتی یازمیندالدیننه کی ول می خواسش بود، اور مذکوره مورت می چوبی دین پی کا م ل کرنامقود ہے ، اس لئے یہ اس مانعت سے خارج ہے ہو رسول مقبول ملى الشرمليروسلم في مسترمائي سے ١١ كرماته مياس كالحاة کرنامی صروری ہے کہ طباکع اور کتیں مختلف ہوتی ہیں ہمکن ہے کیعیض لوگ خرکودہ تدرکھایت پرقناعت خرسکیں اسذا ان کیلئے اس سے دوجیند کی مجی اجاز مے کو در در من میں میں ہے ۔ البتراس زیادتی میں سب بہونا جائے له ایک دینا دقریرا عرکا بوتا بچک دینادی بوست ۱۱ سند (کی کی قدیت دیناد مبهت زیاوه بویمید) ته احردِّرزى ا ودماكم نے مح دوایت كيا ہے " لا تقصف وا الفیعنة نقب اللهٰیا " تم جائزاد ما حال كروكرونيا معجبت كرف لكو . کہ پی پی تخفیف میں مشقت پیش آتی ہے اور عبادت میں اطبیان نہیں ہوا اس لئے ہم کو باطبینان قلب یادیتی میں شنول رہنے کیلئے ذائر خرج کی منرورت ہے، زکہ گذفا و تریخم کیلئے ۔ بس اس سے زیادہ ہوکوئی جح کرکے رکھے وہ دنیا والا ہے ، اوراس کو مال کی مجت ہے جاس کا دین بریاد کرنے والی ہے ۔

یادر کھوکہ مال جے کرنے والوں کی عرض مختلف ہوتی ہے۔ یا پرکم والدائی م اورلزيس يائي م ع ، اقريايكموق اوروتت براكت ومدقات وخرات كري م اوريات دوداندي اوداس معلمت كيد بواكر ركمة بس كالكوكي وقت ا فلاس آگیا یامحنت مزدوری نهوسی یا فاقکٹی کی نوبت آ کی توپیماندہ پینی کام آئے گی ۔ مالانکہ تینون تیس درست نہیں ہی ۔ کیونکہ تلذؤاو تنعم توخلامے فافل سانے والی ہے ، اور خیرات کی نیت سے مال جے کرنے کی بنسبت تومېترىيىسى كەمال بى ياس نهو ، اب دا آشندو كىيلى مال جح كرنا ص كانام دورانديني بيمووه توكونى چيزي نهي ، كيويى اگرتقديري فاتري ا درمه بست بھی ہے تو وہ اس مال کی برولت طل نہیں سکتی ، اور نزج طرح آفت ناگہانی کی طریت سے اطینال نہیں اس طرح اس بات سے بھی ناامیری نہیں نے کری تعالی ایس بگہ سے رزق پنجا سے جبان گان سی نرماتا ہو ۔ اور معیلااس برگمانی کاموقع ہی کیا ہے کُرٹا پیسی وقت میں ہی تحالیٰ رزق بندكم لے اور فا قركرائے ، غلام كوتولينے آ قا كے ساتھ نيك گسان دکھتا جاہتے ندکد گمان ہد۔ اس کےعلاوہ پیمی سوچنے کی بات ہے کہ اس کی میوس کرناکه ترام عمرمالداریا تنردست بی دایی او کوی وقت بیمی می تم ک

له مزویانا ، نعمت می رسنا ۱۲

معیدت یا رفت مرکونہنچ ، اچی بات نہیں ہے ۔ فراختی وآرام کی زفرگی کو بہتر خیال کرلینا عظم ندول کا کام نہیں ہے ۔ اس نے کہ معید توں اور پریٹیا نیوں کی بدولت بندول کو بڑے بڑے و سیعے طقے ہیں ، اسی سے قلب کی سیقل ہوتی ہے ، اسی سے گذاہ معاف نہوتے اور وہ فائرے عاصل ہوتے ہیں بڑی کا ماسل ہو ناآسان نہیں تھا ۔ یہی وجہ ہے کہ سب سے زیادہ پریٹیا نیال انسسیا رسیم استال کو برداشت کرنی بڑیں ، اور ان سے کم پریٹیا نیال ان سے کم رقب الول کے خون قرب خوالیں انبیا علیم السلام کے ساتھ بی ناست ہوئی اسی نسبت کو سکور بریٹیا نیال اور میں بیار مسیت ہوئی اسی نسبت کو سکور پریٹیا نیال اور میں بیار علیم السلام کے ساتھ بی نسبت ہوئی اسی نسبت سی کو پریٹیا نیال اور میں بیار مسیت ہوئی اسی نسبت ہوئی اسی نسبت سی کے پریٹیا نیال اور میں بیار میں کا میں کو پریٹیا نیال اور میں بیار میں کی پریٹیا نیال اور میں بیار میں کا میں کی پریٹیا نیال اور میں بیار میں کی پریٹیا نیال اور میں بیار میں کی بیار کی کا میں کی پریٹیا نیال اور میں بیار کی کا میں کی پریٹیا نیال اور میں بیار کی کا میں کی پریٹیا نیال اور میں بیار کی کی بیار کی کا میں کی بیار کی کا کی کی کے دور کی کا کی کا کو کی کو کی کی کی کریٹیا نیال اور کی کا کا کی کی کی کی کریٹیا نیال اور کی کی کی کریٹیا نیال اور کی کریٹیا نیال اور کی کریٹیا نیال اور کی کا کی کریٹیا نیال اور کی کریٹیا نیال کریٹیا نیال کی کریٹیا نیال کی کریٹیا نیال کریٹیا کی کریٹیا نیال کریٹیا کی کریٹیا کریٹیا کی کریٹیا کی کریٹیا کی کریٹیا کری

كفايت كى مقداد كا جوساب بمن بيان كياب وه يويخنين واسك

فصيا

بخلیں داخل ہیں تو پھر مٹربیت نے ان کو جائز کیوں کہددیا ؟ بات برہوکہ مربعت کامنشاراس قم کی نے مروثی کی باتوں کو جائز کہدیے ہیں یہ بحکہ عام لوگوں کی بابی نزاع دورکرے اور میلوں براتنا قلیل بوج وال روس کے ويتمل بوسكين انتظام ونيوى كوقائم سكي يخراس كے ساتھ بى مروت كا براؤ ا ورجو خرورتیں اتفاقیہ پیٹر آبائیں ان کو یو داکرنا مجی مرودی ہے مرتبیث یں آ لیے گھی ال کے ذریعہ سے آدمی ای آبرو بھائے وہ می صرفہ ہے۔ مثلاكمي الداركوا ذليتربوكريرثنا وميري بجكمسي كا اوداكريس اسكو يكف معدول واس كامنه بن يوج سع اورياد وداس علم ك س كوكيد ہے تودیخش مخیل محیا جائے گا ، کیونکہ اس نے ای آبر دمحفوظ رکھنے کہ تیر نك ادربد كوكوبركوني كاموتع ديا . يرظابرب كرمال ك ذات تومقعودال مجوبنہیں ہے ۔ بینانچے کوئی اس کوچیا تا یا ٹھکتانہیں ہے ، ہاں السیتہ پوئكاس سے فرودين اورى اور تفقيل مصل بوتى بى اس لے المروب بعله فائره بوديان خراب كرفي فائره بوديان فري ذكونا فلعلى کی بات ہے ۔ اس بوقف با وجو د ضرورت کے مال خریج نہ کرے توسم لوکہ اس كى ذات كے سات محبت ب اس نف كے سات وكر ال سے معمود كا اس كيمطلق بحث نهيس كيبى ال كمعيت يهال تك بره حجاتى بوكدانسان کو اپنا فا مُوا ورنقصان مجی نفارنہیں آتا ۔ انسی حالت بہت خطرناک ہے۔ حب کومبل مرکب کہنا چاہتے ۔ پس ایی موریت پس عقل و ترزع کے یاب ند بنفى حامات زياده تويركروا وتص مكرير خرية كرسف كايه دونول يحركري وا

له ماکم رین سے ۱۲

بے دریغ مال خرچ کرو۔

ية ويخل كانترك تها . اب ريى سخاوت ، تواس كى توكو فى مديى معتسر نہیں ہے۔ اس اتن اسم مولو کہ تخل کی حرسے با ہر کل کر خبا بھی خرج کیا جا سے وہ سب سخاوت لمیں واخل ہے۔

ا بخل کا علاج علمي سي اورسلي معلى علاج بخل کا علاج علمی توب کران کے نقصانات علوم کو کانوٹ ک تباہی اورونیا کی برنامی دونوں اس سے پیدا ہوتی ہیں ۔ خوسے کوکہ ال بنیل کے ساتھ جانے والانہ یں ہے، صرف قبر کے گھھے تک کا دھندا ہے ایس دنیا میں انسان کوجو مال دیا گیا ہے توصرف اس غرض سے دیا گیا ہے کہ وہ اس کوائی خورتوں میں خرچ کیا کرے ۔ سواگرتم جانور ب کراس کوائی نفساني فوابتول كي يواكر نے ميں خرج كرو مح توبرى خرورى نعست بعينى آخرت كى لذكول مع وم رمو كے اور اگرونيا ميں اولاد كے لئے چوا مولے توكى ياولادكوتوارام دي جاؤ كم مكرخود خالى التصيي جاؤك التميى بناؤگراس سے زیادہ حاقت کیا ہوستی ہے ؟ دراغورکر در الرتمهار بيمانده بخصائح اورتيك كالرحمين كة وخدان كي خرور آون كالفيل ند ہوگا ؛ مچرتمہارے جح کرنے سے کیانفع ؟ اوراگرخوا تخواستہ وہ بدکار بوي توفا برب كريتمها داجع كيابوا مال حق تعالى كى معصيت من خرج بوگا اوراس كاتم يروبال يشدع كاكمعسيت كسبب تم قراريا وكر بول ول دومرے اوگ تمہارے مال سے مزے اڑا میں ملے وول وول تم يونوا بھے گا۔ اس قم کی بائیں سوسے اور بل کے نت بج رغور کرنے سامید



المراجعة الم

روز اورمرت عاهی محبت کابیا

خوا مره فرس بر من الكري الكري التي تعالى فراتاب كر والكفرت المتحدد الكري الكر

نوب مجدلاکہ رحونت اور حتب ماہ مری کا ہے ، ان سے قلب ش نفاق پیدا ہوجا تاہے ۔ مقیقت میں وہ لوگ بڑے ادام میں ہیں جن کوکو گاہ نتا ہمین ، شامراران کو اپنی کو شی بھلوں میں گھنے کی اجازت دیتے ہیں ، اگر وہ نکاح کرنا چاہیں توکوئی ان کو لڑکی دینا ہے نزم ہیں کرتا ، پھٹے میرانے کیڑے ہیئے اور ذکت وسکنت کی حالت میں بڑے ہوے ہیں ، انھیں میں ایسے مندے ہوتے ہیں کہ اگر کی بات توم کھا بیٹھیں توق تعالی ان کی خاطراس کو پولافراتا ہو یادرکھوکہ جہال انسان کی شہرت ہوئی اوراس کو سند عرّت کی حبگہ بیٹے منا ورکھوکہ جہال انسان کی شہرت ہوئی اوراس کو سندع تا ہی آگئی ۔ خوا کے بندے البتہ بلاطل جبلا خواہش آگئی ۔ خوا کے بندے خاہر فروا ہے تو اب ان کو چھا بندیا بلاخواہش آگری تعالی ان کو خانه اسے داشت ہوئی ہے مگران میں سیحی خانه اسے داشتو ہو اوراکٹر اولیا رکی ونیا میں شہرت ہوئی ہے مگران میں سیحی خانه اپنی شہرت کی آرزویا خواہش نہیں کی بلکم من می تعالی کی اطاعت تھی کہ اس نے شرکت ہو اوراکٹر ہو اس کے شرکت ہو اوراکٹر ہو اس کے شرکت ہو اور اس خواہش کہ اور درجت جاہ اس کا نام ہے کہ اپنی شہرت کی خود خواہش کرے ۔ اور ظاہر ہے کہ اس سے رعونت ہیدا ہوجاتی ہے ۔ حق تعدالی کو معفوظ رکھ

فصار

وسي ما وم مل المراب الولاس كالموس يقيد المال الموس ال

بساادقات جاه مثال نهبين بوتا ، اور مال مين چورې كااورلوت كا خطام مي ريتا ہے اس لئے حت ماہ کا در میرحت مال سے بڑھا ہوا ہے۔ اور چونکر میرعام قاعده ہے کہ جب کی تعظیم کا عثقاد لوگوں کے دلوں میں بیدا ہوجا تاہے تو لامحاله وكساس كالعريفين كرت اور دومرول كواس صفون مي اينابه خيال بنانا جاستے ہیں اور جب ان کواس کی دھن گئتی ہے توبساا وقات کامیاب سی بوجاتے ہیں اس اس طرح پر اسلم حاری رہتا ہے ۔ اور اُخر کارصت عام میں بلائنکھف وبلامشقت کامیابی ہوجاتی ہے۔ برخلاف اس کے ال کے جح كرفي سيول تدبري اورحيك كرفي رياب اوديمي فاطافواه ما*ل جع ہ*ونامشکل ہوتا ہے ۔ اس ویورسےانسان کو مال کی نبیست کھ کم محبت و نواسش زیادہ ہوتی ہے اوریہ وجہے کفھ اربھی حب امیں منتلا ب<u>ا رَجا ت</u>ھی ا حبّ جاہ کے بخرت ہونے کا ایک مبب يمي سے كم رادى كوائى الى اورعزت کی بالطبع خوائش ہوتی ہے ، اور مبخص جا ہتاہے کہ میں ایسامیثل و پی اے روز گار ہول کرس کی ہی ہوں ۔ حالائی بیحقیقٹ البیر ہواور فراونرتعالی کوٹایاں ہے کیدی کیائی اس کی شان ہے ۔ اورتمام خلوق اس واجب الوجود کے نور قدرت کا برتو ہے۔ یس جوانسان سے ، کے مِض مِن گرفت ارہے وہ کو یا النہ عز اسم کے ہم بلہ ہوجانے کا خواہشنداور اس کے ساتھ اس نسبت کے قائم رکھنے سے ناراض ہے جودھوپ کو آفتاب

لے مینی معبود ہونے کی توحقیقت سی ہے کہ ذات اورا وصاف میں میتا ہوگویا بیرے دائی کا دیوئ کرنا چا سبت ہے ۱۴

کے ساتھ ہوتی ہے گویاس کانفس فرمون کی طرح اُخارَ ڈبکٹٹ اُلاَعْلِی ْ پکاردا ہے کہ (یں ہی تمسیکا ٹرا پروددگادہوں) یس اتنافرق ہے کہ فول نے پھرزبان سے دگوں کے سامنے کہد دیا تھا اور دوسرے لوگ اس کوا پنے داول مي جييا سربوريي . گريونئوشان يكتاني كسي كوشك لنبي بوكتاد اس اَ رزومی کامیا ب بونامحال سے اس کے انسان کانفس جاستا ہے کہ ستقل وجودمي كامياب نهوتوكم ازكم اتناخرورموكرساد يمخلوق يرقيبنصنسون عصل بوجائد كرمس شيريوجا بول تعرون كرول مكريج بحاسمان ،ستادول يبال بسنددا ورودس كركم كموقات يقيمنه ونادشوا لنظرا يااس سنة ورا فيجا تركاس كامتنى نظرا ياكمرف زين بى كالخلوق برالكان تصرف كاسل بوما سي يعنى حيوا نات منتخ بروماني ا ورمي زيات ونما تات تابع ونسران بن جائیں اوران عویاتشہ آسانی اورٹری خلوقات اورٹی کی جن پر الکانہ تفٹ ع ل بونانام كن ہے، بورى وا تغنيت اور تحقيق تأثم عال بوجائي تأكد باتھ كاتبعنه نهوتوعم بى كاقبعنه قائم بهد، اوردنياكي آبادى بي سے دو تي العقول مخلوق معیی انسان این قلوب کے اعتبار سے میرے مطبع و فرال بروار بن ماکیں كهيرى عظت وبرانى كےمعتقدم كرمجه كوصاحب كمال مجمعة لكيں ، إتعانصے ہوے میر تعظمیم کریں اورمیری شہرت کا آوازہ ان مکول تک پہنچ حاسے جهال مِن فوذ بسيل بَهِ حِمَّا . لَا حَوْلَ وَلَا ثُقَّةً } إِلَّا بِاللهِ .

اله ربیاری کان سے مکے دالی چیزی ۱۲

له تابع ١١

سم زمن وال ۱۱

که بندی والی چیزس ۱۳

ته عقل والے ١١

ھ پوری

انسان ایک دن مرنے والاہے ، اورجاہ دشہرت مرنے کے بعری مہوجائے گی بین اگریه نا پائیدارشهرت حاسل بهی مونی اورخلوق میں عزت اور جاه مل بھی کئی قربواک ، یہ توکوئی فوق اور کمال کی بات نہیں ، کمال توالی چیز کا ما ل كرناب كرجس مي موت كونى خلل ياكمي نريب واكرب ، اور وه معرفت اللي ہے ، کہ صاحب موفت شخص دنیا سے انتقال بھی کرجائے تب بھی معرفت کے مبتیاد مراتب میں اس کی ترقی ہے ۔ لہذا اس رعوشت اورطلب شرت کا عِلاج كروا وراس كم محبت دل سے نكالو - يون مجوكه أگرمشلاً تمام دنياتم كوسجده بمى كرنے لگے توكتنے دن كے لئے ۔ آخرا يك دن وه بوگا كدنتم باتى رمو كے اور نہوہ کرنے والے باتی رہیں گے ۔ تعب سے کدنا نہ تو تمہا کے سا تعرب ال تكسخل كرتاب كرشهر باقصيرتو دركنا دتمها يسيحله يرجى تمكو يولا قبعنه يس دیتا ، اورتم زما ندکی بمدردی بی ایسے ڈو بے کردائی نعمت اور جاویر الفانت چوٹسے پر داخی ہوگئے کہ دنیا کی اس مکرّد وحقیرشہرت ا ودحیْدا لیے احق و صعيف لوگول كى تعظيم وتحريم برنازال بو گئے ۔ جن كو يحمي كى موت فيميات کااختیارہے الحکی کے ضردا ورفع پروسٹرس ہے ا وراس کی برولت اس يائدا دعزت اورعالم کلوتی کشررت کو کھو بیٹیے جوی تعبالی اور اسس کی برگزيده و ياكم خلوق ميني فرشتون بي تم كوم س بوق ب ـ

ا پیضرورہے کہ انسان مال کی طرح بعث در ضرورت جاه کابھی مختان سے تاکہ اس کی وببر مخلوق كظلم وتعدى مصحفوظ ورظالم حاكول كى دست مردے يے خوت موكر باطينان تلب عبادت

اکٹر حت مارح کی وجو ہات خواج میں ہوائری ہے کیونکہ انسان کو این تعریف وجہ ہیں :۔
ابن تعریف وحد تا میں لذّت آئی ہے اور لذّت آنے کی بین وجہ بیں :۔
اول : چونکہ کمال می تعالیٰ کا صفت ہے اور بی خوش ہوتا ہی میرے اندر بھی یہ صفت ہیدا ہو ، امر انفس ابنی تعریف سے توش ہوتا ہی کیونکہ ہمتا ہے کہ تعریف کرنے والا میرے کمال سے واقف ہے ، اور یہی وجہ ہے کہ ہے وقوت اور جا بالشخص کی تعریف سے آئی نوش نہیں ہواگی جو تی ہے ۔
وجہ ہے کہ ہے وقوت اور جا بالشخص کی تعریف سے آئی نوش نہیں ہواگی جن کمی ہوئے ہے ۔
حدم : تسنیر کی خواہش برخص کو ہے ۔ اور اپنی حدم شکری کا کمعلوم کے ۔ اور اپنی حدم شکری کا کمعلوم کے ۔ اور اپنی حدم شکری کا کمعلوم

ہوجاتا ہے کہ مال کے قلب برمیرا قبضه اور اثر ہوگی ہے ، اسدانفسکواس میں مزہ آنا ہے ۔ میبی وجہہے کہ اگر کوئی صاحب عرّبی صفی تعرفین کرسے تو زباده سترت بوتى سے اوراگركوئى مختاج يا بھيك منگا فقيرمدح كرے وہاكل نوشی نہیں ہوتی کیو بحداس کے تلب پر قبضر کا اُونی کمال یا خوبی سب

سوم: یونیال ہوتا ہے کمیرے آوازہ شرت کے بند مونے کا ذى يىدىيدا بوگيا ،كيويى لوگون كوميرى تعرفي كرنے كى طوف توجهو كى اور آب به آستنه استعیل کردنیا مجریس بهت جلاشهرت کرا دے گی راستدا مرح سيننس بچولتاہے ۔ اوريہی وجرہے کہ چی پس تعربعیث ہونے سطتنی مسرت ہوتی ہے تنہالی میں مرح ہونے سے اتنی مسترت نہیں ہوتی ۔

نوب مجدلوكراس وت مدح نے لوگوں كوبرباد وب جدور و ي اورطر و طرح كا علاج كا علاج كا علاج كا علاج كا علاج كا علاج العلم العلم

معميت ميس مبتلا بو مئ يساس كاعلاج كريا مياسة .

غودکروکرتعریف کرنے والاکس بات کی تعربیٹ کرتاہیے ؟ اگرتمہا ہے مآل اورعزت كالعرلف كرواس توسمجوكم ياتوكوني كمال كي بيزنهين ب مسرت توسقيق كمالينى معرفت اللى كحصول يرموني جاسير ،اوروهسى كمال تورونے كامقام سے نكمسرت كا - اوداگر تمبارے زيراوراتقاركى تعرفي بيقواس كى دوصوريس بعين لاتويكر درحقيقت تم ذا بداورمتقى ہوا ورتمہاری تعرفیت اک بالے میں چی ہودای ہے ، اور یامعن تہیں خوش کرنے کیسلئے تمہا ری جوٹی تعربین کی جارہی ہے ۔ بس اگر سی تعربیت ہے تو اس کا طائ اس طرح کروکدل میں موبچ اورغود کر وکدان باتوں اپنے اندر

آبیانا ورخی تعالی کا قبول فرا لینا نوشی کی بات ہے ذکر دومروں کابیات کونا کھونکہ لوگ ہے اور قرب الہی میں کچے دخل ہمیں ہواور اگر نوا کھونکہ لوگ ہوں ہم ہم نوش ہونا کھی جا قت ہے ہم ہونی اس کی مثال توالیں ہوئی کہ کوئن شخص تمہاری تعریف کرنے گئے کہ آپ کہ آئوں اور معدو سے عطری نوشوا نوی ہے ، صالا بحرتم وا تفت ہو کہ اس می تو نوش ہوئے گئے ہوئی سے ، صالا بحرتم وا تفت ہو کہ اس میں تو نوش ہوئے گئے تولیت پرخوش ہونے گئے ، تم ہی بتا ذکہ اس سے نہادہ ہے وقو فی کیا ہوگ ۔ اور جا ہو ہے اور جا ہوں کہ سے اور جا ہو تشہرت کا علاح ہم اور سیان کر چیے ہیں اس پڑے ل کرنے ہے امید ہے مدت کی حدیث مدت کے حدیث مدت کی حدیث مدت کے حدیث مدت کے حدیث مدت کی حدیث مدت کی حدیث مدت کی حدیث مدت کی حدیث مدت کے حدیث مدت کی حدیث کی حدی



دنياكى محتب كابسيان

دنیا صرف مال وجاہ ہی کی محبت کا نام نہیں بلکہ توت سے بیسے جس حالت میں بھی تم ہودہ سب دنیا ہے ۔ اور دنیا کی محبت تمام گنا ہوں کی جڑ ہے۔ حب دنیا کی ما ہیں ت اور موجودہ چیزوں کے ساتھ تعلق دکھے گانا دنیا کی مجت ہے ۔ البتہ علم و موفت اللی اور نیک کام جن کا ٹمو مرنے کے بعید طنے والا ہے ان کا وقوع اگر جو دنیا میں ہوتا ہے مگر در حقیقت وہ دنیا ہے تنی میں اور ان کی مجت ونیا کی مجت نہیں ہے ، بلکہ آخرت کی محبت ہو بی تعالی فرماتا ہے کہ " ہم نے دنیا کی تمام چیزوں کو زمین کی زمینت کا سامان بنایا ہوتا کہ وگوں کو آزمائیں کہ کون ان پر فریفیتہ ہو کر آخرت ضائے کرتا ہے اور کون بھول مرورت موکی اقد شرم محب کرانی آخرت سنوار تاہے "

یادرکھوکہ آدئی کوجاہ و مال کے علادہ زمین میالی میالی کی مجمی مجت ہواکرتی ہو بشتلاً مکان بنا سے معنی کرے نہاتا کئے کی مجم ب

ہوتی ہے مشلاً جڑی بوٹی بوکہ اس کو دواؤں میں استعال کرسے مائز کاری

ودیگربیداداریا پیل بھول ہوکہ اس کو کھا ہے اور مزواڈ اے ۔ اور معنی ت کی بھی جست ہوتی ہے مثلاً برتن اور اوز اید بنے یا زیور منواکر پینے یا لقد جبح کسے ۔ حیوانات کی بھی مجست ہوتی ہے ۔ مثلاً شکار کسے اور کھا سے یا ان پر سواری کرے اور اپنی ذینیت بڑھا ہے ۔ اوراؤ میول کی بھی بجست ہوتی ہوشاً یہ کی عور تول کو مشکو حرا ور مفادم رہنا ہے یا مردوں کو غلام اور نوکر اور فدم سناگر

انھیں چیزوں کی مجت کا نام ہوائے نفس ہے ۔ ص کوی تعالی نے فرایا ہے کہ جس کے نفس کو خواہش سے دوک لیا اسس کا شمکا نہ جنت ہے ہے

تن پروری مسافر آخرت مشافر آخرت مشافر دنیای زندگی محقی میل و رخاش مین پروری مسافر آخرت مشافر در بنوت ، کیند ، مصد ، دیا ، مشاغ و در بنوت ، کیند ، مصد ، دیا ، مشاغرا و در برق و ارائش کا متوق بیدا بوتا به توصعت و حرفت او در داعت و متحادت کے نایا مکارش خلول میں الیا بیش مجات دیا بی الیا بیش میں ایسا بیش مول بوجا تا ہے اور بدن اس کی اصلاح و تدبیریں محروت دیا بین شول بوجا تا ہے اور بدن اس کی اصلاح و تدبیریں محروت ، مالائک دنیا توشند آخرت بے ، اور اس سے معمود میں ہے کہ مسافر این آخرت باسانی این اس کی مسلوح میں کے مسافر این آخرت باسانی این اس کی مسلوح میں ہے کہ مسافر این آخرت باسانی این اس کی مسلوح میں کے مسافر این آخرت باسانی این اس کی مسلوح میں کے مسافر این آخرت باسانی این اس کی مسلوح میں کے مسافر این آخرت باسانی این اس کی مسلوح میں کی مسافر این آخرت باسانی این اس کی مسلوح میں کے مسافر این آخرت باسانی این اس کی مسلوح میں کے مسافر این آخرت باسانی این اس کی مسلوح میں کے کہ مسافر این آخرت باسانی این اس کی مسافر این آخرت کی کھورک کے کہ مسافر این آخرت باسانی این اس کی مسافر این آخرت کی مسافر این آخرت باسانی این اس کی مسافر این آخرت کی کھورک کے کہ مسافر این آخرت باسانی این اس کی مسافر این آخرت کو کہ مسافر این آخرت کیا کہ کو کھورک کی کھورک کے کہ کا کھورک کے کہ کورک کے کہ کی کھورک کی کھورک کے کہ کھورک کے کہ کھورک کے کہ کی کھورک کے کھورک کے کھورک کے کھورک کے کہ کورک کے کھورک کے

احق لوگوں نے اسی کومقعو داصلی سجہ لیا اور طرح کے مشغلوں اور قیم قسم کی نوامشوں میں ایسے بڑے کہ آنے والے وقت کو بالکل بعول گئے، ان لوگوں کی مثال الیسی ہے جیسے کوئی شخص حج کی نمیت سے دوا نہوا و تشکل میں نہج کہ موا تازہ کرنے کی فکر پیس لگ جائے لوگ ہم الہموں سے سجھے دہ جائے ہے۔ افسوس ہے کہ س کی حالت برکرت نہا جسگل میں در اور کا گاری حس نمیت سے جلاتھا ، بعنی نظم ، وہ بھی نتم ہوگیا، اور نتیج در بواکہ جنگلی در ندوں نے موثل تازی سواری کو بھی چرمے اور والا اوراس کھی اینے مذکا اوالہ باگئے۔
اپنے مذکا نوالہ بنا گئے۔

یا در کھوکہ دنیا آخرت کی کھیتی اور منزل کا پڑاؤہے اور تم لینے جم خاکی ہے۔
مواد ہو کرمنم آخرت کر دہے ہو ، اس لئے تم کو بیا ہئے کہ اپنی سواری کا گھاس
دانہ بقد کہ کفایت اٹھا و اور مغری ضرور توں میں کام آنے والاسا مان مہیا
کرکے وہ بچے ہوؤس کو آخرت میں کا ٹو ۔ اور پھروائی زندگی آرام سے گذار
سکو ۔ اگراس ماتھے سواری کی ہروش و فرہی میں شخول ہوجا ہ کے توقا فلہ
کوچ کرجا رہے گا اور تم منزل مقعود تک نہ پہنچ سکو گے ۔

مسافران آخرت کی شار آفت مسافران مرضح اوق کی مثال الیی ہو مسافران آخرت کی مثال الیہ ہو مسافران آخرت کی مثال الیہ اور تشکی کا طاح سوار اور تشکی کا طاح سوار اور کو اجازت دیدے کہ ما وجزیرے میں اثر کرائی ضرور تیں بوری کرائ ک مرکز میں اور ایمی سفر دور دولان مربہ ہے۔ ہوستے یا در ایمی سفر دور دولان مربہ ہے۔

عض موادیاں اتری اورادِ موادِ فرتشتر ہوکوئی اقسام پرتشم ہوگئیں۔
بعض قضوری حاجت سے فادخ ہوتے ہی اوٹ پڑے اوٹی فول
وقت گذار ناان کو اچھا مصلوم ہوا ،پس دیمھاکشتی خالی پڑی ہے ابدا پنی
پسند کے نوانق ساری کشتی ہیں اعل ورجی ہوا دارا ورسنسران جگرمنتخب
کرکے وال بیٹھ گئے ۔

اوربعض جزیرہ کی خوشی ارہوا کھانے اور نوش الحان پرندوں کی سے ملی آوازوں کے سننے میں فک گئے ، سبخ لی فرش اور دیگ برنگ کے بھول بولئے ۔ بولوں اور دیش کی کار اور کی مسئول ہوگئے ۔ مگر پھر جلدی کی گلکار اور میں شنول ہوگئے ۔ مگر پھر جلدی کی گلکار اور فراکھٹن کی جانب والیس ہوئے ، یہاں پہنچ پکرو کی جانب والیس ہوئے دیکھ کی کار کی مسئول کے بیال پہنچ پکرو کی جانب کا بھر کی ہے اور کر بہار وگر وضا بھر میں بالان سے پہنے آبانے مساتھ والے لگ ابر دیکا ہے ہیں اہر زااس تنگ ہی جگر میں تکلیف کے ساتھ مسئول کے ۔

اور جندلوگ اس جزیو کی عارضی بہار پرایے فرنفیت ہوئے کہ دیالی فرنسٹا پہول اور بہاڑی فوجورت تجرول کے چوٹ نے کوان کا دل ہی نہا اللہ میں ان کا بوجو لا دکرا خوب نے اپنی کم رید کھا اور مسندر کے کنارے بریشج کم کمتی پرسوار ہوں ، دیجھا کہ شی لم بریز ہوئی ہے کہ اس میں ندایتے بیٹھنے کی بھر ہے کہ اس میں ندایتے بیٹھنے کی بھر کہ کا وی ام بھر اور اور وی بھر ان ہی کہ گران ہیں کہ اور اور اور اور لینے بیٹھنے کی کھر نہیں کہ تا اور اور وی بھر ان ہیں کہ گران ہیں کہ گران ہیں کہ گران ہیں کہ بھر برید لاد میں بھر برید لاد میں موال میں اور اور کہ کہ اور الک دیکھی ، گردن لیا ۔ اب ان کی حالت کاتم ہی اندازہ کر لوکہ کیا ہوگی ، کرانگ دیکھی ، گردن لیا ۔ اب ان کی حالت کاتم ہی اندازہ کر لوکہ کیا ہوگی ، کرون

جدا لوٹے گی اور جس مصیبت و تکلیعت کے ساتھ وقت کے گاا*س کو* ان کاہی دل خوب سمے گا۔

نصل ا

ہوشخص لیے نفس کی ماہیت سے واقعت ہوگیا اور موفت المی ماسل کر لی اور جس نے دنیا سے دنی کی حقیقت سمجھ کی وہ خوب سمجھ کا ہے کہ سی تعالیٰ کی محبت کا جع ہونا ایسا ہی نامکن ہے جس میں اگلے میں اگلے میں اگلے میں اگلے میں اگلے میں اگلے اور بانی کا جع ہونا نامکن ہے جس طرح ایک برتن میں آگ اور بانی کا جع ہونا نامکن ہے ۔ اور وہ بیا انسان ونیا ہے منہ نہ بھیرے گاکہ ان فانی تعلقات کو منقطع کرے اور بھولا

ضرورت دنیا پرقناعت کرے براطینان بر کے ظاف کر و ذکر الہی بین شخوانی جائے
اس وقت تک حق تعالی کی مجت پسیدا نہوگی ۔ اگر تمہا ری ایسی حالت بھلئے
اور نوربعیرت کے مشا ہدے سے براسراو شکشف ہوجائیں تب توسی کے
سمجما نے اور تبلا نے کی حاجت ہی نہیں ، ور دنیٹر بیست کے تابع بسکر
دسکیو کہ اللہ تعالیٰ نے دنیا کی کس قدر فرمت فرمائی ہے ۔ تقریباتہائی قرآن
اس و افریب برخوال زر بالا ہل کی برائیوں سے جوابول ہے جہانچ فرمایا ہے کہ
سمجموں نے مرحقی کی اور دنیا کو اخریت پر ترجیح دی وہ چنی ہیں تر ربول بھول
مسلی اللہ علیہ وسل فرمائے تھیں کہ دستجب ہے ان بندوں پرجوعالم بھارکوسیا
سمجمیں اور مجواس نا یا موادیو سے ایسان بندوں پرجوعالم بھارکوسیا

نوب مولو کرجو لوگ دنیا کومقسود میکراس کے کمانے بین تول موجاتے بیں ده سدا پرنیان رہتے ہیں که ان کی طلب موخ نہیں ہوتی اوران کی فرکسی رفع نہیں ہوتی، ان کی آرز کو جی پوری نہیں ہوسی ، ان کا رنج وغم معبی دور نہیں ہوسکتا ۔

دنیا کی حقیقت کوری فرنظراتی ہو ابدہریے کا استمیر ااورایک کورے کے دمیر مراکھ اللہ جاب کردول کی کھوٹیا اور نجاست و فلافات کے دمیر اور بوسیوہ ہمیاں اور پہنے پر انے کہا سے پڑے ہوئے تھے ، اور فرما یا کہ " و تحقیق البربریہ یہ ہے دنیا کی حقیقت ، ایک وقت و و تحاکم ان کوریر بول میں جی تمہاری طرح امیدی اور ارز فریس جوش مارتی اور مرص دموس سے بریز تھیں ، اور آن کس بڑے حال میں کو ٹے ہر پڑی ہیں، کہ چند روزیں خاک ہو جائیں گی اور آن کس بڑے حال میں کو ٹے ہر پڑی ہیں، کہ خان طاف اور آن کی بہد و نشان بھی ہزیے گا۔ اور دیکھویے خان طاف اور آفٹ کہ جوتم کو نظار ہاہے وی تمہاری غذا ہے جس کے بیٹ کے اندر بھرنے کی کھانے نیکر تمہادے بیٹ میں اور آن یہاں کو ڈے پڑس گندی الت میں پڑا ہوا ہے کہ اس کی گوسے ہوگئے اور گھنیا تے ہیں۔ دیکھویہ پڑا نے جس پڑا ہوا ہے کہ اس کی اور آن ان کو ہوائیں جسی میں ہوتا ۔ اور دیکھویہ بڑیاں اور مور گھروں تر جانیں ویے اور آن اور دیکھویہ بڑیاں کے دم والے اس میں ہوتا ۔ اور دیکھویہ بڑیاں کھی دن تمہادی موادی کے جانورا ورمویش تھے کہ جن پر جانیں ویے اور تا

اے الوہ رمیہ ! بددنسیا کی حقیقت ہے ۔ جس کا قابل عبرت انجام دنییا میں ظاہر ہوگیا۔ ہی حق کورونا ہوروہے ہے

حضرت علی علالسلام پرایک دن دنیا کی حقیقت بخشف ہوئی۔ انعول نے دیجا کہ ایک بھرت علی علالہ اسلام پرایک دن دنیا کی حقیقت بخشف ہوئی۔ انعول نے دیجا کہ ایک بھرورت بڑھیا ہے جہ بڑھیا بھی ہے ۔ آپ نے ہوئی اس نا کا متال ہوگیا ہے جہ بڑھیا ان جواب دیا کہ طلاق دینے کی ہمت توکس کو یا تجھ کو طلاق دینے کی ہمت توکس کو ہوتی ہے ۔ بی نے سب کو مارڈ الا ۔ بیسٹ کر حضرت علی علال الم نے سندیا یا تھ کے موجودہ متو ہروں پرانسوس ہے کہ ان گورشتہ شوم برس کی حالت پر نہیں ہی تی کہ تیر نہیں ہوتی کہ تیر نہیں ہوتی کہ تیر سے موجودہ متو ہروں پرانسوس ہے کہ ان گورشتہ شوم برس کی حالت پر نہیں ہوتی کہ تیر سے موجودہ متو ہروں پرانسوس ہے کہ ان گورشتہ شوم برس کی حالت پر نہیں ہوتی کہ

ئه ومنجاست اورييوك يوبعدغذامعدو سيخارج بو ١١

مسلمانو ابورشیار مواور تنبیلو، دنیا برسی بے دفاہے ، اس سے بچہ اس کا جادہ اور ملدا ترکرتا ہے۔ اگر اس کا جادہ اور ملدا ترکرتا ہے۔ اگر پرانا نمک بچکی دوئی کے ساتھ کھاکرا ورٹا ٹا بہنے کر زندگی گذا دوگے تنب مجمی گذر جائے گی مگر انزرت کی فئر کرد کہ وہاں کی رتی برابر نعمت کا ندملنا بھی بڑی تکلف کا سیس ہے ۔

. فصل

فتى بىرگى ابعض لوگ دھوكا كھاماتے ہي اور يحقين منهوى كمارابدن كتنابى دنيا مي عروف بيركر بهالاقلب دنیاسے فارغ اورخال رہتاہے۔ یا درکھو کریٹیطانی وسوسہ ے ۔ معلاکوئی تخفی دریا میں جلے اور یا وُں دیجینگے یہ کیسے ہوسکتاہے ۔ اگر تم كودنياكى طلب بوكى اور ضرورت سے زياده ونيا كمانے كى تدبيرول ياس کے رہوگے تومزوری بات ہے کہ بریشان رہوگے اور دین کو ہاتھ سے کھڑھو گے۔ یہی یادرکھوکردنیاک طلب مین ختم نہوگی اوراس کی حرص ہیشہ بڑھتی ربے گی بھون ونے ونے اک مثال مندر کے کھاری یانی کی سے مقبتا پیو گےاں قديياس زيا دو لكي كى بهلا بويزايك دن تم سي وط حاني والى واس ي معروف ہونااگر اپنے دینے کا سامان کر نامبیں توا ورکیا ہے ؟ دنیا گی شال سائپ کی ہے کھےونے میں نہا بیت نرم ہے گرشند ہمی قاتل ومہلک ذہر بے ہوئے ہے ۔اس یے وفاکی مفارقت بقینی ہے ،لہندلاس کے ہاتھ آجان يرخوش بونااور باتحدنة آفيررن وطال كرنا وواون فول بير

له دوفرشتي مي جن برجا دونازل بواتها ١٢

دنیا کے زرو ال کوا طبینان کا ذریع پیمجھنا بڑی حما قت ہے ،جہاں ہمیٹ رمہنا نہیں و ہاں اطینان کسیا ؟

دنیاکی مثال السی ہے جیے کسی کونیا مخلوق کا خانہ صنیا فت ہے کے مہاں نواز نے ابنا مکان آراستکیاالہ منیت مخلوق کا خانہ صنیا فت ہے کہ استحدیا دائر نے ابنا مکان آراستکیالہ اور سے جو لوں میں سیما کو طور توشیو اور سے جو لوں گاری کے سامنے رکھ دیا ۔ ظاہر توکھ اور باس اللہ کا مطلب اس سے یہ توکھ باق میں رکھے ہوئے جیولوں کوسو تھوا ور باس الاس کے اگے مرکا دور کر اس مارے کو اس میں اور کوشی خاص کی اور کے میں کہ اور کی میں کے اور اس کا ذات ال اکر میں کے اور اس کا ذات ال اکر کے مارے کے مارے اس کے بعد نیتے ہوگا کہ مالک میں ان رہر دی طباق جین کردو مروں کے مارے اس کے بعد نیتے ہوگا کہ مالک میں ان رہر دی طباق جین کردو مروں کے مارے اس کے بعد نیتے ہوگا کہ مالک میں ان رہر دی طباق جین کردو مروں کے مارے اس کے بعد نیتے ہوگا کہ مالک میں ان رہر دی طباق جین کردو مروں کے مارے خا

رکھ دےگا تم ہی سوچ کہ اس وقت اس کوکسی ندامست ہوگی۔
اسی طرح دنیا می تعالی کی میز بانی کی جگہہے۔ اس سیمی تعالیم کا
میقعود ہے کہ مسافران آخرت آئیں اور لقدر مضرورت اس طرح نفع آٹھائی
حس طرح مستعار میزوں سے فقع اٹھائے جی اور اپنی حاجیں فق کی کرتے ہیں۔
اس کے بعدی شخص خاط اس کو دوسروں کے توالہ کرکے اپنا راست لیں اور آخرت میں آئی بیضیں بسی مستعار میزوں سے دل کالگانا محقیقت میں جلتے وقت اپنے میں آئی بیضی میں جلتے وقت اپنے میں آئی ہے۔
آئی کو شرم نروکرنا ور رخیرہ بنا ناہے۔

مَدِّ الْمُعْرِينَ الْمُعْرِينَ الْمُعْرِينَ الْمُعْرِينَ الْمُعْرِينَ الْمُعْرِينَ الْمُعْرِينَ الْمُعْرِينَ مَنْ الْمُعْرِينَ الْمُعْرِينَ الْمُعْرِينَ الْمُعْرِينَ الْمُعْرِينَ الْمُعْرِينَ الْمُعْرِينَ الْمُعْرِينَ

تخوت وتحتركا بيان

حق تعالی فرماتا ہے کہ " تیکر کھنے والے کا بہت براٹھ کا نہے ، کبریا فی خاص مسیری چاورہے " پس چی خص مجی اس میں شر کیے ہو نا چاہے گا میں اس کو تسل کردول گا یہ

کیرکی تحقیقت اورا ثالی سول مقبول سی الشعلیه دیم مستواتی کیرکی تحقیقت اورا ثالی سیستان کے دائے براہری گیر بوگا دہ جت میں نہ جائے گا یہ جولاگ با دمجود صاحب عرّت دوال ہونے کے تواضح کہتے ہیں اور عا بری وائکسادی کے ساتھ لوگوں سے ملتے ہیں ان کو براک بوکہ ان کے بڑے درجے ہیں ۔ ان کی دنیا ہیں بھی عزت بڑھتی ہے اور آخرت میں بھی ۔

تخبرکے مدنی یہ بی کہ انسان اپنے آپ کوصفات کمالیہ میں دومروں سے
زیادہ سجھے ۔ اورفام رہے کہ جب انسان کا لینے شعلق الیا خیال ہوتا ہے تونس
بھول جا تاہے ، اور بھراس کے آثار ظام ہونے گئے ہیں ۔ مشار استمیں
جیلے وقت دومروں سے آگے قدم رکھنا ، جلس میں صدر مقام یا عزت کی حبگہ
بیٹھنا ، دومروں کونظر مقارت سے دیکھنا ، یا گرکوئی سلام کرنے میں بیش قدمی

مذکرے تواس پرخشہ ہونا ، کوئی تعظیم خکرے تو نالاص ہونا ، کوئی اگرنسیوت کرے تو ناک بجوک پرخشہ ہونا ، کوئی اگرنسیوت کو ناک بجوک بھیے بھی اس کو خوا نا ، اور عوام الناس کوالیں نگاہ ہے دیکھنا جس طرح گرصوں کو دیکھتے ہیں نعوذ بالٹر شہا المقال کا بحد بحد بھی سے بہتر مالی کا پولاڈ نیوب ہے ۔ افقال کا جو بحد بہتر محضوص اور اس کی شال کوزیر ہے ۔ بہتر انسان ضعیف البنیان جس کوروسرے کا اختیار تو ورکنار لینے ہی نفس کا اختیار تو درکنار لینے ہی نفس کا بوئی ہم بھی بھی سے بہتر شخص با وجو داس ذلت وضعف کے حق تعالی کی مشارکت جا ہمتا اور اس صفت کمالیہ ہمیں اس کے ساتھ منازعت کرتا ہے اس لئے پرلے دوجے کا اس صفت کا انسان النسان سمجھا جائے گا ۔

دوم در تحرکے سبب می بات کے انکار کی آیت آتی ہے جس کودنی سعادت کا وروازہ بند ہوجا تاہے ، اور شخر الٹرک محلوق کو بنظر حقادت دیجے نگتاہے ، اور یہ باس می تعالی کو بہت ناگوار ہے ۔

محسى طاعت الحكري معصيت المان لكاكسنوا ايك بزرگ ك الشدتعال نه ابني المعمولي اور تقليب رين مجعول المعمولي اور تقليب ميادت ككتنى مجودًا كيول منهو تقير يسمو كيان ميادت ككتنى مجودة كيول منهو تقير يسمو كيان مياد كلتنى كلتنى مياد كلتنى مياد كلتنى مياد كلتنى مياد كلتنى مياد كلتنى مياد كلتنى كلتنى مياد كلتنى كلتنى

دادائے اسداری عبادت اوسی بی چوی یون ند بودهدر ند جو الی حبر برادان کی رضامندی اس میں جب بوئ ہو۔ اوراس طرح تن تعالی نے اپنی ناداضی اوس غد کو معصیت میں جبیاد یا ہے ۔ لیک معصیت کوکسی ہی ذراس کیوں نہو

كبي عولى بمجوكيا خرب شايداى بيراس كى ناراضكى وعفة جيا بوابو-اى طرح اپی واایت وقریب کو لینے مبروں میرمخفی دکھاسے راسٹاکسی سندہ کو کیساہی گنبٹا دکیوں نربوجھی تقیرہ سمبو ،کیا خرہے کہ ٹایدیی بندہ مذاکا و کی ج بكافلور اس كے انتقال كے وقت دفعيٌّ ہوجاہے۔

سوم ، ریکترنفس کوکئ پندیده صفت حالنمیں کرنے دستا۔ تكركرني والأنخص تواضع ميمحوم رستاب رحسدا ورغسكو دوركر في ولادر نہیں ہوتا ، رہا کاری کا ترک اور نرمی کا برتا وّاس کو دشوار موتاہے یحمی مسلمان معائی کی خبرخواہی اس سے بونہیں سکتی ۔ غرض اپنی عظیت اور طرائی کے غرق میں مست اور مہرصفت موصوف ہونے کے خیال ماطل میں ناصح کی نعیمت شے تننی اونفس اترارہ کی اصلاح سے بالکل محوم رہتا ہے ۔

کیے ہے کا علاج اس کی اصلاح کی تو تع نفونہیں آئی ۔ لہندا

اس کے علاج میں جلدی کرنی حیا ہتے۔

ا ول تویبی سوچنا چاہئے کہ ہاری حقیقت اوراصلیت کیا سیے ؟ ظاہرہ كدابتدار توخس اور ناياكمنى كاقعاه ب اورانتها مردار لوته اوركيرا _ محوارول کی غذا ۔ اب دی متوسط حالت کھیں کا نام زندگی اور حیات دنیا سے سواس کی حالت یہ ہے کہ منول نجاست پیٹ ہیں بھری ہوئی ہے بی تعا كُارِتُ وبي صَلُ ٱلْى عَلَى الْإِنْسَانِ حِينٌ تَينَ الدَّهِي إِذ كِوانسانُ مِن معدوم فٹے تھاا دراس قابل ہی نہتھاکہ ذکروبیان میں آسکے اس کے بعد

متى بناا ورتع يفطفه بوا بيزمنغ برگوشت بنا ، مذكان تنه مذا يحمد اور مزحيات تقی مظافت راس کے بعدی تعالی نے سب کچے دیدیا گراس پریجی پسیوں امراض كابروقت نشانه نبابواي البجوك ويباس كامحتاج حداس اور ذرا سى كليف بيس مع كالسوكر بيية جاتاب محب في كاعلم جابتاب كرنسين ہوسکتا۔ نفع مصل کرنا چاہتاہے ، مگرفقصان ہوجا تاہے ۔ کوئی لحظہ موت سے امن نہیں ۔خوا جانےکس وقت بھار بہوجا ہے کس وقت عقل حين جاسے ركس وقت كوئى عضوبىكار بوجاسے اوركس وقت روح پرواز کرہا ہے ۔ میرانجام کادموت کا شکارا وراس کے بعد ننگ و تاریک گھاٹیوں كاسامنا بونائي وسات كتات حشرونشر بيش أفي بي رجنت ووون في دائمی زندگی کا فیصلہ اورشا بنشاہی فرمان کاصا درہونا یسھیل تہیں بتباؤکہ ا يبيركفتا معيبيت اورذلبيل وناكاره فلام كوذبردست قلابت والعجبّاد وقبت استابنشاه كى بمسرى كاخيال كيو بحرزيها بوسخاب بحرشخص كيلمت ہوکہ اگر نیاست اس کے ہتھ کو لگے توتین تین مرتبہ دھوئے ، اور پھیداسی نجاست کوہروقت پریٹ میں لئے مھرے ، اس کو پکسبرکر ناکسی طرح ہمی زیب نہیں دیتا۔

عُومًا چار با توں ہیں انسان کو بحبر ہوتا ہے ۔ عَلَم ،تقولی ،حتف نسب اور مال وجال ۔ اور چی بحد ہرا یک کا علاج علیجہ ہے لہسندام ہر خعون کومغصل جداجدا سیبان کرتے ہیں ۔

اول بعسلم ب<u>سست</u> بر ر بر

عالم کے تیمرکے اسباب علم کیرارکی جیز کی ضیلت نہیں ہے،

اسذااس كومال كرك ووخيال بيدا بوجاتين.

اقدل : بدكهمارى برابرالشرك بهان دوسرون كارتر نبهي بي

دوه: یه کولول پر ماری تعظیم واجب اور ضروری سے رہی اگراوگ

تواضع کے ساتھ بین مذاوی ، توان کو تعبب مواکر تاہے۔

متك كاعاصا مركم مع إبها تحروني تكبيب اوردوسراتكبر منوی ہے۔ ایسے عالم کوجا بل کہنا چاہئے

كيون يعلم كامنشار تويرتنا مكرانسان ليغر ريغس كي حتيقت اوديرود دگار جل جلال كى عفلت كوصلوم كرتاا وتعبتاكم اعتبار خاتم كاب ، اوراك كامال كى كۇمسلومنىيى رىپ جىمى يىن آب كوقابل عظىت سىم موسى بولۇگىيا وہ ایک اصلیت سے ناواقت اور خاتمہ کے اندلیٹیسے بے خوجت ہے ، اور یر برخی معصیت ہے۔ کیو بحرجا ہاٹ خص اگر کھی گناہ کے انتکاب میں اپنی ناط ك وجرس معذور كم عامات توكي عبسبس ، مكر عالم يونكر ماان او حدار معيت كربها اس كے وہ معذ وزم بیں ہوستا۔ چنا بچرسب جانتے ہی كرقانون ط تض كا برُم مام لوگوں كے جرم سے بڑھا ہوا ہوتا ہے ۔ بس تعجب ہے كہ

کانام جبل مرکب ہے یا در کھوکر عس علم سے محتربیدا ہو وہ علم جبل سے بھی بدترہے کیونکھیتی علم انسان كومتنامي زياده حاصل بوگااسى قدراس كا نوف او وفيتية يريد كار ي تعالى نووين بيا يرييم والترملي ولم كويريم فراياب كراية مت مسلمانوں کے ساتھ اواضع سے میٹن آؤ ۔ رسول عبول سی اللہ علیہ وہم فراتے ہیں کہ" ایے لوگ بھی پیدا ہول کے جو قرآن پڑھیں کے مگروہ ان کا زبان

عالم ہوکرجا ہل بن گیا اور با وجوداس کے اپی جہالت سے بےخربے اسی

یم ہی ہے گا ، زملق سے نیچے اترے گا اور نہ قلب تک اس کا اثریہنچے گا ۔ لوگول سے کہیں گے کہم قاری ہیں ،ہم عالم ہیں ،ہماری برابرد ومرانہیں سن لو! یہ لوگ دوزن کا ایدشون ہول گے یہ

سلف صالحین کے حالات دیجو ۔ ایک مرتب بحضرت مذلفہ انسان کے مالات دیجو ۔ ایک مرتب بحضرت مذلفہ انسان کا اسام سنے اورسلام بھرکہ کہ صاحبو! لینے لئے کوئی دوسرال مام تاکت کرلویا علیوہ علیٰ و نماز پڑھلیا کرد ، مَیں امامت کے لاکن نہیں مہوں ، کیو نکراس وقت میرے دل میں پینطوہ کیا گئے ۔ کیو نکراس وقت میرے دل میں پینطوہ کیا گئے ۔ میرک وئی شخص نرتھا لہ تامجھ کو امام تجویز کیا گئے ۔

یادرکھو اکتنابڑا عالم کیوں نہوں مفرودی نہیں ہے کہ اس کا فاتم نجر میں ہوجا ہے۔ اور کسیا ہی ہوجا ہے۔ اور کسیا ہی جا ہل کیوں نہو ، یقین نہیں ہے کہ اس کا انجام بخر نہو اور ثری صالت میں ہو ۔ جب عالم ہوکرا تناسی ہے ہوت میں گانجا ہے کہ کرکرتے ہو ۔ کیا علم پڑھ لکرناتم پر فرص نہیں ہے ؟ مدیث میں آتا ہے کہ قیامت کے دن عالم لا یا جائے گا اور چہنم میں ڈال دیا جائے گا اس کی آئیں کا اور چہنم میں ڈال دیا جائے گا اس کی آئیں کہ اس کے گود اس طرح کی گا تاہے کہ ہوگ کا مومت ہول گا تاہے ، لوگ تجب کے ساتھ لوچیں گے کہ ہوآ ہے یہ وہ کہے گا کہ ہیں اپنے علم پڑھ ل ذکر تا تھا ، دوسروں کو میں اس کے گا تھا ، دوسروں کو میں کہ کہ تھا تھا ، دوسروں کو دیسے اس کے تھا تھا ہے تھا گا تھا ، اس کے تھا کہ تھا ، اس کے تھا کہ دوسروں کو دی ہو بڑا زیر دست عالم تھا ، اس کے تعالیٰ نے باتھ کے بھورٹ ان کر دوست عالم تھا ، اس کے تعالیٰ نے باتھ کے بھورٹ کے دوسروں کو دی ہو بڑا زیر دست عالم تھا ، اس کے تعالیٰ نے باتھ کے بھورٹ کے دوسروں کو دوسروں کے دی تعالیٰ نے باتھ کے بھورٹ کے دوسروں کو دوسروں کے دوسروں کو بھورٹ کے دوسروں کے دوسروں کا معالیٰ کے دوسروں کو کہ کہ بھورٹ کی کا کا تھا ، اس کے تعالیٰ نے باتھ کی جو بڑا زیر دوست عالم تھا ، اس کے تعالیٰ نے باتھ کے دوسروں کی کھورٹ کے دوسروں کے دوسروں کی کے دوسروں کا کھورٹ کے دوسروں کے دوسروں کی کھورٹ کے دوسروں کے دوسروں کے دوسروں کی کھورٹ کی کھورٹ کی کھورٹ کی کھورٹ کی کھورٹ کے دوسروں کے دوسروں کے دوسروں کے دوسروں کو کھورٹ کے دوسروں کی کھورٹ کی کھورٹ کے دوسروں کی کھورٹ کی کھورٹ کے دوسروں کے دوسروں کی کھورٹ کے دوسروں کے دوسروں کی کھورٹ کی کھورٹ کے دوسروں کے دوسروں کے دوسروں کے دوسروں کے دوسروں کی کھورٹ کے دوسروں کی کھورٹ کی کھورٹ کورٹ کے دوسروں کے دوسروں کے دوسروں کی کھورٹ کورٹ کے دوسروں کے دوسروں کے دوسروں کے دوسروں کی کھورٹ کی کھورٹ کی کھورٹ کی کھورٹ کی کھورٹ کی کھورٹ کے دوسروں کی کھورٹ کے دوسروں کے دو

ا الله بم کاس مے محفوظ رکھ ۱۲ نے حقرت ہوئی طالبت لام کے ذمانہ کا ایک عالم ۱۲

کیمشل فرایا ہے ہو زبان ہاہر نکال جے ، اورعلاسے یہود کوگرصا فرایا ہو، جس پرکت بیں لدی ہوئی ہیں ۔ اور بیاسی لئے کہ وہشہوات نفسانی میں گرفت او نتھ ، تکبرکرتے اور اپنے آپ کوم اسمِصة تتھ ، دومروں کونصیحت کرتے تھے ، اور نووغافل تتھ ۔

پس ان وا تعات اوراحادیث پی نورکروگے تو پحرجاتا ہے گا۔ اور اگراس پیچی نرجاسے تو بحجو کہ ہے فائدہ علوم بینی منعلق و فلسفہ اور مناظر ہے وغیرہ کے پڑھنے پڑھانے پی شنول رہنے کا ٹرہ ہے اور یااپنی خباشت باطنی کا اثر ہے کہ اس کی وجہ سے دوا نفع نہیں دیتی بلکہ الٹا صرر بڑھا تھ ہے ، پس ان کے اثر کو کم کرنے کی کوشش کرو۔

دوسراتكيركاسب تقوى اورزبرب بيانير رعاماتاب کرعابرجی اکثر تکرکر نے گلتاہے ،اوربعن کی توبیہاں تک حالت ہوجاتی ہے كرلوگول كوايذاريبنيان كوائي كرامت محية لكة بمي مشلاً الكي شخص سان كوايذا يہني توحيلاً كرجيتے بن كرديجيتے ربوالله تعبالي اس كوكيبي مزاديتا ہے، اس نے ہم پرظلم توکیا ہے ، مگرعنقریب مزاہی ایسی ملے کی کہ با دی تو اسکھیگا، اس کے بعد اگر تقریب و تض باریزگیا یام کیا توانے دعوی کا ثورت بھی پیش كرتے اور كيت أن كرديكا الله كے فقير شدول كو ايذار دينے كاكسانتي ريا ، اس احق سے کون پیچے کہ کافروں نے انبیار علیم السلام کو مزاد ایزائی پنجائیں، مركمى فيعى أتقام كالمحرنبين كيا اوتقع بيهواكه ايذار دينه والم كفارمشرف بایران ہوگئے اور دنیا وآخرت کی میودی سے دامنوں کو بعرلیا ۔اگرانیا طیع السل اليخ تنول سے انتقام ليت آوان كامروا نام استة تو عطا خداك فوق كرو كريوايت یاتی کیاکوئی عابدہ لکی بی سے بڑھ سختا ہے ، استغزاللہ عابد کی توق کے سامنے واضح تقوی سنگرس ایون کاعلج ساخلی مثلاً کی عالم گنبگارکو دیجے قواس کے ساخلی میں میں میں میں ایون کا است کا کا دیا ہے اور جابل فائن کو دیا ہے اور جابل فائن کو دیا ہے کہ اختیار کی باطنی حالت مجھے کہ اختیار ہوں اور اس میں کوئی ایسی محمود صفت ہو جواس کے ظاہری گنا ہوں کو چیا ہے ، اول میرے اندرکوئی ایسی خیاشت ہو ، حس کے باعث میری ظاہری عبادی بھی حیاتی بھی حیات ہو ہو مائیں ۔

سویتی تعالی تو قلوب دیچستا ہے صورت کونہ یں دیچستا ۔ اوکرسی کے تلب کا حال سواسے علام النیوب کے دوسرے کو معسلوم نہیں بھپڑت کمر کسیا ؟ علاوہ اس کے یہ کہ خود تکم بھی توایک باطنی خباشت ہے ۔ بیس اپنی حالت کا برتر ہونا توخودظا ہر ہوگیا کہ لینے اندر تکم موجود ہے ۔ اوروشخص جوفائ قال آرہا ہے ، تکم سے خالی ہے ۔

بنی امرائیل میں ایک فائق تخف ایک مزند ایک عابد کے پاس اسس نیست ہے آبیٹھا کہ تق تعالی اس کی برکت سے مجدید دیم فراجے گا ، اس کو پاس میں میٹھا کہ تعالی اس کی برکت سے مجدید دیم فراجے گا ، اس کو اور کہاں میں ۔ اس کے بعد اس سے کہا کہ جا دور ہوؤ ، اس وقت اس نواز کے بیغ بریدوی نازل ہوئی کہ ان دونوں سے کہدو ، کہ ازمر نوعمل کریں ، کہ بہا کہ یا کہا یا گیا کہ ایا ہی کیا کہا یا ہی بھی ہوگئے اور کا جا کہ کا بی کیا کہا یہ کہا کہ میں ہوگئے اور عابد کی نیا کہا ہوں گئے ۔ عابد کی نیا کہ دیسا معربی گئے ۔

لے مطاحاتیں ۱۲

اسی طرح ایک گساخ شخص ایک عابد کی گرون پرسجده کی مالت میں آسوار ہوا ، مالیہ نیز کی میں خفرت میں اللہ ایر کی کم بھی خفرت نہیں کرے گا۔ اسی وقت الہام ہواکہ بلکہ لے مبکر تری مغفرت کھی نہوگی کیا میں مغفرت تریب ہا تھ میں ہے ، کہ قسم کھاکھنے تگی کے ساتھ ہما دے ایک میں منا مید بنا تاہد ہا۔

حضرت عطائر کمی با و توونہایت درج تق اور عابد و ذاہر ہونے کے جب تین اگر عطائر کی با و لگر حبّ آلویوں فرمایا کرتے تھے ، کہ مجمع بنصیب کی دجہ سے لوگوں ہم میں بنازل ہوتی ہے ، بین اگر عطاء مرحائے توان معین توان معین ہوتا ہے ، بین اگر عطاء مرحائے توان معین توان معین ہوتا ہے ۔

دیجیو! اس اخلاص اورکٹرت عبادت پران کوکس قدر تواضح اورضرا کا نوف تھا ۔ اوراس ڈما نہیں تو یہ حالت ہے کہ دوجار ظاہری اعمال پڑال بھوتے ، اوری تعالی پراسان جاتے اوراس کی حکومت وسلطنت جردتی کی باگ لین ہاتھ میں لینی جاہتے ہیں کھی کومادی کسی کوچلائیں ۔ حالا بحدان عباد توں میں لیا وسمعہ کا احتمال جواہے اورانج ام وخاتم کا خطاہ الگ . تنسیل دسبب نسسی ہے ۔ کہ لینے آپ کوشر مین اور عبالی خاندان محمد کا تکر کے ہیں ۔

حسف نسیب تکر مونیکاعلاج اسکاعلاج یہے کہ لیے نسب
خورکروکہ وہ کیا چیزے ۔ ظاہرے
کر سرخص کا نسب اس کے باپ کا ناپاک نطفہ اور ذلسیل می ہی تو ہے کہر

شخص ای سے پیدا ہوا ہے ۔ بس دوسروں کے حضائل اورغیروں میسنی باب داداک خوبیوں برنازگر اکسی غلعلی کی بات ہے۔ اگرا بار واجداً دکوگویائی مرحت بدتوبقينًا وم مي كس ل ما حزاده ووسرول كيماس برفخ کرنے والا توگون ؟ تو توان کے بیٹاب کاکیڑا سے منہوں نے قابل محنسر كام كئے تھے يوپس بيشاب كريرے اور ناياك نطفه كوتواني اصليت د کینی بیا سنے زکر آبا واجداد کے قابل تعربیت اور بہادراند کام، کرمیرے باب ایسے ببادر تھے ،اور دادا ایسٹی تھے ۔ بھراگر دنیا داروں کےنسب يرتخر اورفؤكيا مايع تب توحاقت كالجد تلمكا زى تهيس كياخر ساكروه نسب والے کہاں گئے جمکن ہے کہنم کاکوئلرین گئے ہوں اور آرزو کرتے موں ککاش کتے اور مؤربیدا ہوتے تاکہ اس مصیبت سے بحات متی دیران کی حالت تواپیی اندلیشرناک اوران کے صابح زادے دنیا میں ان کی اولا و ہونے پرناذکریں ۔اوداگر دیندار ول کے نسب پرفغو نازہوکہم الیے پیج اورولی کی اولادمیں ہیں تواس تحربی ووسری حافت ہے کیونکران کو ہوکھ عزت اوديترون عاسل بواتها وه النكى ديبندارى اورثواض كى بدولت ہواتھا ۔ سوجب وہ اپنی دینداری برخودی مشکر نرتھے توان کی اولادکس عوت وشرافت برت مركزتی اوران كی ناخلف اولاد قراریاتی سے رومیندا ر آباء واجرادكا تويرحال تفاكر وبعض وقت انجام وخاتم كفوت س لرزاشقا وبيتناكي كياكرت تع كركاش كهاس بوسة كركو ف حانور وليناه كاش رِندموشے كركوئى شكارى جانور يا انسان كھاليتا رىجىلاجن كوعلم وعسل دونول على تع وه توتكريكوس معاكة تع اورتم باوجود يكدونون صفتول سے بے بہرہ ہومی ان کی اولاد کوٹسپ پر خرکرتے اور کیر بنے جاتے ہو۔

إجوتها سيب الادرجال اركدادى انے مال یاحس رفخ رکرتا ہے سوال بیزوں اوراس كاعِلاج مربعي عررنا حاقت بـ

مجلا مال حبی نایا مَدارج زِکر ڈاکر بِرْجائے یا کونعبل لگ جائے توسی جاتا رہے۔ اس طرح جال حیدی عارض چرکر جیلنے عمرخاد آئے توساراحن وجال خاک میں مل جائے ،اوریحیک کل آئے تومودت کا رویب بول جائے بخے سر کے قابل کس طور ہوسکے ہیں جھیں صورت اگر اندرونی نجاستوں میں تو کیے توليے ظاہرى جال يوسى فوندكرے . يا در كھوكر س حن وجال كونيا وسط اوراكائش ک مابت ہے دہ برگزفزکے قابل نہیں ہے اگر بہفت خسل مرکا جائے تو دیکھ لوبرن کے رنگ ولوکاکیا حال ہوتا ہے ۔ بنک ، تعوک ، بول دیراز مبی نیاستوں سے سارابدن محرا ہواہے ، میرمعلا نجاست کے دھیراور قالت كى كورى كوكيا زيباب كرلية آب كوما حب جال سجع اوراس بإزارات



﴿ الْمِينَّةُ لَكُنْهُمُ اللَّهِ اللَّهِ الْمُعَلِّمُ اللَّهِ اللَّ

المتى تعالى قرما تا ہے كە " نفس كو پاك ودكندى كى مزمت مباث اوراجيا شجعاكروي يكافرون ک شان سے کہ لینے اعمال اور لینے آپ کواچپانجھیں ۔ مدیث میں آتا ہے كه" نوديدن تباه كردتي ب" كيون آدى حب لين آپ كوشكو كارسمين لگتاہے تومطکن ہوجاتاہے اورسعا دن اخروی سے محسروم ہوجا تاہے۔ حفرت بشربن مفورنے ایک مرتب نماز پڑھی اور دبرتک پڑھی ۔ اٹھا تن سی ایگیف ان کودیچدر با تھا جو بحر فودیسندی کے احتال کا موقع تھا ،اس لين ازس فارغ بوكر فران كي كرنميان ميري إس مالت موهوكه نه کھائیو، شیطان نے چار مرادریس الٹری عبادت کی مگرانجام اس کا بوموا وہ سب کومعلوم ہے " غوض مسلمان کی شان نہیں ہے کہ اپنی عبادت کوعبادت ا درایی طاعت کوطاعت سمجھ کیونکراول توقبولیت کاعلم نہیں ہے جس سی معسلومبُوكرعباديت واتع ميں عبادت ہوتی يا لاِں ہی سيکارگئی ۔ دوم بيکاعثياً خاتم كاب اورخا تمركا حال كوئى تبين جانتا كرس حال برموناب نازاور خود بيندي ورسي افرق خود بيندي مي ميري ايك شاخ مور نازاور خود بيندي ورسي فرق فرق خرف اتنابي ميري ورسي

لوگوں سے اپنے نفس کو بڑاسمجا جا تاہے ، اور خودیہ ندی دومرے لوگوں کی ضرورت نهيس بكرايغ نفس كواين خيال بس كامل محدلينا اوري تعالى ک دَی بوئی نعمول کواپنا سی سیال گرنائینی ان کوانشرکا فعنل وکرم خمجسنا ادران کے زوال سے یے خوت ہوجانا خواری دری اور عجب کہلاتا ہے۔ ا اگسيال تك نوبت بېنچ جائ كرى تعالى كنزديك ليغآب كوذى مرتبه اور باوتعت سمع لگے تو یا زکسلاتا ہے ، اوراس کا اثریبوتا ہے کہ این وعا کے قبول م ہونے سے تعب اورایٹ موذی دشن کوسنا وعذاب سطنے پر حمرت ہوتی سے کریمسیوا ، کی دما تھول مزمواور ماسے دس یا ال مہول ۔ يا در كموكراني عبادت ير ناذال بونا اور لية أي كوم تبول مندا لبيس اديمي قارسمها بري حاقت ، البته اگرالتر كانعت پرنوش بوادراس کے جن جانے کا بھی فوٹ دل بن رکھو اورا تنائی محبوکہ پر نمت بی تعالی نے فلا*ل علے کے مبدم بچے کو مرحم*ت فرادی ہے اور وہ الکہ مختارے جس وقت جاہے لے ۔ توخودپندی نہیں ہے کیونکو فودینے تخص نعت کامنع مقیقی کی جانب شوب کرنا مجول جا تاہے اور صب ار نعتول كواينائ سمجين لكتاب

غیرافتیاری فوبی پر کرناچاہئے ۔ بس اگر فیرافتیاری فوبیل شلاً ناز بوسنے کا علاج قوت و زور یاحن وجال پرعب ہو، تب تو توں موجوکہ ان جیروں کے حاصل ہونے میں میراد مل ہی کیا ہے کہ نازگروں، می تعالیٰ کامن ففل واصال ہے کہ اس نے بااستحقاق یہ فوبیاں مجدکو

عطا فرادي مطاوه اذين ها هرسي كريسب خوبيان مومنِ زوال مين مي كرزوا سی بیاری اور منعصت لاین بواتوسب جاتی رئیں گی ۔ بیں دوسرے کے نایائل عطيه يرغب كيسا ؟ اوراً كمُّ عَلَى ما زَبَدُ وتَعْوَىٰ اورعبا دَبْتُ وريَا صَنت ىينى ائىتيارى افعال برنازيونواس م*ين يؤوكرو ك*ريكمالات اودمحاس كيونكر عال بوسے ؟ اگری تعالی وہن رسا ، اورطاقت وہت ، دماع وبنیائی، ى تخديا دُل ، قصد واداد ه مرحت مَ ذوا تا توكونى كما لَ كيونكر حاصل بوتا . أى كالحكم تعاكدكونى انع بين نهيس آيا ورندين ميود تعاكد فودكيري دارسكناتها، يفرود سلم ب كرانسان كواختيار واداده دياكيا بي ص مده احي يا بمے کام کر تاہے ۔ مگراختیار وارادہ کی عطامی تواس خداکی ہے ۔ اور تعیر تمام اسباب كامهيا كردينا اود كاميابي ديناغ ض ابتدار سي ليجرانتها ر تک سب کھی فوا ہی کے اختیاد اس ہے دیں ایس حالت میں نازکر ناکو توصیح بوسختاب راگرخزاندکیخی بادشاہ کے ہم تھیں ہوا وروہ خزارکھول کرتمہارے میروکروے اورتم اس میں سے جواہرات اپن فواہش کے مطابق اپنی گودیں بمركوا ورميرنا ذكرف كوكرس في اتناد ويب حال كيا توظام بات بيركم احق سمع ما دُك كيونك اكريه بوابرات كيميل والة تم تع مرفزار تو شای تھا ،اوکٹی توبادشاہ ہی کے اسھ می تھی ،اس نے تم پراحسان کیااس تحفى عطا فرمانی ا وداسی کی امبازت سے تم خزا ندکی دشخر کی میں واخل ہو ہے بعراتی ہے اختیاری برتم کو لینے فعل پر نا زاور فودلسِندی کیو محرورست ہوسی ہے عيادات وغيره اختياري فوبول التعبية تواس بات رآنامكم یر نازال ہونے کا عِسلاج؛ کھے ہوشیادوگ ان فق

يرجا بل بن جائة بي ا ودائي عقل وعلم پرنازكرنے لكتے بيں ، كە اگر كسى جابل و بے وقوت کو تو تکریاتے ہی تو تعب کرتے ہیں کہ الساکیوں ہوا ، ہم توعالم و عاقل بوكرمال سيحروم ربي ا وربيها بل ونا دان بوكر الدارويتموَّل بن چايزي معلاكوني لوجعي علم وعقل تم كونصيب والورجابل اس معروم را ، ايسا كيول بوا بأكيالك نعت كودومرى نعت كاسبت عبسكواس راستخفاق جناتے ہو؟ اگر علم اور مال دونوں چنریں تم ہی کو دیدی جاتیں اور حابل فقیر دونون مي ومكرديا جاتاتويربات ورحقيقت زيا ده تعب كتفى كمخلوق ي ايك كوتوسب كيول كيا اورووس كوكييمي ناملا معبلاكوني باوت ه تم كوهوتا مرجمت فرما في اوردومري فخف كوخلام ديوس توكيايوں كينى تم كوبتت سے كه واه صاحب اس كوغلام كيوں ديا كيا اس كياب كمورا توب ينهي ، اورس جو يحكمورا ركمتا بول استراغلام مي محيدي كوملنا بياست تما رايبا خيال كرنا برى بيوتونى اورجهالت كى بات ب كاظِلَام ہے كہ اس نے ابتداءً بلااستحقاق مجد بركرم فرط يا اور على وسلم جيس نعمت بخشی می مقابد برمال کی کوئی حقیقت بن میں اور میرس گزاری وعباته كى توفيق مرحمت مسسرانى ما وردومرول كواس مصحووم دكها رحالانكدم يحوى می سرم سابق کاسزایا تعود کابدانسیں ہے ۔ بی حب الساخیال كروكح تونون الي سيدا بوگا اورمبوك كرض نے بلاک تحقاق السام منرها یا ہے ۔ وہ اگر بلاقعوداس نعمت کوچین بھی لے توکوئی یون وحسرا نهين كرسنكتا اوركيا خبرب كرينعت محراوداس فترداح بواور

دبال جان اورعذا بكاسبب بن جاسے كيونكرى تعالى مسواتا ہوكه "ہم نے ان پر سرخمت كے درواز بے كھول دسے يہاں تك كر حب ق "ہم نے ان پر سرخمت كے درواز بے كھول دسے يہاں تك كر حب ق خوش ہوگئے اور تھولے نہمائے توكيا كيك ان كو پکڑ ليا " حب بي خيالات ذہن شين مہول كے توخشيت اور خوف تم سے حسى وقت مجى دور نہوگا ۔ اور كسى نعمت بي نازاں اور توشش نہوؤ كے ، يس عجب سے باسانی نجات مل جائے گی ۔



دباركابيان

حق نعالی فرما تاہے کہ افوس ہے ان فارلیل برجوایی نسانسے بي فيريس بودكها واكرتے بي يه برمسلمان يرلازم ب كراعال بي الملاص بيداكس اورديا رونمودس اين اعمال اورطاعول كو بجاس كيونك د باکشرک اصغریسے

مرشق من آیا ہے کہ" قیامت کے ان حب الثرتعال بندول كويزار وسنرا دےگااورانعامات عطافرمایےگا،

رباروتمودكا صب تعنى تنهرت نيامس بورا يوكا توریا کاروں کو می مے اگر انہیں کے پاس جاؤ جن کے دکھانے کو غازی پرسے اورعبادیں کیا کرتے تھے ،اپی عباد توں کا تواب انہیں سے لو،

دوسرى طويل ملين مين الياب كرقيامت كودن الحم الحاكمين ك شا بَنْشَابِی عَلَالْتَ بَیِنِ غَانِتُی اور قَالَمُ اور قَیْ کی بیثی ہوگی اور پینوں اسینے جہاد فی مبیل اللہ ، تعلیم فیصلم اود صف لم علم دین اورانی خیرات صدقات

له مضمون سلم ١٢ له احسروبهی م دادی تقهی ۱۲

کاافہادگریں گے۔ حکم ہوگاکہ "پرسب اعمال تم نے ہو بی محض دکھا ہے اور نام محیسلے اسی غوض سے کئے تھے تاکہ لوگ کہیں کہ فلان شخص غازی ہو فلاں شخص بڑا عالم ہے فلان شخص بڑا عالم ہے فلان گوش ہر تا میں مال ہوئی اور لوگوں نے تم کو غازی اور عالم اور خی کم سکر کیا والم محصود کو ہے اور میال کئے تھے ، حبب وہ حاصل ہو چیا توا ہے کیا اس سحقاتی رہا ۔ اور میہاں کیا جا ہے ہو ، لہذا جا وجہنم ہیں ب

سول قبول میں الشرطیہ وسلم فرائعتے ہیں کہ متحب عمل میں ذرہ برابر مبھی ریار ہوگااس کوحق تعالیٰ ہرگر قبول مذفر ماسے گا ﷺ

جنابِ رمول السُّصل السُّمعليدوسلم كياس ارشاد كو بكوش موش منو!

اورعبریت نکرِلو به

ریاری ماہریت اور کر میون الدیاری اصلیت یہ ہے کہ لوگوں کے اور کا اللہ میں اپنی عبادت اور کس النی عبادت اور کس ال

له يه صديث نهيس بلك يوسف بن اسباط كا قول سيم اشرح احيار العلوم

کے ذریعیہ سے وقعت اور منزلت کا نحا الماں ہو ، اور برعبادت کے مقعق کے باکس خلاف ہے کیونکہ عبادت سے مقعودی تعالی کی رضا مندی ہے ۔ اوراب ہونکرامی مقعودی وومرا شرکے ہوگیا کہ رضا سے متولی میں معزلت مقعود ہے ۔ منزلت مقعود ہے ہے۔

ریاری صورتیں یادرکو کر رافتہ مرح سراکتاہے۔

اقرل مرن کے فرد سے مشلا شکستگی وصعف اوغودگالة بیوں کا جیکانا ظاہر کیا جا ہے۔ کا مشلا شکستگی وصعف اوغودگالة بیوں کا جیکانا ظاہر کیا جا ہے۔ کا کہ دوؤواد اورشب بدیار خیال کریں میا مثلاً عنگین صورت بنائے کا کہ وگئے میں کہ دین ہیں اس قدش خول ہیں کہ بال نوار نے کی ہمی فرصت نہیں اور نہ خط نبوانے کاموقع ملتا ہے۔ یا مثلاً آواز لیست اور آہت کا کے ناکہ وگئے ہمیں کہ دیا منت و مجا بدہ کرتے کرتے اتنا صعف اورآ ہت کا واز تک نہیں تعلق م

ر میں ہے ، مورس ، یک در لعد سے مثلاً رفتار میں نرمی اور صنعت طاہر کرنا یا سرجمکانا موضح چوں کا منظر والیت استحدہ کے نشان کا باتی رکھنا۔ آنکھ کا مجینے نیا اور ایسی صورت بنا ناجس سے لو کسیمیں کہ حالت وجد میں ہیں، یا مکا شفر میں شخول ہیں اور فکر کے اندر ستنز ق اور محوبیں ۔

هسوم نشکل وشبابت ولباس می منطر می و اورو طرح محطر کوس ببننا بینٹرل تک پائیز پر شعانا کر پرول کالوسیدہ اور میلا کچیلار سہا تاکہ لوگسم میسی کم مونی صاحب ہیں ، حالان کہ تصوف سے استے کو رسے ہیں کہ اس کی حقیقت و ناہیت بھی ہیں جانتے ۔ یا پیوغریا وصیلی استینول کا عجتبہ پېننا تاكدلاگ عالم يحيى . يا عمام پر دومال با ندمے دكھنا اور حرابي پينے دسنا تاكدلوگ يجيى كداك در فرتقى بي كدراستە كے گردوغباد تك سے پر بېز كرتے بي كدخواجانے كسى كى مكيت ہوگى . كيران بي بى دوقىم كے لوگ بوتے ہيں :

دیندارول می نمورو | بعض توره لوگ بی جوموفیوں اور وقعت کی طلس ا دیداروں کے دلوں میں تدرومنزلت كحطالب بوتي بسءاور مبشراى نبت سيمسل كحييك يران كروح مينتاور اس مالت میں رہتے ہیں کہ اگر کوئی نیاکٹراجس کا پیننا شرعاً مباح ہوا ورسکت نے می السالیاس بینا اوراستعال کیا ہوال کو دیا جا سے گراس کو بین لیجے، توان کوالیا ناگوارگذرتا ہے جیکے ی نے ذیج کردیا اور وجراس کی بی کوکراس ے اِن کامطلب فوت ہوا جا تاہی کیونکرلوگ صاف تھراکیڑا <u>س</u>ینے دیجیں گے توان کی وہ قدر ذکریں گے جومسلے کم وں میں کرتے تھے ، بلکہ یوں کم میں گے کہ اب موفى صاحب كے زيد مي كمي الحي اور تصوف كارنگ بدل حلا . معض لوگ امیرون اوزاجرق میں وقعت بیداکرنے کے فواہشمند ہوتے اور سوچتے ہیں کہ *اگر ٹرانے پیٹے کیڑے پیغ*ت توامرار کی نظروں میں و نربوگ ، بلکران کوم ارسے یاس منتصفے سے می نفرت ہوگ ۔ اوراگرلیاس فاخرہ یبنا تولوگ زا بداور صوفی ترجمین گے لب زا ایک نئی مورت اختیار کرتے ہیں کہ بَثْنِ تَمِيت بارىك كيرون كوكمروا ياأسماني رنگ كانتكواليت بي . أكران كي قیت دیکھئے توشاہا نہلیاس کے برابرہے اور رنگ در وسطانطر کھئے آور دولشامز

صوفیانہ ہے ، اس طرح پرانپامطلب ماں کستے اور ریا کا دینے ہیں بینائیے اگل کو پیھے پڑے پینے کو دے جائیں اور کم اجائے کا ان کو بین لیجئے توسخت ناگوارگذر تاہے کیون کہ ایسے پڑول کا پہناا میروں کی نظروں سے گرجائے کا سبب ہے ۔ اوراً کشیمینہ یا یا نات یا کوئی دو مرا بیش قیمت کچ ابونر عامیا ح اور جائز ہوانہیں بہنا ہے تو وہ بھی موت سے انکر ہے کیو بحدا می کو بہن کر لوگوں میں فاہداور موفی نریجھے جاویں گے اور گویا ورونیٹوں کی جاعت سے خارج ہوجا دیں گے ۔ اس سے حلوم ہوگیا کہ ان کا لباس ریا کاری کا لباس

جهارم كفتكواورزيان سررياكيا جاف جيساكتم في بعن دنيا داروا عظول كوديها بوكاكر زياني موامود كمقفي ومتجع عباتي منابناكر سلعت صالحين كح نقل اثارية اورمعن دكعا فيدى غرض سيحيمي أواز كاليح بيتلا بناتے ہیں ادر مجمع گین کردل میں تو اثر خاک سمی نہیں مگر بناوٹ او تصنع لیل بنارا بع كدير عالم اورموني بي كربالكل سلف كانمونه بير راسط مثلاً مفقاصديث اودمشانخ وعلكء ذما نرسيطا قات كادعوى اودافلسادكرنا كم فلاں پُردگ کی بمنے زیادت کی اور فلاک پُرخ سے طے ۔ یامثلاکی مدیست كيمتعلق حج ياضيف بوسن كامدى سيح لكادينا تاكد لأكم محقق اورمحرت مجيس - يا بدكارى ومعميت كے تذكر _ يرزبان سے آه اور الاسطافون كح كلي نكالنا ياخلاف مترع باتول سے نغرت طاہر كرنا اور كڑھنا حالانك ان کے دل میں رہنے یا نفرت کا اثر نام کو می تہیں ہوتا بلکرسے کچھٹ اس غرض سے ہوتاہے کہ لوگ ان کو یا رساا دراللہ والامتی متر بعیت محمیں افعال اوراعمال يربيار لينجه يملي ريابي لأقيام مرهکانا کمی طرف توجرد کرنا ، بلکول کوچیکا سے رکھنا وغیرہ ۔ ٹاکہ لوگ ان کو عابدوذا براود باعمنت ويادسآمجيس مالانكر الشنوب مانتاسي كمران کے دل ال نوبول سے خوب کورے اور خالی ہیں ۔ اوراس کی شناخت يب كرب اكيك فازير صعرب ، توكهو اساحيور دية بن و اوداكري كو معلوم كريس كروه ان كى نمازكو ديچه را بي تو نوراً سكينت و وقار كرساته نمازكو كميرا تفيراكر يرصفه لكتة بنيء تاكه دنتيف والأسجيه كدان كي نماز خثوع اور مضوع سے عری ہوئی ہے ۔ تم ہی بتاؤ کہ بریاز ہیں تواور کیا ہے ؟ مشت حد _ لينم شاكرد ول اورمرمدول كى كثرت اورَّلَع م كى كثرت كا تذكره كرنا تاكر لوكس مجير كران كى راب برائ مشائخ سے ملاقات ہوئى ہے ا وربعن لوگ اس کے خواہاں ہوتے اور زیسر کرتے ہیں کمحسی طرح سلاطین و امراراورعلمار وصلحاران كى زيادىت كرنے كو آنے لگين تاكدان كى شسېرىت ہوجائے کہ فلائ خص ایے بزرگ ہی کران کی خدمت بیں ایسے ایسے بڑے لوگ حا منر ہوتے ہیں ، اور بادشاہ وعالم سب ہی اَسٹانہ لوسی کواپنی عزت معجقے ہیں۔ یا در کھوکہ برسبان میں دیا کاری ہے ، اور دیا حوام اور کبروگاہ ہے۔ اللہ تعالی محفوظ سکھے

> ۔ ریا کے حسرام ہونے کی درو وجہ ہیں بر

ریار کے حوام بونے کی و جہاتی اسلام تو پر کہ اس میں کوگوں کو دھو کہ اور دھو کہ دور دھو کہ دیا تھا تھا کہ کہ کہ کھنے والے یوں جھیں کہ اس کو مہر ہم ہم کرد ہا ہے حالائکہ وہ مہر ہم ہم کہ کہ کو مقاب کے دیا ہم کہ کہ کہ کہ دیا ہے۔ تو بوئکہ اس میں میں دھو کہ لازم آر ہا ہے اس لئے کی محصیت کے دیوں کہ میں اور اس طرح پر کوگوں کے دیا لات میں اس کا ڈالنا کہ زیم کی کا داور قابل نظیم ہیں اور اس طرح پر کوگوں کے دلول پر است کا ڈالنا کہ زیم کا داور کے دلول پر مقاب کے دھو کہ ہوئے میں کون سنت بکرستا ہے معبر ایسے سکار شخص کو فاس کی دھو کہ ہوئے میں کون سنت بکرستا ہے معبر ایسے سکار شخص کو فاس کی دھو کہ ہوئے میں کون سنت بکرستا ہے معبر ایسے سکار

و و و م ایکادی تی تعالی شان میں گستانی کرنا ہے۔ اس کی مثال اسی ہے کوئی شخص با دشاہ کے تصوید سی ضاوم بیکر کھڑا ہواور اس کی خوص لینے آپ کوشا ہی خدمت گارا ور ذلسیل و محتاج غلام طاہر کے نئی ذہو ، بلکہ با دشاہ کے فلاموں میں سیحی کو بجنا یا کسی کنیز کو گھور نامقع و دہو ، آو ظاہر ہے کہ وہ بادشاہ کے دربار کا گستناخ سمجھا جارے گا ، اور بے ادبی کا مجرم قرار یا سے گا ۔ اسی طرح جب عبادت می محتقد میوں قرار یا سے گا ۔ اسی طرح جب عبادت میں تعالی کی خوشنودی مقعود دنہوئی بلکہ بندوں کی دخا کہ محتقد میوں آوگو یا بندوں کوخل کی زمین است اپنے نفع ورنعتان رزیا وہ قاد ترجماا وردل میں بندوں کی میہاں کہ عظمت ہے الی کے علیہ تاہد کے در تاہد کی تعلیم کی کہ عظمت ہے الی کے علیہ تاہد کی کھور کا در کا میں اور اس کے مقتد میوں آوگو یا بندوں کی میہاں کے عظمت ہے الی کا عظمت ہے الی کی عظمت ہے الی کے علیہ تاہد کی کھور کا در کا میں اور کی کے علیہ کی کہ عظمت ہے الی کھور کی کھور کا دور کے در کا دور کے در کا دور کی کھور کے در کا دور کھور کی کھور کے در کا دور کے در کا کھور کے در کھور کی کھور کی کھور کی کھور کے در کھور کی کھور کو کھور کی کھور کے کھور کا کھور کی کھور کی کھور کے در کھور کی کھور کی کھور کی کھور کی کھور کے کھور کا کھور کو کھور کے کھور کے در کھور کی کھور کی کھور کے در کا کھور کے کھور کے در کھور کی کھور کے کھور کے در کھور کی کھور کے کھور کے در کھ

ریاویترک امغرکهالیاب مارگیناه کی بارتی مجراس غرض اور نیت

رياً كى كيفيت مريح ميشي ريكناه كأنيادتي

یں چننا فداوزیا وہ ہوگااس قدرگنا ہمی زیاوہ ہوگا ۔کیوبکہ

قبعض ریاکارولکامقصور توصرف بهی بوتاہے، کرلوگ ہماری عرّت کیا سعد منت اسمار

كرس اوري مقتداسميس ـ

بعض کا مطلب یہ ہوتا ہے کہ لوگ ہم کو دیندار تھے کہ ہما ہے یاس ا ماتیں رکھیں ، ہم کو اپنی ا وقاف کا متولی بنائیں ، یا تیپیوں کا مال ہماری سپردگ دیں ، بس ان کو اپنے قبض ہیں لاکر اگر انے کھانے کا موقع ہے ۔ ظاہر ہے کہ اسس کاگذاہ مسلے کی رنسبت زیادہ ہیے ۔

جعض کامنتایہ ہوتا ہے کہ بمکونیک بخت میم کوتیں اور الرائے ہا رہے
یاس آکے گئیں اور اس می کی اوٹ میں شکار کھیلنے بعنی زنا ولواطت کرنے کا
بخوبی موقع ملے یا ان صعیف دل عور توں بچوں سے مال ہمارے ہا تھا تھے اور
اس کوفتی و فجورا ورام و لعوب میں خرچ کرسکیں نے ظاہر بات ہے کہ اس کا گئا ہ
بہلی دونوں مورتوں سے زیادہ ہے کیو بچہ اس شخص نے اللہ تعالی عبادت
کومعیبت کا آگر اور حبّار و قب ارپر وردگار کی مخالفت کا وسسیلہ بالیا ہے۔
دوالعیا ذیالتہ ،

فصل

اسی طرح جن عباد توں میں ریاد ہوتاہے وہ بھی مختلف در حب کی ہیں کہ ان میں بعض کا گذاہ بعض سے شرصا ہواہے ؛۔

ا قول: اصل امریان میں ریاد، جیسے منافی کداس کے دل میں ایمان تو نام کو بھی نہیں مگر اس نے اپنی صورت مسلمانوں کی می بنا رکھی ہے تاکہ کوگ کافر سمجسکراس کے جان اور مال کو طال سیجھیں۔ یا منٹلاً المحدوم ترویس کا ایمان جاتا رہا مگروہ کی مصلحت یا لحاظہ بنے آپ کومسلمان ہی ظاہر کرد ہاہے اس ریاد کاگنا ، مبہت بخت ہے ۔ چنا نچو کلام مجید میں فرکورہے ک^{رد} منافق جنم کے مس سے نچے کے طبقہ میں صائمیں سکتے ہے

دویس کی درجه اصل عبادتوں میں ریائے کا ہے بیٹلاً لوگوں کے سامنے نماز پڑھنا اور ذکرہ دینا اوراگر تنہا ہوں کہ کوئی شخص پاس نہوتو نہ نما ہے نہ زکڑہ ۔ اس سے صلوم ہوا کرعبادت میض لوگؤں کود کھانے کہ تم مرسکر اللہ تعالیٰ تو دلوں کے حالات سے واقعت ہے وہ خوب مبانتا ہے کہ عبارت کس نیت سے ہورہی ہے ۔ لہذا اس کا دربراگرچہ بیہلے درجہ سے کم ہوم مگر تا ہم سخت اور شرک اصغر ہے ۔

تسل درجہ جوب ہیں ادنی ہے یہ ہے کہ فرائف عبادتوں میں تو ریاد ہومگر مسخب اور نوائل عبادتیں لوگوں کے دکھلانے کوئی جائیں بہتلا اگر لوگ موجود ہوں تو نفلیں نریا دہ پڑھے اور فرض کو بھی سنجعال کرا داکر ہے اور فرض کو بھی صنبعال کرا داکر ہے اور خرف کا دونہ بھی ضرور در کھے ،اگرز کو ہ کا دونہ بھی ضرور در کھے ،اگرز کو ہ کا اگر خوجہ کا میں اس مد کے اندوجہ اور فیس مال نکا لے اور اگر میں اس مد کے اندوجہ اور فیس مال نکا لے اور ہونہ و مندل نمازی تائم رہیں اور برنوا فل دوزے در کھے جائیں ۔ فرض نمازی پڑھے تو کو ہے کی می شعوبگیں گویا از بریا دہے ۔ ای طرح زکو ہی قوضول میں بیار کرنے کے گناہ سے کم ہوئو و دیتا ہے۔ کی اس کا گناہ ایمان اور فرائف میں دیا کرنے کے گناہ سے کم ہوئو و دیتا ہے۔ کی اس کا گلاہ ایمان اور فرائف میں دیا کرنے کے گناہ سے کم ہوئو

ك عامتوره وارمحرم ١١

مگریمی صرام ہے اور دین کربادی کھیلئے کانی ہے ۔

ریام کے تصری تفاوت کی وجہ

ایج یا در کھو کہ ریام کے تصری تفاو سے سے سے گان ہے کے اندریجی کی بیٹ کی میں بیٹ کی جیست کی اور سے سے گان کے اندریجی کی بیٹ کی بیٹ کی بیٹ کی بیٹ کی میں کے دعاوت کا قصدہ میں نہومٹلا بلا دضو میں گئے اور افطاد کرلیا ۔ بیس اس کا گناہ تونہایت میں تحت ہے ۔ اور ایک میں صورت یہ کے عاورت میں تھی در سے ہیں :

دے لادرجہ تورہ کہ معمود میں مجادت ہے جس کی صورت میں کہ اگر تنہا ہوتا تب جی کا فروست میں ہوتو دگی ہیں پڑھ دہا ہو ممرکز و تکو دکھ اس سے طبیعت مرکز و تکو دکھ میں ہوتا تب ہو اس کے طبیعت اس کی خوش ہوگئی اور نماز کا پڑھنا اس کو گران علوم نہوا۔ پس اگرائنی ہی بات ہو تب توامیدہ کری تعالی اس عبادت کو قبول فروائے اور اس پر تواہمی مرحمت فروا دے ۔ باتی یہ دوسری بات ہے کہ اس دیا کی سندا ہمی دے یا اس کی وجرسے عبادت کے اجر و تواس می کی فسنسروا ہے ۔ کی وجرسے عبادت کے اجر و تواس می کی فسنسروا ہے ۔

دوسل در حبریہ ہے کہ عبادت کا قصن خلوب اور دکھا ہے کا خیال غالب ہو ، بینی یہ حالت ہے تنی عبادت اوگوں کی موجود گی ہیں کرتا ہے تنہائی اور خلوت کی حالت میں آئی عبادت ہرگز نہیں ہوسمتی ۔ بس برعبادت مس کی ریا کاری کی یہ حالت ہوکسی طرح مبی قبول ہونے کے قابل نہیں ہے کیونکہ اس میں عبادت کا مبی اگرچہ ذراسا قصد اور اوادہ شامل ہے مگروہ اتنا مغلق ہے کہ اس کا کچھا عتبار ہیں ہے ۔ لہذا اس کو صرت کریا کا دی سجھا جاسے گا او ایسی عبا دیت پرسخت عواب کا ادلیث ہے ۔

تبیعل درجد برسه که عبادت ادر یا دونوں سادی ادر الراب بی دشا عبادت سے من تدرطاعت خوادی تعدود بدای تدراد کو کودکھ لانا بھی معمود ہو، یہ ایسی حالت ہے جس میں لفتح اور نقدان بونک برابرہے اس لئے مکن ہے کہ اس پریز عذاب ہوا ور نافوا سبطے مگر جونکہ میری وات ہے یہ ہدا کچے عجب نہیں کہ اس مورت یہ کہی نقطاکو نفع پر ترجیح میری وات ہے یہ ہدا کچے عجب نہیں کہ اس مورت یہ کہی نقطاکو نفع پر ترجیح دیجے عبادت کو باطل کہا جاہے ۔ یس غیب کی خر تو خواکو ہے کہ ایسے خص سے کیا معا ملہ وگا مگر بظا ہر مہر مال یہ حالت گناہ سے خالی حلوم نہیں ہوتی۔ فصل

ریاکہ می توجلی وطائعتی اورا شخصی اورائی میں اللہ میں اللہ عادت سے مثلاً سے مثلاً سے مثلاً سے مثلاً سے مثلاً سے مثلاً میں اللہ عبادت ہیں ہوتی ہے ۔ اور کیسی مثلاً سے مثلاً میں اللہ عبادت ہے ۔ اور کیسی مثلاً میں اللہ عبادت ہو میں اور مسرت زیادہ ہوجا تا ہے تو اس کے سامنے تہور کے لئے اس کا نشاط اور مسرت زیادہ ہوجا تا ہو ہیں ہو دیا ہے کہ می کے موجود ہونے سے نشاط میں بھی نیاد تی نہ ہو مگر اشنا ہے کہ می کے موجود ہونے سے نشاط میں بھی ذیاد تی نہ ہو مگر اشنا ہے کہ میں عبادت میں یا عبادت سے فارخ ہونے کے بعد اگر کو کی محتمل اس عبادت میں یا عبادت سے فارخ ہونے کے بعد اگر کو کی محتمل اس عباد

محه ورميان ۱۲

پرمطلع ہوجائے تواس کے دل میں ایک قبم کی فرحت اور ٹوٹی پیدا ہوجاتی ہے اس منعلوم بواكدل كاندررباا سطح جيا بوابيجيد واكف كاندرا ككيبي وقى ہے کہ دوسروں کے مطلع ہونے برای لئے توسرورسیدا ہو تاہے ۔ اوراس سی بھی زیاد منٹ ریا بہ ہے کہ اطلاع سے بھی ٹوٹٹی مزہوںیکن اس کا اَرْز ومنسہ يهے كەكاش لوگ ميرى تعرفين كويى ،سلام اودمصانح ميں استدار اورمعاملا میں میری رعابیت کریں اور اگر کوئی شخص ال کے ساتھ کھیرانی کر بیٹھ تا ہے تو اس کوتعب ہو تاہے ۔ یا در کھو کہ یہی ریاہے کیونکہ ان خیالات اور آرڈول سے علوم ہواکہ لوگوں پراني طاعت وعبادت کا احسان رکھنا چاہتاہے اور اگریے لوگوں سے اس نے لینے ریا کوچھیا رکھا ہے مگراس کا اتنا انرضرونظاہر ہے کہ توقیراوراحترام کی خواہش ہے ۔ اس قیم کے ریاسی بن سے تعین بخالی ہوتے ہیں گناہیں واخل ہی اوراعال حیط ہوجائے کا ندلیہ جنرورہے ۔ البتة اگراس عبادت برلوگوں كيمطلع بوجانے سے توشى اس بابرونى بوكرالله كاشكربيص فيم سعنيك اوفعل ميليم كاافهار فرما يااد زمارى كحى معصيت يانعُل قبيج بحن كومطلع نهير بونے ديا مجف اپنے فضل سوشان مستّادی کا فلودفره ایا ،اگریزئی ، طاعت بو بامعصیت ، دونوں میں سکےی كاافلهار يمئ نهبين حامنتانها مركنفيرالحديثه لوك طلع بويء توفعل بيل برميه ہوئے فاشلے پرنہوے۔

یامتلاً اس وجسیوتی ہوکہ اس عبادت پرلوگوں کے مطلع ہونے سے یہ بات علوم ہوگئی کہتی تعالی تیامت کے دن بھی مجھ سے احتیابی معاملہ

ئے پوشیدہ ۱۱ سے ساتھا ۱۲ سے عموکام ۱۱ سے مراکام ۱۲ عدگزام *کی گرمیزہ*ا الخانی الحاقی

منسرا سے گا کیوبحد دنیا میں ستّاری فرما نا علامت ہے کہ آخریت ہیں بھی سوائی سربار برنگا

یاس و برسنوشی بوکہ اس اطلاع کے سبب و دسروں کو بھی ہمسی ہجاگی ا درمسیرا فیعل دوسروں کی عباد سی سب بینجائے گا۔ تواسق ہم کی نخشی میں کوئی حضائقہ نہیں سے ۔

اوراس کی علامت برہے کہ دوسرسے خص کی عبا دت پہلی کوئی طلع ہوجاہے تواس اطلاع سے بھی اس کواتی ہی نوشی ہوتائی ابن عبادت پر عبادت پر عبادت پر عبادت پر عبادت پر اس عبادت ہوں کے مطلع ہونے سے ہوتی ہے کہو بحکمی کی عبادت بھی کے دولوں کا اس عبادت ہیں رغیت ہست کہ اپنی عبادت ہیں رغیت ہمیت میں حاصل ہے ۔ ہیں اگر طلع ہونے والے کی اس عبادت ہیں رغیت ہمیت کرنے کا خیال اس خوشی کا سبب ہوا ہوگا توا پنانفس ا ورغیرد و تول اس خوشی میں موشی میں موساوی ہول گے ۔

چونکریا کا مادہ نظرہ پوشیدہ ہوتا اور لوگوں کے دلوں پرجیکے جیکھر کرے مُرااثر ڈالاکرتا ہے لہذا متقدین نے اس میں بہت ہی کچھ احتیاط ملح ظاری اورا ہی عبا د توں کو لوگوں کی نظروں سے بے مخفی مکھا ہے ۔

کھنا می کا دینی فائدہ کے دن اُمرار سے خطاب ہوگا کہ کیوں صابوا کی ایم ہے ارزانی نہیں کو تھی ، کیا تم کو لوگ سالام میں ابتدار نہیں کرتے تھے ، کیا تمہاری ضرور میں دو مرول کی نیسیت جدر فع نہیں ہوتی نہیں ، بی تھی ہو، لہذا میہاں تمہار کے نیسی مراب اللہ اللہ دنیا میں اللہ کے نیسی ہوتی میں ، بی تھی ہو، لہذا میہاں تمہار کے نیسی ہوتی میں ، بی تھی ہو، لہذا میہاں تمہار کے نیسی سروا یہ

بِس إيمسلانو! الرخلاص جابت بوتولوگول كويتي يا ون اور بحول كى طرح لابيقل مجهوكران كالموبج وبونا اورنربونا وونون برابربوب الثكاميا ا ورنه جانناان کی واقعیت ا ورعدم وا تعنیت بخرض کوئی باسیجی قابل اعتبار نہ ہے ۔ بس چونکہ خداہی کا جانٹا کا فی ہے لہ زاا پی عبادت اس کو دکھ لا وُ۔ کیونکہ وہی جزا دے سختاہے اور وہ عباورت کا قدردان ہے ۔ باتی اس کے سوالودنیا اوردین میں کوئی بھی السانہیں ہوکھی کوکھیمی سے سکے ۔ اگر الیسا کروگے تواپی عبادتوں سے ضرورنفع یا دُکے ور پیخت ضرورت کے د ن بینی میران حشرین خالی اندره جا دُگے۔

شارتمها دايه خيال موكداس قىم كيخفى رياسية توبجيا محال بصالبته بلی ریا سے آدی بچ سکتا ہے بھرنمعلوم کون سی عبادت نیج ہے اورکونسی فاسد البذام اس كي محاتشرت كئے ديتے ہيں ۔ عبادت میں ریاتین قسم کی ہوتی ہے۔

إياتواول يسيرو مشلاً نماز كايرصنا مشروع عبادت بي ديام اول سيسير آخرتك سارامض لوكول وكعانے ا ورنمازى كہلانے كومو ۔ يصورت آونما ذكيسك مفسدے كدائسي نما نيچ يح ينهو كي ويحراس ميں عبادت كى نيت ہى نهو ئى اور المانيت كے كو ئى عبالت

لے اس صورت میں بیون کہ ایک قسم کی تحقیہے اس لیے میرے نزدیک سب کوفرضتے سچھے کیوبی فرشتوں سےانسان ریانہیں کرتا اس کی وجریہ ہے کدان سے کوئی کام نہیں پڑتا، اس كنان سطالب توقير وتعظيم بين بوتا ١٢ مولانا تعانوي رصة الله .

معتربهیں ہے۔ اوہ اگرکوئی طخف نماز توجلوت ہو یا خلوت دونوں موتوں میں پڑھتا ہے۔ اوہ اگرکوئی طخف نماز توجلوت ہو یا خلوت دونوں موتوت میں پڑھتا ریا گئیست سے موتا ہے گا ۔ البتداول وقت کی نفیلت مار میں بھا ہم میں دیا موجودیے ۔ اب دہی یہ بات کہ ریا کا قصد عبادت ہیں شامل ہوا ہواس کا گناہ حوا ہوگا ۔

یامشلاً کوئی تخف نماز پر ار این اور کوگوں کو اپنی طوف دیجھتا ہوا یا کر اس خیال سے کمیری عبادت پر ار کوگ مطلع ہوگئے ہیں اس کی طبیعت کو اس قذر توثی ہوئی کر عبادت کی اصل نیت بالکل مغلوب ہوگئی اور نمیاز کا کوئی دکن الیسی حالت میں اوا ہواجس میں لوگوں کی آگاہی کے مشرور کونیادہ وخل تھا ، تو غالب ہے کہ یہ خارجی سے نہیں ہوئی کہو بچداس میں اگرچہ نیت منقطح نہیں ہوئی مگر تا ہم این ضلوب ہوگئی ہے کہ اس کا عدم اور وجود برابر

ہے ، بیں اس نازکو میں باطل کہاجائے گا۔ ہاں اگرائیں عمولی وشی ہوکہ وہ نیت برغالب نراسے اورعیادت کامحک اوراصل باعث دصاسیتی اوریکم خدا دندی بی رہے تو یہ نمازتوشیح ہوجا ہے گی ، حرقصدید یا کاگناہ صرور ہوگا۔ ے مسددیا کاناہ صرورہوگا۔ نیسری صورت بہے کہ عبادت سے کے بعددیا کا سے ا لوگوں کے اس عبادت آلے گاہ ہوجانے سے اس کومسرت ہو یالوگوں سے خود ہی اس کا اظہار فخرکے انداز برکرا میرے ، تواس عبادت کے صحت اور فساد ہے کوئی علاقہ نہیں اس لئے کرمیں وقت ریا ہواہے اس وقت عبا دت ختم ہو کی تھی ۔ البتہ اس مسرت اوراظہار کاگناہ ہوگا ۔ اور پیم عباوت کا اظہار صراحة ياكنايةً يا تعريفياً من طرح اورض عينيت سي كااس سررياك جلی اورضی ہونے کا نوازہ نود ہوسے گاکہ صراحۃ اظہارہے توریا بھی ملی ہے اورا ظہاراشارہ ہے توریا بھی تفی ہے

رمار المبلك مرض ب اس كاعلاج يورى متعدى كے ساتھ ہونا جائے . مادر كھو كررياكا سبب اكثر باتوحت مدح اورايي ترلف کی خواہش ہے ، یا مال ونیاکی *حرص* وطبح اور یا مذمت کا خومنہ و

لعني وسيمرح كأعلاج

شاکی شخص میدان جنگ میں اس غرض سے بہا دری دکھا سے کہ لوگ اس کونجاع کہیں ، یااس نیت سےعادت کرے کروگ اس کو عبادت گزار و برمبرگاركهی توبیحت مرح سے اوراس كا علاج وي مجرجو حت مرح کے علاج میں پہلے بیان ہوجیکا ہے کہ پہرت اور دنیا کی نیک نامی محض ذرخی اور وہی نا قابل اعتباد کھال ہے۔ آج مرے کل دوسرا دن تولیث کر نیوائے اور ان کی تولیش اور سپاس نام یہیں رہ جائیں گے اور کسی سے کچھ نفت نہوگا حقیق کھال وہ ہے جومر نے کے بعد بھی ساتھ رہیجی معوفیالی کراس کو کھی فذائی تہیں ۔

اس کے علاوہ ریامیں تصوصیت کے ساتھ ریخیال کرنامجی اس مرض کیسلے مفیدہے کہ یہی ببادری اور پسی عیا دت ہو آج محے کو لوگوں کی زبان سے شجاع اور عامد کہلارہی ہے کل کو قیامت کے دن حشر کے مب دان میں ساری خلوق کے سامنے محیوکورسواا ور ذلبیل کرائے گی کہ میرانام فاجرو سکار اوردياكاديكادا جاسيكا واس يطويه كميراكياكرا ياسب سيكار موجاسيكا اوروہ اعمال بن کوٹری محنت اورمشقت کے ساتھ حسے کیا تھا صبط ہوجا عَیْکے بس لوگول کی خشنودی اور دنیا گی اس نا یا میدار مدح کے معاوض می سی تعالی كا غفتها و وصرك رموانى اور ذلت خريرناكس مدعقل كحظلا ف سع علاوه اذبي يهال دنيا مي بن كي رضا منرى جا سِتْهِ واگريّ تعالى جا سِع سيان کونارافن بھی کردیے اور مرح کے مدنے وہی لوگ بماری التی مذمتیں کرنے لكين كيون واورز بانين توسب اس كي قبعند مين بين بين حيزروزه موجع ومسل تعربين كوي تعالى كالضامندى يرجوكه اصل سعادت بيركيو بحرزجي

اسی طرح خصت کا نوت دیا کا باعث ہوتو پر بات ذہنے میں کونامیا سے کہ اگریش عنداللہ پسندیدہ ہوں تپ تولوگوں کی خوست مجہ کو

سبب دوم معنی خون زمت کاعلاج

نقصان نهيس بينياسكى معيرورول توكيول ورول ؟ خصوصاحب كريبات يقيى ب كمنلوت كى اس فيتت كمويوم انديشكى وجرسين تعالى كو ناراض ركمنا ونسيامين فميل اورسواكرد تياب يحطلا اگريه باطنى ريالوكول كوصوم ہوما سے کرمچے لوگوں کی مذمت سے ڈرمعلوم ہوتا ہے اوراسی لئے میں کچھاؤ كَى شى صورت بنا تا اورير بزرگار بنامچوتا بون تُومچراس خوت سيخچري نفع نه ہوگا ،اوری بات کا نولیٹ ہے وہ سامنے آجا سے گی کہ کاری کھلنے کی وج سے منتیں ہونے لگیں ۔ اوراگر اخلاص کے ساتھ حق تعالی کو راضی ر محصفے کھیلئے طاعت کروں آوجن لوگوں کی مذہبت کا مجھنوٹ سے وہ بھی مسیسے دوست بن جائين اورخدا ونرتعالى نوشنو دى يعي مان بو مائي . سبح موم جروط ع كاعلاج الرياكانسراسب حرص وطع ب ـ بس سبع موم جروض كاعلاج الريد وجربوتو خيال كرناميا سئة كرس جيز ک طع ہے اس کا عصل ہوجانا ایک موجوم بات ہے اوراس دیا کی بدولیت ی تعالی کی مضامندی کا با تفسی جا تا دسنالیتی ہے ، میر معبلا سی فقے کی موبوم اميد رخدا كے عقد كوسريليناكون يسندكرتا ہے ؟ يو يحتى تعالىٰ مقلط القلوب سے اس لئے یا در کھوکرریا کاری سے س دنیوی مطلب کیسائے عبادت کررہے ہو وہ بی نرحص ل ہوسے گا ، بکٹخلوق کے سامنے طی کرنے میں ذلت اودرموائی جوااتھاؤگے ،ان کے اصال مندالگ ہوگے کہ پینڈگروں نچى ربىگى ـ اوراگريے طع بوماؤ كے توحی تعمال تمهارى تمام ضرورتول كأكفيل موجا سے كا را ورميراطلاص كى بدولت بوكيدوائى لدنيعتين كم كوآخرت میں لمیں گی وہ اس کے علاوہ ہول گی ۔ غرض ان بقینی اور پی باتول کو دہنے ہیں کرلو کے توریا کا نام ونشان بھی نہیے گا اور بی تعالی اخلاص کی توفی بخش دے گا۔ فصیب ا

عباوت کونی کمنافع اس کے بعد فالبَّتهیں یوکریوگ کہیا سے اوت کونی کوئی کی اس کے بعد فالبَّتهیں یوکریوگ کہیا سف عبادت کو بیا ہوجا تا ہاس کا علاج معلون ہوا ۔ لہذااس کی تدبری یک ہوریا ہیدا ہوجا تا ہاس کا علاج معلون ہوا ۔ لہذااس کی تدبری عبادت کیا کرو ، اورانی عبادت کی موست این کرو جبیا لیے عبوب اور مصنیوں کوجھیا یا کرتے ہو ۔ دیکھو صفرت اور صف مولا گی مجلس بھی کی مؤمد نے بیان کی کوشت بیان کی کوشت بیان کی کوشت نے جواب دیا کہ جو کام جمیں جھیا نا جا ہتے تھا اس کے دی مقام بی جھیا نا جا ہتے تھا اس کے دیم جمی میں خاہر کردیا ہو

یادرکھوکرعبا دست کا اضاف انٹروع شروع میں ذرا د شوار معلوم ہوگا ہگر پیندر دوالیا کروگے قواس کی عادت بھیجا سے گی۔ میں خلات کی عبادت و منا بات میں لذت آنے گئے گی۔ بایس ہمراس کا کھا ظر کھوکر میں وقت سی اپنی عبادت پر لوگوں کی اطلاع سے دل میں مسترت پیدا ہوتو تو لا بہا باتوں کی عادت پر لوگان امیرے نئے ذرہ کہ اور واور سی کے خوش ہونا فضول اور ہی تا کی عضر کا فنا نہ بن با نا بڑی خواناک حالت ہے ہیں جس وقت برخیال کے خصر کا فنا نہ بن جا نا بڑی خواناک حالت ہے ہیں جس وقت برخیال کے موسکے کا وردیب کراست کا برجا ہی کہ کروگر تو وہ مسرت کرا مست سے برب کے اوردیب کرا مست کے ایران کا دردیب کرا مست کے ایران کی اوردیب کرا مست کے ایران کا کو اوردی کی اوردیب کرا مست کے ایران کی کا کھوٹری کو اوردی کو ایران کی کی کا کھوٹری کیران کی کھوٹری کی کھوٹری کی کھوٹری کی کھوٹری کے کا کھوٹری کی کیران کا کھوٹری کو کھوٹری کی کھوٹری کی کھوٹری کے کہ کی کوٹری کے کہ کھوٹری کی کھوٹری کوٹری کی کھوٹری کی کھوٹری کی کھوٹری کی کھوٹری کیران کی کھوٹری کھوٹری کی کھوٹری کیران کیران کی کھوٹری کے کھوٹری کیران کی کھوٹری کی کھوٹری کے کھوٹری کیران کیرا

ہوگا توعبادت اسی اخلاص کی طرف اوٹ ما مے گی جومقعود ہے ا اورو بكاس ن دباده فعمون كے تم مكلّف بعي نبين بواس ك اگراس ري معی قلب می مسرت کااثر باقی رہے توطیعی بات سے من کا فکروخیال کوافعنول ہے کیونکہ براختیاری میں سے اور وبات اختياري نهين بوتى اس رمواخذه معي نهين بواكرتا العنسرف تمباداكام صرف اس قدرسے كرائي عبا دت كو بالقعد ظاہرا ودلوگول ميں شًا تع اورشيورنكسة بعرو - اوراكر بطورخودلوكواك كا الكلاع بوجلت اوداس يرتم كومسرت لائق بوتواس كومثاني كوشش كروكر عبى طرح مكن موكرابت سعدل وتاكراس مسترث كاكاكمى على يركونى اثر منسيدا بواس کے بعد ہو کچیرہ الت ہے اب اس کا دودکر ناچو بحد تمہ اری قدوت سے باہر ب لبناس كامطلق فكرنكر

اس نیت سے عادت کے ظاہر دینے میں کچر رہ نہیں ہے کہ لوگوں کو فیت ہوگی اور وہ بھی میری طرح حق تعالیٰی عبادت کرنے لگیں ۔ مگر ہاں نیت کاصاف اور خالص ہو نا ضروری ہے ۔ اگر نفس امارہ اس حیار سے تہا اوا شکار کرنا چاہے یا اس سے تی چی ہوئی خواہش کے بڑھنے کا اندلیشہ ہو تو ہرگز اس کی جرات ذکر نا بلکہ عبادت کے تھی ہی رکھنے کے پابند بنے دسنا ، اوراس کی علامت یہ ہے کہ عبادت کا اظہار تہا ہے دل کی خواہش پر قائم رہے کہ اگر دور رے لوگ اس اوجہ کو اٹھالیں اور کھی دور رہے ہی کی عبادت و تھیکر

لوگوں کورغبت پیرا ہوجا سے توہبت اچھاہے ، لہذا داکھ ول لیاکروکہ اس میں کیا خوا ہن ہے کیو نکراگر بنواہش ہوئی کرمیری عبادت دوسے لوگول کی رغبت کافدہ پیرینے ا و رمی مقترار بنوں اور مخلوق میری مقتیری ہو تونس سي ديا ا ورطلب شهرت فسوت جاه ہے ۔ كيونكماس مورت ميں ظاہر ہے کہ اخلاص جا تا رہا ۔ اسی بناء مرکیے گذا ہوں کا جھیا نا ا و دظا ہر ذکر نا جا کڑ ہے البرطی کماس نیت سے ہوکہ لوگ فاسق رکہیں ۔

گناه کے مخفی کے بیٹے پرٹوشی اگناہوں کے مخفی کینے پرٹوش اوراکھارا بون يردنجيده بونيمي كجيمضاكقه

الكنا فنهين سع إلى نهين بي عام بي كان تعب ال كيحكم كاموانقت كح باعث بوكر ومعصيت كيجيان كوبسندا ولألهار کونالسندفراتاہے ، یا کیے ادیسے ایزار رفع کرنے کے سب سے ہو کہ معمیست کے فاش ہونے پرلوگول کومیری نیمت اور برا ئیال کرنے کاموقع مظ گا وراس سے میرے دل رصوم ہوگا اور یصوم اختیاری ہیں ہے بلكرطبيعت كالقنفارس ، اورياً في تعالى شان ستّارى ظابرموني پرنوش ہونے کی دجہ سے ہو ۔ بہرحال کی نیت سے بھی کیوں نہوگنا ہوں کے فنی نیسے رفق ہوناحسرام نہیں ہے ۔ السبتہ عبادت راس نیسے خوش ہوناکہ لوگ تعرابیت کریں گئے اور تقی وعالیج میں گئے بیٹک حسرام ہو۔ كيونكه يخش بوناكوما عبادت كى اجريت ليناا وزخلوق كام واي طاعت كامعاوضرباناب وأوريرناجا تزب

اسمعنمون كودومرے طلقة سے يول يمجو كمعقيت كے ظاہر بونے می عمواً حیا اور شرم آتی ہے ۔ اور حیا چونکہ ریانہیں ہے اس مے اس خوض معصیت کا چیپا نا اوراس پرخوش ہو نامعی حرام نہیں ہے۔ برخلاف عبادت کے ، اس کےظامر ہونے پوٹوش ہونے کی دو بجزاس کے کرعبادت کا معاده موبوم اور دنیا سے دنی کافائدہ قرار دیا ہے اور کوئی معقول دنجہیں ہے، ابزا حرام ہے یاں ریا کے توف طاعت اورعبادت کا جھوڑ نامھی مناسنيين ہے۔ بلكه عبادت كوكرتے رہوا وراگراس ميں ريا پيدا موتواسس كيدوركرني كي كوشش ركهو والبتداكرا يسي كامين كومخلوق نيقتلق بوشلا غاز میں امام بنا نا یامقدمات میں قامنی ویٹی قراریا نا یا تضار یا وعظاً کوئی اگر ان امورس ریا کا غالب ا مدلیت موکونش ضرور شرارت کریے گااور شیت میں اخلاص بالكل قائم زيري كا ، توبيشك ان كامول سي بعالمُناجا سِيرُ كيونكسلف کایمی طوزتھا اور صروراسی سی بہری ہے۔

خدست مع المال الم

سائے کہ اخلاق فریم ہے سے اخلاق ندوم کرجن سے نعن کا ترکیہ صاف ہونا حسن خلق کہا جا اسکتابی کرنا مزودی ہے یوں تو بہت ہیں مگرا مول بہ دئن ہیں جن کو با تفصیل ہم ذکر کر بھے ہیں ۔ اور ان ہیں باہم الیا تعلق ہے کہ ایک کے ساتھ دومرا اور دومرے کے ساتھ نمیسرا لگا ہوا ہو۔ اس لئے جب تک سب بی سے نجات نہ طے گی اس وقت تک نفش قابوین اس کئے جب تک سب بی سے نجات نہ طے گی اس وقت تک نفش قابوین نے گئے ۔ اور ایک کی مفید کے دی ہوئی ہوئے میں اور ایس کر قادم و دو تن درست اس وقت نا کہ وقت نا کہ وقت ہوئے ہوئے وہ کہا جا ساکتا ہے جب کم اس کی دیول بھاریاں جاتی دیلی ۔ جس طرح کو کی فوجوں کہا جا ساکتا ہے جب کم اس کی دیول بھاریاں جاتی دیلی ۔ جس طرح کو کی فوجوں کہا جا ساکتا ہے جب کم اس کی دیول بھاریاں جاتی دیلی ۔ جس طرح کو کی فوجوں کہا جا ساکتا ہے جب کم اس کی دیول بھاریاں وہاتی دیلی ۔ جس طرح کو کی فوجوں کہا جا ساکتا ہے جب کم اس کا کہا جا ساکتا ہے جب کم اس کی دیول بھاریاں وہاتی دیلی ۔ جس طرح کو کی فوجوں کہا جا ساکتا ہے جب کم اس کا کہا جا ساکتا ہے جب کم اس کی دیول بھاریاں وہاتی دیلی ۔ جس طرح کو کی فوجوں کی دیلی میں کی دیول بھاریاں کی دیول بھاریاں جاتی دیلی کی دیلی کو کی خوبوں کی دیلی کم اس کا کہا جا سے دیلی کا کہ دیلی کم کو کی کو کو کی کو کو کو کہا جا ساکتا ہے جب کم اس کی دیلی کی دیلی کی دیلی کم کا کہا جا ساکتا ہے جب کم اس کا کو کی کے دیلی کی دیلی کی دیلی کی کی دیلی کی کہ دیلی کی دیلی کے دیلی کیلی کی دیلی کی دیلی کی دیلی کے دیلی کی دیل

یں میں میں میں میں اور تحدید اور ترات ونتا نگی می محققین کے افوالخلف ہیں مگر ہم اختصار کے طور مراس کی تحقیق کرتے ہیں ۔

کرتے ہیں ۔ جاننا جا ہے کہ کئی اور گلق بعنی خ کے نتحہ اور ضریعنی زیراور ٹیش کے

ساتھ جوا جوا دولفظ ہیں فکق سے مراد صورتِ ظاہری ہے اور گُلُق سے مراد صورتِ ظاہری ہے اور گُلُق سے مراد صورتِ اظاہری ہے اور ہُلَتھ اس صورت بالکا ہے اور ہُلَتھ یا کی اور الکھ کان وغیرہ اعضا راس کو مرحمت ہوئے ہیں جن کو قوتِ بسالت تعنی چہرہ کی آنکھیں اوراک کرسمتی ہیں ۔ اس طرح انسان روح اور نشس سے توکید ہیں ہیں اور کی ہیں ہیں توکید ہیں گئی ہیں ہیں توکید ہیں گئی ہیں کہ توکید کی تعمیل کرتی ہیں ہیں توکید ہیں گئی ہیں کہ تو تعالی نے اپنی مخلوق کو جواجدا صورت اور قی صورت اور سے نوالی ہیں اور ایسی ہی اور کی کوئی صورت اور سے رہے ہیں اور ایسی ہی اور کوئی صورت اور سیرت جمین اور ایسی ہی اور کوئی صورت اور سیرت جمین اور ایسی ہی اور کوئی صورت اور سیرت جمین

له امل وفي كتاب مي يرمدين تبين عدا له طران معيم ١١

ادر کھونٹری ہے ۔ طاہری کل دہیئت کوصورت کہتے ہیں ، اور باطن شکل د ہیئت کومیرت کہتے ہیں ۔ ہاں سیرت کا مرتب صورت سے بڑھا ہوا ہے ، کیونکہ اس کوسی تعالی نے ابنی طرف نسوب کیا ہے ۔ چنا بخر نفکٹ ش فیٹ دِمِن اُکُروْجِی اُ ایڈ کرمیہ ہیں کو وک واپنا کہ کر ذکر فرمایا ہے ۔ اور قسل السَّ وْجُ مِن اُ اَمْن دَیْق مِی اس کا اظہاد فرما یا کد وح امر رتبانی ہے اور جیم کی طرح سفلی اور خاکی نہیں ہے ، کیون کو جم کی نسبت می کی جانب و نسوائی اور این خیالی جنگ ما میں طیان ارب ہواہے ۔

سیرت کے بھی بچاراعضاریں بماری مراداک ہے نئے سرمین

مهاری مرادایی بینی استعداد کے موافق اشیار و مشتر ہوتی تعالیٰ کے الهام والقار سے اپنی استعداد کے موافق اشیار کی معرفت حاصل کرتی ہے۔ بہر حال ثابت ہوا کہ زیادہ قابل لحاظ امر رہائی سینی سیرت انسانی ہی ہے ۔ کہ حب تک اسان کو توب سیرت ہیں کہا جاسکتا ہیں میں مورت کی اسان کو توب سیرت ہیں کہا جاسکتا ہیں تعدید اس مورت کی کے اعضار بعنی ہتھ یا کوں کی طرح سیری جو بھی تا تا اسان کو توب سیرت ہیں تا تا میں مورت کی کے اعضار بعنی ہتھ یا کوں کی طرح سیری جو بھی تا تا میں مورت فرا سے بہر جن کا نام توت علی ، قوت عضار سرو ول الاستان شہوت اور قوت عدل سے ۔ لہذا حب تک یہ چاروں اعضار سال دل الاستان مورت تک سیرت کو صین نہ کہا جا سے گا

له اورادم کے چاری میونک دیا میں نے اپنی رون کو ۱۲ ته دائے گذا کمبروکردوں میرے پروددگار کاامرہے ۱۲

ته باشسين فيداكيا آدم كومى ع ١١

ال باطنی احشاریں ہوہمی کی بینی اورا فراط و تفریط ہوگی اس کی مثال ایسی ہوگی جیسے کی کا اس کی مثال ایسی ہوگی جیسے کی کا ابری تشکل اورصورت جسیدی افراط و تفریط ہوا وردوسرا ہا تشکر تعمیر اور طاہر ہے کہ ایسا آدمی تو بھول ہوا ہوں کہ ایسا آدمی تو بھول ہوا ہوں کہ ایسا آدمی تو بھول ہے کہ ایسا آدمی تو بھول ہے اور توت شہوا ند مناسب اعتدال کی قدت عضید مثلاً میں اعتدال ہے موسی ہوتی ہے تواس کو قوب ہمیرت نہیں کہ سکتے ۔

اب ہم چاروں اعضا سے مذکورہ کا اعتدال و تناسب اور حشن سیسان کرتے ہیں

اقی ل قوت علم ۔ اس کا اعتدال اور حسن توہیج کہ انسان اس کے ذریعہ سے اقوال کے اندر

وت ممیری کا سی که انسان اس کے ذریعہ سے اقوال کے اندر پی اور جوسے میں امتیاز اوراعتقادات کے متعلق می اور باطل میں تعنسرتی کہ سے ، اوراعمال میں شن اور تبعی احجها اور گرا پہچان سے ۔ بس جس وقت یہ صلاحیت بیدا ہوجائے گا تواس وقت محمت کا وہ تم ہ ب الموگا، حس کو سی تعالی بایں الفاظ ادر شاو فرما تاہے کہ سمب کو سی مسلم اور موق اس کو می سی مولی اس کو می سی المولی کے اور ور معتبقت تمام فضیل تولی کی سیم اور

دوم وسوم - توسيغضب قوت قوت في المنظف المنظمة والمنظمة ول

مطن شکاری کتے کی طرح شریعت کی فرماں بردادین جا کیں کہ جس طرف بھی ان کوش بعیت چلاسے بلاعذر دیے تامل اسی جانب کی اور شکار پڑھ لکریں اور جس وقت وہ ان کوروکنا بچاہے توفودًا شھیر جائیں اور جیب ہوکرا پٹی جگہ معلمہ جائیں

قوت عدل کاحسن است که قوت عدل ـ اس کا عتدال یه این این کا عتدال یه این کا حسن کا مست کا مست برائی کے کا تحت بنائے رکھے کو یافتی کا در تو ت عفید اور تو ت عدل اس کی بیش کارسے کہ موافق احکام جادی کو یا تی ہے ۔ اور توت عفید اور شہوانیہ کو یا شکاری مرد کے مہذب کتے اور فرانرواد کے داور توت عفید اور شہوانیہ کو یا شکاری مرد کے مہذب کتے اور فرانرواد کھوڑے کی طاح کا در ناصح کی نصیحت کا فعاد اور الراد ہوتا ہے ۔ بس میں وقت یہ حالت قابل اطمینان اور لا آئی تعربیت ہوجائیگی اس وقت انسان میں کا موات درست ہوجائیگ کا اور ال کی بدولت انسان تمام اضلاق وعادات درست ہوجائیں گے۔

قوت غضبیہ کے اعتدال افتات عندیت کے اعتدال کانام افتات کے اعتدال کانام کانام

زیارتی ہوگی تواس کا نام تبیو ہے ، اور آگر کی ہوگی توبزدلی کہلاسے گی ۔ اور ظاہر ہے کہ یہ دونوں حالتیں نالیسند میرہ ہیں ۔

مالت اعتدال بين هجاعت سے لطقت وكرتم ، وليرّي ويودّت ، برقبارى واستقلال مرتمي و ملاطَّفتْ اورغف كيضبط كاماده اوربركام مي دورانديثي ووقارب ابوتاب اوراس مين زيادتي موتى بي توناعا قبت اندشي اديك مارنا الشيخي عجمارنا بخصر سي معراك المينا وتكب واورنودك سرى بيدا بوتى مے ۔ اوراگراس میں می موتی ہے تو بزدلی و ذلت ، بے عب رقی و م میتی، خساست اوروه حرکات ظاہر ہوتی ہیں جو مجھوراین کہ ال سے۔ قوت شہوانیہ کے اعتدال اسبوت کی حالتِ اعتدال کا نام یاریا ہے۔ بس اگرشہوت اپنی صراعت ال سے برم جائے گی توحرص وہواکسلانے گی حالت معتدلىعنى يادسائى الترياك كوليسندسي واوداس سيجوخعساكل بيدا بوت بي ومنحاوت رحياً متر، قناعت ، الْقاكهلات بي على كم ہوجاتی ہے ، خوت وخشیت اور دوسرول کی مدرکرنے کا ماترہ سیدا موتاہو ا ورمة اعتدال سے برصف اور كھٹنے سے حرض ولآلج بنوتشامد، جا بلوسى، امرار كرساميغ تذلَّلُ اورنقراركو بنظر حقارت ويجمنا ، يرسياني ففول حجي ریا، تنگ دلی ، نامردانگی اورصدوغیره خصائل میپیدا موستے ہیں۔ قويعقل كماعت ال ١ و التعقل مين الراعتدال بوتات تو

 سے بڑھ جائے تودھوکہ بازی ، فریب دہی اور مکاری کہ لاتی ہے ۔ اوراگر عقل کی قوت ہیں کسی تھم کا نقصان ا ورصنعف ہوگا توکسٹرڈ ہی وحما قت اور یے وقوفی کہ لائے گی جس کا اثر ہے ہوگا کہ الیسا آ دمی جلدد وسرے کے دھوکہ میں ہجائے گا ۔

غوض من وقت يرمارى قوتين مداعتدال پر بورگ تواس وقت انسان كوش الخلق بعنى خوب ميرت كها جائدگا . كيونكه اعتدال ساگهشت اور برهنا دو دول حالتين مشن سے خارج بي ۔ خيفي الْأَمْوُ يا وُسَطُها . حق تعالى فرما تاہيك « نرايخ التحكرون سے باندھ لوكہ بخل كروا ور نربالك كھول دو كه اسراف كرنے كلو " نيز فرما تاہے كه " بما ليے مبدول كى بيثان سے كه نه وه امراف كرتے بين اور نرخل ، بلكه اس كے تبن بين (بي جي محالت ير دستة بين .

فصار

ان براخلاقیوں کی اصلاح ہو کردیا برح تی کا علی فیس برحرکرناہی اگر کی میں کوئی خلق برامو ہو در ہواس کو چا سے کے نفس پرجبرکرے ، شلاً اگر بخل کی عادت ہو توجبراً و قبر اس کو ترک کرے اور نفس کو ناواض کر کے خرج کرنے کی عادت ڈالے اور اگر فضول خرجی کا خوکر ہو تو نفس کو فرض سے اور سے سے دکے اور خرج کرنا بند کرے تاکہ کم خرجی کی عادت ہوجا سے کہ جو تی تعالی کو پ ند ہے۔ پر آجا ہے گی تو و ہی میں بین حالت بروا ہوجا سے گی ہوتی تعالی کو پ ند ہے۔

له سادے کاموں میں بہتران کے متوسط (میاندوی کے) درجے بواکرتے میں ۱۱

له دامنی) ب فنک آپ برے خلق بربیدا کئے گئے ،

ا و محبوب بن جا تاہے ۔ ا ور میے درجہ کا تبیج وید باطن شخص کم ال بغض و نفرت کی نگاہ سے دیکیا جا تا ہے۔ اور دیمیانی حالت میں محبت اور نفرت کے برار بادر سے تکلیں گے جن بران کی مقداد وکیفیت کی مناسبت سخرات النظائع متفرق بول کے ۔ بی ٹوس میر توں اور بدمیر توں کے اسسادی آج ال بیانے باسانی کی جاسکتی ہے

إنسان كوليضن كى حالمتي لوم

مطول كرفي اكروه كالإجاتابي كم وَكُلَّ شَخْصَ مِحْ كِيمِي لِينْ آكِ وَعَلِيقَ اوانُوب ميرت مجعة لكتاب، حيناني اكثراليا بوتاب كدانسان كوغقة آجاتاب اوروه يجتاب كرع الثواسط غهراً يَابِ بونوس مِرتْ كيسك مونابي جابة ريامشلًا بي عبادتول كولوك ب ظامر كالب اورنفس يدوهوكد ديم على باديتاب كتم يقواس عف س عباد توں کا اظهار کیاہے تاکولگ اس نیک کام کی رغبت اوراس می تنهادا اقتداركري - يامتلاً عابدوابر متقى ، باسنصوم وصلاة بتاب اوربا وولي يرسب دياا ودو كھا ہے كئے نيت سے ہوتا ہے ، مگرنفس اس عيب كوظ اہر نہیں بھے دیتا غرض ای طرح نیفس امّارہ بڑے بڑے دھوے دیاکرااد برحالی بی متبلار کھنے کھیلے عیب کو ٹوبی باکرظام کیا کرتا ہے۔

للسذامناسبب كرائي حالستكى لينخلص اورصاف كودوست پوهوكر و تمبير كيسام متلب ، چونى تمبارى صلتول اورعاد تول كادوس

لوگ چی طرح انوازہ کرسکتے ہیں کیوبکھن سے سابقہ اور واسط بڑتا ہے اور ال كوتمها يد اخلاق كے امتحال كاموقع مے دبی آھي طرح ميا خي سنتن بي بي اگرتمها يدے دوست كوتمهادى خير نوابى المحوظ ہوكى توسية كلف وه تم كو تباحث كا کرفلال عادیت تمباری خراب ہے ، سی ای اصلاح میں تم کومشعول بوجانا چا ہے ۔ اوراگر حیدعا دہی خراب ظاہر ہول توا غلب کی فتحر سیلے کروا ور حُس كانتيرزياده خُراب كل رام بواس كاعلاج سب سيمقد معجو مشلًا کاعلام دنیا کی محبت - اور بیالیی بلاسے کرس سے شاذ ونادر بي كوئي تخف محفوظ ہوگا ۔ حالانكە يبى تمام كنابول كى جويت الس اس كاعلاج مقدم اورسب سے زياد و ضروري محينا يطيته اوردنياكى مجسيكا للهي يوكتهاني وشيمكوه واكروكما نودنياكى جانب محيكوا تأليه توج اورائرت سے دوگردائی کیوں ہے ۔ اگر خلوت میں فکر کرو گے توسمج میں اتعابے گاکسوائے حیالت اورغفلت کے کوئی دینہیں ہے ۔ تھوڑی دہر محیلتے مان لوکر تمہاری عرسوری کی بھی ہوئی ا ورتم بیں تمام بطح زمن کی سلطنت بمی ملگی مگرمیر کیا ؟ آخرفنا بوناب عنقریب وه دن آنے والاسے کر مزتم رہوگے اور نہیں لمطنت ومک ہے گا ، یرسب توفنا ہوجائیں گئے بھراس کا برولت ابدي سلطنت حس كيختم بونے كاكوئى وقت بي نهيں تها سے اتھ سے ضرور جاتی ہے گی

اورائینی خلودودوام کا تصویر خیال مین ناکے تویون تعور کرد کہ تمام دنیال کناره سے سیکواس کناره تک اناج سے بعری بیونی ہے اورایک پرنده پورے ایک بزار برس میں اس ابر نے دنیا جس سے ایک داندا طحالیتا ہے پس اس طرح پرمزارسال میں اناج کا ایک داندا معالے برجی ایک ایک دن یہ دنیا اناج سے خرور خالی ہوجا سے گی ۔ پس یہ مدت بھی جس کی بزارال بزارگنا پر تمہار گئتی خم بوتی ہے ، ابراور دوام کے نام سے موسوم نہیں ہوتی ہے کیون کہ ابراور دوام اس مت سے بھی کھوکھا اور کر وقر باگنا زیادہ ہے کیون کو وہ اتنی بیٹار قرت کا نام ہے جس کی کہیں انتہا ہی نہیں ۔

بهريبطلاس عارضي اورفتا بوجاني والى سلطنت كي طرف توجركرنا اور ابدی ودائمی مملکت سے بے ہروا اور تننی بنانفس نے کیوں لیسندکر لیا؟ بيريمى موبي كدفداك دنيا كم معولى تجارت مي تمحسي كسيتمستني ارتحالية بو طلب رياست مي كيسكيب وشوادمغ اختيا دكريية بو حالا كمه الصيبتول الد وتواريون كي بعديمي مال اوررياست كالمنا بالكل موسوم سع مكن سعك اس سے پیلے ی موت آجائے اور تجارت کا نفع یاسفر کا انجام دیجینالعیب منهو كالكردياست ميى ل جارے تومكن بے كدو عيش آرام وسكوف اطينان عال دبوجور ياست ميعقمود بوتاب ربرمال اسى موبوم وزوى داحت كاقوق يرجى صوبتين المتعينتين كرانهين كرتين بحيونكه ليضفال ينتجاكر ای سم مربوس کے مقابل ریکلف و منت کے ایک یادوریس کی کوئی حقيقت نهيس محصة ، اوراول خيال كرت بوكرس روزسفري ريست ككليف كرسبب عرمهركاعيش الم جائد كاحالا بحرجونسبت تمهارى ويكدتها مدنياكى

عروابداوردوام کے ساتھ ہے اس کا ایک ٹریمی ایک برس کو تمہاری خیالی عر کے ساتھ برگز برگز مال نہیں ہے ۔ معرد نیا کی نعرف کو اگر آخرت کی ابدی نعمت کے ماس کرنے میں صرف کرواور اس چند وزہ مخت اور تکلیف کو وہاں کی وائی لذت کمیسلے گوارا کر لوٹو کیا شکل ہے ؟ مگر یہ وکیسے ؟

ی بی ایک شوشه می اورد مولم میں دال رکھا ہے غفلت کئے جاتے ہو۔ اور کہتے ہوکہ خدا کریے ہے، معان کرنوالا

نفس کا دھوکہ کہ خدا کریم ہے اوراس کی وجہ سے غفلت

ہے سب کچیش دے گا اور برے مل کے با وجود ہم کوجنت می محیجدے گا۔ معلامی اوجیتا ہوں کھیتی اور تجارت میں الساکیون نہیں خیال کرلیتے ؟

محل توقع شيطاني وحوكه بي السابي آخرت كي علق مي مجو

کرخراب اعمال اور برکاریوں پرمعافی دمنفرت کی توقع کرنااس سے یعی شاذو ناور ہے کہ خواب کے گاہودہ کرے ناور ہے کہ تو ہوئی ہے گاہودہ کرے گا۔ اور پی تقابل صاف فرما چھا ہے کہ انسان کو دی ملے گاہودہ کرے گا۔ اور پی تقی نبیدے فاسق و فاہر لوگوں کی برانہ بیں ہوسکتے وغیرہ و خیرہ کے معاملات میں تواسب کے افتیار کرنے کو فرودی ہی نہیں فرما یا بلکہ ان سے ہے توجہ بنایا اور اول فرما یا ہے کہ کوئی مبا ندار زین پر بیلنے والا ایسانہ میں ہوکہ حرک ارزق ہما رہے و کہ مدنہوں

تعجب ہے کد دنیا کمانے میں توخوا پر عبر دستہیں ہے اور آخر سے میں پڑھلیوں کی معانی پروٹوق اور ہے جاتوقع رکھ کرا پنا دین ہرباد کرہے ہو۔ خوب یا درکھو کہ پیشیطانی وسوسہ ہے جس نے مخلوق کو تباہ اوراعال سے اہل بناکر عبادت وطاعت سے روک دکھا ہے۔ حق تعالی محفوظ رکھے ۔ فصسیا

عنب برایان فقین صال کرنگاطانی معاطات کرنتا گاگای معاطات کرنتا گاگای معاطات کرنتا گاگای معاطات کرنتا گاگای کوئی واقع کرن کا معاطات میں سے دیجے اوردات ول تحریم کرنے ہیں اور اکرت کے معاطات میں بے کوئی واقع بھی کی نے مشاہون ہیں کیا اس وجہ سے دنیا کی تحصیل میں رغبت ہوتی اور دین کی طلب میں خفلت ہے کیونک جس شے کواڈی نے دیکی نہیں اس کی واقعی تعدیق دل کے اندز ہیں ہوتی ۔ اور یہی بات ہے کہ شخص نقد کو ادھا دیر ترجیح دیا کرتا ہے لہ واطلب دنیا میں ساری کی فقی میں اوا ہونے ہیں اور دین کے متعلق نوا فل تو در کناراصل ادکان اور فراکف ہی اوا ہونے مشکل ورشوار پر جاتے ہیں ۔

تواس کا بحاب یہ ہے کہ اگری تعالی تمہارے قلب کی آنکھیں روش

منوا دے اورتم صاحب بعیرت بن جا و تو پھردنی امور کے انجام بھی دنیا ہی کی طرح تمہارے متا ہرے می آمائیں گے۔ اور اگریصیرت مال مربولوں والوں مینی انبیارعلیہم السّلام اوراولیا سے کرام کے ارسّا داست میں غورکرو ، اور ديچوكهاس برسي جاعت مي كوئي عبي ايسانهيس تفاجوآ خرت كي دائي نعرت ا ورُدائی پیلیف کا قائل نهو ۔ اوربیتنی بات ہے کہ آخرت کی دائمی پہیودی ىق تعالى كوف قوجر كئے بغيره لنه سي بوستى داوروب تك دنياكى ط ن سے منہ مزیمیرو کے اس دقت تک بی تعالی مان آوپرکونی و بس جبان باتوں کوموچے گے قتم کوآخرت دیجاایمان اورقلب کو امودغيبيه ييكون واطيينان كاسل بوجائے كاكيو يحدثو فحق خوداندها بوس يرلاذم بوكر وكمى فأوانكف تخعل كاتابع موكريط ركيوي واسستهكى ورخ فيحاود منزل تعمودتك سيني والى مرك اس كونفرآنهى ب وسيلاا كرطب كم اندرتم كودخل مزبوا ودبياد بوجا وتوتهيس بتا وكه اس وقت طبيبي كينرتم كوييلغ كى ضرورت بريانهي ، خصوصًا الركوئي اليي مورت موكرص ريّام اطبّاكا الّغا ق بُوتُواس مِين توخم كوكمى قىم كانتك بعى مذبوكا - بس يبي مال عقائيرُ كالمحبوكة حضرات انبيار عليبم الشلام اوراوليا مركرام اورتمام ابل بصيرت حضرا دومان طبيب بي ا وروه سب كرسب اس يرتفق بي كدا خرست ضرود يوني والی ہے اوراس چندروزہ زندگی کے نیک ویداعمال کا برا ضرور منے والا ہے ، اسدااس میں فنک کرنے کی گنجائٹ می نہیں ہے۔ روح انسانی کی حقیقت | ان میندادی ایے بمی بن بو

دوح کی صیعت کو سم بی نہیں کہ وہ کیا پیزے ؟ان کی نظراس دی جہمانی تک قاصر ہو گئی جہمانی تک قاصر ہو گئی جہرائی تک قاصر ہو گئی جس کے فدیع ہے انسان جس و توکت کرتا ہے ۔ یعنی وہ بخالاً جو قلب سے اشخصے ہیں اور بدن کی تمام دگوں میں جیوا تات ہیں جم موجو دہے ۔ اس کو انسان اور حیوان میں فرق ہی کیا ہوا ؟

احتیاط افقل بھی فکر آخرت کو مقتضی ہے اظاہر ہے کہ احتیاط کا مقتضی ہے استیاط اور کے ان کے ان سامان جی کروا دراس کی سن کرر و مہونکہ اگر شسال ٹم کو مبوک ہوا ورکھانا بھی

ساہنے دکھا ہوا ہے مگرکوئی شخص وٹوق کے سساتھ میان کرے کہ اسس کھانے میں زہر طاہواہے ، اور دوسراٹھن کے کنہیں اس میں زبزمہیں ہوتو ظاہرے کرامتیا ط کی بنا بڑم اس کھانے سے ضرود ریمبرکروگے اور پیمبوگے كداگريداس ميں زہر ہونے كالقين نهين سے سركميري اس كاست لوداحمال چونخ ضرور بي لېسنا ايك وقت بعوكار بينااس مشكوك كها ناكه الحساسيمير ہے کیونکداس کی اکستق میں مرحانے کا احتمال ہے ، اور دوسری صورت میں موت سے توحفاظت ہے ، ہاں اگریے تو تھوڑی سی مجوک ی کی تعلیف بے ص کوآسانی سے برواشت کرسے ہیں ۔ کد ذراسی لذت اگر مال نہوئی نسى زندگى توباقى بىگى ـ اگر زندگى بى توسىكى بىر ـ

دكيوايك شاعربا وجودكثا نتعقل كركياكهتاب اس كيعول اشحأ كاترجمه برسے كم:

ومنجم اورطبيب نے مجھ سے کہاکہ مرجانے والے انسال وباد تھیں زندہ نرہوں گے ۔ ٹی*ں نے*ان کوجواب دیاکہ جا ؤد*ورہو* اور اگرتم پیے ہوتوم را تواس وقت بھی کچے نقصان نہوگا لسِ اتنا ہی کہ اعمال کچه کام نرائیں گے سونسہی تکلیف وندبوگی اوراگرتم حجو لے تكليتب توظا بربي كمين نفع مين ريا ا ورضياره تم كواتفا نا يواكرتم اسخرت كيمنكر بونے كى وجرسے اس كا كچھى لمان ساتھ در لائے ا اورمی دنیابی میں اس کا فسکرکرکے تیارہوا یا تھا ہ الغمض دنيا ميس ره كمروي اموركي سمى كرنے اورنيك اعسال كاذخب و مسنرایم کریینے کی صورت میں توبہرحال نفع ہی نفع ہے۔ اوراگرتم یہ کہوکہ ہیں توجا بل نجوی اور اکرتم یہ کہوکہ ہیں توجا بل نجوی اور بوت سوی مسلوم بوت اسلام اور ہوتا ہے کہ اس میں جبوٹ کا احتال ہی تہیں ، شام انبیار علیم السلام اور اور اور اور اور اللہ دھوکہ ہوگیا ، بس مرآ خریت کوئی چیزے اور می اور اور اور منظر ایک کوئی بات ہے ۔ اگر خوا نخواست متم ادا خوال السا ہوتیا کہ آت ہوا سے مراح کا ضاد اور عقل کی کیا مواح کا خواد کوئی بالا ہے ہو ۔ اس صورت میں علاج اور حت کی کیا صورت میں علاج اور جس مجمعی السی خواک کوئی کی کیا صورت میں علاج اور حت کی کیا صورت ہو تھی ہے ، بس مجمعی السی خواک کوئی سے ممن میں میں سے جس مجمعی السی خواک کوئی سے ممن سے میں ایسے خواک کوئی سے ممن سے میں السی خواک کوئی سے ممن سے میں میں سے میں میں میں سے در سے میں میں سے میں میں میں سے در سے میں السی میں کی کیا صورت ہو تھی ہے ، بس مجمعی السی خواک کوئی سے میں سے در سے میں سے میں سے در سے میں سے میں سے میں سے در سے میں سے میں سے در سے

یاکی محبت کا استری علاج البت چلتے بطا اتنا بر می محبائیں گے کہ البت کا محبت کا استحاد کا البت کا البت

اوریہیں کی داست اور آرام کے مشیدا ہو توتب بھی ہمارے کہنے کے موافق نا پا مُدار دنیا کے تعلقات کا کم کرناتم کو ضروری ہے کہ کیونکہ جومزہ اور داست و آرام آ ذادی میں ہے دہ پا بندی میں نہیں ہے ۔ بس اگرتم نفس کے پابند ہوگئے اور نواہشات و تعلقات میں بھڑا گئے ہوتو یا در کھو کہ برقع کی ذالت ورسوائی اٹھائی پڑے کی کرجوتیاں کھاؤگے اور اپنی جسی مختاج خلوق کے ورسوائی اٹھائی پڑے اور نوشام دیں کرتے میروگے ۔

دیمورنیا کے تعلقات اور بھیڑے ایے برے ہوتے ہی کہتیرے

کا مشرین کو آخرت پرایران نه تھا وہ بھی تو ان سے گھراا شے ادتادک و نیا ہوکر ہوگی اور داہ بٹ بن گئے ۔ انہوں نے بھی اتناسجے لیا کہ دنیاول لکانے کے قابل چیز نہیں ہے ۔ کیوبحہ اس نایا ندارجہاں کو ایک دنیاول ضرور پڑھا ۔ اور میہاں رہ کرجس سے بھی جبت یا علاقہ رکھا جائے گا وہ بہت جلد منقطع ہوجا ہے گا ۔ کہ یا ہم اس کوچھوڈ کر رخصت ہوجا ہیں گئے ۔ اور یا وہ ہم کوچھوڈ کر روانہ ہوجا ہے گا ۔ اور ظاہر ہے کہ آس مفار کا انجام سوا سے معید بت ورخ اور صدمہ دیکا ہے اور طراح ہی نہیں ہو۔ کا انجام سوا سے معید بت ورخ اور صدمہ دیکا ہے نے کہ کم بھی نہیں ہو نہیں دنیا کے معرب کا فرول کو آخرت کا بالکل انکار ہونے کی صورت میں دنیا کے معرب کے اندر داور میں ان تعلقات میں بھینے کے داور سامان کی طرح سے جو ہو ہو ۔ کہ کا سامان کی طرح سمجھتے ہو ہ

وأخردعوا ذاان الحمد لله ديد العالمين والصلوة والسلام على ديوله وصفيه محمد وأله واصحابه اجمعين الم

ہ آبادی سے بام رسہ کرعبا دت کرنے والا ١٢

تبيسى قسد

قلب کواخلاق محمودہ کے ساتھم پن کرنے کا بیا ان اور اس کے دس اصول

﴿ يَجْنِينُ أَنْ اللَّهُ اللَّ وبهركا بيكار

تورسین تعالی فوشی کا اندازه می تعالی فرماتا ہے کہ مسلماند! تمسب الله کی طرف دیوع کر وبیشک وہ تو ہر کرنے والوں سے مجت کرا ہو ہے۔ اور جناب رسول الله صلی الله علیہ وسلم فرمات میں کہ منصب نے گناہ کے بعد ۔ تو جہ کرلی وہ گویا ہے گناہ ہوگیا ہے

حق تعالی کونیده کی توبہ سے جتی نوخی ہوتی ہے اس کا اندازہ اس سے کروکہ اگر مشلاً کوئی شخص کمی ہے آب وگیاہ اور دمہشت ناک جبکل ہی پہنچ جائے اور اس کی سواری من قوش ہے جواس پر رکھا ہوا تھا گم ہوجائے کہ دہ اس کو ڈھونڈ تا ڈھوڈڈ اتھک جائے اور آخراس وجہ سے کہ سواری کے بغیر ناح بکل سے باہر بحل سکتا ہے اور نہ توسشہ کے بغیر فاقر کی موت سے بان بخاس کا اور نہ توسشہ کے بغیر فاقر کی موت سے بان

كه ابن ماجه وطب رانى كبيروبيني ١١

له پندیده عادین ۱۲

وہاں آب واندیشرآنے کی امید ۔ اس سے مایس ہوکری درضت کے نیج آ یسٹے اور لینے ہا تھ درس رکھ کواس فکریں ڈوبا ہوا سوجائے کہ اب موت آیا چاہتی ہے اور میر دفعۃ اس کی آبھ کھل جائے اور وہ دیکھے کہ اس کی کھوئی ہوئی سواری اس کے پاس کھڑی ہے اور کھانے پینے کا سامان ہو اس پرلدا ہوا تھا وہ مجینسہ موجود ہے ۔ تواس کی الیبی حالت میں اپنی ذندگی سے ناامید ہونے کے بعد سرمائی حیات ہاتھ گلنے کی وجرسے بہتی فوشی دفعۃ ماسل ہوگی اس سے زیادہ می تعالی کواس وقت فوشی ہوتی ہے جبر بہندہ اس کی مانب رجوع کرتا اور اپنے گناہ سے تو بر کرتا ہے ۔

توب کے معنی اوراتبولی درجہ اسے قربی جانب دو ازرتبد اور کی جانب اوٹ آنے کے ہیں۔ مگراس کے لئے میں ایک استوار ہے اورایک انتہا ۔ استواد کو مگراس کے لئے میں ایک استوار ہے اورایک انتہا ۔ استواد کو استعمٰون کی پوری آگا ہی حال ہوجا سے کہ گذاہ ہم قابل اور تباہ کر دینے والی تی ہے ، اور پھر فوف اور نواست سیدا ہو کرگٹ اوکی تال فی کرنے کی چی اور خاصی دورا جی والی تی اور کر ایس کے ساتھ ہی جہاں تک ہوسے گذیت تقدیر وکو تا ہی کا توارک اس کے ساتھ ہی جہاں تک ہوسے گذیت تقدیر وکو تا ہی کا توارک اس کے ساتھ ہی جہاں تک ہوسے گذیت تقدیر وکو تا ہی کا توارک استم تمون ور تعقبل اور حال تینوں زمانوں کے متعلق تو ہو کا یہ تمر سیدا ہو جائے وگو یا تو برکا یہ اس کے ساتھ ہی جہاں تا م در کمال حاسل ہوگیا جن کا نام تو ہو گئی استمال وی اس کے ساتھ ہی جہاں تا ہو تھا ور میں اس کے ساتھ ہی جہاں تا ہو در کا دہ کمال حاسل ہوگیا جن کا نام تو ہو گئی تا ہو ہو گئی ہو تا ہو کہا ہو کہا

نصل

قور کمعنی اور مقیقت سمجھنے کے بعد واقع بہرگیا ہوگا کہ تو بہرخف پر واجب ہے کیونہ ہوگیا ہوگا کہ تو بہرخف پر واجب ہے کیونہ ہی تعالیٰ تمام مسلمانوں کو مخاطب بناکر فرما تاہے کہ " اے ایان والو ! تم سب تو برکرو تاکہ صناح یا و " چوبکہ تو برک صقیقت یہ چورٹ نے کا عزم کر ہے اور اتنام منمون ایمان کا جزوجے ، برون پراس کا حاجب اور مزود ہے ، اب رہا تمام بنی آوم اور برفور شرکو واجب اور مرود ہے ، اب رہا تمام بنی آوم اور برفور شرکو تو ہے کہ اور اس کے خیرمیں ، رہوں کے دیے کہ اور کی چارق کی صفات سے مرکب ہی کون کو اس کے خیرمیں ، ۔

ا ول ، ترص وشهوت اورسق وفجور داخل ب جوبب مم كى

ضلت ہے۔

ُ دوم :رغمتراودصدا دربغض وعدادت کا مادہ اس کے اندر موبودے جودرندوں کی صفت ہے۔

سوم درمکروفریب اوردھوکردی ومکاری اس پس رکھی ہوئی ہی بوشیطانی احسٰ ال سے ہے۔

برسیدی اسم ، مسیمی و تعلق و تفاتخر، حتب مدح و حتب جاه ، مسیمارم ، رکبر و نخوت ، تعلق و تفاتخر، حتب مدح و حتب جاه ، مسیم الله و عزت کی طلب کا ماده اسس میم موجود سے ، میں موجود سے ،

اوريرسب راوبيت كى صفات بي .

برخصائل کا مادہ لینے لینے ان بیاروں خصائل کا لیے اپنے توت پراورموقع پرغلبہ وکھ لا تا ہے اپنے دائر طفولیت میں توبہائم اور حوانات کی خصلتیں غلبہ کیا کرتی ہیں اور انسان شہوت ترص میں گویا چویا ہے اور جانور بن جا تاہے۔

اس کے بعد حب نوجوانی کا زمانہ آتا ہے تو در ندوں کی عاد تو کا ظلبہ ہوتا ہے کہ ایک دو مرے پر حسد کرتا ہے ، باہم عدا ویس سیدا ہوتی ہیں ، کمی سیعنی ہے کمی سیعنی ہے کمی سیعنی ہے کمی سیعنی کو ذراسی خلائر طبع باہر بھا جا تا ہے ۔ بہت کو ذراسی خلائر اور قرور کتا ہے ۔ بہت یا ہر بھا جا تا ہے ۔ بہت یا ہر بھا تا اور قبیلنے جھٹے کا کر ہے ۔ بہت کا میں دیجھتا ہے تو مباتا کا ستاا ور چھیلنے جھٹے کا کر میں میں طبق کھا یا کرتا ہے ۔ بؤمن اس حالت میں وہ اور درندہ کو یا ہم جسس میں طبق کھا یا کرتا ہے ۔ بؤمن اس حالت میں وہ اور درندہ کو یا ہم جسس میں طاتے ہیں ۔

مپھر حب اس کے بعد عالم شیاب کا شباب ہوتا ہے اور بدن میں توت اکباتی ہے تو یہ بہائم ودرندوں گی خصاتیں جاہتی ہیں کہ اپنی توانہیں پوری کو بعنی مرغوب اور پ ندیوش کی کوچھ سل کریں اور ڈٹمن ونا پ ندیوہ امر کو زیر خاک طائیں ۔ نیس اس وقت شیطانی اخلاق ظاہر ہوتے اورانیا غلب۔ کرتے ہیں کہ ابھی کئی شئ کی ٹوائش پوری ہوئی اور فوس و وحوکہ بازی نے مدد کہنے کا اقراد کیا ۔ ابھی کئی دشن پر غصہ آیا اور فور کا سکاری وجیل سازی نے اپنی وانائی و ہوسے یاری کوئیٹ کیا ۔ غرض اخلاق شیطانی اس زمانہ پیضائل ہمٹی وار عاوات سنجی کے نفاذین حین وحد گارینے اورانسان کوشیطائی

له يويايون والى ١١٠

بنادیتے ہیں ، اورجب اس میں کامیابی ونلغرادرا پن حسب منشا کاردوآیو میں فتح نظرائے نتنی ہے تو میر محروتعلی ہدا ہو جاتی ہے اور وہ چاہتا ہے کہ ہڑخص اس کی مدد کرے ، ہڑخص اس کامطیع و فروا نروار ہوجا وے ، ہڑخص اس کی بڑائی اور کمال کامعتری ہو ، ہڑخص اس کوعقلمند او ر واجب التعظیم سمجھ ۔ غرض السی فرعونیت ذہن میں سماتی ہے کہ سم چوما ورکیے نہیںت سمجھ کا بیتلامیتم بن جاتا ہے ۔

قلب انساني ظلماتي أوريفدائي الدرجب ان جار ورخصلتو كاظهور ہولیتا ہے تواہعتل کی قندل اپنا نشكر كاميران جنكث م مند کھاتی ہے جس میں ایمان کی الح روش ہوتا ہے اوراس کو بھلے اور بُرے میں امتیاز کا موقع ویتا ہے ،اگریہ دوُّى ظاہرۃ ہوتوصفائل مذکورہ کی ظلمت و تاریخی سے نجاست کمنی وٹیوارہوتیا مرساته ی اس کے یعی ہے کو تندیل عقل اور تعل ایانی کا فور مالیس ال كى عرض كمال يسنجيا ب اوردوينوساتين بلوغ كو وتت بيدا بو فرق من ان کی اصلیت اور حقیقت ایجی طرح کھل جاتی ہے ۔ بین جس وقت بینورنظر أتاب توانسان كاقلب كوياجنك كاليك وسيع ميدان موتا يحسمياس ظلماتی نشکریینی چارول حفراکل خرکوده کی اس خوائی تشکریینی عقل ا ور تو ر ایمان کے ساتھ جنگ ہوتی ہے اور دونوں نشکروں میں سے برایک عابتا بے کدووسرے کومفلوب اوراپنا تا بع فرمان غلام بنالے ، بیں اگر نوعقل کرور ہوتومٹیطانی نشکر فتحیاب ہوکر قلب پرمسلط ہومیا تاہے اور دیمیں سے بي خوت بوكرةلب انسانى يرقبفه اور حكومت كرف ككتاب ، اوراكرشيط گردہ بسیا ہوا اورمیدان جنگ عقل اورا یان کے ہا تقدر ہا توانسان کی الت

سنورجاتی اورطبیعت میرترب بن جاتی ہے۔
اورچونکہ بنی آدم کی نطرت ہی اس جنگ وکارزار کو مقتنی ہے اس لئے
ہڑھی کے لئے اس کا پیش آنا لاڑی ہے ہیں ثابت ہوگیا کہ توبہ سے کوئی شخص
مین سنتی نہیں ہے کیکواس نوعقل ہی کانام تو بہ ہے ہو معرکہ کے وقت
طالماتی نشریعیٰ ضمائل شیطانیہ و بہید کا مدمقا بل بنتا اور انسان کواس پاک
شریعیٹ کا تا بعد اربنا نے کی کوشش کرتا ہے جس سے آخرت کی فلاح اور
اور ابدی نجات ہوتی ہے۔

ر دبر و بربر المسلم و تستهمی گذاه المسلم و تستهمی گذاه المسلم و تستهمی المسلم و تستهمی گذاه المسلم و تسلم و تسلم

مے تغی ہو کیونکرانسان کسی حال اور کسی رتبہ کا بھی ہو بیر صروری ہے کہ یا تواس کے اعضار میں سے کوئی عضو کسی گناہ کا مرتکب ہور ہا ہوگا۔ اور یا قلب سے کوئی گذاہ تابت ہور ہا ہوگا رہینی یا توجوار کسی خلاب شرع حالت میں ماور تین ہوں اور یا تلب کسی خروم خصلت یا ایسی بعادت میں ضور مبتلا

یں موت ہوں اور ایس میں اصاب ہوگا ۔ بولا کرمس کی اصلاح کے لئے تو ہم کی حاجت ہوگا ۔

ا وداگریبھی مان لیا جارے کرکوئی انسان فرشتہ میرت ا ودالیا مہذب بن گیاکاس کیکوئی عادت اورکوئن خصلت بھی ایسسی

معصوم وبے گناہ کومبی اور کی حاجت ہے

که کا میابی اوربمیٹ کی نجات ۱۳

کے آلودہ ۱۲

ہے تاریجی والا ۱۲

سے ظاہری اعضار ۱۲

نہیں ہے جس کواصلاح کی خرورت ہوتے بھی کوئی وقت توالیا خرو ہوگا جس پر بنی تعالیٰ کی یادسے اس کو خفات ہوگی ا ورچ بھری تعالیٰ کاسم ہو کر " جب لیے پروردگا رکھ مولو توفراً یا دکرلو " اس لئے پھر بھی اسس حالت سے رجوع کرنے اور خفات سے یا دکی طرف پیٹنے کی خرورت ہوئی اور اسی رچوع کا نام تو ہہے ۔

اوراگريمى مان ليامائي كركي شخص هذاكى يادي سران ستغرق اور موب ككونى لحظ من تلب كو مغلل في الرَّجياس درج استغراق ووا بلكةريب قريب نامكن ہے . تام اگراليا مان بى لياجامے توم كبير كے كرانسان ص مقام اورس مرتب مي الاسان ص مالى مرتب مي سيني سے يسط يبيع مير مى توبركامحتاج ب كيونكر برمقام اور برمرتب ليف عالى اور ما فوق مقام ومرتبه كے اعتباد سے ناقس كم لا تاب، اور ناقص سے با بركانا اورعالی دکامل پرمیخیا کم من میاازی ہے۔ بس جب تک می اس پر بیے گا توفرور قوم كاممتان سيعكا . اورجب دومرے دربديرسيني كا قوي كر وه درجر می این ما فوق درجر کے احتمار سے ناتص ہے اس لئے حب تک اُس مع بابرنه نعلے اوراویرندمینے اس وقت تک وہاں بھی توب کا ماجمند بوگا، اى طرا سىلىلى منايد كاكر جول جول ترقى كرا كادول دول توبركا مرورت منديوتار يع اوريونكم راتب قرب فعا وندى يغرمتنا ي رييني کوئی مرتبھی الیسانہیں جس کے ما فرق اور بالاکوئی دوسسا مرتبہ ہ ہو الہذا كوئى مالت مجى ايسى خيط كى جس ميں انسان كونسبتاً ناقص مرتبعي بيسنى وجهے خطا واقع اجزا ورعالی مرتبہ تک نرینجنے کے سبب توبر کا ضروت مند نرکہا جائے یہی بات ہے کہ جناب رسول انٹی صلی الٹر علیدولم ان مصوم حبے گناہ ذات کے متعلق فراٹ تے ہیں کہ سمیں رات دن میں ستر مرتبہ توبہ ا دراستعفار کرتا ہوں ؟

پاں مضرورہے کہ عام لوگوں کی توبرظ اہری گناہوں سے ہواکرتی ہے اورصالحین کی توبہ باطنی گناہوں اور مذہوم اخلاق سے ہواکرتی ہے اورتین کی توبہ اس کے استظا سے ہوتی ہے اورتین کی توبہ اس غفلت سے ہوتی ہے حص نے ذکر الی کو کسی لحظ میں مجلادیا تھا ، اور عارفین کی توبہ اس مقام ہے ہوتی ہے میں بر پہنچے ہوئے ہی گراس کے عارفین کی توبہ کا ما فوق دوسرا مرتبہ ہے سب بر پہنچا ایس ہے ۔ اور چوبی بھی تعالی کے ترب کے مراتب ومقا مات غیر تمنا ہی اور میشا دیں اس کے عام کی کوئی تشاہی اور میشا دیں کا کوئی توبہ کا کوئی تعتبین ہے ۔ کوئی تشاہی دورہ اس کے عام کہ کا کوئی وقت معین ہے ۔ کوئی تشاہی اور دورہ اس کے حام کہ کا کوئی وقت معین ہے ۔

شرائط توبیک پورا ہوجانے پر قول سے میں شک میں میں کہ در انہ ہوئے کے میں ہیں کہ انسان کے قلب ہیں انوار سرفت کی تجلیات کے قبول کرنے کا متعداد پیدا ہوجا ہے۔ اور نلا ہرہے کہ انسان کا قلب آئیندکی مانندہے جس پر خواہ شات نفسانیہ اور حرص و ہوا کے باعث غبار جم جاتا ہے ، پاگناہ کی

وجه سے سیائی جا باتی ہے ، مگرنیک کام جو مبنزلہ نور کے ہیں اپن روشنی اددی کدیک ہے اس ٹارخی کودور کرے آئینہ قلب کی میقل کرتے دستے ہیں اس لئے حب انسان کوئی بُرا کام کریے گا اور نادم ولیٹیمان ہوکرتی تعلیم کی طرف متوج ہوگا تو صرورایسی حالت ہوگی جیسے کیڑے برصابن لنگلے سے ہوتی ہے کداگرماین یا قاعدہ لگا باگیا ہے توکوئی وجرب یں کمیل ناتھے، اسى دار اگرول اخلاص وتوجه كے ساتھ خداكى طرف متوج ہواہے تومىحن نہيں كرقلب مين صفائي وانشراعح ا ورتجليات مونت كى استعداد وقابليت نهيدا ہو۔ ان بعض زرگوں کو تور کے بعد قبولیت تو ہیں ہوشک ہواہے وہ حقيقت مي قبوليت توب كي شرالط جح بون مي شك بواس كرض المعلوم سارى مرطين يورى ہوئيں يانهيں ۽ جيسے کوئن تعفی سہل دولينے اور پھر بھی اس کودیتوں کے آنے میں شک ہوتو ہٹک دوا کے دست آور ہے یں بیس ہے بکداس امری شک ہے کہ سبل کی شرائط اوری طرح ادا گھٹی یانهیں بعینی دوا کے اجزار بوری مقدار پرتھے بھی یا کم دیش ہو گئے بموسم ووقت اسبال کے مناسب سمی تھا یا نتھا ۔ اوداگران جلدامور کمیں اطبیا ل ہوتو سردستوں کے آنے اور غلیظ دمتعقن مادہ کے خارج ہوجانے میں جس شک نہوگا۔ اس طرح اگر تو بر کے تمام شرائط بی ہونے کا پورا لیقسین ہوما سے تو محمراس کی قبولیت میں شک بونے کے کوئی معنی انتہاں ۔ غرض حبب ثابت ہوگیا کہ برخض کو توبہ کی ضرو دست ہے اور مرفر ارتر

اس معالی کامتا ی سے تواس میں غفات کر اٹھیک سے کیونک

الم كمل جانا يا فرحت ١٠

غفلت ا ودہوا سےغنس ابیبامہلک مرض ہےجس کی وجہسے انسان صنداکی معسیت اورگناہ کے کام پرا صرارا ورمدا ومِت کرنے لگتاہے ۔ اور فاہرہے كهاصراريعني بار باركرنے سے صغيره گناه مي كبيره بوجا تاہے بيس جب س اسرار کو چود دوگے تواس باطنی مرض سے نجات مل جاسے گی۔

مرض غفلت باطنى جمار امراض خوب يادر كمو كه غفلت كاباطبى مرض بخار ،جاڑا ، میشی بھوڑ ا مدلی سے بڑھ ا ہوا ہے !! وغرو مین حم کے ظاہری امراف سے بہت بڑھا ہواہے ۔ اوراس کی کی وجر بی :

ا **و**ل تواس ورجسے کہ بدن کے امراض نظرا کتے ہیں اور بیرمن نظ نہیں ہتا ۔ اس کی مثال ایسی مجوجیے سی تحقیق کے چیرہ پر برص کے داغ سفید ہوں ا وراتغا تی سے ہ کینہ مجی موبو ونہ ہوجس میں مُنہ دیجھے کوابنا مرض معلوم کرتے تور مِن زیادہ خطر ناک ہوگا ،کیو نکھکن ہے کہ دوسرے کے کئے کا اس کویقین نہ آئے اوراسی ہے اعتباری میں اس کا حمض دن بدن بڑھتا جگئے ووم ۔ اس وجرسے کے غفلت کے باطنی موس کا انجام انسان نے و کھانہیں اوراس انجام کے ندر کھنے ہی کی دہرسے ہی تعالی کی معافی میروس كركے الساعلىن اوربے سنكر ہو بيٹھاكم طاح كى طون مطلق توج ہيں كرتا ۔ بر خلات بدنی امراض کے کہ ان کا نتیجہ وانجام اس کے تجربہ بن ایکا ہے اور اس لئے بیاں مدا پر عمروسنہ بیں ہوتا بلکہ علاج میں غابت در در کی کوشش ك جاتى ہے حالانك ظاہرہے كہ مرقع كے جلد امراض كا بيداكمينے والا اور

له ضادمزاج سے بدن کا بگڑھا نا ١٢

شفا دینے والا وہی ضرابے نحاہ امراض حیمانی ہول یا رومانی اور ظاہری ہوں یا باطنی ہ

طبیت فودم بین گئے اسوم ۔ال دجہ سے کال باطن مون کے طبيب مفقود بوطئ . ا دريه بات نهايت ا درجہ انسوس وحسرت کے قابل سے کمونک اس قلبی مرض کے طبیعی علما رمٹر بعیت اورعقلار زمانہ شخصے ، اور وہ نو وباطنی بمارلو یں مبتلا ہوہسے ہیں بچرحب ان کو اپنے ہی علاج کی خبرہیں آور ومروں کاعلاج وه کیاكریں گے - ظاہرہ كرسب سے زياده مهلك مرض دنيا اور مال دنيا ک مست ، اوراس زا قریراً شوالی می سب سے زیادہ اس مون میں علماری گرفتارنغرائے ہیں ۔ اوریہی وجہے کہ دوسروں کودنیا کی محبست سے دو کے ا ورمنے کرنے کی ان کو جراً ت نہیں ہوتی ، بلکدائی رہوائی کے اندیشہ سے وہ بیجی بہیں ظاہر کرسکتے کردنیا کی مجت بڑی پیزاوریاطی امراض میں السام بلک مرض سیص سے جانری دیٹواںہے ۔ لیں یہی وجہ سے کہ برم ض لاعلاج بوكيا كيونكر حب طاعون يا وباكى مرض عام طور تييس ما مع اردوا کایته بن مل سے اور طبیب خود مریش اوراسی مرض کے بیار بنے ہوئے ہول تو بعلااس سے نجات کیونکر ماس ہو۔ سب سے زیادہ معیبت یہ ہے کہ ان رومانی طیبولینی علماری دکیمادیمی عوام الناس کومبت دنیاکی رغبست برهكى اوريبريا وواوعلاج كىطوب توية كمسفك كونى سبيل بعى باتى ذري كيونكيبي وه اصحاب ين جن ك تقليد كى جاتى سے اورعام آدى انہى كواينا

پیٹوا اورمقتدار سمجھے ہیں ، بیں جب انہی کو مجت دنیا میں گرفتار دکھیں آلا کھر اس کے اچی بات بجو کرکیوں نہ اقتدار کریں گے ؟ اور جب انتساد کریں گئو مجراصلاح کی کیاصورت ؟ انسوس کرجن کو طبیب بناکر دنیا میں بھیجاگیا ہما ، انہوں نے بجائے علاج کے مرض کو اور بڑھادیا ۔ جو لوگ صلح بن کر اس سے ہے ، وہ مضد بن گئے ۔ اور جن کو رمبر تجویز کیا گیا تھا ، وہ تو دگراہ ہوکر دومروں کا داستہ کھوٹا کرنے کے دلیا ہوگئے۔ گویا شریس چنہ کے دہانہ پہر دومروں کو پینے دیں ۔ اے کاش ! ان سے دنیا خالی ہوجائے ، اور بہتی رو ہانہ سے ترک جائے ۔ اگر وہ خود نا قابل ہیں تو نا قابل ہی ہیں ، مگرت پھر کا دھا نہ کیوں رو کے ہوئے ہیں ، پہر ہوں ، انگ سٹیس کہ دومرو سے تھے۔

بوں اس باطنی مرض کا خلاصہ علاج یہ ہے کہ سبب ڈھونڈ واورگناہ کے اصرار مرتو تیکر و کہ کیوں ہے ؟

یا درکھوکرکس گناہ پرچوا صرار ہواکرتا ہے تومفعیّلہُ ڈیل پانچ اسباب میں سے می ایک سبب سے ہواکرتا ہے :

گناه براصرار سونے اور توبر مذکری اقبل یا گناه پر جوسندا سی میالی و مید اوراس کا عسلاح سی می و حبد اوراس کا عسلاح

اس کا علاج یہ ہے کموجینا اورجاننا جائے کہ جو بیز ایک نرایک دن ضرودانے والی ہے وہ قربیبی ہے کیونکر بعید تواس کو کمنا جاستے ہوائے نہیں ، اور جوایک دن آنے والی سے وہ تعید کہاں ہ خصوصاموت کرس کا آنانینی می ب اور میراس کا وقت می مقرنهیں تواس کے بعید ہونے کا تومعیٰ ہی نہیں کی خبرے کہ آج ہی کا دن آخری دن الح يىمبىناتى مىنادى التمارى عركاآ توى سال بوراس كى طرف غفلت کرناحماقت ہے میریمی سوتو کم آئندہ کے افلاس کے اندلیشیرے معاش کے مال کرنے کی فکریس تم کیے دور دراز کے سفراور معائب برداشت كرتے ہو ، توكيا آخريطي يا مُدارزند كي كا اتنا بھي فكرد ہو جتنادنیا کی بہت می جلدخم مو موانے والی نایا مرار زندگی کا بوتا ہے توبين آج كل كرفيكا دوسناسب يب كنفس كو ایی مرغوبخواستون اورلد تول این کا این مرغوبخواستون ان کا حیور اس کو ناگوارگزرتا ہے۔

اس کا علاج یہ ہے کہ سوسی اور غود کروکہ اگر کوئی انگریز ڈ اکھ الیہ کہ درے کہ '' میاں شخرا یا نی تہیں مفرسے تم اس کے یاس ہی جانا ور در مرحا و گئے ہے تو میں تم سے پوچیتا ہوں کہ ڈاکٹر کی اس نفیعت کا تم پر کیا اثر ہوگا ؟ ظاہر ہے کہ زندگی برباد ہوجانے کے فوف سے مخت کا تم پر کیا اثر ہوگا ہے تا اور انسان می کا صند ۔ ہیں اس ہی حجوط ایک کی مفریت لائی ہوئی کے بیسیوں احتمال کل سے تی ہیں ۔ بھر عملا خدا و ندگر کی کی مفریت لائی ہوئی کے بیسیوں احتمال کل سے تی ہیں ۔ بھر عملا خدا و ندگر کی کی مفریت لائی ہوئی

تخاہشات کو توڑ نے میں کیا تامل ہے ؟ کیا الٹرا ورالٹر کے ہے رسول کا آٹ ملیہ وسلم کا ارشاکسی کا فرطبیب کے قول کے برابر بھی نہیں ہے ؟ یا جہانی مرض سے مرجانا کیا ہمیشا گئے میں جلنے سے بھی زیادہ تکلیف والا ہے ، بہر یہ ہمی توسو ہو کہ جب ہم ہمارانفس اس قدر لذرت بیندا ورخواہشات کا پابند ہمی توسو ہو گئے ہمیں جندر وزر کے معمولی لذکوں کا چوڑ نا بھی اس کو شاق گرزنا ہے تو میہاں ان نا پائدار لذکوں کے مصل کرنے کی بدولت جب انزرت کی وائی تعمین جی تھی تو ان کے چوڑ نے اور بہیشر ہمیشہ میسیشہ میسیشہ کے انگل میں سطنے کی وہردا شت کس طرح کرے گا۔

تلیسراسبب اوراس کامل کا بلی کاسبب پڑھایا اوریشوشرچوڈ دیاہے کرمیاں توبر کی ایسی علدی ہی کیا ہے آج نہیں توکل کرلیں گےغرض اسی طرح دن گزرتے رہتے ہیں اور توبر کی توفیق نہیں ہوتی ۔ اس تعویق ، اور تاخیر اور آن کل میں وقت برابر ہوجا تاہے اور موت آجاتی ہے ۔ پس اگر گذاہ پرامرار کرنے کا باعث یہ کا بل ہوئی تواس منمون کوسوچنا جا ہے کہ انجام کا حال کسی کو معلوم نہیں کرکب ہوگا ۔ کون کہ سکتاہے کہ تم کل زندہ نمی دہو گے اور توبہ نعید بیج جائے گی ؟

خوب یاددکھوکہ ایسے ہی لوگ جنم کاامنے حض بنیں گے جنھوں نے توبر کرنے کوام وزفروا ہیں رکھایہاں تک کہموت نے ہم پچڑا ۔

دومرے یہی سوچنے کے قابل بات ہے کہ جبنفس کو لڈسٹ کا چھوڑ ناآن د شوار ہور ہاہے تو مجالاکل کو جب کہ شہوت کی لذت اور مفبوط ہوجا سے گی تونفس سے کیون کرچھوٹ سے گی۔ اس کی مثال توالیں ہوگی بیسےتم کوکسی درونت کے اکھاٹلسنے کا سم ہوجا سے اورتم یوں ہو كهناب اس سال ونهيس بال الكر سال الكاثرون كا رحالان تم خوب حانتے ہو کہ درخت کی جردن بدن مضبوط ہوگی اور تمہاری قرّت وفرو زی گھے گی اوبضعف برسے گا۔ بیں بس درخت کو آج نہیں اکھاڈسے تو اس کوآئنہ سال كس طرح المعار وكي ـ

ا چوتھاسب یہے کنس نے حي تعالى كے عفو وكرم كاكرزومن

يوتفاا وريانجوال سبب اوراك كاعلاج باركمك ادريشوت جوردياب

كمسال خذاكوبهاد الكابول كى يرداه بى كياب وه براعفور دحم ب رساك گناه بخش دیسےگا۔

نوب یادرکھوکہ نفس کی مگاری اورصیا ہوئی ہے کہ شیطال نے آل وطقره برحيط صاكراب كام بنالياا وراس غره كوابى كاربرارى كاآ أركوال لياكج مُعْمِيتْ مِن آياب كر "عقلندوى بحس في لي نفس كومطيع باليا اورمرنے کے بعد کام نہنے والا ذخیرہ جھے کیا ۔ اور احق بے و تحصی نے فابتات كااتباع كيااور بيرضل يعفووكرم كالدزومندرات

یانچوال سبب پرے کمعاذاللہ قیامت کے بونے اور معاطرة خرست كي بيش آفيس فنك ياستبرب واس كاعلاج احلاتي ذميره كے خاتم يس بيان بوسكاب وبال دنيواوراس كموافق یوں توتمام گذاہوں سے تو برکرنا ضروری ہے مگر کمبرہ گذاہوں سے تو برکرنا تونہایت ہی صروری ہے۔ اور پیم لوم ہوجیا ہے کہ

صغیره گناه پراصرار کرنا محمره گذا<u>ه سے</u>زیاده ضربی

مغیره گناه بھی امراد کرنے سے کبیرہ ہوجاتا ہے۔ بلکسغیرہ گناہ جب بارباد کیاجاتا ہے توایک مرتب بحدی کبیره گناہ کرلیے کی برنسبت قلب کوزیادہ میاہ کرویتا ہے۔ اس کی مثال اسی ہے جیسے "کسی سخت تجو رہا لیک ایک قطرہ کا بارباز تواتر ٹیجنا اور کیبار گی موسلا دھار بارش کا برس جانا یہ یظام ر ہے کہ ایک قطرہ با دہود یکے حقیراور بہت ہی بے وقعت چیزے مگر بارباد پر سنے کی دجہ سے ایک نہ ایک دن تجھ دس بھی سودان کردے گا برطا موسلا دھاد مینے کے کہ اگرچے وہ کئی لاکھ قطروں کا مجموعہے مگر کیب ارگ

برسے سے اس کا دہ اثر نہوگا ہو ایک تعلوہ نے آہستہ آستہ کردکھایا تھا۔ اس طرح چیوٹاگناہ آہستہ آستہ قلب پر بھواٹر کرتا رہتا ہے وہ کبیوگناہ کے بحب اگی اثر کی برنسبت بہت ہی اندلیشہ ناک ہوتا ہے ، اوراس کے بعب سر

کی کئی وحب ہیں ہے۔ اندا

اول وسیر تویی کاه کی دین میں وقعت نہیں ہوتی اوراس کو معمولی گئاہ کی دین میں وقعت نہیں ہوتی اوراس کو معمولی گئاہ کے کہ اس کے عرضلات کی ورائ کے کہ اس سے بحینے اور باز آجانے کی طرف توج ہوجا سے ۔ اس سب امید ہے کہ اس سے بحینے اور باز آجانے کی طرف توج موجوب کے دائی ہے کہ کامش سالے مزہوگی وہ گناہ ہے کہ کاشس سالے کر کان والسی ہوتے ۔

وومراسیب برہے کصغیرہ گناہ کوبساا وقات انسان نعر سیمجھتا اور نوش ہوتا ہے۔ چنانچر لوگوں کو اکتر کہتے سناہے کہ " دیجھا ہیں نے اس کو کیو بھر ہوا ہدیا ، کیسا بدلہ لیا کہیں آبروخاک ہیں میلادی ، کبیسا دھوکہ دیا یا اور ظاہر ہے کہ گٹ ہے ہر نوش ہونا زیادہ صفرت رسال اور قلب کا سیاہ کرنے والا ہے ۔

میسلسبب یہ ہے کہ اکثر تی تعالیٰ کی بددہ بوش کو بنظر مقارت دیجتااور اپنی کرامت و بزرگ سمجے گئاہے ، بینی یہ خیال کرتاہے کمیں خدا کے نزدیک فری مرتبع میں ہوں کہ میرے گناہ ظاہر نہیں ہوئے ۔ اور یہ نہیں ہوئے کی نہیں ہوئے کی اور یک گؤت دور پڑا ہوا ہے ۔ اور اسفل التا فلین ہیں جو نک دیا جا ہے ۔ اور اسفل التا فلین ہیں جو نک دیا جا ہے ۔ اور اسفل التا فلین ہیں جو نک دیا جا گئاہ کا میٹر ہوئے کی بناء پر لوگوں ہیں فلا ہراورٹ نک کرتا ہو تاہد ، حالانے میٹریٹ میں آیا ہے کہ تمام گناہ گار دینے ہا تیں کے مگرگنا ہوں کا اعلان وافشار کرنے والے لوگ نہ خشے جائیں گے ۔

پانچوس ، اگرسی عالم یا صوفی معنی مقت دار سے کوئی صغیرہ گناہ ہوتا ہے تواس کا اثرا و رجی زیادہ مجرابط تاسے کیونکہ عام لوگ اس کو دکھے سر اس گناہ میں بیبا کا منسبتلا ہوجاتے ہیں، اوراس طرح پرگناہ کا ایکسلسلہ قائم ہوجا تاہے ، گویا چیوٹی وگناہ اتنادراز ہوجا تاہے کہ اس کے مرنے کے بعد بھی باقی رہتاہے ، اس کی دیچے ادیجی جن لوگوں نے بھی اس گناہ کو اختیارکیا ہے سب کا وبال اس کے نامر اعمال میں ورج ہوتا ہے اور ظاہرہے کہ باقی رہنے والاگناہ ختم ہو جانے والے گناہ سے بترہے اور یہ بھی ظاہرہے کہ اس گناہ کا بقار صغیرہ ہونے کی وجہ سے ہی ہوا ہے بس خوشا قسمت اس کی جو اپنے مرنے کے ساتھ لینے گناہ بھی دنیا سے بے جائے۔

بنی امرائیل میں ایک عالم نے دب لینے گنا ہوں سے توبر کی تواس زمانہ کے پینپر رپروی نازل ہوئی کہ اگراس کے گناہ میرے اوراس کے درمیان ہی رہتے تومی بخش دریتا ، سگراس نے تومقت ارسجومیرے دومرک بندول کو بھی گنا ہوں میں مسبتلاکیا اور جہنم میں واخل کرایا۔

خلاصہ یہ ہے کہ توبکرنا ہرگذا ہ سے ہرفردیشر ریضروری ہے ۔ اور توبہاسی وقت ہوسکتی ہے جبکہ دل ہیں خواکا ٹو مذہو ، لہ نڈامناسب ہے کہ ٹوٹ کی فضیلت بیان کردی جاسے ۔



خوف كابيان

ى تعالىٰ كا خوف جارنيك كامول مي رغبت كرف اورتمام كنابول سے محے کا ذریعہ ہے ۔ فون کرنے والوں کی ثنان بیں حق تعالی نے بدآیت ' رهت علم اوريه مناكى محود لتربي في الله الموضى خواس ورا أب، اس سے بریٹے ڈرنے نگی ہے ۔ بی تق تعالی فرما تاہے کہ محی بندہ کو درو خوب نسب نه يول گے ۾ نعني بوسنده ونيايس خلاکا نوت رکھے گا وہ آخرت مي ب فون بوكا ، اور ودنيا من خداس ندر دا اس كآخرت ين امن واطبينان نعيب مربوكا

خوف كى حقيقت أور خوت كے حقيق منى يابي ككى آنوال مكلت كے اندلیشرے دل د کھے اور وال

عال كرنے كا طريق، اليدا بواد ديظا برب كرب تك يق قا ك صفات جااليه كى موفت مصل م ہوگى ، اس وقت تک نوف پيدان ہوگا ۔ا درحبب پراچی طرح ذین شین ہوجائے گا کہ خدا ونرتعالٰ برحوثی ع جون اوربري سے بڑى چيز مياليا قادىسے كدم ميں جو ما ہے كرك كالمخلوق مي كوئ عض يول جي تبسي كريستا، تواس وقت توت

ا در خثیت بیدا ہوجا سے گا۔

بس اگرخون بیداکرنا جاستے ہو توسی تعالی کے مطال اوراس کی بے نیدازی پنظر کرو اور سو ہو کہ جت بیدا وراس میں جانے والی خوق میں اس کے لئے توز ہو تھی ہے ، اس طرح دورن جی موجو داوراس کے مزاوار مخلوق ہی تعین ہو تھی ہے ، اس طرح دورن جی موجو داوراس کے بندی ہو تھی ہو اور تیرا خاتم کی سام ہو تھی ہو

نوب یادرکھوکہ انجام کے فئی دپوشیدہ حال سے نڈر وی شخص ہوں کتا ہے کہ ان ہو ، لہذا مناسب ہے کہ ان کا میں اور خاصان خوا کے حالات پڑھا اور شناکر وجن کومع وست میں کا ملین اورخاصان خوا کے حالات پڑھا اورشناکر وجن کومع وست میں کمال حال ہے ، بعنی انبیائے کرام علیج السلام اورا ولیار وعلمار و المی میریت رحیم الٹر تعبالی ۔ المی میریت رحیم الٹر تعبالی ۔

دیجیوان مخرات کوبا و ہود کمال درج تعرب کے کس قدر تو و متحا۔ جناب دسول مقبول ملی الشّرعلیہ و کم فرمائتے ہیں گرج بجبی چبریل امین میرے پاس دی اسی کر آسے توخل و نرجیّا روقہتا دکے خوف سے لرزستے اورکائیتے مہوے آسے و صفرت ابراہیم علایل صالحة والسلام کا قلب نماز کی الت

له عواقى كية بي كذاب نهي البنة تيامت بي اليابهد في وايت كما البخطة على الوشيخ كي بولا

میں نوٹ کے سبب ایسا ہوش مارتا تھا جیسے ہو لھے پر ہا ڈی کھولتی ے اوراس بوش وخروش کی آواز ایک بل کی مسافت سے سناتی ویا كرتى تقى يصرت واؤ دعليات لام جاليس دن كامل مسجود كريكت رسے پیال تک کہ آنسوؤں ہے اس یاس کی زمین برگھاس سیدار پھنی۔ حضرت ابو بحرصديق أشف ايك برندكو مخاطب بناكر تول فرما يأكر الم كاش برسي تحصيبا برندي بوتاك شربيت واحكام ضاوندى كامكلف بنهوتايا کاش بیدای نه بوا بوتا یه حفرت الودر منسرات به کاش مکیں درخت بوتاكه كاط لياجاتا ؟ أمّ المؤمنين حضرت عاكث متريّية فرواتي بي که "کاش می تو تعولی سری بوجاتی ا

غف نوب یادرکھو کرجن حضرات کوسی تعالی کے نیازی اور حلال كى مونت كال بووه برگزيمى يے نوف اورنڈرنہيں رہ سكتے .نڈر ہونا المغيس غفلت شعارا مرار كاشيوه بسيحن كى ندلين خاتم بريغ رب اور نز اصلاح آخرت کی جانب توبقر ۔ بیغفلت کے بیٹے اس بے وقون سیتے كى شلى بى ص كوزىرىلى سانى سىمى درنىسى لكنا ، مىرىجىدوسرى كي محمدات سيحد لوجاتات بس اع كاش حس طرح ناسمجد عداين سمجه وارباب كوسانب سے ڈرتا اور يحيّا ہوا و يحيمكر توديجي سماگت اور عقل سيكمتاب، اسي طرح غافل وبيخرمسلمان بمى ليغصن ومرتي وحالى طبيول اورخاصان ضلك حالت نوف كمشابده سعبرت بجطس

خوف کی زیادتی مزموم وضریح بے جوانسان کوسعادت

ابدی کی جاب دو ڈا تا ہے ۔ اب ذاسی موتک بسندیو ہے جب تک نیجیکاری کا الربنے ۔ یعنی انتازیادہ نہ ہوکہ بیجار بنا دے اور مالوی کی مدتک پنجاکہ اعمال چھڑا دے ۔ البیا صدیے بڑھا ہوا تو ون جس سے ناامیدی بسید اجوا میں خوت میں آتا ہے کہ " ایمان خوف اور المبید کے بین میں آتا ہے کہ " ایمان خوف اور المبید کے بین میں توف کے ساتھ دجار بینی امید بیمی خود کے ساتھ دجار بینی امید بیمی خود کے بین بی البیار کی المبید الله کا حکم ما در ہو کہ دونوں کو مساوی ورج پر کھے ۔ چیا نی خورت عموار وق کے ایک مرتب ارشاد قرایا کہ " اگراللہ پاک کا حکم ما در ہو کہ ساز میں کے ایک مرتب ارشاد قرایا کہ " اگراللہ پاک کا حکم ما در ہو کہ ساز میں کرتا ہوں کہ وہ خوش میں ہوں گا ۔ اور اگریز فر مان صاور ہو کہ دوزخ میں صرف ایک بی خوف ہے کہ وہ خفی کہیں میں مروف ایک ہی خاص اوات ہوں کہ وہ خوف کے لیے مراب ہیں ۔ ہول گا ۔ اور اگریز فر مان دونوں کے لیے مراب ہیں ۔ ہول گا ۔ اور اگریز فر مان دونوں کے لیے مراب ہیں ۔

لا یہ اصل عربی کتاب میں نہیں ہے او

له برانگیا ہوا ۱۱

اق ل توصعت ونقابہت ا ورمض کی دجہ سے کچے ہوتا ہوا تانہیں ا وراگر اس حالت میں خوف خالب ہوا تو ہو کچے ہوراہے اتناجی نہوسے گا بائکل ہی انتہا تا تا ہے کہ میں گے ۔ میں ہے ہے کہ سلمان کومرتے وقت اپنے خداکسا تن کے گمان رکھنا چاہتے ہے

ظاہرہ کرنیک گمان ای وقت ہوگا حبير كمحونك اعمال يعي ياس بول ـ کیو یک انسان جب کاشت کے لئے ذمین میں بچ ڈالتا ہے اور نیولانے یا یانی دینے کے متعلق اپنی ہیسی میں کچھ کولتیا ہے تواسی وقت خدا کے فضل يريع وسركر كيسيدا وارى اوربوست مهوست كحاطننى الميدرك سخاسير ـ اورسيب يج بنهيس والا اورائسى حالت مي اناج كى طلب و خوابش ركمي تواس كورمار والمدنس كيتر، بلكمتنا وربوس كيترب اورتمنّا وبوس شيطاني دموكرب راسي ليريق تعالى فرماتاب كم "بو بندے امیان لائے اور پھرت کرگئے اور فی سیل الٹرجہا دکیا وہی الٹرکی رحت کے امید دار ہیں ؟ اس معلوم ہوگیا کر رجار وامیری کوشش کے بعد ہواکرتی ہے ۔ جس طرح کا شنتکار ہونے ہوئنے کی یوری محنت کر لینے کے بعی نتفل ہوتا ہے کہ اگرآسمانی آفت سے معاظت ہوگئی اور بجلى اورآگ وغيو سے كميت كوئق تعالى نے بچا مع د كھا توامير سے كم جننائج ڈالا ہے ایک ایک کے بیالے سرمتر بلکداس سے معی زیادہ حاسل ہوں گے ۔ اس طرح مسلمان کوخداکی طاعت میں بوری مشقّت احمانے

اورمجابدہ وریاضت کرنے کے بعدا سیدر کھنی چاہئے کہ اگری تعالیے نے اپنے نفسل سے میرے اعمال وافعال کو تبول فرمالیا تو ایک ایک نیک کا سات سات سوگنا بلکداس سے می زیادہ اجر صلے گا۔

خلاصہ یہ ہے کہ فونِ عذا کے باعث معاصی اور ضداکی خلاصہ یہ ہے کہ فونِ عذا کے باعث معاصی اور ضداکی نافر مانیوں سے اور امید در محت کے سبب نیکیوں میں رغبت بیدا ہونی چاہئے یہ بس فوت کواسی وقت معتبر محبوص ہے وہ کم کو معسبت سے دو کے اور اگریں ماصل نہوتو وہ نون نہیں ہے۔ بلک عور تول مہیں وقت قلبی اور وہم وخیال ہے جس کا کچھ اعتبار نہیں ۔

اودچونئ خون جب کمال پرسٹی اسے تو دنیاسے بے ڈتی پیدا ہوجاتی ہے جس کا نام زہہہے اس لئے مناسب ہے کہ کچھ ڈیلم کا سیال کردیا جامعے ۔



تىرى ل دەركابىيان

م علم كا تمره اور صدى علامت بي المن تنسالي فراتابي المعمد ومراد المامية المراد المامية المراد والمراد المراد والمراد المراد والمراد المراد المراد والمراد المراد والمراد المراد والمراد المراد جاه کی طرف نظراتھاکر مذر کھیو ہو ہم نے کا فروں کو دنیا کی تازگی کی منس سے دے رکھاہے کیونکاس معقوداً کو فتنرمیں ڈالے رکھناہے۔ اور تهارے بروردگاری ک عطامبتر اور زیادہ یا مُدارے ؟ اورقارون ملحون کے قصری ارسٹ دیے کہ" قارون بَن سنور کیٹھا تھ كے ماتھ جلوس میں نكلاا و بعض لوگوں كو يرتزك وامتشام ديجھ كر حرص بوئ توجن لوگوں كوعلم مرحمت بهواتها وه كينے لگے كما فسوس تم اُس نا يا مُدار يرك حرص كرتي و وكيوى تعالى كالواب مب سيرتيزير بي اس فقتہ ہے معلوم ہوا زیدعلم کا غرہ ہے۔ دسول فیول صلی الشعليرول فراً تے ہیں کہ ' وَتَحَفَّصِ اصْحَةِ بِي دنيا كے غميں گرفت اربوجا تاہے ہی تعالى اس كادل بريشاك كرديتاييد، اور لمتأاى قديس مبتناكه اسسى كى تقديرين لكحاجا بيكاب واوبوشخص سج اطفتى كآخرت كي فكرس لك

جاتا ہے تو بق تعالیٰ اس کا قلب طمئن رکھتا اوراس کی دنیا کی تو دخاظت و کفالت فرمات ہے اس نیک بندے کا دل غن کر دیتا ہے اوراتی دنیا مرحمت فرمات ہے کہ بیمنہ بھیرتا ہے اور دنیا اس کے بھیے بھیے بھا گی جی تقی ہے ہوں تعالیٰ فرما تاہے کہ "اللہ جس کو ہوا بیت دنیا و رواض فرما دیتا ہے ، سی ایک نور داخل فرما دیتا ہے ، سی ایک نور داخل فرما دیتا ہے ، سی ایک نور داخل فرما دیتا ہے ، سی سے اس کا سید منشر ہو ہواتا ہے ، سی صحابہ نے دریا فت کہا کہ ایس کی خاص ہو اس کی شناخت کیا ہے ، ایس کے فرما یا کہ " دنیا ہے و تریا ہے تریا ہے و تریا ہے تری

اس کے قلب میں اللہ علیہ وسلم فرائٹ تے ہیں کہ رسمی کوئی تعمالی زاہدینا تاہے اور دنیا کی بیاری وعلاج سے گاہ کر دیتا ہے اور دنیا کی بیاری وعلاج سے گاہ کر دیتا ہے اور اس بجہان فانی سے بے لوث باہر بکال کروا رالسلام میں بہنچا دیتا ہے اس کے بعد صحابہ نے فرایا کہ "صاحبو ابھی تعالی سے حیار کرو یہ صحابہ نے موض کیا کہ یار سول اللہ اور سیات میں یہ اس نے ہوا ور ہوگا ہیں فرایا کہ "جہال رہنا نہیں ہے وہال مکا نات بناتے ہوا ور ہوگا ہیں سے دیا ورکھو کہ بندہ کا ایمان اس وقت کا مل ہوتا ہے جب گوش کہنا ہی میں بڑے ہے ہوئی ہرت سے ذیا وہ بندکرے اور دنیا حب گوش کہنا ہی میں بڑے ہے اس کے اس کے اور دنیا

له ابن مبارک وابن ابی شید و فریابی دغیریم " که کشاده ۱۱ که میارک و ابن ابی الدنیا معنمون بهت صرفیول می اید که به الله و الدارک ۱۲ که ایدالگ و به آلودگ ۱۲

کے متعلق مرشے کی قلت کواس کی کمڑت سے زیادہ مجوب سمھے ، توب سمچہ لو کرجب انسان ونیا میں زاہد بنتا ہے تو تی تعبالی اس کواپیا مجوب بنالیتا ہو اور جب وہ خدا کا محبوب بن جاتا ہے تو مخلوق کی نظروں میں مجوب بہوجاتا ہے ۔

معیق نبدیه به افزیم واثر دمتاع کی جانب التفات نرکسادر

باوبوداس كعمال كرف كالاست كميراس كاجانب متوجرنهو

اور ذہرکی اصل وہ نورا درعلم ہے ہوالٹرکی طرف سے بندو کے قلب میں ڈال دیا جا تاہیے جس کی وجرسے میں ڈال دیا جا تاہیے اور یہ بات واضی ہوجاتی ہے کہ دنیا کے جملسا زوماما ان تھی کے پرسے بھی زیادہ تھی گرزنیا گی آخرت ہی بہتر ویا مارکی ہے تھیں ہوتا ہے توالا ہھی رُزنیا گی آخرت کے مقابلہ میں انتی بھی وقعت نہیں رہتی میتنی کی مثنی تیمت ہوا ہر کے مقابلہ میں ایک بھٹے ہوا نے میں وقعت ہوا کرتی ہے۔

اورزہدکاٹم ہیہے کہ بقدمضرورت وکغایت دنیبا پرتناعت حاسل ہوجا سے ہیں زا ہداسی مقداد پرکغایت کیا کرتا ہے حبّناکسی مسافرکوسفر کا توشر لینے یاس دکھنا ضروری ہوتاہے ۔

اوروہ صروری سامان جس کی پڑھی کو احتیان ہے یا طعام ہو پالیا آس یا اثاث البیت ۔ اور ہرا کیسٹمیں زبدکے مراتب اور مدارج ہیں تن کی تفییل ہم سیان کرتے ہیں ۔

م بی و سے اعتبار مند کے مراتب اس زیرین اعتبار سے ہوتا کا

بینی مدّت اورمقدار اورسس ۔

بیں مرت کے اعتبارے اعلیٰ دریہ کا زہد تویہ ہے کھرف ایک فت کے کھانے پر قناعت کرے بعنی اگرضی کو بھوک رفع ہوجا سے توشام کیلئے کچہ پاس نہو اور شام کو پیٹ بھر جائے توضیح کے لئے کچے ذخیرہ نہو۔ اقسط درجہ یہ ہے کرمہینہ بھریا جالیس دن کی خواک مہیا ہواس سے

ا ومطورے پرہے۔ زیادہ کی پرواہ نرہو۔

آدنی درجہ بہت کہ صرف سال میرکا ذخیرہ جح کرلیا جاسے اورسال سے زیادہ کا سامان جح کرنا تو زہرے پاکس خارج ہے۔

البته اگر محقی می کا ذرایته کسب اوتره صیل معاش کے لئے دنیا کاکو کی شغر نہو توسال سے زیادہ کا ذخیرہ جمع کر لینا بھی زہد کے منافی نہمیں ہی چیانچ شخ وا وُدطائی رحمۃ الشرطلیہ کے پاس بین درہم تھے جن پرشخ نے کامل بین سال تناعت کی تھی ، چونکہ ان کاکوئی ذرایعۂ معاش نہ تھا اس لئے بین ال کا ذخیرہ دکھنا ذیر کے خلاف نہوا ۔

مقدارکے اعتبار سے مراتب ہم ادنی درجری مقدارکے اعتبار سے اعلی درجری مقدار جسے کے اعتبار سے اعلی درجری مقدار جسے داور اوسط درج کی مقدار آدھ سے داور اوسط درج کی مقدار آدھ سے داور اعلی مقدار کھا اونی درجہ سے سے مطاف کیا ۔

بین جس نے اس سے ذیادہ مقدار کھائی توسمجو کہ ذرہر کے خلاف کیا ۔

حسس کے عتبال سے مراتب ہم الشرائی کی معودی ہی کو درجو کا کرنا ہے جس سے کھانے پرفیات کرنا ہے جس سے کھانے پرفیات کرنا ہے جس میں نغرائیت یائی جائے اگر چہاناج کی معودی ہی کیوں خرجو کرنا ہے جس میں کی کھانے پرفیات کرنا ہے جس میں میں کو انہوں کی معودی ہی کیوں خرجو

اورا وسط در در بج کی روٹی ہے۔ اورادنی در بجیبوں کے بے چینے آئے کی وئی کھا ناہے ۔ اورادنی در بجیب میکنٹر تھا اندر ہوئی ہوں کے باتھ اور اندر بھر اندر ہوئی ہوں کے اندر ہوئی ہوئی اور اور تکاری ہو زبر کا اعلی در جہسے سرکہ اور مبزی اور نمک کا استعمال ہے۔ اورا وسط در جر جیکنائی کا استعمال کرنلہے۔ اوراعلی درجہ کی ترکاری ہو زبر کا سبسے نیچ کا درجہ ہے گوشت کھا ناہے ، مسئول کے سہت کھا ناہے ، مسئول کے سہت کھا ناہے ، مسئول کے ساتھ کا درجہ ہے گوشت کھا ناہے ، مسئول کے ساتھ کھا درجہ ہے گوشت کھا نے کا درجہ ہے گوشت کھا نے کا درجہ ہے گوشت کھا نے کا مادہ ہوگئی تو زبدے بالحل با ہر ہوگیا ۔

دیکو صفرت بی بی عالکَشه و صالهٔ عنب فرای بی کر سیالیس چالیس الله علیه و کرای بی کر سیالیس چالیس الله علیه و کم گذرجائے تھے اور سول مقبول سی الله علیه و کم کے دولت کدہ میں آگ بین بیس سکتی تھی ہے متعبر ذریعی سے اب سے کدرسول مقبول کی الله علیہ و کم نے جب سے مدید منورہ میں تدم رسی فرما یا کہتی بین دن بھی گیموں کی روٹی بیست معرکے نہیں کھائی ۔ اللّٰہ مسلّ علیٰ حَبِیدِ اللّٰہ وَسَمَالِ عَلَىٰ حَبِیدِ اللّٰہ وَسَمَالِ اللّٰہ وَسَمَالِ عَلَىٰ حَبِیدِ اللّٰہ وَسَمَالِ اللّٰہ وَسَمَالِ اللّٰہ وَسَمَالِ عَلَىٰ حَبِیدِ اللّٰہ وَاللّٰہ وَاللّٰہ اللّٰہ وَاللّٰہ وَالْ

لباس کے متعلق نیر کے دیجے مرت اتنے کیڑے پر تناعت کمے میں سے ہوئے ۔ حس سے سرچپ جائے ۔ اور سردی گری دفع ہو تھے ۔

اورا دفی درجرکا زبرینی اعلی درجرکالباس بیسید کمی کودیسے کبیرے کاکر تہ یاجامہ اورا کیک روال دکھے ۔ نیس اگردو کرتے بھی یاس ہول گے

که مفون تقریبًا بخاری وسلم ۱۱

له ابن ماجه ۱۱

ك الما ين ميك مطافى من الشرطير والمران ك زبدا وركمال كى بقدر ومت نازل فوا .

توزہد ہا تھسے جاتا رہےگا۔ نہدی کم سے کم یہ توضر ورہونا چاہتے کہ اگر پہنے ہوئے کپڑوں کو دھونے کی ضرورت پیش آئے تو دوسرا ہوڑا پاکس ہز شکے بلکہ رومال باندھ کردھولے اور مھران کو پین لے۔

حضرت الوليم ريَّ فرات بي كه " بى بى عائش رضى الشعنبان مودن كا ايكران دُو مودن كا يك فإدل والكيم و ثاكرته كال كرمجه كو دكها يا اور فرا ياكران دُو كرِّ و ل بي سرود عالم على الشرعليدي لم كاوصال بهواہے ۔ ايک مرتب اسخضرت كى الشرعليدي لم في الشرعليدي كا ايک نبيا جوال پہنا اور ليب خدا يا تو فواً سجدے بين گريڑے اور فرا يا كرمھے نيسلين الم مي عمل اور موسى اور اندیث بهوا كم بی تعدالی عقد نه بوجائے اس لئے ميں تواضعاً سرجي در دوكيا به فراكر آپ با برنشريت لائے اور جوسكين سب سے پيپل نظري اس كو مرحمت مست واد با ا

صفرت عمرفاروق فی تقیمی باره پیوندگف گئے تھے حیمیں بعض چڑے کے تھے ۔ حضرت علی کرم اللہ وجہد فرماتے ہیں کہ "مقتدار پیدوری ہے کہ ادنی حیثیت کے لوگوں کا سالباس پہنے تاکہ امرار اور اہل مال اس کا اقتدار کریں اور فقرار وٹا دار لینے کو شاوحقارت مذریحییں ۔

مكان كمتعلق زيد كوليح نبركااعلى درجرب يرب كم سافرخان يامسيد كري مي زندگ گذاردے ـ اوراعلى درجركا

لہ بخاری وسلم میں صحابی کا نام ابوبروش اصل پر بھی ہے اجیا دانعسلوم لمیں ہی ہے۔ لاور مدیثیوں ہیں ہمی ہے) مترجم نے مہوّا ابوہر بریہ لکھد یا ہے تا

مسکن یہ ہے کہ سکونت کے لئے کوئی خاص جگر تجویز کریے لیسٹی بقد بھرورت ایک چود خواہ خرید لے یا کراپر پسیا بشرط کیر حاجت سے زیادہ اس میں وصت مزموا ور مذاس کی اونچی اونچی دیواری میوں نقلعی چونا کہ گل کیونکر کہ گل یا اسٹر کاری کے مکانات میں دہائش تو زیر سے خادرے ہے ۔

حضرت عبدالڈبن عرص فرواتے ہیں کہ ہم مکان ہیں چوناکی استرکاری کر ہے تھے کہ دسول مقبول ملی الڈعلیہ وسلم تشریف لاسے اور فروایا کہ سسیاں وقت تواس سے پیپلے ہراہر ہوجانے والاہے یہ مطلب بہتھا کہ انسان کو ناپا مَدار زندگ گذارنے کے لئے اس استحکام و پا مُداری کی کیا ضرورت ہی ہے موت آجائے گی اور بیہیں وحوارہ جائے گا۔

حفرت نون علیالسلام نے ریائش کے لئے مچونس کا ایک جونرا بنا رکھا تھا اسی میں ایام گذاری فراتے تھے ۔ لوگوں نے عوض کیا یا بی اللہ ایک گھر بنا لیجئے تاکہ آزام طے ۔ آپ نے فرایا کہ تمیاں مرنولے کھیلئے تو میجونس کا گھر بھی میں میں ہے "

مدیث میں آیا ہے کم صرورت سے زیادہ مجھی مکان بنائے گا قیامت کے دن اس کو تکلیف وی جائے گی کہ اس مکان کوسسریر اضامے ۔

بس ابتم خوب محراف کر درت کس چیزکا نام ہے اورکس مقدار توثیث کے مکان سے دف ہو کتی ہے ج ظاہرہے کرجس حد تک گرمی وسردی دفع ہو وہ توخرورت میں واخل ہے اور اس سے زیادہ سجاوس یا وسعت توعیت و میکارا وراً خرت کے لئے مخدوش وخط ناک ہی ہے ۔

له ابوداود وترفری واین ماجر می ۳

ا الاست كم تعلق زيد كورج الثاث البيك م كئ درج م يد تا شالبيت كم تعلق زيد كورج التي التي در حركاسا مان جس كو

نبر کا اعلی درج کہناچا ہے ، وہ ہے جو صفرت عینی دوح الشرعلیہ وعلی نبیت اسلام کا حال متعالیہ وعلی نبیت اسلام کا حال متعالیہ اثاث البیت تھا اور یہی مفروح خرکا سامان ۔ ایک بار پیلے جائے ہے کہ ایک شخص نظر الجا ہوا تھا سے مشکے کام لے رہا تھا اور بال درست کرر ہا تھا حضرت روح الشرف کنگھا مین کسی دیا اور فرایا کہ یہ تو فرور ہے نیا اس کو لیک و ایک تیا اس کو لیک آئے جلے تو ایک شخص کو دیکھا کہ ہوئے برانی کی رہا ہے ۔ بس آنجو وجی بھینک دیا اور فرایا کہ مفرا کے ہوئے بدر نہی کے تصویم کام کل آئے دیا اور فرایا کہ مفرا کے ہوئے بدر نہی کے تصویم کام کل آئے ہوئے۔

پیات کے لئے دوسراانتظام کرنا امرفضول ہے۔

افسط درجربہ ہے کہ معمو کی اور شیق برتن رکھے اور وہ بھی برقم کی خور تر کے لئے ایک عدد سے ذیادہ نہوا دراس میں بھی بے اظ ہے کہ جہاں تک ہو سے کی کئی خرود میں ایک ہی برتن میں رفع ہوجا ویں جنائی حضرت عرف اور ق نے شہر صس کے حاکم حضرت عمرین سعن سے دریا فت کی اکم کیوں صاحب تمہا سے گھری و نیا کی خورت کے لئے کیا کیا اسباب ہیں ؟ انہوں نے جواب دیا کہ حضرت ایک قوائی ہے کہ اس سے بحیظ کا کام لیسکر مہا دالگا لیتا ہوں اور اس سے بحیظ کا کام لیسکر مہا دالگا لیتا ہوں اور اس سے بودی جا فورسان ہے جبی و فی و کو مار دیتا ہوں ، اور ایک تصیلا ہے جس میں کھا نا رکھ لیت الموں اور ایک برتن ہوج سے میں امتا بانی آجا تا ہے جو بینے اور وضو کرنے کے لئے کا فی ہوجا تا ہے بس برجا دیں برجا دو میں امتا بانی آجا تا ہے جو بینے اور وضو کرنے کے لئے کا فی ہوجا تا ہے بس برجا د

له گرکاسامان ۱۱ که کم چیست ۱۱

مددمرے پاس موجود بی اورساری مزورتی الت پیرکرای بی بوری بوجاتی

بی ۔ صفرت فاروق پر فراکرکہ " بج کمتے ہو ؟ خاموش ہورہے ۔

تم فرص نا ہوگا کہ رسول مقبول صلی اللہ علیہ وطم کا بسترمبارک جس پراسترات خوص ناہدوں کے یہ حالات بی جونمون کے طور پر سیان کرف گئے ۔

عرض ناہدوں کے یہ حالات بی جونمون کے طور پر سیان کرف گئے ۔

اگراس مرتب کے سال کے حال کرف سے گئے ۔

مروم رہوتوکیا اس سے بی گئے گذرہ ہوتوکیا اس سے بی گئے گذرہ سے ہوکا اس فرم رہوتوکیا اس سے بی گئے گذرہ سے ہوکا اس فرم رہوتوکیا اس سے بی گئے گذرہ سے ہوکا اس میں بور سے ناہدوں بی کرو تا کہ زید کی قلب میں بوسے ناہدوں کے مثل بیشنے فارد کرف قلب المشا بیشنا ہے ناہدوں کے مثل بنا مندوں کے پاسس الشدے زاہدوں کے مثل بنا اس کے مثل بنا ور این ہوں کے اس میں بوسے ناہدوں کے مثل بنا اس کے مثل بنا ور اس کے مور کی مثل بنا میں ہوسے ناہدوں کے مثل بنا ور اس کے مثل بنا ور اس کے میں ہوسے ناہدوں کے مثل بنا ور اس کے مور کی مثل بنا میں ہوسے ناہدوں کے مثل بنا ور اس کے مور کے مثل بنا ور اس کے مور کی مثل بنا ور کے مثل بنا ور اس کے مور کی مثل بنا ور اس کے مور کی مثل بنا ور کے مثل بنا ور کا مثل بنا ور اس کے مور کی مثل بنا ور کے مثل بنا ور اس کے مور کی مثل بنا ور کی مثل بنا ور کی مثل بنا ور کی مثل بنا ور کی کھوں کی سیال کے مثل کے مور کے مثل بنا ور کی کھوں کی کھوں کے مور کی مثل بنا ور کے مثل کی کھوں کی کھوں کی کھوں کی کھوں کے مور کے مثل بنا ور کے مثل کے کہ کہ کی کھوں کی کھوں کی کھوں کی کھوں کی کھوں کے کہ کو کھوں کی کھوں کے کھوں کی کھوں کی کھوں کے کھوں کی کھوں کے کھوں کے کھوں کی کھوں کی کھوں کو کھوں کی کھوں کی کھوں کے کھوں کی کھوں کے کھوں کی کھوں کے کھوں کی کھوں کے کھوں کے کھوں کے کھوں کے کھوں کے کھوں کے کھوں کی کھوں کے کھوں ک

کے ماسل کرنے کی کوشش میں لگے رہو۔ فصیب

زېد کے درج ان زېد کئی درج ين :

ایک توبر کنفس اگرچردنیای طوف مائل ہو گراس کوجراب التفات بنا یاجا سے اور دنیا حاص کرنے سے زبرکت تی دوکا جاسے ۔ اس حالت کوز ہر کہنا توشیبی نئے میں صلوم ہوتا البتہ اگر تو تہ کہا جاسے اور ذہر کی ابتدار سجیا جاسے تومنا سب ہے ۔

له الودادك ، ترفى ، ابن ماجروا حمد ١١ ك ذى ثروت ، الدار ١١ ك انطهاد زمير ١١

وقومسرا درجه يبيع كنفس دنيا سے اتنا متنغر ہوكہ اس كى طرف ماكر ہي مز ہوا درمجہ حاہے کہ دنیاا ورآخرت کی نعمتوں کا پیچا ہو ناچونکہ نامکن ہے اسس لئے اخرے کی لذتوں کے حاصل کرنے میں دنیا کے مال ومتاع براس طسرح خاك ڈال دینی چاہئے جس طرح کسی بیش مب بوم کے خریدنے میں چندرویے كوخرج كرفيس وريغ نهيل بوتا بلكر وميد مدركنهايت نوخى سيومرليا حاتا ہے ، ایسے ہی دنیا کا سازوسا مان چیوڈ کریٹری مسرت کے ساتھ تخرت کی معتبی حاصل کرنی حاتمیں ۔

نبيراد رجريه سے كردندا كے مال متاع كاعزم اوروبود دراد بوحاشے اور ہ

دنياكى رغبت نفرت ونول كا مذرس الحسال ومرسع؛ احدال بدي كروكومي دنيا من بدده ی تعالی کے میٹیارخزانوں کے پھڑے خار اور دریا سے ناپیداکٹاکٹ کا ایک قطویے يس أكرل جائدة كوكيم سرت بسيس اوراكر منسطريا آيا بهوا باتعد سيريلاجائد تو كي صرت بيس ال ورجيل ففس فرونياكي طوف متوجر بوتا سي اورداس يقتنز موتاب اوريبي زمدك كمسال كادرجرب ركيو بحتنفريمي ايكقهم كاتوجيع اوراس شے کے باوقعت ہونے کی علامت ہے۔ اس لئے کوس سے کی وقعت ذمن سے نکل جا پاکرتی ہے اس کی دونوں جانبیں بینی تنفرادر توجیہ برارموما پاکرتی ہے

ایک مرتبه حضرت والعبه عدویه کی مجلس میں لوگوں نے دنیا کی مذمت مان خرورا کی توآب نے فرمایاکہ " دنیاک قدر ومنزلت تمہا اے داوں می بوجب ی توتم اس کی مذمّت کریے ہومسلالکی ذلیل ا وربے قدرستے کی مجی کوئی مُدّت کر مجی کوئی مُدّت کے مجی کوئی مُدّت کے ما کیاکر تاسے می

خوب یا در کھوکہ وب دنیا کی وقعت قلب سے جاتی رہتی ہے تورغبت اور نغرت وونوں سے انسان خالی الذین ہوجا تاہے ۔ ایک مرتب بصرت عاکشتیخ مديقے کے پاس ايک الكوديم آسے اورا سيان سے نغرت نہيں كى بلكران كويے لياا وراسى ون مساكين پرتقسيم فرياكر خرج كرويا - آپ كی خاوم نے عرض مى كياكها المامنين ايك ورم كاكوشت تونريد ليت ص ساكي آت روزه افطار فراليتين توآب نعواب دياكه أكربيط يا وولآين تويج كمريتي اب توكيه باتى به سراي يدرج غناكه لما تاب يس ناعاقبت انديش بيا بل مونى دعوكه كمعاتے اور لينے مال كى بڑھوترى وحرص كوعنا كا درج سجھ جاتے بر بعنی یوں خیال کرتے ہیں کرچ نکر ہماسے تلب کو دنیا سے علاتہ نہیں واس مع من يمال ومتاع كى كرت مضربس ب، مالانكران كاينيال شیطانی دحوکہ ہے کہ امتحان کرنے سے اس کی کھوٹ معسلوم ہوجائے گی۔ مشلاً اگرسادامال يك فت جودى بوجات توديجيوان كاكيا حال بوتايد؟ اگراپنامال پوری جانے کاای قدرا ٹر پومبناکسی اجنی کا مال پوری سے لے جانے سے ہو تاہے تب توسمعوکرسٹیک ان کے قلب کومال سے محست نہیں ہے، اوران کے زدیک ال کارسناا ورول با نادونوں برابریں۔ زمیرسے جی زمیر بوناعلی درجہ بچ زمیرسے جی زمیر بوناعلی درجہ بچ

له اتنى بدينينى كراس كابمى خيال نرآية كردنيا سے بعثى اور دم كيا ب #

یعنی دنیا کی جانب سے بے انتخانی کو بھی وقعت کی نظرسے مزدیکھے بلکہ یوں سمھے کر دنیا کوئی ہوجس کا چھوٹر نامجت وبہادری مجما جائے ۔ یا مسرت کی نظرسے دیکھا جائے ۔ اس کی آواہل بھیرت کے نزدیک اتی بھی تالہ نہیں ہے جہتی کی قدر ہوا کرتی ہے ، اس بے حیثیت دنیا کوچھوٹر کر رہم جنا کہ "ہم نے کچھ چھوٹر دیا " محتیقت میں اس بے حیثیت دنیا کوچھوٹر کر رہم جنا کہ "ہم نے کچھ چھوٹر دیا " محتیقت میں اس کے درجہ کا اس کی حیثیت سے برٹھا ناہے ۔

اس کی سال توابسی سمجو صبے کوئی شخص شاہی در باریس داخل ہوناجاہے اوراس كودروازه يربيطا بواكتا داخله سه روك رابا بولس براس كمسلمغ ا كسروقً كالحرَّا وال في تاكمكاس كي كمان مين لك جامع اورير لینے معلوب کے دربارمیں جا داخل ہو ، اسی طرح شیطان حق تعالیٰ کے دروانه کاکتاہے جو سالک کو مطلوب تک پہنچنے سے روک رہاہے اور ساری دنیاروفی کے ایک محراے سے بھی زیافہ بے وقعت سے س کو اس کے سامنے ڈال کرسالک نے اپنے مطلوب تک سینے کاداستہ صاحب كرلياب يبرتم بى موجوكم شاى دربارى ماصرى كالعزاز حال كرس کے لئے جو کتے کوروق کا نی اوالگاہے مذاس کی ذہن میں وقعت ہوگی او اس کو قابلِ ذکروخیال امریجها جائے گا بلکہ رو ٹی کے پھڑے اور دنیوی بادشاهين توكيدمناسبت مجمع وم بوقى سيك دونون ايك دن فت ہونے والے ہیں ، بس فانی شے کے حصول کے لئے ایک فانی شے کا ہاتھ سے کھودینا حب وقعت کی نگاہ سے نہیں دیجھاجا تا تودنیا اورآ خریت ہم توكونى مناسبت بى جىسى بى ، اس ئىكداگردىنيالاكھوں بى بول گى تۇ وه بھی ایک دن نشاہومائیں گھ ۔ بس آخرت کی میا ویدنعتوں اوداس پائدار ملک کی وائمی سلطانت حاصل کرنے کے لئے اگر ونیا کو ہم سے حجود ا اجا سے اور شیطان کے حوالہ کردیا جا سے تواس کا خیال اور ذکر می کرنا ففول ہے ۔

تم کومسلوم ہو یکی ہے۔

جملہ ماسوی اللہ سے ڈباہونا اسکہ ماسوی اللہ کی جا ہے وہ یہ اسکی اللہ سے ڈباہونا اسکی جا نہا ہے ہے اوجہالا اسکی فرید سے ایک انسس کا غیراللہ کی جا نہیں کے دولوں درجوں کے ذبر تو ایسے ہیں کہ جیکھیں نافع سودے کی خرید و فروخت ہوتی ہے کا کیک حقیج کے کواس سے چھوڑ دیا تاکہ تکلیف دینے والی دولج فرسام صیبت اس کی وجہ سے دفع ہوجا سے یا کئی گئی مہر اون افع چیز ہاتھ آ جا سے اولاس دوجہ میں ماسوی اللہ کی جانب التقات کرنے ہی کونفول سے جاگیا ہے ، کیونکہ وہ کوئی جیزی تھی اللہ کے سوارے وجیز ہی تھی اللہ کے سوارے وجیز ہی کے

که روح کیس دیے اور فٹاکردیے والی ۱۱

خواہ مال ہو یا جاہ یا اور کوئی الیمی شخص سے عموماً لنّدت حاسل ہواکرتی ہو سب ہی سے ذہر حاصل ہوجا تاہے۔ برخلات پہلے در بول کے کہ ان میں صرف مال سے زبر حاصل ہوتا ہے جاہ سے نہیں ہوتا ہے ۔ اور مال میں مجی جن انواع سے زبر ہوتا ہے اور بعض سے نہیں ہوتا ۔ اور یہی وجراً ان در بول کے منیف ہونے کی ہے ۔ کیون کہ انسان کوچاہ کی عمیت مال کی بذہبت زیادہ ہوای سے زبر حاصل ہونا تابل زیادہ ہوای سے زبر حاصل ہونا تابل اہتام و توجر بھی ہے ۔

نصل

تربدا ورفقروس فرق کے دنیا سے ایسا بے التفات ہوجا سے کودنیا مال کرسکنے اس کے بیچے ہما گے اور یہ اس سے دامن جو ایسا بے التفات ہوجا سے کودنیا کہ یہ دنیا کو حاصل کرنا چا ہے مردنیا اس کے ہاتھ نہ آسے تواس کونہ ہمیں ہو کہ یہ دنیا کو حاصل کرنا چا ہے اور اخری بی بیٹے بلداس کا نام فقر ہے اور فقر کا درجہ زہر کے برا بہتیں ہے ۔ ہال فقر کو تو تو تا ان مرفو بات کے جھوڑ نے کی حسرت ہوجاتی ہے اور اس لئے مرتے وقت ان مرفو بات کے جھوڑ نے کی حسرت ہواکرتی ہے اور دنیا کی یاجت ہے سوارت کے جھوڑ اور آخرت قد مانہ یہ برخلاف فقر کے کہ اس حالت ہیں لذتوں سے اگرچہ جراً قبراً با زر کھا گیا ہوتا ہم بی جو کہ میں میں بیز کا فر مجمعے کا اور تو تا کی حجمت میں دل نہ انکے گا بلکہ دنیا کو دارالا لم اور تنگ تھی کا گر سمجھے کا اور تو تا کو دارالا لم اور تنگ تھی کا گر سمجھے کا اور تنگ کی تا کہ سمجھے کا اور تنگ کو تا کہ ت

آذادى ونوش ينتى كالخراودجنت مسلوم بوكى

فقر کی فضیلت اورسعادت افردی کا ایک مضبوط ذراید بی بیانی جناب دسول الٹرصلی الٹر علیہ و کم فروائے بی کہ سخ تعبالی لیے نیک بندے کودنیاسے ایسا بچا تاہے جیسے تم لیے عزیز بیاد کو کھانے چینے کا پر بیز کراتے ہو میری امت کے نقرار جنت ہی امرارہ پانچہ و برس پیپا داخل ہوجا ہیں گے۔ حس وقت کی نقر کو دیکھا کر دنوش ہوجا یا کروا و دکھا کرو کو مرحبا صالحین کے

صرت موی علیالسلام نے ایک بادعوض کیا تصاکہ بادالسا آپ کوکون بنسے عجوب ہیں ۔ بتلایتے تاکہ میں اگن سے عجت کروں ۔ ادشاد مبواکہ تعیین کو لوگ یاس بھی نہ کھڑا ہونے دمیں ہ

یاددکوکدار فقریفه الرقان بوادد طلب ال کازیاده ترمی دیوآواس کادید نابسکه قریب قرمیب بی و رمول مقبول می الشعلید دم فرات بن کر مبالک بواس کو حس کواسلام کی برایت بولی اور بقد مدکفایت معاش الی اور وہ اس برقائع بوائ قائم فقیر خلا کو بہت ایس دی ہے ۔ صفرت اسلمین گرومی نازل بوئی تعی کی المام معیل محفی کشش ا نوگوں کے پاس وجود مقاکر و به صفرت اسلمین نے دریا فت کیا بارالها وہ کون لوگ بیس ، ارشاد بواکد مسابر فقیر یه طاحد بیسے کدار فقر کے ساتھ قناعت اور فیر مضا میرکرزای بواک لفواد داس کا قواب بہت بی زیاد بوادر بوک کر نرب کی ابتدار فقر رہے مرکرزای بی بواس لے مرکابیان کرنا مناسب و موتا ہے۔

الم ما كم ما الله

طريقة والمضمرحيا يه

که این المبارک وترمزی میح ۱۲

صيب كابيّان

ہی تعالی نے صرکرنے والوں کے لئے آئی صفات بھے فرمانی ہیں جودی ہو کے لئے جے نہیں فرمائیں ، چنانچہ ارشاد فرا تاہے کہ مسمبرکیا کرد ، الشرصب کرنے والوں کے ساتھ ہے ، مسرکرنے والوں پران کے پروردگار کی چشیں ہیں اور جربانی اور دہی راہ یاب ہیں ، مسرکرنے والوں کوان کا اجربیٹجا اردیاجا تھا ہے ویٹرہ دیوہ ۔ کلام جمید میں کھا ورٹیکٹر جگم مرکا ذکر آیا ہے ۔

رسول مجرول ملی الشرملی و کم فرکت بین که معروضت ایران ب ۔ اور جنت کے خزانوں بین کا ایک خزانہ برحر مخطع کو پر خسلت مرحمت ہوئی وہ برا احدادت نصیب بر اسبداد اور صائم الدہر سے اس کا در فیال کو ۔ اور صرح محتی معنی ہوئے کے نفس کے مقالم معلم میں خوال کے میں خوالے کا میں خوالے کا میں خوالے کا میں خوالے کا اختصاص کے بیا ۔ اور برصرت انسان ہی کو مال میانہ کا اختصاص کے بیا ۔ اور برصرت انسان ہی کو مال

سوسکتاہے۔ اس کے کراس پر دونمالٹ شکوسلط اورحملہ آوریس جن میں ایک خواتی تشکولیٹ فرشتول اورعقل ویٹر بیست کالشکرہ بھن کامقعود پیج

له فزال اوكنوز المقالق و ك عراق كيت بي كمان بس

له ابونعيم مم ٣

ي نوابش ١١

كرانسان كولينه قالومين لاتين اور بدابيت برقائم ركيين واور دوسسرا شطانى ليحرينى غيظ وغضب اورنفس كاخوامشول اوراس كماسباب كالشكرب بويابتاب كرانسان كوايغ قبضي سكه اوريا بنرسواؤس بنائے ۔ انسان کو بائع ہو کردونوں میں امتیاز کرنا اور شیطانی کروہ سے جنگ وجدل كرنايو تاب ربس اكرعقل كاغلير بواكدوين اسلام اورش بعيت محديد على صاحبها العلوة والسلام ، يرامتقال نصيب بواتوصر كامرتباس كوطل بوكيا ـ اودبهائم يسمرت شبوات ونوابشات كاماده بعظل اوردین کاشودنہیں ہے ،اورؤرشتوں پی صرف قریب ہواونری کی ہتھاتے بيدا كي كئى ہے وہ شہوات نفسانی اور غيظ وغفي سے بانكل سنة مبريكم بروقت يع قتبليل ين شخول يست بن اور جائة بي نهي كشبوت کیا چیزے ؟ بسنا مبرکا مرتبدان دونوں میں سے می کوماصل میں ہوسکا اورانسانون مين يونكه دونون متفاده مفتين موبود بي بعنى نوابشات نغسانيهي بي ا درميلا مُراميخ كاشودا وعقل وفطرت سلهيمي موحد بير بس ایک کومنلوب اور دو مرے کوغالب کرناجس کا نام صبرہے انسان جسکے لي مخفوص سے

یا در کھو کر حب یہ دونوں حالتیں اپنا اپنارنگ جا ناچاہتی ہیں توکس وقت انسان کوعقل سے کام لینے اور اپنا انجام سوچنے کی ضرورت پڑتی ہے تاکدین کو خالب رکسکرمقام مبر میسینچ ۔ اس کی مثال اسی ہے جسے مرمنی کو تلخ دوا دی جاتی ہے توطالب لذت والقداور مزہ توبی جاہتا ہے کہ

له يك ١١ نه سجان التركبنا اور لااله الانتكبنا ١١ كه ايك ور عك صرور طلاً ١١

اس کوباس بھی نہ آنے ہے ، اور عقل چاہتی ہے کہ اگریپراس کہ تلی ناگوار گذرہ ہے گا گرانہ علی بند کر کے جرا و قبراً پی لی جائے تاکہ شفاجلہ حال ہو، پس اگرعقل کو فلہ ہوگا تو جیسے کہ دیا جائے گا ۔ اس طرح اگردی معا لم ہی عقل العفوات سلیم کو فلہ ہوگا تو ضرور ہے کہ دیا جائے گا ۔ اور ہونکہ ایمان نام سے علم اوقول کا اور جونکہ ایمان نام سے علم اوقول کا اور جونکہ ایمان نام سے علم اوقول کا اور جس اور دو بعض سے باز رہنا ، اسی طرح اخلاق و عادات ہیں عادیث محمودہ سے آوار سر ہونا ضرور دی ہو اور خیاب رہنا ، اسی طرح اخلاق و عادات ہیں عادیث محمودہ سے آوار سر در چر بغیر مسرکے عاصل نہیں ہوسکتا ، لہذا جونا ہوت کے مقابلہ ہیں ہو تا ہے اور کھی خصہ کے مقابلہ ہیں ہو تا ہے اور کھی خصہ کے مقابلہ ہیں ہو تا ہے اور کھی خصہ کے مقابلہ ہیں اور دوزہ شہوت کے قرائے کا نام سے لہذا دوزہ کو خصہ کے مقابلہ ہیں اور دوزہ شہوت کے قرائے کا نام سے لہذا دوزہ کو خصہ کے مقابلہ ہیں اور دوزہ شہوت کے قرائے کا نام سے لہذا دوزہ کو خصہ کے مقابلہ ہیں اور دوزہ شہوت کے قرائے کا نام سے لہذا دوزہ کو خصہ کے مقابلہ ہیں اور دوزہ شہوت کے قرائے کا نام سے لہذا دوزہ کو کہ تا میسے لیے اور کھی مقابلہ ہیں اور دوزہ شہوت کے قرائے کا نام سے لہذا دوزہ کی نام سے لہذا دوزہ کو کہ تا میں اسے دورہ کو کہ دورہ کو کہ کے دورہ کے دورہ کو کہ کا کا کہ کے دورہ کی کا کا میں کے دورہ کو کہ کا کا کہ کے دورہ کے دورہ کے دورہ کی کھی کہ کہ کا کا کہ کے دورہ کی کا کا کہ کہ کہ کا کا کہ کے دورہ کی کے دورہ کے دورہ کی کے دورہ کی کے دورہ کے دورہ کی کے دورہ کے دورہ کی کے دورہ کے دورہ کے دورہ کی کے دورہ کی کے دورہ کی کے دورہ کی کے دورہ کے دورہ کی کے دورہ کی کے دورہ کے دورہ کی کے دورہ کی کے دورہ کی کے دورہ کی کے دورہ کے دورہ کی کے دورہ کی کے دورہ کی کے دورہ کے دورہ کی کے دورہ کی کی کے دورہ کے دورہ کی کے دورہ کے دورہ کی کے دورہ کے دورہ کی کے دورہ ک

عرکا اعلی ورجیر اعلی ورجیر کے مادہ ہی کا قل تق ہوجائے کہ اس کومقا بلری قدرت ہی نہ ہے اور اس پر ثبات وبقا نسیب ہو ۔اورا نھیں نفوس کونفس مطاری کے خطاب سے خاطب بناکرمرتے وقت بشارت دی جا ہے گی ۔کہ " لےنفس مطاری جس لیے پر وردگاری طوف کہ توالٹہ سے داخی اورالٹر تھے سے داخی ہے۔

له الوقعيم ملح ١١

له ابن ماجر يح ١١

صبر کا ادنی ورج وراسے آثار اسبیں ادنی دروجہ یہ ہے کہ سور کا ادفی ورج وراسے آثار شدائی خالب اور قلب شیطانی نشکر کے والم ہوجائے اس خطرناک مالت والوں کوئی تعدالی فرماتا ہے کہ میرووں گا یوالٹ بناہ میں رکھے) ۔ اس کی دوعلامتیں ہیں ۔

ایک پرکرالیسانشخس کہاکرتا ہے کہ " مجھے قرب کاشوق توہے گڑمجہ سے ہونہ پیں سکتی ۔ اوراسی لئے اب اس کی نواہش بھی نہیں دیں یہ پرپاس اور ناامیدی کا درجہ ہے ہومبلک ہے اورا ورجانبری کی امیپٹریس ۔

دوسری علامت یہ ہے کہ توب کاشوق سی ندیے اور کیف لگے انتہ رسم دکریم ب اسمیری توبر کی کھ پر وانہیں ہے اگر توبر کے بغیروہ محدکا جنت میں بھیدے کا واس سے جنت میں دسیع مگر چوٹ نہیں بڑجا سے گ اورخواک دهست شامله مي کچی ندا جائے گئ يہ پيچيارہ کم عقل تخيري- اس پابند ہوا وہوس کی ایس مثال ہے جیے کوئی مسلمان شخص کا فروں کے بأتعين قيدبومان اوركافراس كوكمبى فنزرون كحيران اورايح کسلانے بلانے کی خدمت سپر دکردی اور کھی اس کی گردن اور کھر میٹراب كم يني لدواكر ايخ مرون تك لي حالي اورياس وليل حالت كودليل نرسم محمر مبلاس کی معات کی کیا صورت ہوسکتی ہے ، تہیں بتلاؤ کہ اگر بادشاه كأمى بيارى اولا وكوكي كركمى ذبيل وبعزت غلام كي والدكرديا جائے کہ وہ اس کو اپنا غلام بنائے کا اُوں د ہوائے اور ہوجا ہے ضرمت لياكر واس بيار م شراو كاكيامال موكاء اى طرح اس غفلت شعاد مسلمان كاحال برحس في تقالى كيتقرب برونيا معدنى كوترجيح

دی اور ہو اسے نفسانی کا قیدی ہوگیا کہ توبرا ور توجہ الی الشرکا شوق ہی اس کے دل سے جاتار الم دین نقوذ بالشرص نبرالی الدری)

صرکا متوسط ورجہ وراس کی علا اور شیطانی کروہ میں جنگ و اور شیطانی کروہ میں جنگ و جدال قائم رہے کہ کھی اس کا یقہ جاری ہوجا سے اور کھی اس کا یقہ بنا س

صول قائم رہے کہ کہی اس کا پتہ مجاری ہوجائے اور کھی اس کا پتہ ۔ ذاس کو کا مل شکست ہوا ور ذاس کی کھی ہوتی فتح ۔ بس اس قسم کے لوگوں کے بارہ میں ادرشاد ہے کہ " پرلوگ ہم چھوں نے احمال صالحہ کوبدکار یوں میں خطا کر رکھا ہے امید ہے کہی تعالی ان پر توجہ فرمائے ہے

فصل

انسان تمام عمر سرحالت میں صبر کامختاج ہے ۔ کیونکو دنیا ہیں و دی ما

لەخدا كى الاف النقات ۱۱ ئەم خواكى ئياە قىگتە بى اس دى مال سے ۱۷ ئىرى جنگ ۱۱

ہیں یاآئی مرصی کے موافق اور یا مخالف و ناگوار ۔

نوش اله مرصر کی ضرف استاری اورمنشار کے مواف مالت اور استاری کی مواف مالت اور است کی موروز کا اور است کی موروز کا اور است کی موروز کی ماروز کی ماروز کی موروز کی موروز کی الک انتظامے گا تو پرکس شرارت کھے گا اور اور تنظیم کی ایسی کی مواہشات کی مجھے ہوئے گا اور ابتدار وانتہارسی مول جا کا ۔ اس کے محالی کو ام فراتے میں کہ ہم تنگی اور فراخی و و معت کے نقذ میں مبتلا ہوئے تو صابر نظیم کر فراخی و و معت کے نقذ میں مبتلا ہوئے تو صابر نظیم کر فراخی و و معت کے نقذ میں مبتلا ہوئے تو مواہر نظیم کے نقذ میں مبتلا

اور فراخی میں صبر کرنے کے یہی معنی ہیں کہ قلب کا میلان اس ونیا کی متلع کی جانب نہ ہو بلکہ سمجھ کہ ہو کہ سم کے اس خواکی سرکا رسے عطا ہواہے وہ میرے پاس خواکی ا انت ہے ہو عنقریب مجھ سے والیں لے لیا جائے گا ۔ پس جب تک وہ میرے پاس ہے اس وقت تک مجھ شکرا واکرنا چاہیے اور درجب وہ وطی خواستہ عفلت اور آبراع ہوا وطی خواستہ عفلت اور آبراع ہوا میں شخول ہوگیا تو فافل کہا جائے گا۔

ووسری صورت یہ ہے کہ اپی خواش کے مخالف حالت ہوا دراس کی جا تھیں ہیں ۔

ا پہلی تھے ان طاعات پرصبرکرناہے جن سےنس گھراتا اور بھاگتاہے مشائع خی صل کی وجرسے نادیڑھنی

المنعتول ادرمزے ولدّت مي يرانا ١١ ع تروري ١١ تعدي نعت كا يوائق ادا ديوسكا ١١

ناگوارہے، اور ال وجرسے زاوۃ دی گراں گزرتی ہے، اورکسل و الحق وال كى وجرسے ج اورجبا وكرناو توارى يس نفس محركرنا اور طاعت برصركرنا اگرچ کیسائی گراں گزدے گرضروری ہے کہ اس گرانی کا تھل ہوا ورننس کوزیر كى - اورجب نفن على بوليا قوير من قم كم صركا على بوكا :

سے بیلے اخلاص بیداکرنا ریاوفرو كادوركرناا ورنس كي كروفرب

عبادت کے شرح اور درمیان افتل عبادت کے شروع کرنے

دوم ۔ حالت عبادت میں صبر کرنا ضرودی ہے تاکہ آوا بوٹن وستمیا کے اداکرنے میرکسل و کابلی مزموا ورعبا دیت میں اول سے آخرتک صور قلب قائم ہے کہ شیعا بی ساوس اورنس کے خوالے ایک لم محیطے بھی یاس نہ ویں۔ سوم ۔ فراغت پانے کے بعدمبرکرنے کی جُزاخرودت ہے کدیاؤتھ کے طوریراس کا اطہارا وراوگوں سے اپنی عباوت کا ذکر ذکر تا میرے۔ غض *مبری برجگر* خرورت سے اور وہ ہرحالت برنغس کوشاق گزرتا ہ_{ی۔} انے وس ا دور قیم عاص مے مبرکرنا ہونفاصک ول اسىمعست سحسكانفس عادى بوريا ہوا دراس کامرہ پڑا ہو کیونکر پراں خوائی لشکریعنی عقل ودین سے دونشکر ہ کامقابدہوتاہے۔ایک شیطانی گروہ اور دوسرااس کے ساتھاس کامدیگار بينى عاوت كالشكراور يخضوصًا عادت بهي اليي جيزول كي جن كرحاصل كرين مي سبولت بوكرمي خرب كرفى حاجت نهيس دمثلاً غيبت كرنا بجوث بولنا جيرًا اور خود ستائی وغیرہ کہ ای مسیتول میں صرف زبان ہلائی ٹرتی ہے۔ پس ان سے بھیا اور صبر کرنا ٹرے بہا درکا کا م ہے۔

تم م كوينيا وسطح .

اس کی تلافی بیدان است بیسیر می اسک تلافی بی این اختیاری بو ایسی مصائب اور کا فات بیسیر می اس کی تلافی بی این اختیار مین بوجسید کسی عزید مرا نے یا مال کے برباد ہو جانے کی مصیبت یا کسی مفول اور تحادث برصبر کرنا ہوتھی میں اخل کا میں اور تحادث برصبر کرنا ہوتھی میں اخل کا میں اور تحادث برصبر کرنا ہوتھی میں میں اخل کا میں زبال برس کا معاد صند اس کا دیا ہوں اور وہ صبر کرتا ہوتھی فیکایت کا کلمہ زبان پڑسیں لاتا تو میں اس کا معاد صند اس کو دیتا ہوں کو شت اور فون سے بہر خون اگر تندوست کو دیا ہول وہ کہ کہ کہ کہ بیا ہوں دور ایسان کی حالت بی صبر سے خون انسان کی حالت بی صبر سے خون کے دیتا ہوں اور ایسان کی حالت بی صبر سے خون کی میان سے دورا میان کا دوسر انصف میں کہ کیون کو اس کو بیان کو ایسان کی مناسب ہی۔

کیون کو اس کو بی رہاں سے کو بیان کر کے مناسب ہی۔

کیون کو اس کو بیان کر کے مناسب ہی۔

کیون کو اس میں کو بیان کر کے مناسب ہی۔

کیون کو اس کو بیان کر کا میان کی مناسب ہی۔

کیروں بیان کی مناسب ہی۔

نَّهُ كِالْمُؤْنُّ الْمُنْ الْ

حقتعالی فرماتا ہوکہ"اگرتم لوگ شکوروگ قویم تم کوزیادہ دیں گے یہ رسول تقول صلی الشعلیہ کو لم فروائے جمیں کہ" کھانیوالا شکرگذار بندہ روزہ وارصا بر کے برابری"

شکری قصود بالذات بی خوف، توبه، زېدادرصبر وسسپيارمقصود بيس ؛

تم نے رسٹ ابوگاکد رسول مقبول صلی التہ علیہ وسلم کے پاسے مبارکے اورت کرتے کرتے ورم کرآتے تھے ، اوراک تہجدیں گریرو مجا بہت وسراتے تھے ، ایک مرتب حضرت عالث رضی الٹرعنہا نے عرض کیا کہ "یا رسول اللّٰہ اکپ کے قوا کھے چھیے سب گذا ہ معا مت ہوگئے ہیں ہس آپ اس قدر کریرو کیا کیوں فرماتے ہیں "ج آپ نے جواب دیا کہ" لے عاکشہ کیا میں خوا کا مشکر گذار بندہ نہ نوں " ؟

واقعی شکرکامر تبہ نہایت عالی اور صبر و نوف وزیداور تمام مذکورہ مقا سے بلندہے کیونکر بن اوصاف کاذکر ہوچکا ہے اک میں سے کوئی صفت ہی مقعود بالذات نہیں ہے۔ بلکہ سب مقعود بالغیر ہیں۔ جنائے جسم تواس کئے مقعودہ سے کہ ہوائے نفس کا قبلے تحق ہوجائے اور تحق ف اس لئے معلوب

میک شکراداکسے کے لئے شکری اہیت معلوم ہونی فردری ہے مینی آول علم ہو نا جاہئے کہ شکر کیا چیزہے ؟ اورجب میعلوم ہوگاتو ایک مالٹ خاص میدا ہوگی اور میراس مالت خاص کے بعد عل متفرع ہوگا ۔

شکرنے تین کن ہیں جن کوہم علی وطالبور سیان کرتے ہیں ،ر

شکرکا کرن و العتی حال عبل المورس التراسطان المت المترسط التحال المورس التحال المورس التراسطان المعت المترسط التحال المعت الترسي التحال المعت التحال المعت التحال المعت التحري التحري التحري التحريث التحريث التحريث المحت التحريث المحت المورس التحريث المحت المح

ل شكرم الشقعال كابورب معتمام جها فوك ال

شکرکا دوسرارکر بعنی خالک نعمت است برای و بر بر نوش بونالهم است برای و بر بر نوش بونالهم است بونالهم است بونی بونالهم به بیت فام کرناکیونی با دشاه اگر می علام کو گھوڑا بھیجے تواس کی نوش تین وجہ سے بوق ہے :

اقرن اس دجرے کہ کام کی چیز ہاتھ آئ کھوٹے پرسوار ہوکر بیسیوں ضرورتیں رفع ہوں گی ۔

حقیم اس وجسے کہ یعطیہ تنا رہا ہے کہ بادشاہ کی اس غلام پر توج اور عنابیت ہے جس سے آئٹ ہ کسی بڑی اوراس سے بھی زیادہ مفیدنعت کے ہاتھ آنے کی امید ہے۔

مستوم اس وجهسے کھوڑااس کی سواری بنے گاا وراس پرسوار ہوکراپنے منعم آتا کے حضور میں حاضر ہوکر شاہی خدمت ہجالا سے گا۔

ان میں سے مہلی وجہ توکوئی چرری نہیں کیونکہ وہ تومحف نعمت پرخوشی ہے مشم کی حیثیت اس میں ملحوظ نہیں ہے اور دویس ی وجہ شکر کا درجہ شکر کا درجہ کمال ہے ، کیونکہ ہو کچے بھی تقالی مرحمت فر ملف اس پراس وجہ سے فوش ہونکہ یہ چرکوئی کا درآمد چرہے میں تقالی کے بینے کا وسیل اور ذائیے ہیں کہ اس پراس وجہ سے وش ہوکہ یہی تقالی تک بینے کا وسیل اور ذائیے ہیں اور اس کی علامت یہے کہ ایسی نعمت پر نوشی نہیدا ہوجس کے سبب

خواسے غفلت بیدا ہوجائے اور ذکرالی جول جائے ۔ بلکہ ایس حالت پررخمیدہ ہو ۔ ال حس نعمت کے ذریعیسے دنیا وی تفکرات رفع ہول اور اطمينان تلب نصيب بو بعن خداكى يادين اعانت قاسل بواس برخوشى و مسرت مونى جاسئ وبس وخفش كايردرية كمال عصل كرسط وخروه دوسرا ہی درجہ حال کرنے ۔ باقی سطے درجہ کو تشکرسے کوئی مناسبت بی سی ہے تنسرار كربعني الدرنعي التساري على الشيعال كالمستعمال والمستعمال المرتبعي الشيعال كل المستعمل وى بوئ نعمت كواس كى رمنامندى طاعت خداً من استعمال مي استعمال كرنا ، اوريه اس وتت بوسخاب حبي خلوق كيدياتش كاغراض ومقاصداوريه باشعلوم بوجا كركياكيا چيزكس كام كے لئے بيدا بوتى ب مثلاً الحداللرى الكفات بے اوراس کا فتر میر بیا کہ اس کوالٹری کتا بعین قرآن مجیداو رعلمدین کی کتابوں کے دیکھنے اورآسمان وزمن جیسی بڑی فلوق کے اس غرمن سے مشاہوہ كمسفين صرف كرسر كرعبرت حاسل بوا ودخالق برتركى عفلت وكرياني سر آگاہی عال ہو ، نیزستر کے دیکھنے اور محدت برنغا ڈالنے سے اس کوف کے کھے۔ اسی طرح کاک ایک بھمت ہے ، اوراس کا فٹریے یہے کہ اس کوڈکراٹی اور ان باتوں کے سننے میں استعبال کرہے حج آخرے میں نفع دیں اور پھچا ورلغوا ور نفول کام سنفے سے روکے ۔ زبان کو یا دخدا اور حدوثنا اور اللہاؤے مین شنول سط اور تنگری یا تکلیدن مین فتحی وفت ایت سے باز دی کھ کراگر كون حال يومي تونى ايت كاكله مر تطفي افيد ، كيونى شابنشاه كى شكايت الييه ذليل وبييس ظام كرساسة زبان سيطى بوكي بي بسير كرسيتا باكل نفول اورمعصيت مي داخل ساور شرك كله زبان ينظر كم اوطاعت متم يوكا

قىلىپ كائشىكى بىپ كەس كەنكر دۇرا ورمىزىت داخلاص بىر استىمال كىسى ، اوصا فىجىدە سەس كواكداستەكرىپ اور خىمائل د دىلىسے مئا وپاك دىكى يەخون ماتقە يافرن تىمام اعضاركا دەلالىم تاخ دعزت دىجا ، سىپ كاشكرىيى بىر كەن كوىت تعالى كى طاعت بىر شتول دىكە اجاسى يەسكا ھىجىسىلى

| درحتیقت کمال درج کاشکرتووی بندے اداكريسكة بي جن كانترح صدر موجكابوار بالتباع سنت ؛ إن كالوب كاندرى تعالى فرعمت معرفت كانوريم ويابي كمه وه برجيزك لدموز واسرادس واقعت بي اوابرشے میں اپنے مجوب کا مبلوہ دیکھتے ہیں، اورش کویر درجہ حاسل نہواں کوسنت كااتباع اودحدود شرييت كالحاظ مكناضرودى سينيى اسكوا تنامجيلينا چاہتے کہ اگرمٹلاکسی ناموم پرنظرڈالی تو آنھے کی نعمت کاکفران ہوا ،اورنیزائٹ اورتمامان فتول کی نافتحری ہوئی جن کو بعدارت میں دخل ہے اورجن سے بغير كونظ نهبين أسكتا كيوبيرا بحدك بغيربنائي كامنهي دسيضح ولأفتاب کے بغیرا تھ بیکارہے ، چنانچرسب ملنے ہیں کہ انھیرے ہیں ایک کم بھی کا نہیں دے سکتی اور آفتاب اپنے وجود میں آسمان کامحتاج ہے رہیں آ کھ کی بدنظری کی ایک صیت سے گویا آسیان وزیرن سب ہی کغران نعمت ہوگئیا ۔ مشرلويي يوجن كومعصيت وسحسرام البي مال تمام معيون كارى كيما بروه ورحقيقت فخراك تعتبي كيراك تداكدتمام متول كابابتال

والستهدي اورائك كودوسرے سے اور دوسرے كوتىسرے سے اليسا علاقه سے وزراغور کے سے محمد باسکتاہے۔

يبال معانے كے لئے ايك مثال بيان كئے ديتے بي اور وہ يربے ك التديك نرويرامترفي بعنى ثمن نقدكو بنزله عاكم كحبنا ياسي كراس كوذليه سے تمام اموال کی قیت قرار یا سے اوراسٹ پار مختلفہ کے ارزاق گراں ہونے کا باہی فرق وامتیان ظاہرہو۔ بس اگرشن نقدیعی جاندی وسونا نہوہ کھیے سموس نہ سے کھڑا زحمران کے بدلے کیو کرخریوا جائے اور اناج کھوالیے كے يوض كس طرح فروخت كيا جائے ۔ اس لئے كہ ان ميں باہم كوئى مناسبت نہیں ہے ،اگرہے توصرف سی ہے کنفس مالیت دونوں میں مشترک ہے ميئ ثمنيت اودنقدى جس كوچا ندى وموناكيتة بيس كم وييش دونوں ميں إنكائى ہے اور بھی تمام چیزوں کی مقدار کا معیار ہے ۔ بس اگر کی اایک رومہ گزکا ہو اورزعفران بیاس رویے میرکی تواس سے اندازہ ہوگیا کر بیاس گزیرے کے بدلے میر بجرز عفران خریدنی چاستے ۔ اور بچاس گز کھ امیر بوز عفران کے مساوی ب رغوف يمن ونقدى منهو توتمام معاملات يس رد وبدل بوجا عداور جلدا سیاری گریری جانے اس نے اگر سی شخص نے اس کو اکٹھا کرکے زمين مين كالموعيا ياخزانه باكرمقفل كرويا توكويا صاكم كومستد يحومت ساتار كريكامعض بناديا اورمقيدكرايا واويس تفف فاس كرتن بناك ، شلاً يا في ين كاكلاس اورسالن الارف كى ركابى توكو يا حاكم كوجولا بااوركانتكار كے كام ميں لكاديا - حالانكريراوسط ورجركاكام دوسرے اوئى ورج كفت كار بھی کرسکتے تھے ۔ بس برسزاقید سے بھی زیادہ خت ہوئی ۔ اور بھٹ خص تے الم كسوفى 11 A

له قیمت مرادسکه ۱۲

سودلیناشوع کردیا اور روپیاشرفی کمین دین کو الی ترقی اور تحفیرال کا ذریعه بنالیا که صرافر کے ذریعہ سے چاندی سونے کی ذات کو مقصد تجارت محیالیا تواس نے گویا حاکم کو اپنا غلام بنالیا تاکہ وہ گھاس کا شکر لا یا کمسطون جا اور دے دیا کرسے حالانکہ یرسب صورتی صریح ظلم ہیں اور حکمت ضاوندی میں تغیر و تبدل کا میراکرناہے گویا حق تعالی سے علاوت ہے جس کی بنا پر محارفی جنگ کا بیام دیا گیراہے۔

ت عظم تی می کونورم وفت ما لنهیں اور بردموزاس کونظ نهیں آتے تو وہ متربیت کی زبان سے صورت توسمجہ ہی لے کا اگریشہ دی سمجھ بسی اسس کو احکام شری سنا سے جائیں گئے کہی تعالی فرما تاہے :

" بولوگ چاندی اورسونے کا خزانہ کا بناتے اور و ترقی کر کر کر انگار کی اللہ کی دادی کے درج کا خزانہ کا بناتے اور و ترقی کر کے ترقی کا اللہ کی دادی کے درج کا کرداغ درمے جائیں گے ہیں اللہ درسول مقبول میل اللہ علیہ وسلم فرائے ہیں کہ اور رسول مقبول میل اللہ علیہ وسلم فرائے ہیں کہ اور رسول مقبول میل اللہ علیہ وسلم فرائے ہیں کہ اور رسول مقبول میل اللہ علیہ وسلم فرائے ہیں کہ اور رسول مقبول میل اللہ علیہ وسلم فرائے ہیں کہ اور رسول مقبول میل اللہ علیہ وسلم فرائے ہیں کہ اور رسول مقبول میل اللہ علیہ وسلم فرائے ہیں کہ اور رسول مقبول میل اللہ علیہ وسلم فرائے ہیں کہ اور رسول مقبول میل اللہ علیہ وسلم فرائے ہیں کہ اور رسول مقبول میل اللہ علیہ وسلم فرائے ہیں کہ درسول مقبول میل اللہ علیہ وسلم فرائے ہیں کہ درسول مقبول میل میں کرنے ہیں کہ درسول مقبول میں کرنے ہیں کہ درسول میں کرنے ہیں کہ درسول میں کرنے ہیں کہ درسول مقبول میں کرنے ہیں کہ درسول میں کرنے ہیں کہ درسول میں کرنے ہیں کہ درسول میں کرنے ہیں کرنے

محس شخف نے چاندی یا سونے کے برتن میں پیاگو یا وہ لینے پیٹ میں آگ کے گھونٹ ا تارد ہا ہے ؟

اور حق تعالی صندوا تاہیے کہ مع جولوگ سود کھاتے ہیں وہ قیامت کے دن قبول سے

اس طرح الميس كے جيسے آسيب نده "

ان آیات وا ماویت معلوم ہوگیاکہ اموال اورامشیار عالم کے ماکم

يينى زدنقر كاجح كرناا ودبرتن بنانے اودسود يرميلا نايعنى صرا فركرنا تينوں حرام اورخلات مقتفاك حكت خلاوندي بين الانافرق بعركه الم بصيرت ان دموز وامرارسے بچ نکروا تف ہوتے ہیں اہذا اُن کاعلم ولائل اسکام شرعیر دوبالابوكرنوس على نود كامصداق بن جا تاسيدا وشكوكارمسلمان جوان اسرار تكنهيس ببنج سكة وه مدود شرعيه بربى اكتفاكرية بي ا وبيولوك نعيص ادرما بل بل وه دونول سے محروم رہتے پل ہوایسے کوگوں سے جہم معبری جائے گی ۔ متی تعبالی فرما تاہے کہ " لے محد ؛ تم پر نازل ہوئے اسکام موثی تعل تى سمحتاب ده اورداهستيم سے اندھاكيا برابر بوسكتے ہيں يو دوسرى جگروا تا ہے کہ میس نے میری نصیحت سے اعواض کیا اس کو تنگ معیشت ملے گیاور قيامت كرن اندها الما يا جائك كاتب وه يوي كاكرم مع اندهاكيون المَّعايا، بم واب دي كركم مارى نشانيال تجرَّك بيني هي بس تعيناك بعلادياتها عواق بم مى تقركواى طرح بعلادي ك " اورنشانيون مراد يبى حكت ومصلحت اور دموز بي بوبر حيزكے بيداكر في ملحفظ بي اور جن پرانبیا علیمالسلام کے ذریعہ سے لوگوں کومطلع کردیاگیا کہ مرز انے میں ما طان شریعت علمار وفقهار ان کومفقل بیان کرتے رہے :

پس یا در کھوکہ شریعت کا کوئی کھ الیسانہ میں ہے جس میں حکمت اور در مر دخاصیت نہو لیس ہوتھ ان کو تھے جا تا ہے وہ تو سمجہ جا تاہے اور ہو ہی ہے۔ دہ ان کا انکار کرنے نگلتا ہے اور یہ انکار کرنا سے کرکے خلاف ہے ۔ اور ہو نکہ نشر کا کا مل درجہ وہی ماسل کرسکتا ہے جس سے اظامی اور حدق کا ذکر کر دیں ۔ کی نیت کا شائر بھی نہو ، لہذا مناسبے کہ اضلاص اور صدق کا ذکر کر دیں ۔

اخلاص اوبصدق كابيان

ا خلاص کی اصل مسلمان کی نیتت ہے۔ کیونک نیت بی بی اخلاص بط كرتاب، اوراخلاص كاكمال صدق ہے۔ اوراخلاص كےمعنى يركي نيت مدكسي شغركي الميزش نهواس ليغان تبنوا كمنوك عليود عليود ببيان كياحاتابو ا خلاص كايبلاكر بعني ترت اركن ادل نيتت يو تت ال مشرماتا ہے کہ " کے محد! اپنے ا ياس سان كوعليمده شكرودوسي وشام این پروددگارکو پکارتے ہیں درآنحالیکراسی کی ذات کو بیا ہتے ہیں ؟ اس آیت سے حلوم ہواکوعسل سے حق تعالی کی ذات مقمود ہو۔ رسول مقبول صلى الشه عليه وسلم فرواتية بين كه «عمل كا عدار فيت بريحة " محية لوگوں کے اعمال حق تعالی کے حضور ملی بیش ہوں گے اور رحق تعالی فرائے گا كهان كوييينيك دوكيويحان اعمال سےاستخف كوميرى ذا شقعود نتھى ۔اور كجيبندون كانامثرا عمال يبش بوگاتوسم بوگاكه فلان فلان عمل اور دررج كردو، فرشت وض كري كركه بارالها وه اعمال تواس في كف نهيس تع جمهوكا كران اعمال كى اس ننيت توكى تى اوراس كام كوعم ہے "

صریت بن آیا ہے گرآدی چادتم کے ہوتے ہیں۔ ایک وہ جے بق تا ا نے مال مجی دیا اور علم مجی دیا اور بر مقتضائے علم اس مال کو الشرکی راہ میں خرج کرتا ہے کہ اگر جی تعالیٰ مجھے بھی مال اور علم مرحمت فرمائے تو بین مجھی اسی طرح نیرات کروں۔ یہ دونوں شخص اجریش مساوی ہیں۔ تعلیم مرحمت فرمائے تو بین مجھی اسی طرح نیرات کروں۔ یہ دونوں شخص اجراب بر ہوا تا اور شخص جہالت کے سبب گر بر مجاتا اور شخص وہ ہے اس کو دیچے کرکہتا ہے کہ اگر بچہ کو مال مل جائے تو میں مجی اسی طرح مرے ال میں جا دور اسی میں دونوں شخص گذاہ میں مساوی اسی طرح مرے الا اور اور عیش کروں۔ ایس یہ دونوں شخص گذاہ میں مساوی اور میازم ہیں ، اور دیوار میان کی اسی میں مساوی اور میازم ہیں ، اور میازم ہیں ،

انیت کے معنی ادادہ اورقصد کے ہیں کہ قت صسي كام يرقدرت بيلاموتي ظاہرے کہ برکام کے لئے اول علم کی ضرورت ہوتی ہے اور علم کے بعداسس كعلمين لانحا قصدوا لادم وتاب اوراس كربعد باتعياف بالمناول اوراس كام كركرن كى تدرت بيدا موتى ب ،كويا قدرت تعمرالده كالمرمر اس كى مثال يول معوكم تمبارے اندركانے كى تواسش كھى بوئى سے مگر وہ اسی دبی ہوئی ہے کرچیسے کوئی سو یا ہوتا ہے اورجیں وقت تمہاری نظر کھانے دیڑی اورطعام کاعلم ہوا اسی وقت وہ جاگ آٹھی اوراس کے کھلنے كاقصدسوااس كي بعداس كيطوف الترشيص كااوروه قوت ابناكام كرب گی جو خوامش طعام کے اشارے کی مطبع بنانگ کئی ہے ۔غوض آ کھے کے مشاہیسے سےموفت کاعلم عصل ہوگا اودموفت کی وجہسے ٹواسش مبیدادہوگی اور تسديرابوگاا وريتصد ضاداد قوت كي دريدس التكويركت سيكا، اوركها ناكعلامع كا ـ

اسی طرح تمہارے افدوان الدّوں کی بی نوائش کی ہوئی ہے جوتم کوآخرت میں طنے والی ہیں اور جن کا علم عقال شرع کے ذریعیہ ہواہے اور قدرت ویک ہوئی ہے وقد کو است اس فوائش دمیدان کی بی فادم ہے ابدا وہ اعتمار کو حرکت دے گالت فوائش کو پر داکرائے گی ۔ بیں دی عزم دیختہ میلان جس نے قوت کو است یا کہا تا ہے ۔ متلاً جہادی جانے والا تعق لینے گھر ہے باہر نکالنے والا باعث دمحرک کیا جیزہے ہی بینی ہے نکا تود سے دوائس کو گھرسے باہر نکالنے والا باعث دمحرک کیا جیزہے ہی بینی اگر توا بائرت ہے وراگراس کا باعث مال فیریت ہے اوراگراس کا باعث مال فیریت کہا جائے گا۔ فیریت کہا جائے گا۔

فصل

نیت متود مونسی ایمی ای این این کافسیات اور صورت اور ایک ایک متعدد اعلی کافوا ب مان ایک ایک متعدد اعلی کافوا ب مان ای کافوا ب مان ایک کافشار کافوا ب مان کاکوشش کرنی چاہئے کیون کوئن کا کاکوشش کرنی چاہئے کیون کوئن کا کاکوشش کرنی چاہئے کیون کا کاکوشش کرنی چاہئے کیون کاکوشش کے لئے ایک مورت بنیان کئے دیتے ہیں مشلاً

مبحدين جاناا ورميتينا ايك عبادت بيدسراس مين سات كامون كي

نيت بوسعتى ہے

اقرل مینم ناکرم بدالله کاگرید اوریبال آنے والاتف گویان الد کوآ تا ہے لین سجویس آتے وقت تم یہی نیت کرد ، کیونکورمول تعبول صلی الله علیہ کے افروائشتے ہیں کہ '' بوشخص مجد میں آیا وہ اللہ کی زیارت کوآ یا ہے ''اور پونکوزیارت کو آنے والے شخص کی عزت ہواکرتی ہے ابراہ تی تعبالے لیٹے زائر کا جتنا اکرام فروائے گااس کوتم خود سمجہ سکتے ہوکہ کیا کھے ہوگا۔

دوم مرابط مینی نمازے انتظاری نیت کردکری خلاوندی کی مخطئت کے لئے اپنے آپ کومجوس بناسے ہوئے اور گویا و تفت کئے ہوئے ہوئی ن ن ال کرچ سردار کو کا تعدار کا

ضاتعالى كفهم فَدَابِطِواكُتْ مِن بُوكَ ادراس كالجرموا كانطاكا

سوم اعتکاف کی نیت کروا و داعیجاف کے منی پر ہیں کہ انکھ ، کان، زبان ، ہاتھ، پاؤں وغیوتم ام اعضا کو ان کی معمولی اور مدتا دحرکتوں سے دوکس لیا جائے اور پر بھی ایک قیم کاروزہ ہے چنانچے رمول حبول میں ا

له طرانی مح ۱۲ که قیدی ۱۲ عدیق ایک فاز کے بعددوسری کا اتفار کرا انستند ۱۲

علد دسم فرائشتے ہیں کہ سمیری امّت کی رسبانیت بہی ہے کہ وہ مساجد کی ہیں۔
چھارم خلوت کی نیت کرو کہ شاغل مرتفع ہونے سے فکر آخرت کی
استعداد پیدا اور ذکر الہی کے شنف اور شنائے کے لئے تجروع زلت جا الہ ورد دکھوں موامق ہول میں اللہ علیہ کے لئے تین کہ '' ہوشفی مسجد کی جانب اس لئے دوانہ ہوکہ اللہ کا ذکر کرے یا شنے تو وہ اللہ کے لاستہ میں جہاد کر نیوالے کی شل ہے ۔

پینچید اس کی نیت کروکہ جولوگ بے نمازی ہیں ان کو تنبیہ موگا اور نما زکو مجوبے ہوسے لوگ ہمی تمہاری دیجا دیمی نمیاز کواٹھ کھڑے ہوں گے، پس تمہارا نمیاز کوجا ناا مربا لمعروف اور نہی عن المنحرین جائے گاکہ کا دینے کی ترغیب دی اور معمدیت درکا اوراس وجہ سے ان کے نواب یس تم بھی ٹنریک ہوتے۔

مشتشد مسجد میں جانے سے دوسرے مسلمانوں سے کچہ انحروی فائدہ حاسل ہوگا ہو تمہارے لئے دارا کوت کا ذخسی و بنے گا۔

هفته خدائ گویس بینموگے توکچه حیاوشرم آے گی ادرگناه کی جاکت کم ہوجائے گی کہ حاکم کی یانڈا شت اس کی مخالفت سے روکاکرتی ہے لہنڈ اس کی بھی نیت کرو۔

غون اس طرح برسل می کئی کئی نتیس ہو سیسی بی جن کی بدولت تقی کے چنوس تمہارے میں براروں بھیاں نیس گے۔ اور مضرات مقربین کے اعمال کے ساتھ شامل ہوجا و کئے۔

ئے واقی کہتے میں کو کم بہیں ۱۲ سے یہ قول احیار تا ابھی کا ہے ، طرانی کی صدیث میں کیلئے ذکر کمہنیے یہ کیکہ نیج سے یا سکھا سے توکا مل جج کا تواب ہے ۱۲ سسست سے مروقت خیال دکھنا ۱۲

لہدوامناسب کرمیاں کام کے اندوجی انھی نیت کرلینے سے خلت نکی جلسے میونٹر دلیویٹ میں یاہے کہ قیامت کے دن بندہ سے اس کے مرکا کی باذم رس ہوگی ، حتی کہ ابھی میں مرمہ نگانے اور کسی تحریب طریعے کوچیونے اور انگلیوں سے مٹی کر دیسنے تک کا موال ہوگا ہ

ا درمباح کام میں نیت کرنے کی بیمورت ہے کہ مثلاً جعہ کے دن اگر خوشوں گائی تو یا تو پزست ہوگی کہ اپئ ٹروست تو نگری فاا ہر ہو ، یا پہنغسر ہوگا کہ خوشوسے خس کولڈرٹ حامل ہوگی ، یا بدارو ، ہوگا کہ اس طرح بن سنور کرھا ہوگا تو عورتیں میری گرویوہ ہوں گی اور یہ سینتیں منحود معصیت ہیں ۔

اسی طرح مکن ہے کہ ہنیت ہوکہ جدکے دن خوشبولگا ناستہ کا اتباع یعنی جناب دسول الٹرملی الٹرعلیرہ کے کھرکی

له حلية الاولسيار اندنرمبيدي ١٢

تعظیم ہے اور جورے دن کا احترام ہے اور مسلمانوں کو بداوکی ایڈارسے کا اور اور مسلمانوں کو بداوکی ایڈارسے کا اور ب اور او سے نوش سے ان کورا حت پہنچا نا اور غلیبت کے دروازہ کا ابتد کرنا ہے کہ لوگ بدلوس نگلیاں گے تو دو مرول سے غلیبت کرتے کھریں گے کہ نلا آت تھی۔ کے کیڑوں سے بڑی بدلوآتی تھی۔

ے پروں ہے ہیں ہو ہوں ہوں ہے۔ اس میں میں ارت وہے کرسول مقبول مل آپ انہیں وونوں فرنق کی جانب مدین میں ارت وہے کرسول مقبول کا آپ علیہ کے مارسے نوٹ بولگائی وہ قیات کے دن ایسی حالت میں آئے گاکہ شک سے زیادہ خوشبواس سے مہلے گی الت ہوالئہ کے سواکسی دوسری عزم سے خوشبول کا سے گا وہ ایسی حالت برائے گا بہ موالہ کے موالہ سے ذیا دہ بد ہو مجبولے گی ۔ ، کہ مروالہ سے زیادہ بد ہو مجبولے گی ۔

سرور اخلاص نيت . سيت كارين وم اخلاص بي حق تعالى فريايا بي كر وكور كواس كا

یم ہواہے کہ اللہ کی عبا دت کریم خلص نبحراور وی لوگ نجات پانے والے ہیں جنموں نے توب کی اوراپنی حالت سنواری اورالٹہ کی رسی کومنبوط تھا یا ،اور

الينه دين مين الشروا سط اخلاص كياس

خلاص کی ماہیت میں ہوندی علی کامیرک یا صرف ایک ہی

له الوالوايدالصفار مرسل ١١ كه الولعيم رسنيف ١١

یاصف رضائے حق ۔ ان دونوں براخلاص کے لئوی معنی صادق آتے ہیں کیؤی خاص اسی شنے کو کہتے ہیں میں سے مصل کی آئیزش ذہو ۔
مگرا صطلاح شرع ہیں اخلاص کے میعنی ہیں کم معنی تعالیٰ کی است مقصود ہو کیونکہ ماسولی کی جانب میدان اور قصد کرنے پر شرع اخلاص کا اطلاق مہیں ہوتا ۔ جس طرح المحادث کی جانب اللہ کی جانب یا کی ہونے کا نام الحادب، اسی طرح عبادت سے مقصود کا گرش کے معنی مطلق میادت ہے تی تو اخلاص کی بلاے گا۔ اور طرح عبادت سے مقصود کا گرش کی جانب کی جانب کی بارہ میں دنیا کے کسی فائدے گا۔ اور عبادت سے مقصود کا گرس کی باراور دکھلائے کی ہمیں تن ہو احداد کی میں میں دنیا کے کسی فائدے اگراس میں دنیا کے کسی فائدے اگراس میں دنیا کے کسی فائدے

كالجى اداده شامل مے تواس كو اطلاع نہيں كمي مح _ متلأر وزه ر كه سيمقعود يريمي بوكرروزه ركفناعبادت اوريمي مقعود موكدكعانے پینے كارم زكرنے سے بيارى كوبھی نفت ہوگا ، بس ا يك كام ي دونتیس شامل بوئنی تواس کواخلاص رکبیس گے یا مثلاً علام کے الدادي سے پیقعود موکر یرعبادت ہے اور پیجی مفعود ہوکہ ای طرح پرغلام کے کھانے كرك ك بوج عسكروش بوبائل ك . يامتلاج سيم مقديو کروہ نیک کام اورعندالٹرمجوب ہے اور پر پی نیست ہوکہ ج کرنے سے فر میں حرکت ہوگی اور حرکت سے مزاج صحت واعتدال برآجائے ایاب و عیال کے باسے چند وزکے لئے خلاصی مل جاسےگی ، یا دیٹمنول کی ایزاؤں سے نجات عال بوگى ، ياايك جگردست دست دل اكتاكيا بيد بس مغرس دل جيهل ماسيكا ، يآمنا وصوكيا مراس نيت سيك لطافت عال بوا وربدن كاميل كجيل دور بوجائي ، يآمشلاً اعتكاف كيا تاكر كمرك كواير سيم بكديشي بو، ياكسي بیاد کی عیادت کی مگراس نیت سے کتم ارسے بیار ہونے پر وہ تم ادی میات

کوآے ، یا مثلاً فقرکواس نیت سے کچد دیا کروہ مربود الا ورغل مجار الم تعالیں اس کا شور رفع ہوجا سے گا وغیرڈلک ۔ یرسب خیالات اخلاص کے منافی ہمی اوران کا دفع ہوتا و شواد ہے ۔ اسی لئے بعض اہل بعبیرت کا قول ہے کہ اگر ۔ اسک سے تونجات مل جاسے ۔ اسک سے کہ اگر ۔ اسک سے کہ اگر ۔ اسک سے میں اخلاص حاصل ہوجا ہے تونجات مل جاسے ۔

اید من وی بی الله من م درب به بست می اید الله من وجس کا ایک قدم حضرت سلیمان دارائی فوات ایس که مبارک بواس کوجس کا ایک قدم سیم ایسا اشعاجس سیم تعدو خوای کی ذات ہوئ حضرت معروف کرفی گین نفس کو ماریت اور فرا یا کرتے سے کہ لے نفس اطلاعی پیدائر آکا خلاصی حال ہو۔ مگر باں بینوں کی آمیزش محصی طوح پر ہوا کر ق میدی کو نیسی معاورت کی نیست پر خالب آجاتی ہیں اور مسمی مغلوب رہتی ہیں اور مسمی مساوی ہوتی ہیں ۔ بس اگر مباح کا مول کے اندر مضامے می تو نیسی می اور کسمی ضول می اس منازی تعدالی شنائر کا معروب اور تعدوی کی تواجه کا تواس کا می صول اور اس ما گا دواس کے اندر اطلاعی ما می شوال کی نیست کے ساتھ اگر دو مریح تصود کی کچر بھی آمیزش ہوگی تواخلاص باطل میں موال کے نیست کے ساتھ اگر دو مریح تصود کی کچر بھی آمیزش ما لی بوجا سے گا دور آگر وہ آمیزش خالب ہے اور قصدی بیا در شخلوب آئی تر کا اور آگر وہ آمیزش خالب ہے اور قصدی بیا در شخلوب آئی تر باطل اور سیکا دیے۔ باکل می باطل اور سیکا دیے۔ باکل می باطل اور سیکا دیے۔

تیدل کی صدق ہے اور پی اخلاص کا محال ہے ۔ حق تعبالی صندیاتاہے کہ

" ہمارے بندیے وہ ہیں جو لیے عہد لیں سیجے نابت ہوسے یا اور یول تقبول صلی الٹریلیر کے طرف نے ہیں کہ" انسان سیج ہولتا اور اس کا جویا بنار ہتا ہے ،

له بخاری وسلم ۱۱

یبال تک کہ الٹر کے بہال مِیزین انحعاجا تا ہے " حضرت الراہی طالسلام کی صفت ہی تعدال نے مطالب الم کی صفاح میں منطام کے سفام کے مسئل میں منطام کے مسئل میں کہ دورصدت کی فضیلت اسی سفام کے مسئل میں کہ بھتا ہے کہ بھ

مدق کے چھ درہے ہیں اور پی تخص ان چیوں میں کمال ماس کرتا ہے وه صديق كحظاك كاسرا واربوتا بيد مدق كه دري حد فيل بي: مدق قولی اوراس کا کمال یس تا بدے دوراس کے کمال ویں: اقل تعربین سے می پرمیزکے کیوند تعربین اگریے سے میں داخل ہی مركيرهم كين والاس مع خلاف واقع مفمون مجتاب المراس سي مي احرّاد كرك كيونكر جوت إلى الحريمت كاسبب يرب كراس ك وجرب قلب کی صورت میں مجی آجانی ہے اور وہ تق کی تحقی کے قابل نہیں رہتا جانے اليستخف كونواب بهي سيانظ مهيس أتاء اورتعريين كالكرج بثمره نهبي بتام اس کی صورت ہونکہ حبوث کے مشاہر سے اس لئے اندلیشر فرود سے سپر ممتلیق كى شان كے مناسب يہى ہے كہ ملاضرورت خاص دو سرے كو تعريف كے ديعہ مجى وا تعدكے خلاف امركا دھوكر شددے ـ

دوسل کمال یہ ہے کہ ان اقوال میں بھی صدق کا لحاظ رکے ہوتی تعالی کے سامنے عض کرتا ہے مثلاً نماز میں زبان سے کہتا ہے کہ میں اپنے آکے اللہ کی طرف متوجر کرتا ہوں ، لب اگراس کے دل میں بھی ماسوی اللہ کا خیال ہیں ہے تب تو وہ قول میں بچاہے ور منہ جوٹا ۔ یا مثلاً کہتا ہے اِبتا اِف نَعْدِمُ کُ وَ اِبْتَا ہُوں اور جھی سے مدد چاہتا ہوں یہ اِبتا اِق مَنْدَ بِی مُنْدِ بِی اِبْدَا وَ مَنْدِ بِی اِبْدَا وَ مَنْدِ بِی مُنْدَ بِی اِبْدَا وَ مَنْدِ بِی مُنْدَ بِی اِبْدَا وَ مُنْدِ بِی اِبْدَا وَ مُنْدِ بِی اِبْدَا وَ مُنْدِ بِی اِبْدَا وَ مُنْدِ وَ مِنْدِ وَ مِنْدِ وَ مِنْ مِنْ مُنْدِ بِی اِبْدَا وَ مُنْ اِبْدِ وَ مُنْدِ وَ مِنْ اِنْدِ مُنْ مُنْ وَدَود ہے تو یہ می کند بے میں اگر دل کے اندر زرکی طلب اور مال کی مجت موجود ہے تو یہ می کند بے میں اگر دل کے اندر زرکی طلب اور مال کی مجت موجود ہے تو یہ می کند بے میں اگر دل کے اندر زرکی طلب اور مال کی مجت موجود ہے تو یہ می کند ب

كيونكه اظهار توخلا كيمعبودا وراينے بنده بونے كاكرر بابولور دل بندة زراور بندہ دنیا بنا ہواہے۔

إدومرا درجه نيت ميستيا رسنے كاسے يخاليسا _ اخلاص كحس مي عبادت ا ورفعل خير كوقعه

کے سواکسی دومرے قعد کی مطلق آمیرش مرہو۔

و) النيراد رجرو ميں سچا فغے کا ہے ۔ انسان اکٹروزم کر تا ا بع كداكر مع مال بلاتواتى خيرات كود الاما المتلاخيال ہوتا ہے کہ محدمت ہا تھ آئے توعدل کوں گا۔ بس اس کا نام عزم ہے مگر لوكون كيوم مين فيلى بوتى سے اوركيس ترة دو تدين يا اى طرح مينين كيعزم بعى متفاوت بهوتے ہيں جن ميں اعلیٰ در در برہے کداگر جے جان جاتی ہے گر عزم میں صعف یا تذبذب ندآنے یاسے ، جیسے صرت فاروق فراتے ہیں کہ «میری گردن اوادی جائے تو میجه کواس سے زیادہ مجوب سے کہاس گروہ پر حاکم بنواجس میں ابو بوش موجود ہوں یہ نیس عزم کے قوی اور مفروط بعتے ہی کا نام عزم کاسچا ہو ناہے۔

چوتمادرج ، عزم کے پوراک فیرسجانی کا ہے ، کیونکھ اکثر انسان کاعزم آوسختہ ہوتاہے پھریوراکرتے وقت کا ہ*ل اوکٹ*ست بن جا تاہے ۔مثلاً مال ہاتھ آیا توصدة كرنے كابهت نهوئى ، اور يحومت ملى توعدل وانصاف نهوسكا،

مالانكماستحان كاليمي وقت بي كيونكرول ميسع مكرينيا توكيد يتوارزتها مكليف

اصل نے کا موقع نواس عزم کے پولاکہتے دقت ہی بیش آیا ہے ۔اوراس کئے

ى تعالى فرما تاب كرم بعض شخص اليس معى إن جوالله يع مدركر ي تع كراكر م كوال عطابوا لوضرور خيرات كري مح كروب التريك ليضفل سان كوال حمسة فإليا توخل كرفا ووزي يرفر ككه انجام ينواك الشفان كقاوبين نفاق بيداكرويا ق حالی اینوان درج به به که ظاهر و باطن یکسان بو بعنی ظاہوالت میں دی بوجو دا قع میں باطن کی حالت بور سنلازم جال يط اورطا بريرك كطبيعت بي وقار بوكر حيقت بي قلب اندوقار يزويكنف لوكوں كے دكھائے كوالساكر بساكر بساكانام دياہے واوداً گرخلوق كے دكھا في كاجي خیال نه بویلکمف خفلت وب توجی بوتواس کا نام اگریرریانونهیں بر گرمیر بی بین بكرحالستكادوج اودهيوسا بوراس لنةرسول عبول صلى الذعاية كلم نيرتك " بادالهاميرا باطن ميرع ظام رسيم بترياف واطام ي سالت كوصلام يت عطافوا يه مقامات مصرق المين خود وباورم في الما وروكان دروغوكا وه انتهائى مرتبره صل كسيجواتم بمثى بناف كيونكم ابتدائى درج مي النصفات مرونام كأم بواكرا سے البته انتهائی وروم پن بجريتيا خوف اوسي مجدت برارتياتي ہ چنانچری تعالی فرواتا ہے کہ حمومن وہی ہیں جوالٹرورمول پرایریان لا سے پھڑکھے شركياا ورندالتركي واسترني اينمال السهدرين كياري وككسيع بي خون مدق کے ان چدورجل میں کامل ہوجانے سعدیق کالق عطابوتاہے اورس كوان ميس ك كن درجر عال بوا وركوني عال بيس تواس كواي مقرار كروا مدق كامرتبه عال بوگا اوري ترمدق بكادرج بيمي بحكة قلب التركورنراق مجدك ال بودس ليكادروكك كرك دلهذا وكل كابيان بى مناشع لوم بوتاس ي

توکل کاسیان

ى تعالى فرما تاب كەس الله بى بېسلمانو*ل كويمودسسرىكىنا جايئ* ، لو**گ**و! اگرتم ایمان داربه توخدایر توکل کرو ،الله توکل کسنے والوں کومجوب مجمتا ہے ورجو خدار معروب کرتا ہے اللہ اس کی تمام ضرور توں کو کافی ہے۔ السّے مطا جن کی تم عبادت کرتے ہو وہ تم کورز قنبیں دے سے ، س رزق اللہی

کے ماس سے طلب کرو ؟

اوررسول عقبول صلى الله عليه و لم مرات يبي كه " اگرتم غدا مريو بدا أو ك<u>ك و كرك</u> توی تعالی*تم کواس طرح رزق دےگاحب طرح پرندکود*یتا ہے پیخالتھ فی ومشقت كرميخ كومبوكا المقتاب اورشام كوبيط بمراواب أتاب يادر كموكر ويخف الثركا بورس تأسيرى تعالى اس كوالسى طرح وزق بنجاتا

ہے کہ اس کاگمان بھی ہیں جاتا۔

توكل كيمعنى اس حالت كيس جو مق تعالى كويختا فأعل مختارا ورتمام صفات

كماليين تقل ولانتركي مجعة بيدابوتى ب، اوراس كے بعد بيحالت ایسے کام کراتی ہے جن سے توکل واعقاد ظاہر پواکرتا ہے۔ لہذا توکل کے میں کہتے

اقدل مونت ، وقام حالت ، سوتم اعسال . اب م تینوں کا مرائیلاذکوکرتے ہیں .

ركن اول حرف التي توحير اقرار كار أو المروت به العن توحير تق حركا اقرار كار أوحيد به وتاب كرسوا المعامل المركة الم

اس بی اس معمون کا افرارسے کری تعالی قدرت اور دیجد اور دیکن میں وہ کمال رکھتا ہے جس کی دجہے حرکاستی ہے ۔ بس جس نے صرق و اضلاص کے ساتھ اس کا افرار کریا اس کے قلب ہی اس افرار کی میں میں افرار کے معنی قلب پر ایسے غالب آجا ہیں اور صرف ول کے میری کہ اس افرار کے معنی قلب پر ایسے غالب آجا ہیں کہ دوسرے عنون کی اس میں گئی آکشس نہ رہیے ۔

ومرارکن حال توکل ہے۔ اوراس کے معنی میں کہ اپنے کام خوا کے موالے کو الرودواؤ ملب کو معنی رکھ کے کام خوا کے موالہ کردواؤ ملب کو معنی رکھوکہ غیرالٹہ کی طرف التقات بھی مذکر و بھتی ایسے ہوجا و کرچھیے محتی ہوشیا و در شین و معنی اور شینی و محتی کہ جانب تمہادا دل ڈانواڈ وانہ ہیں ہوتا کیون محتی ہو کہ تمہادا و کیل مرطری عقلمندا و رتمہادا خرخواہ ہے ہیں ہوتا کیون محتی تا کو محتی تم پر غلبہ نہ پانے دے گا اور مخالف سے اس کے سامنے بات ہی مذکی حاملے کے گ

اسى طرح جب جائنة بوكدندق اورموت وجيات اودخلوق كمحيط

بڑے سادے کام خدابی کے قبضہ ٹیں ہوئی اس کا ٹٹریکے نہیں ہے ، بذاس کی مجود وسخا اور پھکت ورحمت کی انتہا ہے ، میرکیا وجہ ہے کہ لیے قلب کے ملتن نرنبا وَا ورخِرے نظر نرا ٹھا وُ۔

ا بس اگراتنا جان کرجی توکل نرموتوسمجدلوک اس كاسب دوماتوں ميں سے ابک بات صرورب يعنى بالويوراليين مي علني ہے ۔ اورنعوذ بالٹری تعبالی کے رزّاق وباقدرت منع وبعیر ہونے میں کھ شک ہے ۔اوریا یقین توسیے مگر قلب پراس یقین کا اُرْنہیں ہوا بلکائیں گئا ہے صبے موت کے تیقن کی بواکر تی ہے کہ اوجود سی اس کا بقین مصل اواس کا علم ہے كيفروراكيدن بيس مرتا اور دنيا چوڙناہے مگر بھر بھى اليسے تاريس كراس كاكجه فسنختبين كرتے رسبب اس كا صرف يبى سے كرقلب ياس تقين کابودا اُرْنَهِ میں ہے ۔ یا دوسرا سبب برہے کرتمہا را تلب سیداکشی وار برضيف وكمزودوأ تع بواسءا ورخلِقَةٌ ثم بزول موكرضعف تلب كي وجه ستتبادا دل ايسه اولام كالمحكوم وسطيع بوكليا بير يقينياً باطل اومحفولات ہیں جس طرح مردے کے پاس اس کے بستر رسونے سے اکٹرو دمعدام مواکنا ہے ، حالان مسلوم ہے کہ بیٹردہ ہے اور کھٹی ہیں کرسکتا گر تھے بھی اس کے ياس ليدت كرنيي زمين آقى اور ڈرمسلوم ہوتا ہے كہ يہ وابهات توسمات ك حى توا طاعت بيحس في منعيف قلب كويتين يرعم ل مرف ديا -مثلاً بعن اَوْمِيول کوشہد کے کھانے سے نغرت ہونے بھی جیمحض اس واہم سے کہ اس كارنگ كوبر كے رنگ كے مشا برتو بم موتاب حالانكاس كالقين بوتا ہے کہ شہدہے گومنہیں ہے ،اومحض دنگ کی مشابہت کوئی پیزہیں ہ

اسی طرح محن ہے کہ توصید کا لیٹین کامل ہوا ور نام کوبھی شہریا نگل نہو بایں ہمہدا سسباب کے اختیاد کرنے میں نفس محبود ہوجا میے او داختیا کا ال حس کا نام توکل سے حاصل نہوسکے ۔

ترکار او المورک المال ا

اصل بات بہے کہ انسان کسی اور کوشش اکڑھار دجے ہواکرتی ہے، بینی یاتو کسی ایسی ہوتی ہے، بینی یاتو کسی اس کے مصل نہیں ہی ، اور کسی ہوتی ہے ہوتا کہ بینی ہوتی ہے اور یاتو کسی ہوتی ہے اور یاکسی آنے والے ضریکے دھی ہے اور یاکسی آنے والے ضریکے دھی ہے اور یا موجود و اقتصال کے دور کرنے ہیں ۔ میں اور یا موجود و اقتصال کے دور کرنے ہیں ۔

میملی صورت جلب منعت کہلاتی ہے اوراس کے تین سبب ہیں کریا توسیب اور اس کے تین سبب ہیں کریا توسیب اور یا آسس کا غالب کریا توسیب اخت یا ارکرنے پر نف کا حصول بقیب نی ہو، یا آسس کا غالب گسان ہو محف موہوم ہو۔

، سیمینا مینی کی توالیسی مثال سے جیسے در میکی: كونى سخص بيوكا بوا وركماناتيى اورد کے ان راعماد رکن فرق کی اس کے سامنے رکھا ہو گرف اتھ نە**بڑھامے اورنوالہ بناکرم**نەتک نەلىجائے اور کھے کەملى منوک*ل ہو*ں۔ يامثلاً منے کاطالب ہومگر ہوی ہے جماع نیکرے ۔ یا مثلاً غلّہ کا خواہاں ہو سکر بھے کیپت میں نرڈ الے ۔ سوالیپاخیال تومف حیالت اورلوالہوس سے کیونکہ ان اسایب رمُسَدَّتُ کا تَفَرِّعٌ ثِینِی ہے جن کوئق تعالیٰ نے قاعدہ کے طوریرتجویز فرماديا ب اوراس مي تغيرونس تل نبس بوسيما وبس اسباب كالفتياركريا شرعًا ضرورى سے دالبتدان اسباب ميں توكل كرنے كى دومور تي بس : أقرل اس كاخيال دكھ كرطعام اور إلى تعد مذاك وي بوس اور کھانے کی قدرت بھی اسی کی عطاکی ہوئی ہے۔ اس طرح تی اورکھیتی کرنے کی استعداداسی نےعطا فرائی ہے ۔ اسی طرح بیوی اورنطفہ اورجراع کی فگات سب ای ک قدرت کاکرشمہے۔

وقةم يركمان اسباب يرتعى ول مصمعروسه نهو بلكدول سيخالق يي محروب برنکھے کیونکر دل سےاساب پرتھروسہ کرناسراس غلط سے بینانچہ ظامرے کدامھی ہا تھ ہر فالج کا اثر ہوجائے یا مثلاً کھانا زمین کی برگرجائے، یا نے کوکٹرالگ جائے یا اولہ گریے یا گری کھا جائے تومقصود کی صورت ہمی نظیہ برآئے۔

المغرض ان دونوں باتوں کا لحاظ رکھ کرسی اور کوشش کرنے اور اسباك اختياركسف ينكي مفاكة بواورة اسباب كااختيار كرفاتوكل كحفلات بو

له وه شے حومسیت جوا لین نتیجہ ۱۱ نجیب که مرتب ۱۱

عال المحم اساكا في اكرنا دوسری مالت سبّب سبب مرتب ہونے معلی مال کی میں مثلاً منگل کا معلی خلاف وقت توشرساتھ دکھنا کا گوشش مندیا جائے تو فرساتھ دکھنا کا گوشش مندیا جائے تو فرساتھ دکھنا کا گوشش مندیا ہوئے کا مفرسب ہلکت ہوتو ایسے سبب کا اختیار کرنا بھی خلات توکن ہیں ، بلکہ سامت کا طریقہ اور ملی رکا معمول راج ہے۔ البت اعتماد اللہ بی کے مفل بربا ہا ہے کہ کا قرار کا کو وی اور فوالہ مے معنوط اور کھنے مرسے نے سے بیا سے دکھوگا ور مذکوری اور فوالہ مے معنوط اور کھنے مرسے نے سے بیا سے دکھوگا ور مذکوری اور فوالہ میں کو میال دکھوگا تو یہ کا داستھال میں اور فروگ کا ور مدب قرت وحیات بنے کا ور ذکھ بھی ہیں۔

ئے بیٹی مستبہ کے سبب ہرتب ہونے کابوہی وہم ہو۔ ۱۲

ٹہ بخاری وسل ۔ محرصور کی الٹرطیری لم سے داع کرنامسلم دغیرہ میں دواریت ہو توسطاریم بجریم اُرتو ہو مگر بہتر نہیں اور صورتی الشرطیر و کسلے ہواز بتائے کے لئے کیا تھا ۱۴

يرييت اورجانوروں كوداغ نهيں ديتے ۽ اس مصلوم ہواكہ ايسے اسبار كل اختياركرناتوكل كےخلاف ہے جن پرصتب کامرتیب ہونامحض موہوم جیسے منتر يرصف اور داغنے سے مرض كاجا تارسنا موہوم بات ہى ۔ اور جن اسباب سے مسيبكا عصل موناموموم نرمو بلكه فألب يايقيني موجيد مغريس توشر كفنايا پیٹ ہونے کے لئے کھانے کی طرف ہاتھ ترجعا نا اورجیا نا وغیرہ تویڈکل کے خلات بہیں ہے

سال بھرسے زیادہ اسکا شکا انتظام ادوسری صوریت سین آئنو کے اس کی انتظام انتظام انتظام انتظام کا میں اور کوشش کرنا ہے کہ ص کو رہا ہے اور کا ساتھ کا انتظام کا دوسری صوریت سین آئنو کے دوسری صوریت سین آئنو کی دوسری صوریت سین آئنو کی دوسری سین آئنو کی دوسری کو دوسری سین آئنو کی دوسری کو الافعيال كالمجن للف توكل ہج تدبر كتة بن و وضيد اساب تدبير

کے اناج معربینا یا آئٹ و کے لئے ذخیرہ جس کر رکھنا بھی ہے دسین اگرستوکا کھ مال عطا ہوا در ده سال معربازیاده کے لئے ذخیرہ جن کرنے تو تو کل حاتا بسے گا اوراگر ا يك ون كى نودلك يُعمر با تى سب بانس دية وَدَكِّل مِن كا طائعها ما سركا ، ا دراگر جالیس دن کا انتظام کرلے تواس میں اختلات ہے بینے سہل تستری ح یونبی فرطتے میں کہ توکل کے خلاف ہے ۔ اور معض دیگر شکحاسنے اس کوخلاف

البته أكريتف عيالدار موتوج بتعلقين كانان ونفقه اس كي ذمه ضورى ے ان کے لئے سال مرکا ذخرہ جم کردینا خلات تو کل نہیں ہے۔ ایسانور مقبول صلى الشرعليرولم في سحى كيا الميري كدانواج مطرات كوسال معركا لفقر ورست فرمادیا ہے۔ ال الینفس کے لئے مہیشہ بیمالٹ رکمی کدا گرمیج کومل گیا توشام کے لئے ج کرکے ندر کمااور شام کو الاقوس کے لئے کھے ندر کھا۔

اورسال بعرب زیاده کاانتظام کرنا توبی بیجی کے لئے سی توکل کے فلا ہے - کیونکاول تودوسرے وقت کا انتظام طول امل سے کر نندگی کا بھوس گفنظ عرکا بھی نہیں ہے ، میردوسری موک کے لئے جے کرناکسا ؟ اورسی وجہ بے کرمتناکسی کواس طول امل سے بحد بوگاای قدراس کا درجر برجا ہوا ہوگا۔ مرکزیونکری تعالی عادت جاریہ اوں قراریائی ہے کہرسال پی خلوق کے لئے نیارزق اور نیادان مرحمت فراتا ہے لب زا ایک عطالے سی دوسر عطا كے دقت تک كيلے ذخرہ فرام ريھنے كى بغرورت عيالداري كنجائش كُلُكُى كەضىيت لوگوں كاساتھ ہے كہيں پريشان التى دمور باقى سال معرسے زيادہ كيلي جي كرنا تونهایت وریرهنجیت ایمان کی علامت سے ۔ البتدا ثابی البیت بینی *تِن آبُوْ* اوٹا وغیرہ جو نکہرسال نیانہیں ہوتاا دراس کی ضرورت ہروقت ریٹی ہے لهذااس كم سال بعرب ذياده كيسك ذخيره جي كويلينين كحد حرج نبيل بي مركير المستعمل كيلغ ركه حيورنا بينك وكل كفلات وكيونكر اس كى بروقت ضرورت نهيس رجياني ظاهر بے كەجاڭسے كاكيرا كري مي كام نبين دينا اوركرى ككيراوالسيمي بيكاري اوراس بنارييسون قبول عيالله عليه والم نايك درونش كى بابت فرقا ياكتيامت كودن الساال في كالماس كا چرہ چود موں برات کے جاند کی طرح چکتا ہوگا لیکن اس کی عاورت پیتھی کرجب جا والا تا تقا توكرى كركيوك المندساليين دوسرى كرى كيدر دهيوداكواتها بس اگريعادت نميوتى تواس كاچروميكتر بوسية فتاب كى طرح دسمتا فرقع مضرت كالمحمى ولمنفعت السرى مورس ينى مرودة كليت م كاب اكف والے نقصان كے دفع له محرکاسامان ۱۲ که قوت القلوب بسندمیول ۱۲ کرتے کی کوشش کرنا ہے مثلاً درندہ کو دیچہ کریماگ جانا ۔ یاصبی ہوئی دیوار کے پاس سے ہدے ہوئی دیوار کے پاس سے ہدے ہوئی دیوار کے ۔ یا مرض کا علاج کرنا تاکہ جاتا دہے اور صحت ماسل ہوجا سے مسواس کے بھی ختلف مرا تب ہیں جن کو مذکورہ بالا اضمون پر قیاس کے تعرف کراہ بالا اضمون پر قیاس کے تعرف کے اسباب ریست کیا حصول یا نظام کا انظام کا اور یا ہودیا ہو

ضعيف القلر كواتني رصن كرنى يين الم جن لوكون كانظومين اور قلين طط اور المنطط وستري المالي الم

اذعان قوى بوسوان كويمي زيباب كما تكے دن كابھی ذخير جح نركري ـ

البترضعیف القلب کوزیرانہیں کران کی حرص کرے۔ بلکداگراتی حالت ہوکہ ذخیرہ فراہم نکرنے سے قلب کی پرلیٹائی کا اندلیٹ ہوتو ایسٹے فس کے لئے اس توکل کو ترک کرنا اور فرخیرہ مہتا کرنا ضروری سے تاکہ قلب کوفراغ وسکون لیس ہوا ورعبا دت مصح ہوسکے کیو بکہ طبیعت کے فکروانشتار میں جس نقصال کا اندیشہ سے اس کی اصلاح سسے مقدم ہے۔

بارجن نوگوں کو قوت ایمان اوقلبی اطبیان حاصل ہوان کو قواروا و منعینر

ال جن لولول لوقت الميان اور بي اطيبان على سيجوان لولالولاه سيجير مفركريا مهى جائزيد ، بسترطيح سات روز تك معوك يرهبراور هاس بات برر قاعت كري من الموسك مركون الموسك الموسك و من مورت كوليف فيال يه المستنف الراب الموسك و من مورت كوليف في الماري الماكت مسمتنا بيدا من الموسك و الماكون الماكون الموسك و الماكون الما

ہور کی بشرکا گذرہو ، جائز نہیں ہے۔ کیونکوائی جگر مذق بہنیا نااگر پر قدر خیا میں وافل ہے گرعادت کے خلاف ہے۔ اور ای لئے اگر کی خص کوائی گرزی والے تو وہ اس کی کرامت کہلائی ہے۔ اور چ بحربندہ کو زیب انہیں ہے آ قاکو عادت کے خلاف کرنے برخیوں کرے ۔ لہذا مصورت توی الا یمان کیلئے ہی گرنہیں ہے جگل میں قدشہ لئے بغیر سفر کرنا تو اس وجہ سے جائز تھا کہ خلاک عادت ہور جائی ہے کہ جنگل گھا ت سے خالی نہو۔ اور نیز آور میوں کا بھی وہاں اکٹر گذر ہوتا رہت ہے توجب قوت ایمان حاصل ہے توالی صورت میں بلاکت غالب نہیں ہے ، اہذا معصیت بی نہیں ہے۔ می وہ ان اور سو کے پہاڑ کی کھو ہی بیشان تو عادرت المشرکی قرابش کرنا ہے اور دیہ جائز تہیں ہے۔

خسلاصہ پر کمیے کہ گرمواش کے بھی اور واضح اسباب کی طات سے قویر سٹاکری بھی کی گھاس برقنا عث کرسے اورالٹر کے لطعن و حکمت پر مجروس رہے تو افٹائی وانسس ہے ۔



المعرفية المعرفية المرابعة

محبّ في كابيان

حق تعالی فرماتا ہے کہ التہ نیک بندوں ہے محت کرتا ہے اور نیک بندوں ہے محت کرتا ہے اور نیک بندوں ہے مالتہ علیہ و التہ نیک بندوے التہ اور جارہ و لائے میں التہ علیہ و التہ التہ اللہ اور اس کا روز سے ذیادہ مجوب ہوگا اس و تک تہ ہارا میان کا مل نہ ہوگا ہ صفرت صدیق رضی التہ عنہ ذواتے ہوگہ "جس شخص کو التہ کی محبت کا مزا آجا تا ہے اس کو دنیا کی طلب الکن نہیں رہتی اور وہ آدمیوں ہے وحت کا مزا آجا تا ہے ہ

اہل کلام وفلسفی ہونکہ اللہ کی مجت کے معنی نہیں سمجھے اس سے دہ اس کے منزم ہوکر لوں کہنے گئے گئے جس ذائ کا کوئی مشل نہیں ہواس کو ہماری طبعیہ ہے منظم سرانہ ہوسکتی اور نہماری قال اس کا بولا اور اکسار کرتی ہے اس کے منظم سے اور ارشاد کی تعین کہ اس کے اس کے

لے معنمون بخاری وسلم ۱۱ سے واقعی بات ۱۲

اورلذت بیشرادراک کے بعد عال ہواکرتی ہے مگرا دراک قیم کے بیں ءا یک اوراک ظاہری اورا کیک اوراک باطنی ۔ لیس ظاہری اوراک فیحالی خسرے ذریعہ سے بواکرتاہے ۔ مثلاً انکھ کوکسی سین اور وبعورت کے یکھنے لذست آتی ہے ،اورکان کوموزوں اشعارا ورخوش الحان کے گانے اور سرلی آواز كے شننے میں مزاآتا ہے ، اورزبان وناك میں چھنے اورسو بھینے كاحس دکھا ہوا ہے مزیدار کھانوں اور توشولوار میولوں میں لذت ماصل ہوتی ہے اور قام را ك توت لامك كورم وطائم اور نازك خير كحيوف مي مزاآ تاب، اوريبي چےری نفس کومبوب بی یعنی بالطبع نفس ان کی جانب مائل ہو تا ہے اسى طرح انسان كواكي حيثا حاتشه اوريهى مرحمت بواسي جوادداك باطنى كهاتاب اوراس كى جگر فلاے ـ اس حصے حاسر كو مع عقل كبديت م ي مي ور ل بعض كيوني ١١ كه برابر١١ كه يانيون مسوس كرن واليعني ديكية اسوتكة ، جون، سينة الديجين قتي ١١ ١٤ حيونه والم١١ هه محسوس كرن والى قوت ١١

ا وکیمی چیٹا جا شہ ۔ غرض نام بوکھیے بھی ہومقعود بیہے کہ باطنی ادراک پھیجے آپ فامرى كى طرح لينه وافق اورمناسب جيز سے لذت عصل كياكرتا ہے۔ جنانجہ رمول تبول ملى الله عليه وسلم فرمات مي كر" تمهارى دنيا ميس ستين جيزي ميري مجوب بنائ محئي مريحين فوشبوا ورعورتيس اورميرى أتتحمول كالمستاك كأنديك اورظا ہرہے کہ نوشیوسے قوّتِ شامّہ کومزہ آتا ہے اور نوبھورت عورت سے قوتت باصروا ورقوت لامسركولذت حاصل بوتى بيع مكرنسازكى لذيت واس خسه ظاہری میں سیکسی کو بھی نہیں آتی ، ہاں اس کی لذت اسی چیلے حاسر کو آتی ہے جو باطنی ہے اورص کامقام قلب سے ، اوریسی وجر سے کہ حرکا قلب بيكارس وه نماز مريحيى لذّت نهيس باسخااس لذت كا ادراكسليم القلب في بی کوہوسکتاہے اور انسان کی خصوصیت اسی چھٹے حاسہ کی وجہسے ہے ویش الواس ظاهري من توتسام حيوان مشرك بي رجيناني جانورول كوملي حيى صودت اورعده آوازا ورفائقها وركعاني اورنوشوسونتكئ اورنازك جيز کے چونے کی رغت ہوتی ہے

البتہ انسان جس طرح ظا ہری آٹھوں کی بعدارت سے حسین عور توں کی ادرت جصل کرتیا ہے ربعبہ پرسے باطنی

خوب برقى كاالتناز باطنى ما سهوتا برجس كالمحل قلب

نوب سیرتیوں کا مرہ اٹھا تا ہے ، بشرطیح قلب کی آبھوں میں بنیاتی بھی ہو۔ مگرٹ ایدتم باطی خوب برق اوراس کی لڈت کو نرمجہ کو کھیا چیزہے ، لہذا ہم ہے کہتا ہوں کہ تم اینے نفس کو ٹولو اور دکھیو کہ اس میں انسیار و اولیا آزا و محالم او

که عیب سے سالم دل والے ۱۲

علمارٌ کی مجت ہے یانہیں ؟ نیزاگربادشاہ منصف وبہا دراوسخی وعاقل اودابي دعيت برصر بإن موا ورووسراطالم وبزول نخبل وناسمجدا دراسي رعيت كحسا تدمخت ول اوركروب مراح كابوتوان دونون مي تنهادا تلب کھامتیازاور فرق کراہے یانہیں ؟ اگر کراہے تویں بوجیا ہوں کہ آخراس کی وجکیاہے کہ ایک مانب تمصالا دل کھنچتا ہے اور دوسری طرف نهين كفيتا بلك هرت كراكب ؟ الرغوركروك تومجه لوك كريدوي طبى لورك بي وخوسيرة مي لذت ياراك داى طرح من وقت مثلاً صفرت على كرم التُروجِهُ كَي مُتجاعِت وببادرى ياظلَ التُرصَرِت فاروق اعظمِ ملى سيات وعلدارى يأخليفة المى حضرت صداق ملى كيائى وجان نثارى كے قصيمتنة بوتوایک امنگ ا و دمسرت اوران حفرات کی طرف ایک قیم کا ایساسیلان ييدا بوتاسي كراس كاانكارنبين بوسخنا راس سے زيادہ صاف باستعجيو توغود كروكر فولول كولين مقتدائ خرمب اودصاصب تتربيت امام كرساته اتناتعلق بوجا تلبي كمعان اورمال كي خرج كرفيس لان كومطلق وديغ نہیں ہوتا حالانکران کی آنکھول نے ان کی صورت بھی ہیں دیجی اوراگر کیتے سى توشايداتى مجت نه بوتى ،كيونيم الحمل لذّت د وسرى قىم كى ساكلزّت اوراس لذَّت ميں بہت فرق ہے ، اوراگر محبت ہوتی بھی تر کھی میری سے ا صفات حيده ك ذريع بسي موثى ب ملكنتكوبونى كربنا ويلزت كس مائر سے ادراک کی فئی ؟ ظامرے کریہ وہی چیٹا حاستہ ہے جس کی جگہ دل میں ہے ، کیونکردل ہی آوسے جس فے ان پیشواؤں میں وہ باتیں پائی جن سے دل کولزت کا سے ۔

و على | اباگران اوصا ن کوتلاش کرو گے محبّت كاراب اً حن کی وجہ سے پیجیت عامل ہوتی ہوتو وقدرت اورتقد س میں اس میں دست تعلیں کے بین عم ادر قريت اوريت ييب بونا ركيو يح مقتوليان وين كوالشّها وداس كر يول من الشر عليه وسلم اور فرشتول ا ورآسمانی كتابون كاعِلم حاصِل بع ا وروه الشريم بغيرول کی شریبت کے دقائق وحقائق سے واقف ہیں ۔ دوع انہوں نے خداکی دی بوق مّرت سے کام لیاکہ لینے نفش کو مفسلوب بنا یا نفسانی شہوتوں کومٹا یاال حق کی سیدهی راه پر قائم اور چھ ہے اور نیزطاقت کوکام میں لکر خدائی خلوق پر قیصرکیا، سیاست ومککی انتظام سے مزاد اسیل کی آبادی کوزیرفران بنایااور خدا کے رہتی دین کی تلقین کر کے لوگوں کوسیدھ الاستہ تبلایا اور نیز عیوب اطنی سے پاک صاف نغا آئے کہ جہالت ہے ، جل سے ، حسد و کمینہ سے اور کم بغض و عدادت سيغف تراًم برخلقيوں سے بےعيب اورتمام عمد عادتوں اور اخلاتِ حسنه سے متصعت یا سے گئے ریہی تین اوصا مت ہیں جن کی وہرسے ان میں وچسن بیدا ہواجس کوحیوا نات نہیں سمچہ سکتے ، یرانسان سی کی خصوصیت بے كرفلب كے چھٹے حاسرے اس باطنى ص كا دراك كرا اوراس كا نستايتا ہى بؤص تم کو حیب ان اوصاف کی وجرسے بیٹیوا یان مذیریب اماموں کے ما تعميت بيختى توظا بربے كدرسول مقبول صلى التّرعليد وسلميں يركما لات بديج اتم موجود بين لب ذا آب كي ذات كرساته بوعجت بوكى وه درسا بمرك علمار وانبیار سے بڑھی ہوئی ہوگی ۔

اس کےبعدآپ (صلی الٹرطیروسلم) کودسول بنانے والی اورپیدا کرنے والی ذات پرنظرڈ الوحس نے تم پر لینے احسان فرماسے کہ حسنوار ہا

البياطليم السلام تبليغ كے لئے بصح اور عيرا بنامجوب بمئ تمہاری طرف ہوت فرايا - يه بالكل ظاهرست كم انسبيا رعيبها لسلام سيم عم وقدورت ا ودتقر ركوين تعلى ت ان کے بے یا یاں عم اور غیر مصور قدرت اوراً وصاف کمالیہ سے کوئی مثاب بنسي بوسى، فداى دات بيرس يركى عيب نام كويمي سي اواس كي واكون جير بني السي نهيس بوبرقم كرعيب اولقس سے حالى بواكرى خلق يس كون عيب نظرة أف توع واحتياح اورعبوديت وظامى في تويرانعق ب ا ورظامرے کراندیا علیم السلام میں بھی مو ہودے ، کیو یک اس مے لوق کاکوئی فروسی مشی نہیں ہے ،اس لئے کرسب جانتے ہیں کہ پی ضرات تو کھانے مینے کے معی مختاج تھے، نکسی کورزق دے سکتے تھے، نہالسکتے تھے، نہ فاعل مختار تع اور نقادر - ميرقا در ذوالحبلال كى قدرت اورانبيا عليم السلام كى قدرت ين كيامواز ين وسكتاب ؟ اى طرح في تعالى كے عمادل يُنظرو الو تواكي بير فظارس كركبس اس كاكناره بي بسير كوئى ذرة سى اس كعلم ك اصاطب بابهنهين كل سختا ، آسمان وزلمين بوش وكرى لاح وقلم بنجود جراغ ض بوشت خيال وذمن بين بين بين آسكى وهاس علام الغيوب لي علم ازلى مين موجودي عُرض انبيا مِليمِ السّلام ميس مِحكِيهِ بمى صفات نظراً تى تقلى وه وانتقيقت يُركّوا دِير ظافه بي صفات مداوندى كا _ ميرىب دهوب كى جانب با و جوراس كامارى اورظل آفتاب بونے كے تمبارانفس ميلان كرتابے تواس كے تعبداً ومصار ييني آفتًا ب كى حاسب كيون مائل بوكا؟ ادرج بم تعارصغات كى دجرس البياطيل الم كرساتهاس قدرى يهي توميد كصفات يعين في تعالى شاند كرساتة محبت كبويغ موطى ؟ له وه كام كرنے والا يے اس كا اختيار على بودا ته ببت بطادريا ١١ ی مترون کی جگہ اورمسادر مونے کی جگہ ۱۲

اس برمعی اگرتهاری ماطنی بعسرت محتی دی درجین کی محبت، مق تعالی کے طلال و کما لگادلک نكرسے ا درعشق نريدا بوتوكم سے كم اتنا تو ضرركروكراس كے احسانات العامات كوشاركروكروكس قدري واورظام بيكتم ان كوسركز شار ركر كوكيا اس ہے میں گئے گذرہے ہوئے کہ اس کواپنانھیں سمجھ کو سمجھوا ورنفس کوا*س کی جانب ماکل وتوج کرو ۔ دنیا کی جب چیزیں جی تم کولڈیٹا مسائے تی ہواس کو* سوي اورغوركرفيكاس كايين والااوربا في كحية والأكون برب ذراس توجر سيطلم موجا كركوني لذيب وركوني حظ اوركوني مره اوركوني نعمت اليني بين ويحركونني تعالى ك سواكونى دومتر تف في درس يعرك الفصن كرساتدة كومحت بس اواكرتى؟ اگر ہوتی ہے توبی تعالی کے ساتھاصلی محبت کا ہونا ضروری اور مقدم ہواس سے مامطلب يبجدا كفرشتول كاطرح تمكوق تعالى كيذا تبطال جال كي وصطاس ك بحبت دبوتوعام خلوق كى طرح اس كواين المحسن مي محبك السي سيعبت كوكداس حديثكا منشالورا موجائي صباب جناري صول الشصلي الشرعلية ولم في فأما يام كري الترتعالي معجبت كروباي وجدكه وه تمكو غذا ديتابئ اومجه مسمحست كروباي وتبركت تعالىجم مے معبت فاتا ہو یہ بیجنت صعیف اور کم درجری کوکیونکرا صاناتے کم دیش ہونے سے محبت بھی کم دبیش ہوتی سے رگی سواس ٹھم کی محبت کمزیوالانتخص اس خلام کہشل ہو چواپنے مطلب کی محبت رکھے اور با ہی نیت خدمت کرے کہ مزووری مطے گی اور ایناییت محرے گا۔

اصل اور کامل محبت یہ ہے کہتی تعالیٰ کے ساتھ ان صفات محمودہ اور

جلال وجمال کی وجرسے مجت ہوجن میں اس کی ذات لا مثر کیہ ہے اور کوئی اس کا ہم پتر نہیں ۔ اس سے الشہاک نے صفرت واؤد علیال لام کی خاب وی فران کر مجھ سب میں زیادہ بیالا وہ بندہ ہے جومیری عطا اور اصال کے۔ بغرص می ربوبیت اواکرنے کی فوق سے میری عبادت کرے ۔ اور زلوائی مشطورہے کو اس سے زیادہ ظالم کون ہے جس نے جنت کی طبح یادون تے کے خوت سے میری عبادت کی ۔ بس اگر میں دوز خ اور جنت کو نہید اکر تا توکیا عدادت کا متی نہوتا ؟

ایک مرتب مفرت عیی علیال ام کاچندایسے لوگوں پرگذر ہوا جوخلوت میں بیٹھے عبادت کوئیے تھے اور کہتے تھے کہم حبت کی اصدر کھتے ہیں اور دوزخ کا ڈر ۔ حفرت دفع الشرف فرما یا کہ تم کونلوق کی ہم طوح ہے اور مخلوق ہی کا ٹوونہ ہے ، واسے اضوس کہ خالق کے لئے کھی تہمیں ۔ آگے جاکرچند دوسرے لوگوں پرگذر ہوا جوخلونٹ بین تھے اور کہتے تھے کہ تم کون خلاک محبت اوراس کے جلال کی عظرت کی وجہسے اس کی عبادت کر لیسے خلاک مجبت اوراس کے جلال کی عظرت کی وجہسے اس کی عبادت کر لیسے ہیں ۔ آپ نے فرما یا کہ بیشک تم طوا کے ولی و مقرب ہو، اور تمہا ہے ہی یاس بیٹھنے کام محبک و امرہے ۔

نصل

مجت خدا کے آثار وعلاماً کے بیان کرنے کا یموق نہیں ہاں معن علامتوں کا ذکر کرفاضروری ہے .

له رب اور پرورد کاربونا ۱۱ که کما بوا ۱۱ سے صفرت علیق کالقب ہے ۱۲

سومنجسدان کے برہے کہ انسان نفس کی خواسش پرلینے محبوب بعینی می تعالیٰ کے کا ترجیح دیتا اوراس کی تعمیل کوسب کا مول پرمقدم سمجتا ہے دینی متقی در برمز گار دنتا اور مدود شرعیہ کا ہروقت کی اظار کھتا ہے ۔

حدیثی الله تعالی ملاقات کا شاک ہوتا ہے اور موت سے گھبراتا ہمیں اور اگر ذندگی چاہتا ہمیں اور اگر ذندگی چاہتا ہمی ہے تو محض اس لئے کہ معرفت می جتی بھی زیادہ حاسل ہواتنی ہی بہترہے تاکہ مجبوب کے وصال میں اندت زیادہ چاسکا اس خلیبیا اللہ معرفت مشاہدہ جمال کا بچ ہے ، بس مبتنا بچ زیادہ پڑے گا اس خلیبیا اللہ میں ذیادہ ہوگی اس قدر مشاہدہ جال میں میں لذیت زیادہ حاسل ہوگی ۔

مسیقی سخم المی اورقدار وقدر پرداخی دیہتا ہے کدگوادا اورناگوار ہو کچرچی پیش آتا ہے اُس پرزبان یا دل سے شکو پہیں کرتا ۔

اب مناسب ہے کہ مضابی قصا کا بھی کھ بیان کردیں آکانسان کو دھوکہ نہو ، اوداس غرہ میں کمجہ کومجتب خلاح سل ہوگئ ہے بمغود ہوکر ذبیر جا سے کی کی بیست ہی تعدال کا حاصل ہو ناکوئی آسان چیسز نہیں ہے میکن ہے تعدال کا میکن ہے تعدال کے تعدال کا میکن ہے تعدال کے تعد



﴿ ثَنْ مُكُنَّ اللَّهِ رضنا برقضا

حق تعالى في مسلمانول كى شان مي فرايا ہے كه" الله أن سے راضى ب أوروه الشرس واحى بي يو رمول تغبول صلى الشعلير وسل منتوات بسرك " حق تعالى جي كمى بنده كوموب بنا تاب تواس كوكمى معيبت مي مبتلا كرتاب يس اكروه صابرب ارتباب قواس كونتخب كرتاب وراكراس ک تعنا پردامی ہوتاہے تواس کوبرگزیدہ کراسپتاہے " ایک مترب سول لاٹر صلى التُدعليه وكلم في جندم عابرت يَوْجِعا كرتم كون بو ؟ انبول في كياكر يارمول الله ! بم موسين سلين بي ، أب في حياك تمهاد ايدان كم علا كياب ؟ انبول في وفي كياكه معيبت يومبركم في اوردا وت يرسكر مرت بي اودهنا پرامی رست بي . آي فرايا بدا تريي مون بوء حضرت دا وُدهلالسلام پردحی نازل ہوئی کہ لے داور ! تم می ایک کام کا تصدواراده کرتے ہوا وریس می اداده کرتا ہوں ، سگر ہوتا دی ہے ہو یں ارادہ کرتا ہوں ۔ بس اگرتم میرے ارادہ ومشیقت پرداضی بے اور طبع و فرا نردارس تب توین تمباس چاہے کی تلافی می کروں گا اور تم سے

لے بینی اللہ نعالی کے فیصلرفرا دینے اور تقدیمیں مکھ دینے پر دخامندر بنا ۱۲ کے الفردوس ، تعلیقا ۱۲ کے حاکم ، میچ ۱۲ سے قدر ۱۲

خوش بھی رہوں مجا ،اوراگرمیرے ارادہ پرداضی نہوسے توتم کومشقت و تکلیف میں ڈالوں گا ،اورانجام کاربوگا منرورو ہی ہوئیں چاہوں گا ۔ باتی مفت کی پریشانی تمہارے مسر پڑے گئے ۔ فصب لی

ا یک فرقدرمنا کا سنکریے ، اوراس کا خیال جس کو وہ لیل سمے ہوئے ہے یہ ہے کہ جو چزاین خواہش کے خلا ون ہوگی اس برخوش اور راحنی ہونے ك كوفي معنى في مهين بي ،البته ناكوار ميسر ضرور بوسكتاب- مريفيال نامعی اورتفودنم کی علامت ہے۔ یادرکھوکر ص طرح وہ لوگ محست اللی ك محصة س قاصروب اسى على رضا برقسناكي صورت كونهي سمح سك. إمننو! كلا وتكليف يرياضي بونااور تكلف يرضاونونتي بيوز فوابش نوس وطبيعت كحظاف خوش ہوناتین وجہ سے کن ہے: ا قرل : د دنه کی ملوق می دیچه لوکه فرط محبت ا ورجوش شوق میں انسان كواكتر كليف اوردر وموس نهيل بواكرتا رحينا نخ عنوق ارتاب مكر ام كى كىلىيەتىم بىرى داومىت كادرىي توملىنىسىيەانسان كى مالىت غلىت خبوت اودغفتر کے بوش میں بھی الیں ہوجاتی ہے کہ بدن پرزخم آجا تاہے اور مرميت جاتابيخون ببيغ لكتا اورهم لبولهان بوجا تابيه عواس وتسيكي می تکلید مجسوس مبیں ہوتی ، اس طرح تم نے اپنی حالت رکیمی نظر ڈالی ہوگی حس وقت تحسى مرغوب چيزکي بوس اور شوق مين محو ومستغرق عطيے جارسي موادل

كانتا يجيع جائے تواس وقت اس كامطلق درد ياكري محسور مبريع تليكا ا حب عقدرفع يا شوق خم برجا تاب، مثلًا مغوب شي مل ماتى ياس ك صول میں یاس و ناامیری ہوجاتی ہے آواس وقت بوٹ اور کا ماچینے كى كلىدى موس كلف كلى ب ربس سبب دراسى مبت ميں يه حالت بوتى بى تتكليف محسوس بسر بوف ياتى توزياده مجست مي توكسي برى تعليف كابعي حِس نبوگا ، اورجب برمالت دنیامی موجود ہے کمنون اورگوٹ ہے نے بھٹے اس انسان کے عشق میں بیرہ الت ہے جس کے بیٹ کے اندومنو^ل ناست بعرى بوئى ب اومورت كى نايائيدار معولى فولى فانتااثر بيداكرديا ب كرا يحول كى بنيان عبى اس قدر غلطى كرف كى كد نالارييز كواراب فخى اوريومورت في تولعورت نظرا في اورعوب محاس بن كرخبياب دكما كى دينے كگے توصفرت جلّ جلال كے جمال ازلى كاعاشقاً ناگواركوگوارا اور نالپندكوليسندكرف كه توكيابعيدي محالانكرقلب كى بيرت توالى موارت برطرة مقدم اولاولى ب رضا برمصيت واقعيس اي بنا برصرت مبنيد بغدادي في في في رس برسیب وال یک محبت الی کا اثر سے ؛ کومی بلاک تعلیت ہوت ہے ؟ شیخ نے جواب دیاکه برگزنهیس اگرستر مرتبهی تلوارسه مادا جاست می کلیدن مور ایک عادف فراتے ہیں کری تعالی کی محبت کے سبب مجھے اس کی پیدا كابونى برج رسى عبت بي يهال تك كالروون كو ومجوب بنائے تو میں دوز خ ہی میں جانا مجبو سیمبوں ۔ اس کامطلب برسے کہ اس کی مجت کی وجرسے آگ میں جلنے کی بھی تکلیف جسوس نہوگی ۔

صرت عرب عبدالعزئز گورات میں کہ سمیرے لئے کوئی خوشی باتی ہیں دسی باں اگرہے تونس بی تعدالی کی قضاو قدر رپدائشی ہونا رہ گیا ہے بی تیجی کھو مروقت حاسل ہے ہے

اكيصوفى كاحال لكهاب كداكي مرتبراك كاجيوا ابحيتين دن تكريح رہا ، اُن سے کہاگیا کہ اگر آپ دعا مانگتے توسی تعالی بچرکو لوٹا دیتا اور کمشرکی کی پیکلفت نداشگانی پڑتی ۔ انہوں نے بواب دیاکہ بچے کے مجونے سے نیادہ كليف مير سائع يقى كرس فق تعالى يراس كم عم مي اعتراض كرمًا -مكلف انج العني أواكي وقعت دوتسرى دجرتصار واصيون مليف الجال والجاوعت كيرب كتليف كي مورون بي مراد المال كالم كرويا كرقي المراد ا نے اس کے مبترانجام مینی عنے والے اجرو تواب برطلع کرویا ہے اس لئے طبیعت اس تکلیف کو بلاگلفت گواد اکرتی ہے۔ اس کی مثال ایسی جرصیے طبیر کمی دیش کوسٹے کے لئے گئے دوا بتا سے یا مصرکھ اوانے کی ہلیت کھے تواس صورت بين ظاهرب كراس تلخ دوا كابينيا ورفعد كاكعلوا ناتكليعت كى باتیں ہی گرج بی اس کے ساتھ ہی اس کے عمدہ تتیج بعین محت د تندیرتی سے منین کوآگابی مال سے لب زاوہ ان تکلیف وہ باتوں کے بتائے والے طبيب دامني اورخوش بكه اس كا حسان مندمينون دستاب - اسيطر سوداكر اينصغر تجارت كي كوناكو صحة تول ا وتشقتون برواحني بوتاب حالا الحرظا بريح كم طبيعت ان كاليعث كونا كوالمجتى بيرء مكري يختفل في اس مشقت كاحيا

نتیجہ وانجام مجمادیا ہے اس نے وہ ناگواری دخا ورغبت سے برل ہاتی ہو۔

ہس تحت دنبا کے نا پائیدار فائروں کی یہ حالت ہے کہ ان کی دیر سے
مشقت مشقت شخصی میں تو تعبلا اُنروی سعادت کے حاس کرنے ہیں

بلا و تکلیف اور خلا ف جہت مصیبتوں پرا اُمنی ہو جانے سے کیوں تو بہتا ہی ؟

ایک پادسا عورت کے ایک مرتبہ تعویرت کی اور پاوں کا ناخن کس کر رہا اس تکلیف سے بجائے وا دیلام پانے کے یہ نمیک بی مسرور ہوئی اور بندی ، لوگوں نے دریا فت کیا کہ کیا تم کو تکلیف جسور نہیں ہوئی ؟

عورت نے جواب دیا کہ چوٹ کھنے پر جواجر آخرت میں مطابقا اس کی حلاق نے تکلیف کی خواصل ا

حفلاصد یہ ہے کہ چھی سے دل ہے اس کا یقین کئے ہوئے کہ دنیاک ہرتھا ہوگا ورہرصیبت و دنیاک ہرتیلیٹ ہرتی تعالی کی طرف سے اجرم حمت ہوگا اورہرصیبت و صدم ہراس خدر تواب عطا ہوگا حس کے مقا بلہ میں اس عارض تکلیف کی کھے حقیقت نہیں ہے تو دہ تکلیفوں پرمسٹوول ورشاداں ہوگا ۔

قضا وقدر كى ممتير سويت سيرى وجرتفنار برياضى بون كى معاملات مى المرابع من الم

ہروا قدیجیبروحا در جدیدہ میں ایک کیا بیسیوں لطائف مسطور میں جن براگاہ ہونا صاحبان بصیرت ہی کامنصب سے ۔ بس انصلحتوں اولطیفوں برنظر کرنے سے تکلیف تکلیف جہیں عسلوم ہوتی ملکراس عالم فانی میں ہو کچی ہورہا ہے

اودحب كومابل واحق شخص تشوش واضطراب سمجير بوير يركز وتعجب كرثابح اس كوصا حبانِ لبسيرت سمجه حائة بين كريتعب اليساسي سيعبيا حضرت موسى مدالب لام كوحضرت خضر علالب لام كرساتهد وكران واتعات التعج بط تعاجس كامفسل تسترمورة كهماس مؤور سي كردونون ايكشى بينيق حضرت خفرش خ کشتی کا ایک تخته بهاط دیا ، در گاتعب کے ساتھا خران مجملے كك كرير اوتى يون كى ، ميراً ع يطر توصرت خضور السلام في الكي الغ الط کے کو اروالا۔ اس مریمی موسی ملاسلام نے تعجب کے ساتھ اعتراض کیا كمعسوم بحيركا نون كراكب جائزے ؟ كيراً كے جيا اورا يك ليتى ير بہنچ ك وہاں کے رہنے والوں نے ان کے کھانے کک نبر نہا، میچ ہونے پردولو اس تصبیر نیکے ،ایک ویوادنغاری جوجبی کھڑی تھی ، مضرت خضرطالیس لمام نے اس کوسیدھا کردیا ۔ موسیٰ علالسلام کو پھر بحب ہواکرائسی بے مرقب قیم کے ساتھ جس نے مسافروں کے خورونوش کی بھی خبریزل مفت احسان کونا وليئ تقا وغف جبتين مرتبه اعراض بوديا تب حسب قرارداد صرت خضر والراس سے مفارت ہوگئ

مخت ضخال المراكم أفعال المنظام وانعات عب كروني عليات المهاان وانعات عب كرامي المعنى المورد من المعنى المراد وروز سي مخلوق كي ببودك كاسبب شخص وانقد المراد والالمام كوان معلى كولا المراد المرا

مبطنه بوجاميه واوروه نابالغ بجيرص كومين فيقتل كيافطرة بدون سبط بواتقاا ورغالب اندليت بتقاكه بالغ بهوكر ليغ مسلمان مال بايكونكم ليو کرے گاکہ وہ شفقت مادری ویددی کی دجرسے اس کا خلاف ِ نرکسکیں گے لبناس كاكام تمام كرويا تاكراس كيدارس صابرمان بالي دوري ولاد خيجهالع وسيدموا وروديي آخرت بنه را ورديواردو يتمنجول كمنفى، جن كانيك بخت باب اس داواسك نيح فزاند دباكر هيود كيا اوراس كوخوا كحاله كوتراتها البيذاس فيسيعها كرديا تأكر بالغ بوكراينا القضيي لائیں اورد اوارگرجانے سے خرانرظا مرموکر حقداروں کے علاوہ دوسروں کے پاتھ نرگلنے یا سے ۔ بس اس وقت موٹی علالسلام کاتعجب من ہوگ فاكوارواقعات مرمصلحت اليب بزرك كاتقتب كروميكل فراونری مضر ہوتی ہے گرمایال رکما تقاض الباب المين يستق تعجاد لانهول الك لا ديت تع اورايك كتاركه حيورًا تفاجومكان كي مفاظت كي كرياتها الح ايك مرغ يال ركها تعاجواذان في كرسب كوجهًا دياكرتانها رالشك شان كم ایک دن لومری آئ اورمری کو پیوکر کے تی ۔ ان کی بیوی روز لگی کاتے مرغ جاتارا يشخ نے فرماياكه ووقعت اسى يى بېترى بوكى يواس ك بعدوه رياكيا اوركد سع كوماركيا واس وقت بيوى بورنجبيده بوئى توشيخ نے کہا کہ " اس میں خریت تھی رونے کی کوئی بات بہیں یہ اس کے بعید دنعة كتامركيا اوريوى يغمكن بوئى تواس وقت سيخ في يوي وسوايك "غُ مَرُواسى مِس معلائي تقى " بادباديرش كربيدى كوتعيب بواكصريح نقعاً مور اب اورخا وندمعلائ معلائ يكارر الب عوض مع موئ تودفعة

منیم کاا کم شیخراس میدان میں اوٹنے کے لئے آپٹرا اور چینے بھی گھروں کاان کو پتہ پیلاسب کو لوٹ لیا ا وربجزان بزرگ اوران کی بیوی کے سب ہی کو گرفتاراور باندی غلام بناکریے گئے اورمکان کا بیتہ نشان دشور، کی فوج کواسی سے میلاکسی کے در وارہ کا کتا آہٹ پاکر بھونیخے لگا اوکسی کا گدهادینک را تها اورسی کامراً اپنی بانگ بلندکرر (تها رام وقت ان بزرگ نے اپنی بوی سے کہا کہ دیچھا! اس باذیترین قوم کی بریادی سیب یمی جانورین گئے ،لیس نواکاکتنافضل تعداکہ ہا ہے۔ نیوں جانور<u>سیلی س</u>کنے اگرآج وہ زندہ ہوتے تویم بھی دوسروں کی طرح وشن کے ہا تھوں میں گرمتا کھتے۔ مر مطلوم مشكايي ايك نيكسي بدالالكوس سط البويءعبادت كريس تقحاويها کے قریب چیم تھاحس پر اکثرا وقات پیاسول کی آمود فت تا تا تھی ۔ ایک مرتبرا کے سوارا یا اوراس نے نقدی کی ہمیائی توکرسے کھول کرزمین ہر ر کھ دی اوریا نی پینے لگا ،اس کے بعدویاں سے چلاگیا اور پیلی وہی جول گیا متعوری دربعدایک اورشن آیا اوتصلی کوویاں بڑا دی کراس کھا اسکال اواسيكريل ديا ـ اس كے بعدايك غريب مزور سريكر لول كاكشالادے ہوسے آیا ورکھانین بروال کرآرام لینے کے لئے جتمہ کے کنا دے مبھیگیا۔ لتنة ميں قدموارس كي تعيلُ رحجي تنى گھبرا يا ہوا آيا اوتھيلى كونريا يا ۔ إدھركوھ دیچا، جب کوئی آدمی نظرنه آیا تواس بجارے مرور کے سربوگیا۔ سرحینداس کُ ا نکادکیاکیں نے صلی کودکھا ہی نہیں گرسواد کونٹین نہ آیا ، سہاں تک کہ اس نے تلوارمیان سے نکالا اور غربی مردور کی گرون او اوی ، اس کے بجدليشت ببيري ودجلاكيا ر

فضل

مضا برقضا کاصیح مطلب تاکه کا فرکے خوش ہے ادراس کا چوڈنا کھوڑنا کھر مطلب تاکه کا فرکے ارضا بھا کہ اور اس کا چوڈنا کی مشاروں کا بھا کہ کا میں کا کا کا کہ کا کہ

ا عالم وجودس لانے کے دائد ١١

جرع نهيں ہوسكتيں . ظاہرے كجس كام كوتم ناگوارا در براتمبو كے ال نغريت حذود كروك اورص كواحيا مجوك صرولاس سنوش بوذكاور ناگواری وفوتی دونوں ایک مم مرایک حقیت سے برگزنہیں ہو کتیں البت دواعتبارسيهمي بي رمندلاً ايشخص تمداراتين بواورتها لي وشي كابي وشن بوتواس كوقتل كمناس اعدار سے گوالا اولي نديو كاكر وہ تمبالا في ب پھواس متبارسے اگوارو نالپسندہوگاکہ وہ تمہالیے پیشن کا بھی تیمن سے *کی*وکھ وشن کوشن کی زندگی طلور بوتی سے تاکہ وہ ای تشینی کی ویرسے تمہا سے

وتمن كونقصال مينجا تاسيء

اسىطرح كفرومعصيت مي مي حقيقي بي داكي الويركروي تعالى كاراده دوشيت سے ب كيونكم نداك مم كينبر در الاي مي الكا بس اس انتبارسے تواس کوفشاا درتقد مرکتے ہیں ادراس حسیت سے ، ب برناگداری می نهونی چاہتے بلد رضا مونی جاستے کر حق تعدالی کا جو کا کا ب ومعلوت سے البترائ عصیت می دومری حیثیت بر سے كر فرو معصيت كافراور عاصفت مس كاعمل اوركسب سے اور فق تعالی كے حرف اور نا ذمان ہونے کی علامت ہے ، بس اس اعتبارے بیشک ناگواری کیفس مونا بياسين كيونح ت تعالى في كوم دياب كرس سنده برمار كالفت كي ظامتين ديجها كرواس سينفس ركه اكرو بيس خدا كي يحكم كيميل كنظا ور كافريكيف ركسناجي في تعالى كرحهم يرداسي بونا بوا-

اس كى مثال اليسم موكرمت لأتمها لا بيالامعشوق تم سے كرميں تهادسيعشق ومحبت كاامتحان لون كاا وراين غلام كوجبوركرون كاكوه كمك گانی دے ادر پیواں کو ماروں گاکہ مجھ کوگانی کیوں دی تو چھنس میرے اس الل سيغف ركھے گا اس كومحب اورعاشق صادق مجھول گا ا درجاس محبت كمسيكايس اس كواينا يتمسيمجون كاراب فرص كروكدايسابي بوابعيني غلام نے تہادے سامنے محبوب کوگالی دی اب تم ہی بتا ڈکراس غلاسے تمحت د کھوگے یا بغن فی عداوت اورجس وقت اس کی زبان سیمجو کتے گالبال دیتے ہوئے تورامی ہوؤگے یا ناران ؟ ظاہریات ہوکہ گالسال تواس وجسے ناگوارمی گذریں گی کدان سے تبہار معبور کی عربیکی ستك بوتى سے ، اور تحق كاليساكرنا تمهار معشوق كے دن بونے كى علات ب، اورمجوب كارش كرص يريشي كى علامتين عي موجود بول بشيك تغيض و علوت ہی کے قابل ہے مگراس اعتبارے کہ بیتمہار محبوب کی مسالی کے موافق فہود مور ہا ہے ،کیونکہ ہوکھیٹام سے صادر مواہے وہ مجوب ہی کے ادارہ اوق سیسے صا در ہواہے ، کچہ بھی ناگواری مزموگ ۔ بلکم مجوب کی ندیت كالقين بوكاكراس في لين غلامول سے جوكام مى لينا جايا ده ليات ك ابن مسن ذات كے لئے ادنی علامول كى زبان سے كاليان كوانى يا بى تواس ير محكسي كوسرابي اورحم كى خالفت وعصيان كى مجال زموتى _ اس طرح کا فرکا کفر محمو کر جوند می تعالی ہی کے ادادہ اور شیست مورا ب استاس انتبارے تو ناگوارگذرنے کا سب بیز ہیں سکتا ، مگراں کے ساتھ ہی چوبی خداک رصامندی اس پرنہیں ہے بلک کفر کرنا خداکے بیمن ا ومبغوض ہونے کی علامت ہے ، اہمڈااس اغتبارسے بدو کا کفرکر نا ضرور ناگوادگذرسے گا ،اسی وجرسے اس کونسیوت بھی کی جاتی ہے،اور سيك فق بمي ك ما ق ب ميوند ان حقيقي مبوب كارشمن ابنايي وشمض لوم بواكرتاسے۔

رضا برقضا نيرين وكودعا مالكنايا التحراح رمنا برقضا كي ميني وكالميا تيرانداني بوتيرتمهارى طرف يينيكا ہے یا وبودیٹراس کوڈھال پرروک سکتے ہوم گرمیر بھی اس کو نروکوا ور ليغ برن برليك دواوريول مجبوكرقضا براضى دمها جاسيخ والساسحجن الجبي جبالت اورخام خیالی ہے ۔ کیوبحد دعا مانگنے اور شریعے حفاظت وتد سر كرية كالوشرعا كحم ب اور محبوب ك يحم م مرتابي نهيس برسكتي، لهذا يبال دمنا برقضاً كمعنى بي بي كري تعالى نے سی شخر کے حصل ہوتے کے لئے جواساب مقروفر اویٹے ہیں ان کواختیار کرو تاکہ محبوب یم کو اپنے انتظام کا یابند دکھی کرتم سے داخی ہو ۔ اوراگراسا کا اختیاد کرنا چوٹر دوگے تو معبوب كے مخالف اور رضائے موسے مثمن كملاؤه كے مثلاً كوئى بياس آدی پانی پائے مگراس کی جانب اتھ نرطعائے اور یوں گمان کرے کہ مِن توبِياس پروافى بول كيونكربياس حق تعالى كے محم اور قضا وقد سے بے اور تصابر راحی رہنا جا ہتے ، توقیق بے وقوت کہلا سے گا ، اور اس كوسجعايا جائد كاكركياتوى تعالى كم مقر كير سي اسباب اور عادیات جاریمی رضد والتا سے ؟ یا حدود شریعیت سے با برکلنا عاستا ہے ؟ تونے ہو کھ تھا ہے برقورضا کے ہرگرمعنی نہیں ارمناتے تو صرف میعنی بمیں کری تعبائی برظا ہرو باطن ا ورزبان بادل دونوں ہے سے کوئی بھی کسی حالت پراعتراض فرکرے اوراس کے ساتھ ہی اس کے مسکم کی میل بھی ہوا ور ہوانتظام اس نے عالم کے لئے تجویز فروا دیا ہے اس سے بهي بابرنه نكله، بكه شرى احكام كابورا بابنديوا ورض طرح تى تعالىٰ كى

مرض ہے اس کے حال کرنے ہیں ان طون سے کوئی ایجاد ذکرے۔ مشلاً حب دُمَا کا حکم ہوا ہے قضرول ہے کہ اس کا تعمیل ہو تا کہ ختوع وضوع اللہ علیہ رقت کا اثر اُسے اور وہ لیا قت واستعداد حال ہوجی اختیا دکھی اختیا دکھی ہونیا ہو تا کہ میں اس بر آئی اس اس کو بھی اختیا دکھی اختیا دکھی اختیا دکھی اختیا دکھی اختیا دکھی اختیا دکھی اس بر کوئی خلیان ہیں ہوتو ہونا چاہئے بکر راضی ہے اور خرص ہونا چاہئے بکر راضی ہے اور خوک خلیان ہوتو الحقیقت ہو ٹر تھا نہیں ، اور ی تر بھی کوراضی رہنا ہوں میں میں کہ میں میں ہوئی تو یہ مرے مزن وغم یا شکوة و ختیا ہوتا کا اما حث بھی جسل نہیں ہوئی تو یہ مرے مزن وغم یا شکوة و ختیا ہوتا کا باعث نہیں ہو سکتا ہے۔



فركموت كابيان

یرنومقا مات جن کا ہم ذکر کرھیے ہیں سب ایک مرتبہ بی نہیں ہیں بلکہ ان میں سیعنی توحقہ و بالالٹ ہیں جیسے مقام رضا ومجست ، اولیعنی تقعنی بالکی مرتبہ بی نہیں مثلاً تو بروخوف اور صبروزید ۔ کیون کم مقعن ہیں خود ورضہ بیں ہیں معلون میں ہے اور بین ام مقامات دا وقرب کے معین ہیں خود وقر شہبیں ہیں کھون میں تو مورفت اور مجست سے حال ہوتا ہے اور معرفت ومجست میں مال نہیں ہوسکتی جب سے کے فیرالشرکی مجست فیل نہ کودی جائے اور فیرالشرکی مجست فیل نہ کودی جائے اور فیرالشرکی مجست فیل نہ کودی جائے اور فیرالشرکی مجست فوف وصبرا ور زیرو تو بہی کے ذرایعہ سے قطع ہوسکتی ہے لہدند ان کی بھی صرورت ہوئی ۔

اورپونٹر پخسلہ ان اموں کے جن سے قرب بن ہیں اعانت حال ہوتی ہی حوست کا یا درکھنا بھی ہے لہ ندا اس کا تذکرہ کرنا بھی مناسب ہوا ، کیونٹر موت کے ذکریے دنیا کی مجبت قلب سے جاتی دیتی ہے ا ورجب پیعلاقہ قطع ہو گا توجی تعدالی کی محبت حاسل ہوگی ۔

اصلاح المسل على المربع المسلك المربع المربع

مل كريس كى يورسول معبول صى الشعليه وسلم فرمات بهي كه " لذكول كالمست والى ينه بعين موت كاكترت من ذكر كياكروي حقرت عائشر صى الشعنها فرماق بهي كم " بين في اليك مرتب جناب رسول الشصلي الشعليه وسلم سيون كياكر يا دسول الشرصي الشعليه وسلم حورات دن بين بلين مرتب موت كوياد كرليتا بوي الهي عن المول الشرك الشعليه وسلم فرمات بين بلين مرتب موت كوياد كرليتا بوي وسول الشرك الشعليه وسلم فرمات بين بلين مرتب موت كوياد كوليتا بوي بين موت كربل كوى واعقابي بين موت كوياد كورت كالم ما تعالى الشعلية وسلم كورت كالحق بين موت المدور سراواعظ واعظ جيورس الدورس المواعظ واعظ جيورس الدورس المواعظ واعظ جيورس الدورس المواعظ واعظ جيورس الدورس المواعظ المتناق يعنى موت الدورس المواعظ المتناق يعنى قرآن مجيد يعنا المتناط المتناق المتناطق المتنا

موت بری بولناک بیز بادر بوت کے بعد کے واقعات اس نیادہ خوفناک بی اور ان کا ذکر کرنا اور یا در کمناد نیا کو منتقش بنا تا اور اس دار نیا ایک کری برگذاہ دار نیا ایک کر بحب کو دل سے نکال لیتا ہے اور دنیا کی مجت بی برگذاہ کی برا نبیادہ ہے ، پس جب دنیا سے قلب کونفرت ہوگئی توسب کی برا گیا اور دنیا سے نفرت ہوگئی جب موت کا فکرا ور خیال ہوگا کم عنقریب ہم پر کیا ہوت کا فیرا کے د

فكرموت كاطراتي اقتصوركي فينت فنوت بسريتي رماي فيا

له توفى وحاكم ميع ١١ كه طرانى ، محروايت حادث مي جواوريرعائش والمي نبي ١١ كه طرانى ١٠ كله بيرة ١١ كه طرانى ١١ كله سبق ١١ كله من مكترد ١١

کوول سے نکال دواور تلب کو باسکل خالی کرے توجرا ورعزم کے ساتھ موت کادصیان کرہے ۔ اوّل لینےان دوستوں اوداء ّوا تادے کا تعود کرو ہو دنیاہے گذر گئے اور یکے بعدد سگے ایک ایک کا دھیان کرتے حاف کہ پر صورتمی کہاں ملی کئیں ہ کیسی کسی امیدی اے ساتھ لے گئے ، مرف اس نے ان میں ایناکتنازور و کھایا ؟ جاہ ومال کی کیا کچھ تمنا کیں اور آرزد کی ان کے دلوں میں رہیں ، مگر وہ آج سب خاک میں مل گئے اور منول می کے نیے في يرتيع بي كوك تشخص ان كانام بعي نهيل بيتا راس كے بعد مرنے والول کے بدن اورجم کا وصیان کرو کہ کیسے حسین اور نازک بدن تھے گراب یادہ ا ہو گئے ، گل گئے ، میسٹ گئے اور کرے محور وں کی نذابن گئے ۔ اسس کے بعدان کے اعضار اور جوارح میں سے ایک ایک عضوکا وصال کروکھ وه زبان کیا بونی توکسی وقت جیب بونا جانتی بی بین تھی ، وه اتھکہال كربوتركت كباكرت تمع ويحف والى آنكيس اوران كينولبورت علقے کس کیڑے کی فوراک بن گئے ؟ غرض اس طرح بروصیان کرو گے آو سعيدين حاق کے کیوبی رسول تھبول کی الشرعلیہ وسلم فرمائشتے ہیں کہ سعیدوہ ب جود وسرول نفیجت حاصل کرے "

له اس صيت كوشاه ولي ألله فالعبين من لياسع ١١

خطرناك مفرديش بي مريس كيريداه نهيل ، اس مدر عفلت طول الل نے پیداگریمی ہے ،اگریچہالت رفع ہوتوموت کا وصیان آئے ۔ اسی بلخ دمول عبول صلى الشعليه وسلم نے حضرت عبداللہ ب عرض کو نصیحت فراتی تفح کم مصح بوتوشام كالمستكر فراورشام موتوميح كاخيال مذلاؤ ،اوردنياي كنه بوتوزندگی میں موت كاسامان اور تندييتي ميں موت كاف كركرو _ كيون كمساعد التر إكيا خرب كل وتمها دأكيانام بوكا بين نعوم كاياموه ؟ جس شے کے آنے کا کوئی وقت مراث میں اس کی فکر قدیم وقت ہونی جاہئے ۔ يس اين اميدون بي خاكر الواور آرزووك كويش من دو من العافي كنتر بدوري بي صرت أسام شف فتوديدامي دومبينك وعده يراكب كنيز خيرى جنا رسول النصلي الشُّرعليروسلم في فراياكم " أسامركي ما لنت يرتعب كروكرنزگي كالمروسرايك دن كالمجي البين اورود مهينرك وعده يركنز خريرى سي طول امل ہے ، خدا کی قسم بوکر تی اوالد مندمی رکھتا ہوں اور نقین نہیں کرتا كرحلق سينيج اتسع كالج منحن بوكرنوالرك كعات بي أجيو يرجاب رميندا لگ جائد اوردم مکل مائد وگو! اگرتبین عمل ہوتو لیے آپ کومردوایں شماركرو وقعم واس ذات كيس كقبن سيمحدكي جان وكر وكي وعدوكياكيار وه صرورك والا بواور وك والا بوه بهت قريب، أكرتم كوجت من افلان كىۋابش پوتودنياكى لاطائل اميدول كؤكمكروا ودموت كوبروقت يثين ظر ركھوا ورالسرسے شروا وسيساكه شرك كا حق ب انشارالله تعالى جنت مي اض ہوماؤ کے "

فالمحري

بوکچهاب تک بم نے بیان کیا ہے اس میں ہم تم کوبیلاا وثن تنہ کرچکے
اور الٹری جانب چلنے کا شوق ولاچکے ۔ پس اگراب بعی کان نه نگا دَکے ، یا
ایساسنو کے میسا کہ قصاکہ انیاں کُسنا کرتے ہوتوا پناہی کچھوڈ کے کسی کالیافقہ اسے دیا وہ فلا کون جس کو پرورد کالا احتماد کی اور اس نے ممنز کھیرلیا اور مجول گیا کہ فرد لے تیا مت کے لئے کیا بھیری اور اگر توجہ کے ساتھ سنو گاور دل سے کان نگا کے گئے ۔ اور جو چہزیں صرا کھستقیم سے دو کے ہوسے ہیں ان کو جیوڑ وہ گے۔ میں وہے ہوسے ہیں ان کو جیوڑ وہ گے۔ میں وہے ہیں ان کو جیوڑ وہ گے۔

 حى استرفس ل ومراقيركي في البرى سعادت اورالشجال الكافر ب ميرامنا فعهد اوروائى بدنجتى اورق تعالى سي جهائ ميراضاده سي ، اور ميرى عرميراداس المال سي كهرس انس أيك بيش قيمت جاهراورگويا ميريونزلز ميرى عرميراداس المال سي كهرس انس أيك بيش قيمت جاهراورگويا ميريونزلز متح مير ميرا سي الدى سعادت حال بيوت بي اور به بعرويرى بوقتى تو تجادت كارت كادن ميري تجادت كاسياود متى تعالى مع درساس المعالية تومي فوامش كرة كركاكم الش دريا بيرافع المعاقل الر ايك دن مجه نعيب بوجائ كركونى نيك سل كرول .

ایننس ؛ وہ دن آج کا ہے ہوتھ کو خواکی طون سے مہلت کا عطا ہوا ہے ۔ اب تواپنا وعدہ پواکرا وردیجہ کمیا کرداہے ؟ اگراس مہلے تو نے غنیست مجھا اور آن کا کام بحل بریز دکھا توآج کی تجارت کا منا فعر تجہ کوئل گیا، اور صرت نہوئی اوراکر توکل بھی زندہ ہے تو مھری خیال کر۔

غرض جب تک ندہ ہے اس وقت تک ہردن کو نیا مجدا ورضا کے عضوے دعوکا مت کھا کیو نئر ہترا گھاں ہی گھاں ہے ہمکن ہے خطا تکے۔ حق تعالیٰ کرما فی کھوروری یا ترا قرض نہیں ہوجس کا مطالب اورالیفا، وا دار لازی ہو۔ اورا گرمعاً فی ہوئی تب بھی نیکو کا رہندوں کے تواب سے دعوم ہی ہیں گا اور مرب بھیا گرصرت کرے گاتواں کی نفع ہوگا ، ہوکچ ہونا تھا وہ ہوچکا ۔ عظر گیا وقت بھر ہا تھ آتا نہ یں ۔ ایک ایک سانس غذیت ا وربے بہا موتی ہے۔ ایک ایک سانس غذیت ا وربے بہا موتی ہے۔

له يو حس سے تجارت شروع کی ۱

اگراس کے بونفس پیچے کہ اجھا بتا ذکیا جمل کول اور کیون کوقت کی قدر کروں اور کیون کوقت کی قدر کروں اور کیون کوجاب دے کہ چیز ہوت کی وجہ سے جھا ہوجانے والی ہے اس کوجوڑ ہے اور ہونے پائدارہے اور کسی وقت بھی تیراساتھ نہجوڈیگی اس پر قبین کا الڈ جل الذی کی معرفت حال کراور خدا کی یا جسے مانوس ہو ۔ میراگر نفس کے کہ مبدا دنیا کی مارح چور سے تھی ہے ؟ اس کے علاقے کو قلب ہی کے اندر سے دنیا کے علاقے کا بط جے اور تلاش کرکر دنیا کا کونسا علاقہ تھے ہے ، بس اس کی اقراب جل کا بط یہ دینی اگر مال کی مجست ذیارہ ہے تواس کو جوڑ ۔ ہے تواس کو جوڑ ۔ ۔ ہے تواس کو جوڑ ۔

وسیوں مہلک امراض کی تشری اورعلاج سیان ہوچکا ہے ان کودیکا و خلاک نفل وکرم پریمروسر کھ کوستعد ہوجا ، کم با ندھ ، آ ما وہ ہوا ورجہ جی کے فنس کو خواش ہواس کے خلاف کر بھرد کے کہ فلاص گری ہے ۔ اس نفس کا تو بیارہے ، اور عرف بریم پر بہر کا زما نہے ، اور وصافی حادق طبیب سیخ برصلی الشرعلیہ وسلم ، جن کی داستی وسیاتی سے تو بھی آگا ہو یوں فروا یا ہے کہ ذالقہ اور لذیل شروک مصروب اور کڑوی ووائیں تیرے سے نافع اور معنید ہیں ۔ کیا تھے سے معرف کے مسینتیں اس امید پر برواشت نہیں ہی تھی کہ منزل پہنے نجرک رام نصیب ہوگا ، بس اگر استہ کی تعلیف سے اکتا تا ہے تو کہ منزل پہنے نجرک رام نصیب ہوگا ، بس اگر استہ کی تعلیف سے اکتا تا ہے تو یا در کھکہ ڈاند نکل جا سے گا اور یا یوں ہی میں کتا ہوا ہا کہ جو ما ہے گا اور یا یوں ہی میں کتا ہوا ہا کہ ہوجا ہے گا ۔

لے نفس ابتاتو سی کرتھے دنیا میں کس چیز کی رغبت ہے ؟ بس اگرتو مال ماہتا ہے تو مان لے کرا حیا وہ مل مجی گیاا ور توبڑا مالدارا ورتع تول سیٹھ

بن بن گيا گريوكيا ؟ اگرتونظراتها كرديجه كاتوبهتيريدي و د ورهيسان اليهلي محجن كي إس تجه سے ذياوہ ال موجود ہوگا۔ اور توعزت اورا، كاطلب كاسب تواحيا فرض كرب كربرطلب لين تلعكانے تكى اور تيم وزت فجماه عال مي بون مراس كالنجام اورع لكياب ؟ الرا يحيى كمول كرويكي كا توسيكرون احق وجابل كافرا ورالسك نافران اوردليل اور يحيين بندون كو اسے مال میں دیکے کاکران کی عزت دنیا میں تجہ سے مبی زیادہ ہوری ہے ان بهتبرب لوگ السي منصب حكومت او دسندجلال وسطولت برينطه نظرا كيس كُرُوْتَهُ كُوسى مْسِدَرك كِمِيل خان بنجاسخة بي . بس ارنس اگرتوان أفتول المصيبتول سفير فكمراتا بوعزت وماه كح عال كسفرل شانى يرقى بى اوران بلا ۇل سىمى نىسى درتا جوعزت ھىل بويدى يى مرريط كرتى بى ، توان دلىل در كىيىنى شريكون بى كاخيال كركه كيسي كمتر لوگور كائسانجى ہوناچا ہتاہے ؟ كيااسى بے وقعت اور حقير چربى مال كرنے كے قال بيعس كوبرسيس سيخسيس اوردول سرود ياشخف بي عال كريخا بكرعال كة بورے سے اوراتی مقدار حال كئے بورے كم اگر توبياس برا جي كوشش كميي كاتوتي كونصيب نهوكا به اور لينفس الكرتودنسا سياعواض كركے آخریت کی جانب توبیروگا توباد دکھ کہ بچا ئرروزگار اور بخیائے زمانہ بن جاسے گا۔ تیراثانی ہفت قلیم بھی نہ مل سے گا رہیں الیفس! اب توہی بتاككياچيز كالكرنے كال ہے ؟ لےنف ! فوب يادر كوكتھے زیادہ تیرا خیرخواہ کوئی نہیں ہے ، توکسی کے کہنے اور شننے برزجا بلکدونیا اور دین دونوں کے انجام اون**تیج**یں *فورکہ کے بواسے کتیری دخ*رش جریاں ہی؟ اورتم کوراوستیم پرسے بطے گا۔ بس اگرج عسلمند ہو تو سجہ لوکہ یفس کے سکا مباحثہ کرنا برطیوں اور محترلہ بلکہ دنیا سمرے تمام مذاہب باطلہ کے ساتھ مناظرہ کرنے بین برنسیت زیادہ ضروری اور مہتم بالشان ہے کیونکہ ور مرص کی خلطیاں اور صائع کہ برن کے بین محتول کی خلطیاں اور صائع کہ برن کے بین مقصان بہنچانے والی ہمیں ہیں اور اپنی خطا وظلی کا ضرور لینے ہی اور وبال ہے کہ اس کا معلقان تم ہی کو میک تناہیں برن میں موجاے تب دومروں کی فرینی مناسب بیت کا من کی جائی کی ایک ہوتی ہیں ہوتی بلکہ برہ کچھی انگلاہے دہاں مناسب بیت کا من کی جائی ہی کہ برن کی برن کی جائی ہے۔ اس کی مناسب بیت کا منافر اور خواہشوں کے لورا اس کی تعدیل کی جاتی ہے۔ اس کی دورا اس کی تعدیل کی جاتی ہے۔ اس کی دورا اس کی حدیل کی جاتی ہے۔ اس کی دورا اس دورا سے دورا اور تو ہی کے دورا اس کی حدیل کی جاتی ہے۔ اس کی دورا اس کی حدیل کی جاتی ہے۔ اس کی دورا اس کی حال ہے۔ اس کی دورا اس کی حدیل کی دورا اس کی حدیل کی دورا اس کی دورا اس کی حدیل کی دورا اس کی دورا کی دورا اس کی دورا اس کی دورا اس کی دورا کی دورا اس کی دورا کی دور

معلاسوی توسی، اگرکوئی شخص آیئے دامن کے نیچے ایک زیر الکالاسات چیپاے بیٹھا ہو ہو میں کار دا ہوا وراس کے ڈسٹ اور بلاک کرنے کی گوہ میں نگا ہوا ہو، بگر پیٹھ ساس کی توپرواہ نرکرے اور دوسرے شخص کے مُنہ سے کھیاں اڑا نے اور نیکھا جھلنے میں شخول ہے تواس سے زیادہ ہمق اور دو و توف کون ہوستا ہے ؟

یمی تمہالاحال ہے دوسرول کے ساتھ مباحث کرنے اور غیرولک سیسے داستر پوللنے کی فکریں سرگرم ہو مگر اپنے نس امادہ کے ساتھ مناظرہ کرنے اور اس تباه کرنے والے مشریر دین واپیان کوئیرکرنے کی جانب مطلق تورن میں کرتے ۔

نفس کی خاصیہ سکتے کی ہی جگہ انوب بحد لوکہ جب تکفش کے سطح ایک عرصته دراز تک اس طرح مثاثہ الكها مريغيرس يصانهن بوقا اليكو عاس دقت تكريمهم سيدحا نهوكا اومعيب تك يرسعانه بوگااس وقت تكسنرتم سےالشكى إد ہوسے گی اور بذمنا جات ہیں لڈت آسے گی ، نسٹوک کی طرف توجیع گیاد بنصراط تتيم يرجيني كم فسنحريوكى رابدنااس سناظوه كواينها ويرواحب فرض سجوا والتزاوقانين كساته بيباحث فرك كرياكوا ورونض تمهارى منالعنت كسيعتواس كوفان وجركوا ورانسي ميزاد وجوكار كراور بااثريو بحيو بحد نفس كى خاصيّت كتّ كى بوكروب كى مار زكها سے كااس وقت ادب بائے گا بحراكرتم وننس كرساته مناظره كرني اورمحاسبدين يانفس كولوانشناور مزادين كاطريقه معسلوم كرنى فوابت بوتو" احيار لسلوم"ك كتاب المحاسية والماقية ديوكس مقركتابيان ابواب کوسیان کرنے کی گنخانش نہیں ہے۔

أَبِ دَعَارُ وَكِرَى تَعَالُ شَائِ لِيَهِ مُحِوْبِ سِينَا مُمُوسِطَقُ سَلَى الشَّعَلِيهِ وَلَمَ كَطِفْيل فِي مِجِهِ اوْتَهِينِ اپني بِيتَارَعْطَا وَل فِي قَضَائِ اورَكُمْ فَقِلْ فِي جن باقه ل كا اس فيهم كوم عطا فوايا بي اس عُرِل كَ تَوْقِي بَحْقًا وَتَوْجَوِيمِ فَي پُرْها ياسُنا بِوَاسَ كُمّال بنا فِي رَاسِل كَيفِيت بِم لِينَفْس بِرُدِّهِ فَي وَكُولِينَ وَ اللّهِ عَلَيْنَ و المويين ما وظل فحليين